होजाता है परंतु रोग की जड़ जाती इस्से उचित है कि किसी विद्वान और ज्ञानु जर्राह को बुला कर चिकित्सा करावे जर्राह कोभी चाहिये कि प्रथम घाव को देषे कि कितना चौडा है परन्तु ये घाव केवल मल्हमगाने से अच्छा नहीं होता इसकी इस भांति चिकित्सा करे॥

नुसखा

जमालगोटे की मींगी · चैया सुहागा · मुनक्का इन सबको बराबर ले महीन पीस कर एक २ माशे की गोलियां बनावे तु इस गोली के खाने से पहिले ये औषधि खावे॥

नुसखा मुंजिस

गुलाब के फूल तीन माशे · का सान नग · सौं फ छै माशे · सखी मकोय माशे · सनाय मक ई दो माशे इन सब को पाव जल में औटा वे जब एक उफान आजाय तो उतार कर छानले फिर इस्मे एक तोले गुलकंद मिला कर पिला वे पीछे खिचडी भोजन करे फिर चौथे रोज उक्त गोली के दो टुक कर के खावे ऊपर से ग रम जल पिलवै और जब फलने लगे तब गरम ही जल पिलावे और सायंकाल को घृत डाल कर खिचडी दही के संग भोजन करे फिर तीन दिन यद वा पिलावे॥

नुस्खा ठंडाई का

बिहदाना दो माशे. रेमाखतमी ४ माशे मिश्री रत्ती ले. इन सब का लुआब निकाल कर उस्में मिश्री मिलावे प्रथम छै माशे इशब गोल को फांक कर ऊपरसे उस लुआब को पीवे इसी तरह तीन दिन सेवन करे फिर ये गोली खिलावे॥

भिलाये की गोली

अजवायन खुरासानी. अजवायन देशी. अकरकरा गुजराती. छोटी इलायची. ये सब तीनों माशे भिलाये सात माशे. काले तिल दो तोले पारा छै माशे. पुराना गुड एक तोले इन सब को एकत्र करि तीन दिन खूब घोटे और माशे भर की गोली बनावे और एक गोली नित्य खिलावे और घावों पर ये मल्हम लगावे॥

मल्हम की विधि

प्रथम गौका घृत एक तोले लेकर खूब धोवे फिर सिंगरफ एक माशे. रस कपूर तीन माशे. मुरदासंग तीन माशे रसोत तीन माशे. गुजराती अकरकरा दो माशे. सफेदा कासगरी तीन माशे. इन सब को महीन पीस कर उक्त घी में मिलाकर लगावें और देखें कि विरेचक देने से रोगी की क्या दशा है॥

जो रोग कम है तो मरहम लगाना बंद करें

और पूर्वोक्त गोलियां सात दिन तक खिलावे जो आ
राम होतो दो तीन गोली और खिलावे नहीं तो औ
षधी को इस प्रकार बदल देवे कि रोगी को विदि
त न हो ॥

गोली दूसरी

रस कपूर नौ माशे· लोंग फूलदार २१नग· काली
मिर्च २१ नग· अजवायन खुरासानी· एक माशे·
इन सब को महीन पीस· मलाई में मिला कर
नौ गोली बनावे और एक गोली नित्य खवावे
और खट्टी तथा वादी की वस्तु ओं से परहेज क
रना चाहिये ॥

और कभी ऐसा भी होता है कि ये रोग
होने वाला था कि अचानक बाल लेते समय
उस्तरा लग कर घाव हो गया और उस्तरे का घा
व समझ कर औषधियां की जब कुछ आराम
न हुआ तब लोगों से प्रगट किया और उन मूर्खों
नें धोया हुआ घृत आदि सुनी सुनाई दवा ब
तादीं तब उस्से और भी हानि हुई फिर उस की
दवाई चतुर जर्राह से करावे और जर्राह को भी
उचित है कि प्रथम रोगी के घाव को देखे·
कि किनारे उस घाव के मोटे हैं और घाव के भी
तर दाने हैं वा नहीं और घाव कितना चौड़ा
है और रोगी की प्रकृति को देखे· जो उसे वि

रेचक लेने की शक्ती होतो देवे नहीं तो यह औषधि खवाना चाहिये ॥

गोली

नीला थोथा ढाई माशे· काली हर्ड डेढ माशे· सफेद कत्था दो तोले· सुपारी सात माशे· इन सब को महीन पीस कर दो सेर नीबू के रस में खरल करे फिर जंगली बेर के प्रमाण गोली बनावे और दोनों समय एक एक गोली खिलावे खटाई और वादी करने वाली चीज से परहेज करे

दूसरी दवा

अजवायन खुरासानी सात माशे काली मिरच सवा माशे काले तिल छै माशे· अमाल गोटा तीन माशे· पुराना गुड डेढ तोले इन सब को तीन दिन तक घोट कर जंगली बेर के प्रमाण गोलियां बनावे और एक गोली दही की मलाई में लपेट कर खिलावे · मूंग की दाल· मीठा कदू न खिलावे इस औषधि के खाने से एक दो दस्त हुआ करेंगे और जो वमन भी हो जाय तो कुछ डर नहीं है क्यों कि ये रोग बिना मवाद निकले नहीं दूर हो सक्ता प्राय देखा है कि इस रोग में सिर से पांव तक घाव हो जाते हैं · इस्से उचित है कि प्रति दिन मल्हम लगाया जावे जो एक दिन भी न लगेगा तो खुरंड जम जायगा और-

जहा यह रोगी बैठता है वहां कीच होजाती है और सफेद पानी सा निकलता है अथवा सुरखी और जरदी लिये दुर्गंधि युक्त होता है और हाथ-पावों की उंगुलीयों में भी घाव हो जाते हैं इन-सब शरीर के घावों के वास्ते यह औषधि करनी चाहिये॥

मरहम

माखन आध पाव· नीला थोथा· सफेदा छै माशे· मुरदासंग छै माशे· इन दोनों दवाओं को पीसकर-घतमें मिला कर घावोंपर लगावें और खाने को ये दवा देवे॥

गोली

छोटी इलायची सफेद कत्था· तुलसीके पत्ते हरे एक एक तोले मुर्दासंग छै माशे· पुराना गुड डेढ तोले इन सब को कूट पीस कर गोलियां बनावे और नित्य प्रति सवेरे ही गोली एक खिलावे खटाई और वादी से परहेज करे और किसी वस्तु से परहेज नहीं है और ये रोग शीघ्र अच्छा नहीं होता दवा को सात दिन खिला कर देखे जो कुछ आराम होतो इसी दवा को खिलाते रहे और जोइससे आराम न होतो ये गोली खिलावे॥

गोली

सिलाजीत·काली मिरच·कावली हड़·सूखे आमले·

रस कपूर· सफेदकत्थाीर मिठी· गुलवनफ्शा· सफेद क त्था· ये दवा चार२ चार माशे ले इन सब को कूट पीस कर रोगन गुल में खरल करे फिर इस की चने प्रमाण गोली बना वे और एक गोली आम के अचार में लपेट कर प्रात काल खिलावे और इसी रीति से एक गोली सायं काल को भी खिलावे मसूर की दाल और लाल मिर्च से परहेज करे इस दवाई से सब शरीर अच्छा हो जायगा परन्तु उंगुली अच्छी न होंगी और जो औषधि प्रकृति के माफिक गुण कर जाय तो अंगुली भी सीधी हो जाय गी मैंने बहुत पुस्तकों में देखा है और हमारे मित्र डा क्टर साहब भी यह कहा करते थे कि इस रोग वाले मनुष्य बहुत भले चंगे देखे परंतु किसी न किसी जगह शरीर में शेष रह ही जाता है और हमने भी बहुत से इस रोग वाले मनुष्यों का इलाज किया परंतु यथोचित अच्छे होते न दे खा और इस रोग में अनंतर पश्चात में बहुत से रो ग उत्पन्न होते हैं एक तो यह कि मनुष्य कुष्टी- हो जाता है दूसरे यह कि सब सरीर पर सफेद दा ग हो जाते हैं तीसरे नाक गल कर गिर जाती है चौथे गठिया हो जाती है और हम को ऐसा भी मालूम होता है कि ये रोग पहिले जमाने में नहीं था क्योंकि हकीम लोग तथा वैद्य लोग इस की-

चिकित्सा नहीं करते और करते भी हैं तो आराम नहीं होता बड़े आश्चर्य की बात है कि बड़े बड़े हकीम और वैद्य हो गये परंतु किसीने इस रोग के वास्ते ठीक औषधि नहीं लिखी और बहुत करिके ये रोग जर्राहों की दवाइयों से जाता रहता है और एक कारण यह है कि ये रोग महा गरम है ठंडी दवाओं से अच्छा नहीं होता न जाने ये रोग क्या बला है और हमारे मित्र डाक्टर साहब भी कहा करते थे कि ये रोग कफ से होता होता है क्योंकि प्रत्यक्ष है कि रोगी के शरीर में छोटी छोटी फुनसियां रतूबत दार जरदी लिये होती हैं और बहुत से मनुष्यों का यह रोग औषधियों के सेवन से जाता रहा और दो चार वर्ष के पीछे शरीर के निर्बल हो जाने से फिर हो गया और घाव भी फिर हरे हो आये। जब दवाई करी तो फिर जाता रहा इस रोग के वास्ते ये गोली बहुत उत्तम है

गोली

भुना नीला थोथा। मुरदा संग। सफेदा कासगरी। सफेद कत्था। ये सब चार चार माशे ले इन सबको नीबू के रस में खरल करके लोहे की कढ़ाई में डाल कर नीम के सोटे से खूब घोटे फिर इसको चने प्रमाण गोलियां बनाकर दोनों समय एक एक गोली खिलावे खटाई और चटी की-

चीजों से परहेज कराना चाहिये और जो इससे भी आराम न होय तो ऐसी औषधि देवे कि जिससे थोड़ा सा सुख आजावे जिससे सब सरीर के जोड़ों की पीड़ा दूर हो जावे नहीं तो अधिक मुंह आने की औषधि दें और इन औषधियों से घाव को भफारा देवे॥

नुसखा बफारे का

नरसल की जड़· समसर· सोये के बीज· खुरासानी अजवायन· मावन· नर्मों के पते· शहतूत के पते· इन सब को बराबर ले पानी में औटाकर घावों को बफारा दे और राति को तेल का मर्दन करे॥

अथवा भेड का दूध· गौ का दूध· चार चार तोले शोरंजान कडवा तीन माशे· अफीम तीन माशे रोगन गुल आध पाव· इन सब को मिला कर गरम करके मर्दन करे॥

बफारा दूसरा

जो इन्द्री घावों के जोर से तथा इन्द्री पर पट्टी वांधने से इन्द्री सूज जाय तो उसके वास्ते ये बफारा दे ६ माशे त्रिफला पानी में औटा कर इन्द्री को बफारा दे और इसी तरह एक दिन में तीन बार करें तो एक ही दिन में लिंगेन्द्री की समस्त सूजन जाय और पहिले की तुल्य हो॥

और जो मुख आजाय तो उसकी ये दवा करे॥

नुसखा कुल्लों का

कचनार की छाल· महुए की छाल· गोंदनी की छाल सब एक एक छटांक चमेली के पते एक तोले सफेद कत्था एक माशे· सब को पानी में औटा कर कुल्ले करे॥

अथवा

चमेली के पते छटांक भर· कचनार की छाल छटांक भर इन दोनों को पानी में औटा कर दोनों समय कुल्ले करे॥

अथवा

अकरकरा· माजूफल· सिंगरफ· सुहागा कच्चा· ये चारों दवा पांच पांच माशे ले इन सब को कूट कर पानी में मिला कर चार हिस्से करे फिर सवरी रात्रि में पहर पहर के अरसे से हुक्के में रख कर तमाखू की तरह पीना और सवरी रात्रि जागते रहना· फिर सवेरे ही सर्द पानी से स्नान कर फिर खाने के वास्ते मुसलमान को तो मुर्ग का सोरवा और गेहूं की रोटी खिलावे और हिन्दू को मूंग की दाल रोटी खिलाना· चाहिये फिर भोजन करके सो रहे इस इलाज के करने से गरमी बहुत मालूम होती है और दस्त तथा उलटी भी होती है परन्तु इस इलाज·

के करने से एक ही दफे में घाव तक भी खुश्क हो जाते हैं ॥

अथवा

सिंगरफ· माजूफल· अकरकरा· नागोरी अ सगंध· श्याह मूसली· सफेद मूसली· गोष रू छोटे· इन सब का चूर्ण करिके जंगली बे र के कोयले पर डाल कर तमाम बदन को धू नी देना इसी तरह सात दिन सेवन करने से ये रोग जड से जाता रहता है॥

अथवा

तूतिया सुना· बडी हर्ड का बक्कल· छोटी हर्ड ये सब दवा एक एक माशे· पीली कोडी चार माशे· इन सब को पीस छान कर नीबू के अ र्क में तीन दिन घोटे फिर इसकी चने प्रमाण गोली बनावे फिर एक गोली नित्य खाय इस के ऊपर किसी चीज का परहेज नहीं है

अथवा

रस कपूर· चोबचीनी· बसबची· ये तीनों छै छै माशे· तिबरसा गुड दो तोले इन सब को दही के तोण्ड में खरल करे और भाडी बेर के प्रमाण गोली बना कर रोगी को दोनों समय एक एक गोली दही के संग लपेट कर खिलाना और खा ने को दोनों समय·

कल्थासफेद· सम्मलखार· इलायचीकेवीज· ख
डियामिट्टी ये सब बराबर गुलाब जल में पीस कर
ज्वार के बराबर गोली बनावे और एक गोली नि
त्य बारह दिन तक खाय और जो अजीर्ण होयतो
एक गोली बीच में देकर खाय और मूंग की दाल
गेहूं की रोटी खाय परंतु घी ज्यादा खाय और -
गरमी वाले की संधी संधी में पीडा होय तो ये द
वा करनी योग्य है ॥

नुसखा

पारा· खुरासानी अजवायन· भिलावे की मींगी·
अजमोद असपंद ये सब दवा तीन तीन माशे·
गुड २८ माशे· सब को कूट पीस कर झर बेरी के
बेर प्रमाण गोली बनाय एक एक गोली दोनों
वक्त खाय और इस गोली को पानी से निगल
जाय दांत न लगने देय खाने को लाल मिर्च
खटाई वादी करनेवाली वस्तु न खाय ॥

अथवा

पारा· अजवायन· मूसलीस्याह· ये दवा छै छै मा
शे भिलाये तीन माशे· गुड चार तोला· इन सब
को कूटपीसकर २१गोलीबनावे और एक गोली नित्य
दहीके साथखायतो ग्यारह दिन में सब रोग जाय औ
र दूध चावल का पथ्य खाने को देतो बहुत शीघ्र आ
राम होय ॥

अथवा

मदार की लकड़ी को कोयला पीस कर २॥ माशे· और कच्ची खांड २॥ माशे· इन दोनों को एकत्र करि इस्में चौदह माशे घी मिलाय सात-रोज खाय और मांस का भोजन करे तो सात दिन मे आराम होय॥

अथवा

वडी हर्ड की छाल· छोटी हर्ड की छाल तूतिया· पीली कोडी की राख ये सब बरा बर ले फिर नीबू का रस डाल कर कढाई में घोटे से१६ पहर घोटे फिर इस्की काली मिर्च के प्रमाण गोली बनावे और एक गोली नित्य २५ दिन खाय और थोडी सी गोली घिस कर कागज पर लगाय घावों पर लगावे और जो मुख आजाय तो-कचनार की छाल के काढे के कुल्ले करे॥

अथवा

तुलसी के पत्ते हरे एक तोले· तूतिया हरा१७ माशे· इन को पीस कर बेर के बराबर गोली बनाय एक गोली गरम पानी के संग नित्य खाय और मूंग की दाल की खिचडी बिना घीके-खाया करे॥

अथवा

कचनारकी छाल·आधपाव· इन्द्रायन की जड·

आधपाव· ववूलकी फली आध पाव- छोटी कटाई जड पते समेत आध पाव· पुराना गुड आधपाव· इन सव का तीन सेर पानी में काढा करे जव चौथाई जल रहे तव छान कर सीसे में भर राखे फिर इस में से अनुमान माफिक सात दिन पीवे तो निश्चे आराम होय· और इस्में परहेज कुछ नहीं है ॥

अथवा

सिरस की छाल सवा सेर· ववूल की छाल १॥ से र· नीम की छाल सवा सेर· इन सव का सात सेर पानी में काढा करे जव एक सेर जल वाकी रहे तव छान कर सीसे में भर ले फिर इस्में से आ धपाव रोज पीवे और खाने को चने की रोटी खाय तो पुरानी आत शक भी जाय ॥

अथवा

जिस कपडे को रज स्वला स्त्री योनि में रखती है उस कपड को रुधिर समेत जला कर उस की रा ख ले और उसी की वरावर गुड मिला कर व रके प्रमाण गोलीयां वना कर एक गोली· नित्य खाय और अलोना भात रोटी भोजन क रे तो आत शक जाय॥

अथवा

सिंगरफ· अकरकरा· नीम का गोंद· माजूफल· सुहा

ना प्रत्येक २५ माशे इन को पीस सात पुड़िया बनाले एक पुड़िया चिलम में रख बेरी की आ गसे पिये तो आराम होय और इस्से वमन हो जा यतो कुछ डरनही दिन भरमें तीन दफे पीवे और २ इस के गुल को पीस कर घाव पर बुरके खाने को मोहन भोग मीठा खाय और जो मु ह आजावे तो चमेली के पत्तों का काढा करके कुल्ले करे

अथवा

सिंगरफ दो माशे· अफीम दो माशे पारा दो माशे· अजवायन पांच माशे भिलाये सात मा शे· पुराना गुड पांच माशे· पहिले पारे और सिंगरफ को अदरक के रस में दो दिन खरल करे फिर सब दवा बारीक पीस कर उस्में मि लावे और भिलाये की टोपी दूर करदे फिर बे रके बराबर गोली बनाले और सात दिन तक एक गोली नित्य खाय और गुड शक्कर तेल लाल मिर्च खटाई बादी करने वाली वस्तु इन से परहेज करे॥

दैव योग से जो यह उपदंश का रोग इन औषधि यों से भी न अच्छा हो तो जानले कि यह रोग दूर न होगा चिकित्सा बंद करदे और हकीमों ने भी इस का इलाज कमालिखा है और हमने बहुत सी खोज

नाकमी केउमदा उमदा नुसके इसमें लिखे हैं और इस
रोग में सबरे शरीर में छोटी छोटी फुनसियां सीतला
के सदृश होजाती हैं उन के वास्ते ये दवा उत्तम है

दवा

सिंगरफ तीन माशे· रसकपूर छै माशे· अकर
करा एक तोला· कत्था एक तोला· छोटी इलाय
ची एक तोला· इन सब को पान के रस में मि
लाकर चने के प्रमाण गोलियां बनावे और स
वेरेही एक गोली नित्य खाया करे और चने
की रोटी घी और दही भोजन करावे इक्कीस
दिन तक सेवन करने से समस्त रोग की निश्चै
शांति होती है॥

अथवा

रस कपूर· सिंगरफ· लोंग· सुहागा· ये सब एक
एक तोले ले· इन सब को महीन कर सात पु
ड़िया बनावे· फिर सवेरेही एक पुड़िया दही
की मलाई में लपेट कर खिलावे दूध चावल
का भोजन करावे और सब चीजों का परहे
ज करना चाहिये॥
और जो किसी मनुष्य के शरीर में काले वा
नीले दाग पड़ गये होंय तो तीन दिन खिचड़ी खि
लाकर पे जुल्लाब दे॥

नुसखा

काला दाना नौ मासे आधा भुना आधा कच्चा कूट कर बराबर की सकर मिला कर तीन पुड़िया बनावे और सवेरे ही एक पुड़िया गरम जल से खिलावे और प्यास लगे तब गरम जल पिलावे और जो किसी के बार पार छिद्र हो गया हो तो यह विरेचक देवे॥

नुसखा विरेचक

पिस्ते की मींगी· बादाम की मींगी· चिलगोजे की मींगी· पुराना खोपरा· मखाने की मींगी· पुरानी दाख· जमाल गोटे की मींगी· इन सब को बराबर ले जल में पीस· कर जंगली बेर के प्रमाण गोली बनावे· और गोली के देने से पहिले तीन दिन तक अरहर की दाल और चावलों की खिचड़ी खिलावे फिर चौथे रोज दो गोली मलाई में लपेट कर खवादे· और ऊपर से गरम जल पिलावे फिर दूसरे दिन ये ठडाई दे॥

नुसखा ठंडाई का

बीह दाने दो मासे· रेसा खतमी छै मासे· ईसबगोल छै मासे· मिश्री एक तोले इन सब को राति को पानी में भिगो दें फिर प्रातकाल मल छान कर पिलावे॥
[illegible] पीछे ये दवा देवे॥

गोली

कर पिलावे॥

और जुल्लाव के पीछे ये दवा दे

गोली

मुरदासंग एक तोले गेरू डेढ तोले सात वर्ष का पुराना गुड इन सब को पीस कर जंगली बेर के बराबर गोली बना कर एक गोली मलाई में लपेट कर सवेरे ही खाय खटाई और बादी से परहेज करे और जो आतशक वाले रोगी को किसी ने सिंगरफ बहुत खवाया होय इस कारण करि के इसका सरीर बिगड गया होय तो ये दवा देना योग्य है

दवा

कुटकी कडवी एक तोला आम की बिजली दो तोले। जमाल गोटा तीन तोले· खीरा ककडी के बीज दो तोले· सफेद मिश्री तीन तोले सब को महीन पीस छान पुराने गुड में मिला कर चार पहर कूटे फिर जंगली बेर के प्रमाण गोली बना कर खवावे और ऊपर से ताजा पानी पिलावे जो दस्त होजाय तो उत्तम है नहीं तो पहिले तीन दिन ये मुंजिस पिलावे॥

नुसखा मुंजिस

हरी सोंफ एक तोले· सूखी मकोय एक तोले मुनक्का १५ नग खतमी एक तोले खुब्बाजी के बीज·

२तोले गुलकंद दोतोले इन दवाओं को रात्रि को जल में भिगो दे सवेरे ही औटा कर पिलावे और खिचड़ी खाय फिर चौथे दिन यह जुलाब देवे

दवा जुलाब की

गुलाब के फूल दो तोले· खतमी के बीज एक तोले गारीकून छै माशे· सफेद निसोत छै माशे अ रंड के बीज तीन तोले· गुलकंद एक तोले सोंठ छै माशे· करतम के बीज दो तोले· सकमूनिया छै माशे· सूखे आमले एक तोले· सनाय दो तोले बिस्फायज अर्थात् कंकाली एक तोला कावली हड़ एक तोले· इन सब को पीस छान कर पानी मिला कर जंगली बेर के समान गोली बनावे फिर एक गोली सवेरे ही खवावे· फिर दो पहर पीछे मूंग का घाट पिलावे और सायंकाल को मूंग की दाल की खिचड़ी खवावे इसी प्रकार से तीन जुलाब देवे जो इसी जुलाब के देने से आराम होजाय तो उत्तम है नहीं तो यह अर्क पिलावे॥

अर्क की विधि

सोंफ पाव सेर· सूखी मकोय पाव सेर· काबली हड़· छोटी हड़· सनाय मकई· पषांरा· वायविडंग पित पापड़ा· चिरायता· सिरफोका· जीरा· मदार डी· नकछिकनी सब पाव पाव सेर पुरानी सुपारी

बीज· जामन के बीज· बबूरकी फली · मुंडी· कच
नार की छाल· ये सब औषधि आध आध सेर अ
मल तास की फली का छिलका महदी के पत्ते
लाल चंदन· झाऊ के पत्ते· ये सब पाव पाव सेर
इन सब को जो कुट करिके दरयाव के जलमें चा
रह पहर भिगोवे फिर इस का आबाब खींचे फि
र पांच तोले अर्क में एक तोले शहत मिला कर
पीवे चालीस दिन सेवन करने से चार वर्ष का
बिगड़ा हुआ शरीर अच्छा होगा और जो इस
सेभी आराम न होयतो हार के अंतमें ये दवा
करनी चाहिये॥

नुसखा

एक बड़ा मेंडका और बकरी का मांस दोनो को
इकट्ठा पकाकर खिलावे परंतु मुसलमानों
को ऐसी दवाई खिलाना नहीं है और न हिन्द
ओंको· परन्तु काया रखे धर्म है और जो किसी
स्त्री के ये रोग हो कर जाता रहा हो और उसे ग
र्भ रह गया हो और उस काल में रोग फिर उलट
आवे और ऐसी चिकित्सा करनी हो कि गर्भ-
भी न गिरने पावे और रोग भी जाता रहे तो ये
दवा देनी चाहिये॥

दवा

मुर्दासंग· गेरू· चने एक एक तोले· माजू दो तोले

उनको महीन पीस कर बारह वर्ष के पुराने गुड़ में गोली बनावे और एक गोली मलाई में लपेट कर नित्य खवावे जो पर गोली गरमी ज्यादा करै तो आधी गोली खिलावे तो सात दिन में रोग-जाता रहेगा और जो इस गोली से आराम न होवे तो ये औषधि करनी चाहिये

नुसखा

कंघी के पत्ते दश तोले सिंगरफ तीन माशे-इन दोनो को महीन पीस कर तीन माशे की गोली बनावे फिर एक गोली चिलम में रख कर मिट्टी के हुक्के को ताजा करके पिलावे और फिर दूसरे दिन हुक्के को ताजा न करे पहिले दिन का पानी रहने दे केवल नेचे को ही भिगो ले इसी प्रकार से सात दिन करे और जो चाहे सो खवावे रोग निश्चै जाय॥

और जब बालक उत्पन्न हो चुके तो फिर स्त्री की यथोचित चिकित्सा जैसी कि आतशक के रोगी मरदों के वास्ते वर्णन करी गई है सोई स्त्री की करनी और जो वह बालक भी पेट में से उपदंश रोग युक्त आया होतो वह भी अपनी माता के दूध पीने से अच्छा हो जायगा क्यों कि जो औषधि उस की माता को दी जायगी उस का असर दूध के द्वारा बालक

की माता को देनी जायगी उस का असर दूध के द्वारा बालक में भी प्राप्त होगा और जो दैव योग से आराम नहोतो ये दवा दें॥

दवा बालकों की

कटेरी दो माशे वाय विडंग दो माशे दाषतीन माशे इन तीनों को पीस कर आध सेर जल में औटावे जब दो तोले रहि जाय तब किसी काच के बरतन में रख छोड़े फिर इस में से एक रत्ती लेकर उस्की माता के दूध में मिला कर पिलावे परमेश्वर की कृपा से आराम होगा ये रोग तीन पीढ़ी तक सताता है

इति श्री जर्राही प्रकार नाम ग्रंथे
पंडित रंगीलाल संग्रहीते
आतशक चिकित्सा
या सम्पूर्णम्

अथ सुजाककी
चिकित्सा

ये रोग तीन प्रकार से होता है एक तो आतश
क से दूसरा स्वप्न में स्सखलित होने से ती
सरा वेश्या के संग से इस प्रकार से ये रोग हो
ता है और जब ये रोग पैदा होता है तब आठ
दिन तो बहुत ही दर्द होता है फिर दर्द कम
हो जाता है॥

स्वप्नमेंवीर्यनिकलनेकेसुजाक
कायत्न

जो किसी मनुष्य को स्वप्न में काम विलास
प्राप्ति हो और वीर्य्य स्सखिलित होजाय
उस समय सोते से आंख खुलजाय तो वीर्य
निकल ने से रुकजाता है और सुजाक रोग
को उत्पन्न करता है जिस मनुष्य को इसप्र
कार से सुजाक हुआ हो उसको ये दवा देनी चा
हिये॥

दवा

दो तोले अलसी को रात्रि को आधसेर जल में भिगो
दे और सवेरे ही उसका लुआब उठा कर छान कर -
एक तोला कच्ची खांड मिला कर पीवे और खटाई
लाल मिर्च का परेज करे॥

अथवा

सोरा भुना हुआ तीन तोले ग्वार के पाठे का गूदा छे

तोले दो तोले गूदे में एक तोले सोरा मिला कर
प्रात काल खाय तो तीन दिन के खाने से पुरानी
सो जाक भी जाती रहे ये दवा सब तरह की सो-
जाक को फायदा करती है परंतु खाने में लाल
मिर्च नोन उरद की दाल का परेज है

अथवा

त्रिफला डेढ तोले लेकर रात्रि को सेर भर पानी
में जो कुट करके भिगोदे फिर दूसरे दिन प्रा
त काल इसे छान कर इस्में नीला थोथा तीन
माशे महीन पीस कर मिलावे फिर इस का
तीन दिन तक दिन में तीन दफे पिच कारी लगा
वे तो बहुत जलदी फायदा होगा ॥

अथवा

काहू · गोखरू · खीरा के बीज · भी फली · ये सब
दवा छदाम छदाम भर ले सोंफ दमडी भर ले इ
न सब को पानी में पीस ठंडाई बनाले परंतु जल
दो सेर जल दो सेर से कम न लें जितनी दफे प्या
स लगे इसे ही पीवे इसी तरह सात दिन सेवन
करे तो सुजाक आदि सब रोग इन्द्री के जांय-
निमक मिर्च खटाई का परहेज करे ॥

अथ वेश्या प्रसंग के उत्पन्न सुजाक
का यत्न

ये सोजाक इस प्रकार से होता है कि पहले किसी

वेश्या के पास रहे तो उस समय ये नहीं जाना जाता कि इ
संके सोजाक है जब लिंगपो नि में पहुंचता है तो ये मा
लूम होता है कि जैसे भूभल में भुरस जाता है तो म
नुष्य उसी समय उस्से अलग हो जाय तो उत्तम है न
हीं तो दो तीन दिन के पीछे मूत्र नहीं उतरता और
बड़ी कठिनता तथा पीडा से बूंद बूंद आता है फि
र पीव निकलने लगती है जो पीव की रंगत स
फेद जरदी मिली हो तो ये दवा दे॥

नुसखा सोजाक

सिरस के बीज· विनोले की मींगी· बकायन
के बीजकी मींगी· ये तीनो दवा एक एक तोले ले
कर बारीक पीसे· और बरगद के दूध में मिला
कर जंगली बेरके प्रमाण गोली बनावे और ए
क गोली नित्य प्रात समय खाकर ऊपर से पाव
भर गौका दूध पीवे खट्टी और बातल वस्तुओं
से परहेज करना [illegible]ये॥

और जो पीव की रंगत सुरखी लिये होय तो
यह औषधि दे॥

अथवा

कबाबचीनी· दालचीनी· गुलाब के फूल
सफेद मूशली· रूसगंध नागोरी· सेलखड़ी
ये समस्त दवा छै छै मासे लेना चाहिये-
फिर इन सबको महीन पीस कर एक

तोले की मात्रा पाव भर गौ के दूध के साथ खावै तो और खटाई वादी लाल मिर्च इन का परहेज करै औ र इकीस दिन इस दवा का सेवन करै तो यह रोग अवस्य जाता रहेगा॥

और एक सुजाक इस प्रकार से होता है कि थो डे से अरसे में मनुष्य स्त्री से तीन चार बार सं भोग करै और हर बार मूत्र करिके सो रहै और व्यर्थ स्त्री से लिपटा रहै उस समय वीर्य की थो डी सी बूंद लिंग के छिद्र में जम जाती है और उ स्में मदिरा के सदृश गुण है कि सवेरे तक घाव कर देती है यह अवस्था तो बुद्धिमानों की है और बाजे कैसे मूर्ख होते हैं कि थोडे कालमें स्त्री से तीन चार दफे संभोग करिके भी मूत्र न हीं करते और चिपटे ही जाते हैं और फिर कह ते हैं कि हम को सोजाक होगया है और वे लोग अपनी मूर्खता से प्रकट नहीं करते और सोजाक का नाम बदनाम करते हैं ऐसे सोजा क के लिये ये दवा उत्तम है

दवा पिचकारी की

नीला थोथा· पीली कौडी· विलायती नील ये सब दो दो तोले ले इन को महीन पीस रक्खे फिर इस्में से दो माशे आध सेर जल में मिला कर खूब हलावे फिर लिंग के छिद्र में पिचकारी देवे—

परंतु जहांतक हो सके पिच कारी देना योग्य नहीं है क्यों कि इससे कई एक हानि होती हैं एक तो यह कि अंड कोषों में पानी उतर आता है दूसरे यह कि विंदु कुशाद हो जाता है अर्थात् लिंग का छिद्र चौड़ा हो जाता है इस सबब से जहांतक हो सके पिच कारी न दें॥

दवा

ब तीरा एक तोला· लाल मारवाने एक तोला· इन दोनों को बारीक पीस कर इस्में बराबर की बूरा मिला कर चार माशे तथा छे माशे की फंकी ले ऊपर से पाव भर गौ का दूध पीवे

और जो मनुष्य वेश्या के पास इस रीत से रहे कि संभोग से पहिले आलिंगन करे और जब विषय कर तब पहिले मूत्र करके उससे संभोग करे तो उस मनुष्य के कभी ये सुजाक रोग नहीं होता॥

और जो दैव योग से होभी जाय तो जानले कि इस वेश्या ही का सुजाक था ऐसे सुजाक वाले को ये दवा दे॥

दवा इन्द्री जुलाव की

शीतल चीनी· कलमी शोरा· सफेद जीरा· छोटी इलायची ये सब दवा एक एक तोले इन सब को पीस छान कर रक्खे फिर इस्में से छे माशे प्रात काल

खाकर ऊपरसे सेर भर गौका दूध पीवे तो दिन भर मू
त्र आवेगा और जब प्यास लगे तब दूधकी लस्सी
पीवे और सायं काल के समय धोवा मूंग की दाल
और चांवल भोजन करे और दूसरे दिन ये दवा खा
ने को देवे॥

दवा

खार खशक· खीराके बीज· मुंडी· ये दवा छे छे
माशे लेकर रात्रि के समय पानी में भिगोदे
फिर प्रात काल मल छान कर पीवे और दही
भात का भोजन करे और जो इस दवा से आ
राम न होयतो फिर उस्को यह औषधि -
देनी चाहिये॥

दवा

कतीरा· गेरू· सेलखडी· शीतल चीनी· ये स
ब दवा छे छे माशे ले और मिश्री सफेद दोनो
ले ले इन सब को कूट छान कर छे छे माशेकी
मात्रा गौ के पाव भर दूध के संग खायतो फाय
दा बहुत जलदी होगा
और ये रोग रज स्वला स्त्री से सम्भोग करने से
भी हो जाना है ऐसे रोगी को ये दवा दे

दवा

बीह दाना तीन माशे ले कर रात को जल में भि
गोदे प्रात समय उसका लुआब निकाल कर -

उस्में सवा सेर दूध मिलावे फिर सेल खड़ी और ई
शव गोल की भुसी छै छै माशे ले कर पहिलें फा
क फिर ऊपर उस लुआब को पीले और खानेको
मूंग की दाल रोटी खाय॥

और एक सोजाक इस प्रकार से भी होता है कि
मनुष्य उस वेश्या से संग करे कि जिसने बाल
क जना हो उस्में दो कारण हैं एक तो यह कि
उन दिनों में वह गरम वस्तु बहुत खाती है और
दूसरा यह कि वह बालक को दूध नहीं पिलाती
है व सबब दूध की गरमी और गरम वस्तुओं की
गरमी और शरीर का बुखार ये उस मनुष्य को हा
नि पहुंचा कर सोजाक रोग को पैदा करता है
इस रोग वाले को ये दवा है॥

दवा

बालंगू के बीज· बीहदाना· खीरे ककड़ी के बीज
कुलफा के बीज· कासनी के बीज· हरी सोंफ
सफेद मिस्री ए सब दवा छै छै माशे ले सब को
पीस छान कर चार माशे नित्य खाया करे और
इस के ऊपर यथोचित गौ का दूध पीवे औरजो
इस औषधि से आराम न होय तो यह औषधि
देना चाहिये॥

दवा

गौके बछड़े का सींग पुरानी रुई में लपेट कर-

बत्ती बनावे और कोरे दीपक में रख कर उसमें रंडी का तेल भरदेवे फिर उसे जलादे और उसके ऊपर एक कच्ची मिट्टी का पात्र रख कर काजल पाडले फिर उस काजल को दोनों वक्त आंखों में लगाया करे खटाई और वादी से परेज करे॥

नुकसा सब प्रकार की
सुजाक का

कुलफा के वीज· पोस्त के वीज· सफेद काकडी के वीजों की मींगी· तरबूज के वीजों की मीगी· ये सब पंद्रह पंद्रह माशे ले· और छोटा गोपरू· बबूल का गोंद· कतीरा· ये छै छै माशे ले इन सब को ईशब गोल के रस में पीस कर तीन-माशे की गोली बनाले· फिर एक गोली नित्य ग्यारह दिन तक सेवन करे तो सब प्रकार की सोज़ाक जाय॥

अथवा

पथिया घांसे के छोटे पेड को जला कर उसकी राख-में कतीरा का पानी मिला कर चने के बराबर गोली बनाले और गुल खेरा को रात्रि को भिगोदे सवेरे ही मल कर छानले फिर पहिलें उस गोली को खाकर ऊपर से इस रस को पीवे तो सब प्रकार की सोजाक जाय॥

अथवा

हलदी और आंमले दोनों बराबर ले चूर्ण करे इसकी बराबर खांड मिला कर एक तोला नित्य पानी के साथ फांके तो आठ दिन में सोजाक जाय

अथवा

सफेद राल को पीस कर उसमें बराबर की मिश्री मिला कर नौ माशे नित्य खाय तो सोजाक जाय और पीव निकलना बंद होय

अथवा

ढाक की कोंपल· सूखे ढाक का गोंद· ढाक की छाल· ढाक के फूल· इन सब को कूट छान कर बराबर की खांड मिला कर इसमें से ३॥। माशे कच्चे दूध के साथ खाय तो सब प्रकार की सोजाक और पीव निकलना बंद होय·

अथवा

मेहदी के पत्ते आमले· जीरा सफेद· धनियां गोखरू· ये सब औषधि एक एक तोले लेकर जब कुट करे फिर इस्मे से एक तोले रात्रि को पानी में भिगोदे प्रात काल मल छान के और तीन माशे कतीरा पीस कर पीछे इस्में एक तोला खांड मिला कर पीवे दिन ७ तो सोजाक जाक

नुस्खा

धाय हूली का काढा कर पीये तो सोजाक जाय

अथवा

कलंगा के वीज ६ माशे लेकर आध सेर दूध में भिगो कर राति को ओस में धर राखे फिर प्रातकाल छान कर उस्में थोडी खांड मिला कर पिये-परंतु कलंगा के वीजों को पीस कर भिजो वे तो सब प्रकार की सोजाक जाय

अथवा

वबूल की कोंपल गोखरू एक एक तोला लेकर इन का रस निकाल कर थोडा वूरा मिला कर पीवे तौ सब प्रकार की सोजाक जाय

इतिश्री जरांह्नी प्रकार नाम ग्रंथे
रंगीलाल संग्रहीते सोजाक
विरचितं सम्पूर्णम्

अथ तृतीय प्रकार

अथ जिर्यान अर्थात् प्रमेह
का यत्न

जानना चाहिये कि ये रोग किसी को सोजाक के कारण से और किसी को आतशक के कारण से होता है जब चिकित्सा करी जाती है तब आराम हो जाता है परंतु जड से वडी कठि-

न से आराम होता है

जो प्रमेह सोजाक के कारण से हो उसकी

चिकित्सा

खरबूजे के बीजों की मींगी तीन तोले खीरे के बीजों की मींगी डेढ तोले घीया के बीजों की मींगी· पिटकव्वा· अजवायन खुरासानी· बंशलोचन· इसपंद के बीज· कुलफे के बीज· गेहूं का सत· बादाम की मींगी· कतीरा· मुलहठी का सत· पोस्त के दाने गेरू अजमोद· ये सब दवा सात सात माशे ले फिर इन सब को महीन पीस छान रक्खे· फिर बीह दाने सात माशे लेकर उस्का लुआब निकाल कर उस पिसी हुई दवा में मिला कर जंगली बरके प्रमाण गोली बनावे और छै माशे गोखरू और छै माशे सूखा धनियां कूट कर पाव सेर जल में रात्रि को भिगो दे· फिर प्रात काल इस गोली को खाकर ऊपर से इस नितरे हुए जल को पीवे परंतु गोली को दांतों से न लगावे साबत ही निगल जावे तो प्रमेह जाय खटाई बादी लाल मिर्च· का परहेज करे॥

अथवा

अलसी पाव सेर· बंशलोचन चार तोले इस

व गोल· सेलषडी· इन सब को महीन पीस बराव
रकी खांड मिला कर एक हथेली भर नित्य स
वेरेही खाकर ऊपर से पाव भर गौ का दूध पी
वेतो प्रमेह जाय परंतु गुड़· खटाई· तेल इन से
परहेज करना॥
और जब ये रोग सुजाक के कारण से होता है
तो उस्की परीक्षा येहै कि लिंग के छिद्रमें से पी
व निकलतीहै और प्रमेह में वीर्य बहुत पतला
होकर बह्या करता है और ये प्रमेह तीन प्रकार
का होता है॥
एक तो यह कि सर्दी पाकर वीर्य पानी के समा
न हो कर बहा करता है इस प्रमेह वाले को ये
दवा देनी चाहिये॥

दवा

वरगद की डाढी पाव सेर लेकर इस्को वरगद
ही के पाव सेर दूध में भिगो कर छाया में सु
खावे और बबूल का गोंद सालब मिश्री सका
कुल मिश्री ये सब दोदो तोले ले और मूसली
स्याह· मूशली सफेद ये दोनों पांच पांच तोले
इन सब को कूट छान कर बराबर की कच्ची षांड
मिलाकर एक तोले नित्य सवेरे खाकर ऊपर से
पाव भर गौ का दूध पीवे और खटाई तथा तेल

वस्तुओं से परहेज करेतो सात दिन में निश्चयआ राम होय ॥

और दूसरा प्रमेह यह है कि गरमी पाकर वीर्य पिगल कर पीला पन लिये हुए वहता है इस रोग वाले को ये दवा उचित है ॥

दवा

ववूल की कच्ची फली सेमर के कच्चे फूल ढा क की कोमल कोमल कोंपल छोटी छोटी- अमियों की कैरी मुंडी· कच्चे अंजीर· अनार की मुहमुंदी कली· जावित्री· ध ची ये स व औषधि एक एक तोले ले और सब को महीन पीस कर सब से आधी कच्ची खांड मि ला कर एक तोले नित्य सबेरे ही गौके दूध के संग खाय तो प्रमेह जाय ॥

तीसरे यह कि वात पित के विकार से प्रमेह होजा ताहै उसके वास्ते ये दवा दे

दवा

उर्द का आधा आध सेर· इमली के बीजों का चूर्ण आध सेर सिलखडी तीन तोले इन सब को पीस छान कर इसमें तीन पाव कच्ची खांड मिला कर पांच तोले नित्य प्रात काल के समय खाय ऊपर पाव भर गौका दूध पीवे तो सात दिनमें प्रमेह जाय ॥

और कभी कभी रुधिर विकार से भी प्रमेह हो जाता है इस्में बासलीक फस्त खोले और इन्द्री जुला व देकर ये दवा दे

दवा

भुने चने का चून पाव सेर· शीतल चीनी एक तो ले सफेद जीरा छे मासे· शकरती गाल छे माशे इन सब को कूट छान कर इस्में तीन तोले कच्ची षांड मिला कर सवेरे ही चार तोले नित्य फांके ऊ पर से गौका दूध पाव भर पीवे और यथो चित पर हेज करे और जब आद मी के सोजाक पैदा होता है उस वक्त बहुत से मनुष्य औषधियों की बत्ती बनाकर इन्द्री के छिद्र में चला देते हैं इस कारण करिके इन्द्री का छिद्र चौडा होजा ताहै इसको बिंदु कुशाद कहते हैं इस रोगवा ले को ये दवा दे॥

बिंदुकुशादकी चिकित्सा

गौका घृत दो तोले रस कपूर· सफेदा काशगरी· शोलषडी· ये दवा एक एक माशे नीला थोथा एक रत्ती पहिलें घृत को खूब धोवे फिर सब- औषधि यों को पीस छान कर घृत में मिला कर मरहम बनाले और रुई की महीन बत्ती पर म रहमको लपेटकर इंद्रीकोछिद्र में धरै तौ आराम हो॥

आतशक के कारण से हुआ जो प्रमेह उसकी चिकित्सा

जो आतशक के कारण से प्रमेह होय तो उसकी यह परीक्षा है कि इन्द्री के मुष पर एक छोटा सा घाव होता है और वीर्य भी पतला सुर्खी लिये हुए बहता है क्यों कि एक तो प्रकृति की गर्मी दूसरे आतशक की गरमी तीसरे उन दवाईयों की गरमी जो आतशक में दीनी गई इनने दोषों के मिलने से प्रमेह रोग होता है इस के वास्ते ये दवा देनी योग्य हैं॥

दवा

अकरकरा· सुपारी के फूल· मूसली सफेद· मौ फली· मींठे इन्द्रजो· गोषरू बडे गिलोय सत· कौंच के बीज· उटंगन के बीज· अजवायन· अज मोद· शीतल चीनी· कुलीजन· शीरंजान मी ठा· सालव मिश्री· सका कुल मिश्री· अलसी· सतावर· तबाशीर· बडी इलायची के बीज· द म्मुल अषवेन· ये सब दवा एक एक तोले ले· सब को कूट छान कर सात तोले बूरा मिलाकर एक तोले नित्य प्रात समय खाय ऊपर से पाव भर गौ का दूध पीवे तो ग्यारह दिन में प्रमेह निश्च य जड मूल से जाय ये नुकसा निहायत उमदा है॥

और जो वीर्य स्याही लिये हुए बहता हो तो उस्के वास्ते ऐसी दवा देनी चाहिये जो प्रमेह और आत शक को गुण दायक हो

नुकसा प्रमेह

अकरकरा गुञ्ज राती· हुल हुल के बीज· गोष रू छोटे· गोषरू बड़े· सुपारी के फूल· स्याह मूश ली· सफेद मूशली· सेमर का मूसला· मीठ इ न्द्रजो· गिलोय सत· लिसोड़े· कौंच के बीज उटं गन के बीज लाल मखाने शीतल चीनी मीठा- और जान ये सब दवा एक एक तोले तज कलमी बिजौरे का सत पठानी लोध ये नौ नौ माशे इ न सब को कूट छान कर सब से आधा बूरा मि ला कर एक तोले नित्य गौ के दूध के संग प्रातः स मय खाय तो प्रमेह जाय और खटाई आदि से परहेज करना॥

और एक प्रमेह लाल मिर्चे और खटाई औ र गरम अहार आदि के अधिक खाने से उत्पन्न होती है उस्के वास्ते ये दवा देनी योग्य है

दवा

दोनों मूसली पांच तोले कलौंजी स्याह पांच तोले सब को कूट छान कर बराबर का बूरा मि ला कर एक तोले पाव भर गौ के दूध के संग प्रात काल खाया करै॥

तो प्रमेह जाय॥

अथवा

कुदरू गोंद पंद्रह तोले लेकर पीस छान कर इस्में दश तोले कच्ची षांड मिला कर नित्य सवेरे ही एक तोले गो के पाव भर दूध के संग खाय तो यह प्रमेह रोग जाय॥

इति श्री जरीही प्रकार नाम ग्रंथे
पंडित रंगीलाल संग्रहीते
प्रथम भागे प्रमेह
चिकित्सा यां तृ
तीय प्रकार

अथ चतुर्थ प्रकार

जिस मनुष्य का वीर्य पतला होगया
हो उस की चिकित्सा॥

मूशली सफेद· खरबूजे की गिरी· पांच पांच तोले पेठे आध सेर· घी ग्वार का गूदा आध पाव कबाब चीनी छे माशे· इन सब को पीस कर एक सेर कंद की चाशनी करिके उस्में सब दवा मिला कर माजून बनाले फिर इस्में से एक तोला नित्य खाय तो वीर्य गाढा होय

अथवा

एक सेर गाजरों को छील कर घी में भून ले फिर

आध सेर कंद मिला कर हलुआ बनाले फिर पां च तोले नित्य खाय तो वीर्य गाढा हो और ताक त भी अधिक होय॥

अथवा

पाव सेर छुहारे गाय के दूध में पका कर पीस ले और पाव सेर गेहूं का निसासता और पाव सेर चने का वेसन इन को भूनले फिर तीन- पाव खांड और आध सेर घी डाल के सब का हलुआ बनाले फिर इस्में बादाम पाव सेर· पिस्ता पाव सेर· चिलगोजा पाव सेर· अखरो ट की की गिरी आध पाव सब को बारीक करिके हलुआ में मिलादें फिर इस्में से चार तोले नित्य खाय तो बहुत ताकत करता है· और वीर्य को गाढा करता है

अथवा

मीठे आमों का रस तीन सेर· खांड सफेद एक सेर· गौ का घी आध सेर· गौ का दूध एक शे र शहत पाव सेर· पहले इन नीचे लिखी दवा ओं को पीस कर तैयार करले बहमन सफेद बहमन सुर्ख· सोंठ· सेमर का मूशला· एक एक तोले· बादाम की गिरी चार तोले सालब मिश्री चार तोले· सिंघाडा चार तोले पीपल छै माशे· खोलंजान छै माशे पिस्ता चार तो-

ले· बादाम· पिस्ता· सिंघाड़े· पहिलें पीस कर घीमें भूनले फिर आम का रस और खांड और शहत और दूध इन को कली के बरतन में मंदी आंच पर पकावे फिर सब चीज़ें डाल कर हलुआ की तौर भूनले फिर इस्में से दो तोले नित्य खाय तो वीर्य अधिक पैदा होय और पतले से-गाढा हो जाता है॥

अथवा

बबूल की छाल और फली· और गोंद और कोंपल इन सब को बराबर ले कूट छान कर सब की बराबर खांड मिला कर एक तोले रोज खाय तो वीर्य गाढा होय

अथवा

बरगद के फल को सुखा कर पीस ले फिर इस्में से अनुमान माफिक गौ के पाव भर दूध के साथ फांके तो वीर्य गाढा हो

अथवा

सालब मिश्री· दोनों मूशली· सेमर का मूसरा· काम राज· सोंठ· ये सब डेढ डेढ तोले सलजम के बीज सोया के बीज· गाजर के बीज· प्याज के बीज· मिर्च पीपल ये सब आठ आठ माशे शहत पाव सेर· लाल बूरा पाव सेर इन सबको एक त्र करि सहत बूरे की चासनी में मिला—

कर माजून घनाले फिर इसमें से एक तोले नित्य खाय और खटाई का परहेज करै तौ ये मजून इन्द्री को प्रवल करे और बिगडे हुए वीर्य को सुधारती है॥

अथवा

सालव मिश्री पांच तोले· सकाकुल मिश्री-तीन तोले· अकरकरा· कुलीजन· समन्दर सोष· मिलाये की मींगी· असगंध एक एक तोले पीपल· मल्लेगी हालम के बीज· जायफल· सोंठ· दोनों वहमन· दोनों तोदरी· छै छै माशे· छिले हुए सफेद तिल कोंच के बीजों की मींगी· गाजर के बीज· एक एक तोले· जावित्री· केशर· तीन तीन· माशे· सब की बराबर कंदस्ने और तिगुने सहत में सब मिलाकर माजून बनावे और छै माशे· नित्य खाय तो वीर्य गाढा होय

अथवा

रेगमाही· इन्द्रजो· सफेद पोस्त के दाने नरकचूर· सफेद· चंदन· नारियल की गिरी· बादाम की मींगी· पिस्ता· चिलगो जा की मींगी· अखरोट की मींगी· मुनक्का काले तिल· छिले हुए ये सब दवा दो दो तोले· प्याज के बीज· सलजम के-बीज· कोंच के बीजों की मींगी· हाल

म के बीज· माई असबंद के बीज गाजर के बी
ज· मलगी· नागर मोथा· अगर· तेजपाते· बि
जोरे का छिलका· चीता· सोया के बीज· मू·
ली के बीज· दोनों तोदरी· दोनों मूशली· ये
सब दवा एक एक तोले· मिला जीत अकर
करा· लोंग· जावित्री· जायफल· काली मिर्चें· दा
लचीनी· ये सब दवा नौ नौ माशे· सहत और स
फेद बूरा सब से दूना लेकर पाक बनावे फिर
इस्में से एक तोले नित्य खाय इस माजून के
समान इन्द्री को बल वान करने में और वीर्य
को गाढ़ा करने में दूसरी कोई नहीं है

अथ नपुंसकता का

यत्न

जानना चाहिये कि कामदेव की प्रबलता कई
प्रकार से जाती रहती है एक तो यह कि मनुष्य
हथ रस करिके नपुंसक बन बैठता है और ह
थरस के भी कई भेद हैं एक तो यह कि जाड़े
के दिनों में सोते समय रात्रि को यह काम
करते हैं यह तो साध्य है इस की चिकि
त्सा जलदी हो सक्ती है और दूसरा यह कि बा
जे मनुष्य पाखाने में या किसी मैदान में
हथरस करते हैं एक तो हथरस करना ही
बुरा है दूसरे वे मूर्ष इस काम को करिके उ—

सोवकूपानीसेधो डालतेहैं गरमनसों परजोसीत
ल पानी पड़ा और ऊपर से हवा लगी इस सवव से न
में नष्ट होजाती हैं इस्पर भी कोई कोई मूर्ष नि-
त्य नियम वांध कर हथरस किया करते है और-
वाजे आठवे दिन करते हैं जव तक दो चार व
र्ष तरुण ताका वल रहा तव तक किया करे
और कभी इस दुष्ट कर्म से नहीं रुकते अंत
को वल हीन हो कर पछिताते हैं और हरए
क हकीम वो जर्राह से औषधि पूछते हैं तिस
न पुंसक को ये दवा देनी योग्य है

दवा

हाथीदांत का चूरा २ तोले मछली के दांतों
का चूरा एक तोला लोंग आठ माशे जायफ
ल गुजराती दो नग नरगिस की जड एक नग
इन सव को महीन पीस कर दो पोटली वनावे
और आध पाव भेड का दूध हांडी में भर कर औ
टावे जव उस में से भाप उठने लगे तव उस भां
प पर उन पोटलीयों को गरम करिके पेड़ू जांघ
और लिंग को सेके फिर इन्द्री के ऊपर वंगला
पान वांध देवे और पानी न लगने दे फिर इस
औषधि को खिलावे॥

दवा खाने की

खिलगोजे की मींगी सफेद पोस्त के दाने थ्या

ममूशली· कुलीजन· लोंग फूलदार· मालकांगनी जाविची· भो फली· नाल मखाने· बीजबंद· सिता वर· ब्रह्मदंडी· तज· ये सब दवा चार चार तोले पिटकव्वा नौ माशे· इन सब को महीन पीसक र घृत में चिकना करके आध सेर सहत की चाशनी में मिलावे फिर इस्में से दोदो माशे दो नो समय खाया करे तो चालीस दिन में नपुं शकता जाय॥

अथवा

सफेद कनेर की जड· गुजराती जाय फल– अफीम छोटी इलायची· सम्मुल की जड– पीपला मूल· छै छै माशे· इन सब को मही न पीस कर एक तोले मीठे तेल में मिलाकर खूब रगडे जब मल्हम के सदृश हो जाय तब इ द्री पर लगा कर ऊपर से बंगला पान गरम करिके बांधे और जो इस के कारण से प्रमेह हो जाय तो ये दवा दे

दवा

स्याह मूशली· नागोरी असगंध· धावे के फूल भुने चने· सोंठ· जरद के बीज· केथरा· उ टंगन के बीज· पिस्ते के फूल· ताल मखाने ये सब एक एक तोले इन सब को महीन क रके बराबर का बूरा मिलाकर इस्में से एक तोले

नित्य खावै ऊपर से पाव भर गौ का दूध पीवे खटाई बादी से परहेज करे॥

और जो हथरस करने से इन्द्री टेढ़ी हो गई होय तो ये दवा करे॥

दवा

अफीम तीन माशे· जायफल· अकरकरा· दालचीनी· ये दवा पांच पांच माशे· प्याज नर्गिस· १ तोले सफेद कनेर की जड़ का छिलका १॥ तोले सब को दो पहर तक मदिरा में घोट कर इन्द्री पर लगावे तथा लंबी बत्ती कर राखे और समय पर मदिरा में घिस कर लगावे तो इन्द्री का टेढ़ा पन जाय॥

और बाजे मनुष्य लौंडे बाजी करने से नपुंसक हो जाते हैं और स्त्री से संभोग नहीं कर सकते उन की स्त्रीयों से अन्य पुरुष आनंद प्राप्ति करते हैं और आप जर्राहों से दवाई पूछते फिरते हैं ऐसे लौंडे बाज मनुष्य की चिकित्सा करनी नहीं चाहिये क्योंकि इस की चिकित्सा करने से जब कामोद्दीपन होगा तो फिर भी लौंडे बाजी करेगा- और जो इस की चिकित्सा करनी ही अवश्य हो तो प्रथम ऐसी दवा लगावे जिस्से इन्द्री की खाल उड़ जावे क्यों कि जब कष्ट से आराम-

होगा तो फिर कभी ऐसा काम न करेगा

नुसखा पही

संखिया · जमालगोटा · काले तिल · आक का दूध ये सब एक एक माशे ले कर महीन पीस थोडे से पानी में मिला कर इन्द्री पर लेप करे ऊपर से बंगला पान गरम करिके बांध देवे जब छाला पड जाय तब घी धोकर लगावे अथवा यह रोगन मर्दन करे॥

रोगन की विधि

बीर बहोटी · अकरकरा · सूखे कैंचुए · घोडे का नख · कुलीजन · एक एक तोले लेकर सब को जो कुट करके आतशी सीसी में भरकर पाताल यंत्र द्वारा खींच कर एक बूंद इन्द्री पर लगा कर ऊपर से बंगला पान बांध देवे तो चालीस दिन में आराम हो जायगा॥

अथवा

जायफल · जावित्री · छबीला · मनुष्य के कान का मैल ये सब छै छै माशे गधे के अंड कोशों का रुधिर चार तोले इन सब को दुआतशा सराव में यहां ताईं घोटे जो पाव भर सराव शोष जाय तब इस का इन्द्री पर मर्दन करे

अथवा

कड़वे घीया की मींगी दो तोले सफेद कनेर मिठी

अकरकरा छै छै माशे· तेजवल· पीपरा मूल·
तीन तीन माशे· इन सव को गाय के घृत में ती
न दिन तक घोटे और इन्द्री पर लगा कर ऊपर से
पान बांधे तो न पुंशकता जाय॥

अथवा

जमाल गोटे को गधे की लीद में औटा के सफेद चि
रमिठी· कुचला की राख· अकरकरा· सफेद क
नेर की जड़ का छिलका दो दो तोले सव को पी
स कर गौ के दूध में इतना घोटे जो तीन सेर दूध
को शोष जाय पीछे इसे चौरा की तरह खीचे फिर
इस का लेप इन्द्री पर सुपारी वचा के करे ऊपर से
पान वांधे तो नपुंशकता जाय॥

अथवा

सफेद कनेर की जड़· लाल कनेर की जड़· इन
दोनो का छिलका डेढ़ डेढ़ तोले वडा जाय फल·
एक नग· अफीम नौ माशे· सवका चूरन करके
घड़ गोह की चरवी दो तोले मिला के एक दिन घोट
कर गोली वना राखे शराव दुआतशी में घिस
के सव इन्द्री पर लगावे और ऊपर से पान वांधे
परंतु इस दवा को इन्द्री की सुपारी को वचा
कर लगावे॥

अथवा

सफेद कनेर का छिलका आध पाव· सफेद चिरमि

डी आधपाव · कड़वाकूटदोतोले · जमालगोटा दो तोले इन सबका चूरन कर २५ सेर गौके दूध में मिला कर पकावे फिर इसका दही जमा कर प्रातःकाल चार सेर पानी मिला कर इस्को रई से बिलो के माषन निकाले और इस्की मठा को जमीन में गाड़ दे क्योंकि ये विष के समान है और माषन को ताय कर रखे फिर इस्में से इन्द्री पर लेप करे ऊपर से पान बांधे और एक रती के प्रमाण पान में धर के खाय तो पंद्रह दिन में आराम हो जायगा ॥

और जो मनुष्य गुदा भंजन कराने से नपुंशक हुआ होय उस्का यत्न ॥

और जो किसी मनुष्य ने बालक पन में गुदा भंजन कराई होय और [illegible] का मल बाई होय इसी कारण से नपुंशक हुआ होय तो उस्की चिकित्सा नहीं हो सक्ती और जो केवल गुदा भंजन ही कराया होय तो इस्की दवाई इस रीत से करे कि पहिले उस नुकसे से सेक करे जिस्में हाथी दांत का चूरा लिखा है और इस पुस्तक के ४६ के पत्र में लिख आय है फिर ये दवा षिलावे

दवा

गेहूं का मेदा पांच तोले · बेसन सात तोले · इन को

पांच तोले घीमें भूनले पीछे बादाम की मींगी पिस्ते चिलगोजे की मींगी नारियल की गिरी खूबानी छै छै माशे सालब मिश्री एक तोले लाल बहमन सफेद बहमन तीन तीन माशे सकाकुल छै माशे अंबर छै माशे असहब कलमी दार चीनी प्रत्येक तीन माशे इन सब को कूट पीस कर बेसन मेदा में मिलावै और दश तोले मिश्री और पांच तोले सहत इन की दश तोले गुलाब जलमें चाशनी करिके इसमें - सब दवा मिला कर माजून बनाले फिर इसमें से दो तोले नित्य खाय और खटाई बादी से परहेज करै ॥

और एक नपुंसक इस प्रकार से भी होता है कि बहुत से मनुष्य यौवन अवस्था में स्त्री संभोग करते हैं उस संभोग करते समय घरमें कोई आगया हो उस वक्त संभोग करते से उठ खडा हो और वीर्य स्खलित न हुआ हो और - फिर थोडी देर के बाद संभोग करने लगे इसमें इन्द्री को हवा लगने से इन्द्री की नसें ढीली हो जाती हैं ऐसे नपुंशक को ये दवा देवे

दवा

ग्वार पाठे का रस १० तोले मूंग का आटा १० तोले इन दोनो को पृथक २ घृत में भूने फिर छोटे बडे -

गोषरू· पिस्ता· ताल मषाने· बादाम की मींगी· ये सब दोदो तोले कूट छान कर मिलावे और पाव भर कंद की चाशनी में सब को मिला कर माजून बनाले फिर दो तोले नित्य खाय और इंद्री पर ये दवा लगावे॥

दवा

अकर करा· सफेद कनेर की जड़· माल कांगनी· सोहन मारवी· काले तिल· सिंगरफ· हरताल· नवकिया· सफेद चिरमिठी· मूली के बीज· शल्जम के बीज· बार बहोटी· शीतल चीनी· सिंह की चरबी· ये सब दवा एक एक तोले लेकर सब को जो कुट करके आतसी सीसी में भर कर पाताल यंत्र के द्वारा तेल निकाले और राति को सोने समय एक बूंद इन्द्री पर मल कर ऊपर बंगला पान गरम करिके बांध देवे तो २१ दिन में नपुंशकता जाता रहेगा॥

अथवा

अकर करा· लौंग· केंचुरा· आस बच· ये सब एक एक तोले बीर बहोटी चार माशे· मुरदासंग ४ माशे· रोहू मछली का पिता· ४ नग· सिंगरफ ४ माशे· जमालगोटा ४ माशे· सांडे की चरबी तीन तोले मोम दो तोले· पारा १ तोले इन सब को मिला के

खूब रगडे जब मल्हम के सदृश होजाय तो राति
को गरम करिके लिंग पर लेप करे और ऊपर बंग
ला पान गरम करिके बांधे पानी न लगावे

अथवा

धतूरे की जड का छिलका· सफेद कनेर की जड
का छिलका· आक की जड की छाल· अकरक
रा गुजराती· वीर बहोटी· गौका दूध ये सब एक
एक तोले ले पीस कर दो तोले तिल के तेल में
पकावे जब दवा जलजाय तब तेल को छान ले फि
र लिंग पर मर्दन करे ऊपर बंगला पान गरम क
रके बांधे और पानी न लगने दे

और एक नपुंशक इस प्रकार से भी होता है
कि बहुत से मनुष्य स्त्री को इन्द्री पर बिठा के
खडे हो जाते हैं और बहुत से मनुष्य आप नीचे
हो जाते हैं और स्त्री को उपर रख कर काम वि
लास करते हैं इस प्रकार संभोग करने से
भी मनुष्य नपुंशक होजाता है क्यों कि लिं
ग में हड्डी नहीं है न जाने मनुष्य क्या समझ
कर ऐसा अयोग्य काम करते हैं ऐसी बातें
मनुष्यों की देख कर विदित हुआ कि मनु
ष्य युवा वस्था में काम देव की प्रबलता से
अंधा हो जाता है ऐसे नपुंसक के वास्ते ये
दवा दे॥

बादाम की मींगी ११ नग. ताजे पानी में पीस कर दो तोले सहत मिला कर ग्यारह दिन तक पीवे तो नपुंशकता जाय॥

अथवा

सफेद कनेर की जड का छिलका दो माशे माल कांगनी दो माशे. कोंच के बीज. सफेद प्याज अकर करा. असवंद. ये सब चौदह चौदह माशे इन सब को जो कुट करिके दश तोले तिल के तेल में मिला कर औटावे जब दवा जल जाय तब छान ले फिर इसमें से थोडा सा रात को इन्द्री पर मल कर ऊपर से बंगला पान गरम करके बांधे॥

और एक नपुंशक जन्म से ही होता है उस्के कई भेद हैं एक तो यह कि मनुष्य माता के गर्भ से जब उत्पन्न होता है तो उस का लिंग स्थान सब सपाट होता है यानी किसी प्रकार का कुछ भी चिन्ह नहीं होता उस्को मदनी ख्वाजे सराक हते हैं और दूसरा यह कि कुछ कुछ लिंग होता है और उस्को स्त्री संग की इच्छा भी होती है और उस्के संतान भी होती है॥

और तीसरा यह कि लिंग तो पूरा होता है परंतु उस्में तेजी नहीं होती एसे तीनों की चिकित्सा नहीं होती है

चौथे यह कि लिंग केवल मूतने के समय चला
यमान होता है और फिर नहीं चलाय मान हो
ता ऐसे नपुंशक की ये दवा करे

दवा सेक

बीर बहोटी· सूखे केंचुरा· नागोरी असगंध· ह
लदी· आमा हलदी· भुने चने· ये सब छे छे मा
शे इन सब को महीन पीस कर रोगन गुल में
चिकना कर दो पोटली बनावे और किसी
पात्र को आंच पर रख कर उस्पर पोटली गरम
कर जाय· पेडू और लिंग को खूब सेके और फि
र पोटली यों की दवा लिंग पर बांधे॥

अथवा

अकरकरा दो माशे· बीर बहोटी दो माशे·
लोंग नग २० बकरे की गरदन का मांस दश
तोले इन सब को कूट पीस कर लिंग के पर
माण खोली बनावे और उस्को भून कर लिं
गपर चढावे और पानी न लगावे॥

अथवा

सिंह की चरबी· मालकांगनी· अकरकरा·
सोंठ· जावित्री· कुचला· तज· लोहवान· कोडि
या· लोंग· मीठा तेलिया· हरताल तबकिया·
जमालगोटा· पारा· हाथी दांत का चूरा· गंधक आ

मलासार· कटेरी· सफेद चिरमिठी· केंचुआ जायफ
ल गुजराती· सफेद कनेर की जड अजवायन
खुरासानी· प्याज के बीज· असपंद सफेद
सखिया· रेंडी के बीजों की मींगी कालीजी
री· ये सब एक एक तोले मुरगी के अंडे की
जरदी पांच नग इन को कूट कर आतशी
शी शी में भर पाताल यंत्र द्वारा तेल निकाल
ले फिर इस्मे से एक बूंद नित्य लिंग पर मर्द
न करे और ऊपर से बंगला पान गरम कर
के बांधे और पानी नहीं लगने दे और
और खटाई तथा बातल वस्तुओं से परहेज
करे चालीस दिन तक इसी प्रकार सेवन कर
ते रहें और षाने को ये दवा है

दवा

ग्वार पाठे का रस· गेहूं की मेदा· विनौले की मीं
गी· घृत· कंद· ये सब एक एक सेर पहिले ती
नों को पृथक् पृथक् घी में भूने फिर कंद की
चासनी करिके गोषरू एक छटांक जायफ
ल· पिस्ता· खोपड़ा· चिलगोजा की मीं-
गी अषरोट की मींगी· ये सब पाव सेर इन
को कूट कर उस्मे मिला कर हलुआ बना पां
च तोले नित्य षाय तो निश्चे नपुंशक
ता जाय ॥

और जो किसी मनुष्य नें अपनी स्त्री तथा वेश्या से विषय बहुत किया हो इस सबब से उस का काम देव कम ज़ोर हो गया हो तो उस्को ये माजून खवाना चाहिये ॥

माजून

कुलीजन दो तोले सोंठ २ तोले· जायफल रूमी मस्तगी· दाल चीनी· लौंग· नागर मोथा· अगर· ये सब एक एक तोले ले महीन पीस छान कर तिगुने बूरे में चासनी कर माजून बना ले फिर इस्मे से छै माशे नित्य खाय तो कामदीपन बहुत होय ॥

और जो वीर्य पतला पड़जाने के कारण से काम देव कम हो गया होतो ये दवा करे

दवा

ताल मखाने आध पाव· ईशब गोल आध पाव· इनको बरगद के दूध में भिजो कर छाया में सुखाले फिर चालीस छुहारे की गुठली निकाल कर उनमें उपर लिखी दवा भर कर गौ के सेर भर दूध में औटावे जब खोय के सदृश हो जाय तब उतार कर चिकने बासन में रख छोड़े फिर एक छुहारा नित्य ४० दिन तक खाय और दूध रोटी भोजन करे और लिंग पर ये दवाई लगाया करे ॥

दवा लगाने की

अकर करीदघनी· लौंग फूलदार· वीरबहोटी निर्विसी· सर्पके केंचुए·सब एक एक तोले ले इन सब को पाव सेर मीठे तेल में मिला कर मिट्टी की हांडी में भरकर उस्का मुख बंद कर चूल्हे मेंगढा खोद कर उस्में इस हांडी को दाब कर ऊपर से सात दिन बराबर राति दिन आग जलावे फिर आठमें दिन निकाले और इस्में से एक बूंद लिंग पर मले ऊपर बंगला पान गरम करके बांधे और पानी न लगने दें॥

इतिश्री जर्राही प्रकारनाम ग्रंथे नपुंशक भेद चिकित्सानाम चतुर्थः प्रकारः

अथ पंचम प्रकारः

इस प्रकार में बाजी करण के वास्ते बहुत अच्छी २ आजमाई हुई दवा लिखी है परन्तु बहुत से मनुष्य यों कहते हैं कि ये दवा झूंठी हैं सो उनका कहना सत्य है क्यों कि ये कसूर हकीम लोगों का तथा वैद्य लोगों का है क्यों कि ये लोग अच्छी तरह से प्रकृति का निश्चै नहीं करते इसी सबब से उन लोगों की दवा फायदा नहीं करती क्योंकि दवा जब गुण करेगी तब दवा की प्रकृति और रोगी की प्रकृति एक मिल जावेगी· इसी कारण पहिले बुद्धिवान हकीम और वैद्यों ने एक एक रोगी पर

कई कैई दवा लिखी हैं ये बात प्रत्यक्ष है कि
जो प्रकृति भेद न होता तो एक एक रोग के वास्ते
एक ही दवा लिषी जाती काहे को हकीम लोग अ
पनी अपनी किताबों में अपनी अपनी समझ
के नुकसे लिखते बस हमारा इस बात के लि
खने से प्रयोऽजन येहे कि वैद्य हो या हकीम-
या जर्राह हो पहले रोगी की प्रकृति को देषे-
फिर उसी के माफिक दवा देवे जो मनुष्य इस
प्रकार से रोगी का इलाज करेंगे तो ये दवा स
ब राम बाण के समान काम देंगी और जो विना
विचारे रोगी को दवा देंगे उनके वास्ते ये दृष्टां
त है कि लगा तो तीर नहीं तुक्का ही सही अ
र्थात् जो दवाई प्रकृति के माफिक बैठ गई
तो आराम हो गया तो कहने लगे कि ये दवा-
सही है और जो प्रकृति के माफिक दवा न मि
ली तो उसने कुछ फायदा न किया तो कहने
लगे कि ये दवा झूठी है परन्तु वे मूरख दवा-
को तो दोष देते हैं परंतु अपनी मूर्षता को दो
ष नहीं देते इस लियें हकीम तथा वैद्य या ज
र्राह को मुनासिब है कि पहलें प्रकृति को
पाहें चान कर रोगी का इलाज करेंगे तो उ
नको मेरी लिषी दवाओं का गुण मालूम हो
गा और फायदा उठावें गे॥

अथ वाजी करणम्

दवा १

सिंगरफ एक तोले• सुहागा एक तोले• पारा छै माशे• इन तीनो को महीन पीस कर मुर्गी के अंडे की सफेदी में राखे फिर ढाई सेर ढाक की राख ले कर एक मिट्टी की हांडी में आधी राख भर कर उस अंडे को उस राख पर रख कर आधी राख को ऊपर से रखदे और हांडी का मुख बंद कर कपरोटी करके सुखादे जब सूख जाय तब चूल्हे पर रख कर ढाक की लकड़ी की चार पहर आंच उसके नीचे जलावे फिर सीतल हो जाय तब सिंगरफ को निकाल ले फिर इस्मे से एक रती पान में धरके खाय तो काम विलास अत्यंत करे परंतु इस दवा को जाड़ो में खाना योग्य है

दवा २

सिंगरफ• कपूर• लोंप• अफीम• उटंगन के बीज इन को महीन पीस कर कागजी नीबू के रस में मिला कर मूंग के प्रमाण गोली बनाले फिर एक गोली खाकर ऊपर से पाव भर गो का दूध पीकर काम विलास करे तो स्तंभन होय ये दवा अजमाई है॥

दवा ३

सूखा तमाखू• और लोंग दोनों बराबर ले महीन•

पीस के सहत में मिला कर उर्द के प्रमाण गोली बनावे फिर एक गोली खा कर भोग करे॥

दवा ४

एक तोले पोस्त के डोडों को पानी में भिगो दे जब खूब भीग जाय तब उसको निंतरे जल में गेहूं का खाटा गूंद कर उस्का एक गोला बना कर गरम चूल्हे में दवा दे जब सिक कर लाल हो जावे तब निकाल कर कूटले फिर थोड़ा घी बूरा मिला कर भली दो बनारने जब एक पहर दिन बाकी रहे तब उसे खाय और राति को काम विलास करे तो काम देव की इतनी प्रबलता होगी कि एक स्त्री से मन तृप्ति न होगा॥

दवा ५

थूहर का दूध और गौ का दूध इन दोनों को बराबर लेके मिला कर चार पहर धूप में सुखावे फिर पाव के तलुए में लेप कर स्त्री से भोग करे पाव को धरती में न धरे॥

दवा ६

कौंच की जड़ एक पोरुए की बराबर लेके मुख में राखे जब तक मुख में रहेगी तब तक वीर्य न निकलेगा॥

दवा ७

चचूंदर का अंडा चमड़े के पत्र में धर कमर में बांध कर स्त्री संग करे जब तक पत्र कमर से न हो खु

लेगा तव वीर्य निकले॥

दवा ८

सिंगरफ· मोचरस· अफीम· ये चार २ माशे सुहागा २ माशे· इन सव को पीस कर मिरच प्रमाण गोली वनावे फिर १ गोली खाकर भोग करे तो स्तंभन होय॥

दवा ९

माजू मायन ५ माशे· घीया के बीजों की मींगी ६ माशे· इसपंद नौ माशे· भांग के बीज ५ मा· खिले चने ७ मा· भांग के वीज ५ मा· पान की वोंडी २॥ नग इन सव को पीस छान कर पान की वोंडी के रस में वेर के बराबर गोली वंधे एक गोली खाकर एक घड़ी पीछे मैथुन करे तो स्तंभन होय॥

दवा १०

खरगोस के पित्ते का रस अपने लिंग पर मर्दन करके स्त्री के काम विलास करे तो वह स्त्री उस पुरुष पर आशक्त होय॥

दवा ११

चितकबरे बिलाव के लिंग को सुखा पीस कर लिंग पर मले फिर स्त्री से भोग करे तो वो स्त्री बांदी हो जायगी

दवा १२

गधे का भेजा तेज में जला कर उसको इन्द्री पर मर्दन करे तो इन्द्री इतनी मोटी होगी कि स्त्री पर सहारी न जावेगी और रुकावट भी न

धिकहोगी॥

दवा१३

सिंह की चरबी को तिल के तेल में मिला कर इ
न्द्री पर मर्दन करे तो स्त्री भंग करने में ताकत अ
धिक होय॥

दवा१४

ऊंट के दोनों नेत्रों को भुजा पर बाध कर संभोग क
रे तो वीर्यस्तंभन होय॥
और जो कोई मनुष्य चाहे कि ये स्त्री किसी
दूसरे पुर्ष के पास न जाय तो ये तंत्र करे

दवा१५

ककरोंदे की जड कंघी इन दोनो को बराबर
लेके जल मे पीसे और इन्द्री पर लगाके स्त्री से
भोग करे तो वह स्त्री फिर दूसरे पुर्ष की चाहना
नहीं करेगी॥

दवा१६

और जो उसे खोला चाहे तो एक तोले ककरोंदे
की जड कूट कर खवावे तो फिर वह स्त्री पर
पुर्ष की चाहना करेगी॥

इति जरा ही प्रकार नाम ग्रंथे
रंगी लाल संग्रहीते वाजी
करण चिकित्सायां
पंचम प्रकारः

अथ गठिया का यत्न

ये रोग उपदंश और सोजाक और ज्वर के अंत में
अवश्य होता है उपदंश रोग में पारा भिलावा
या सिंगरफ आदि के खाने से और शरीर को
धूनी देने से अथवा सोजाक में शीतल औ
षधियों के सेवन करने से गठिया हो जाती है
और ज्वर में पसीना या किया जावे और उसमें वा
यु लग जावे तो तमाम बदन के जोड़ों में पीड़ा
हो जाती है अर्थात् दर्द हुआ करता है तो उसके
वास्ते अक्सर तेल का मर्दन करते हैं परंतु ज्वर
में तेल मलना सूजन करता है इस लिये गठि
या की चिकित्सा जब करे कि बदन में कोई
दूसरा रोग मालूम न हो तो इसकी दवा इस प्र
कार से करनी योग्य है

दवा गठिया

पहले मुर्गी के चालीस अंडों को औटावे फिर
उन की सफेदी दूर करिके जर्दी को लेवे फिर
अकरकरा दालचीनी जायफल लौंग ये सब
दवा एक एक तोले समुद्रखार एक मासे इन
सब को महीन पीस कर अंडे की जर्दी में मि
ला के एक हांडी में भर कर फिर उसमें दो तो
ले मीठा तेल छिड़क देवे और उस हांडी को
पेंदे में एक छिद्र करे फिर एक गढ़ा खोद कर

निकले हैं सो यह मनुष्य अपनी मूर्खता से उसमें
बढ़ा रहता है और गर्मी से व्याकुल होकर सि
र पर पानी डालता है जो किसी की प्रकृति निर्बल
होती है तो उसी समय बीमार हो जाता है और
अंत में उस को गठिया घेर लेती है फिर जो घो
ड़े पर चढ़ कर चलने से हाथ पांवों पर सूजन हो
जाती है ऐसी गठिया के वास्ते यह दवा है

दवा

बेद अंजीर के पत्ते खुरासानी अजवायन को
ये के बीज टेसू के फूल बाय बिडंग ये दवा
एक २ तोले सेंधा नोन खारी नोन ये छै छै मा
शे इन सब को पानी में औटा कर बफारा दे औ
र जो जोड़ों पर सूजन भी होवे बफारे के पीछे
ये औषधि मले

दवा

भुने मूंग का आटा छोटी माई बड़ी माई दो २
तोले कालीजीरी भांग सोंठ कायफल अजवायन
देशी ये दवा एक एक तोले इन सब को महीन
पीस कर मले जो मनुष्य गरम जल से स्नान क
रते हैं उन को यह रोग कम होता है और यह
रोग इस प्रकार से भी होता है कि दो चार
दिन [illegible] कि मनुष्य [illegible]
हाथ आदि [illegible]

से नीचे गिर पड़ा हो और सन्नप् पाकर मारी से वा सूरज की वायु के लगने से चोट कसक जाये और सूजी पाकर गठिया हो जाय तो उसके वाले ये दवा देवे

दवा

एक रेंडी नित्य प्रति खाया करे और इस तेल की मालिस करे

तेल की विधि

माल कांगनी दो तोले कायफल पकायन सों ठ जायफल अकरकरा लोंग माबां हलदी समुद्र खार दारु हलदी कुचला बादाम की मींगी केजा के बीज कुलीजन सिरमोर काले धतूरे का रस आख का दूध सहजने की छाल पोमा का रस हरी मकोय का रस इमली की छाल भांगरे का रस ये सब दवा एक एक तोले के दवा तेल पंद्रह तोले मीठा तेल पंद्रह तोले रेंडी का तेल पांच तोले इन सब को मिला कर औटावे जब तेल मात्र रह जाय तब छान कर सीसी में भर रखे फिर इस तेल की मालिस करे तो दर्द जाता रहेगा॥

अथवा

पहिले तिलों का तेल पाव भर गरम करे फिर उस्में मोम सफेद एक तोले बनाव की बत्ती

एक तोले माल कांगनी दो तोले सफेद संखिया छै मासे इन सब को तैल में डाल कर औटावे और खूब रखे फिर छान कर जोडों पर मालिस करे और खाने को मूंग की धोवा दाल और गेहूं की रोटी दे और मुसलमान को मांस रोटी खवावे ॥

और जो गठिया आतशक के कारण करिके हो गई हो तो पहिले विरेचन देवे फिर यह तैल मर्दन करे ॥

तैल की विधि

मदिरा दो सेर कूट दो तोले तज दो तोले सोंग दो मासे काली मिर्च पांच मासे जायफल एक मासे दरियाव का पानी एक सेर इन सब को चार पहर भिगो कर औटावे जब पकने लगे तब उसमें एक सेर कडवा तेल मिलावे और आंच कम कर देवे जब और का तेल मात्र रह जाय तब छान कर इस की मालिस करे और खाने को ये दवाई

दवा

मुरदा संग दो मासे कुंजा की मींगी सात मासे घी दो मासे सफेद कत्था छै रत्ती इन सब को महीन पीस कर गुड में मिला कर तीन गोलियां बनाले पहिले दिन

अथवा

सीरंजान· सोंफ· सोंफ की जड़ का छिलका अ
जमोद· अनेसू· ये सब दवा पांच पांच माशे·
हंस राज चार माशे· गाजवां चार माशे· बिस्नी
खोपन चार माशे· गुलाब के फूल सात माशे
बड़ी हड़ छै माशे· सुनाय मक्की सात माशे
गुलाब को गुल कंद डेढ़ तोले ले कर ओटावे
फिर इसको छान कर इसमें एक तोले गुलकं
द को घोट कर मिलाके पीवे तो दस्त होंगे दर्द क
म हो जायगा॥

और जो किसी मनुष्य के कूल्हे की हड्डी की
जड़ में और जांघ से लेके नलुआ पर्यंत दर्द हो
उसके वास्ते ये दवा देनी

दवा

मलंगी पांच माशे अनेसू पांच माशे· सोंठ
तीन माशे· अजवार की जड़ तीन माशे· मजीठ ४ मा
शे·
वीला चार माशे· शीरंजान चार माशे· कूलीदा
चार माशे· अजमोद चार माशे· मेथी चार मा
शे· सोंफ चार माशे· अंजीर का २४ दाने· इन सब
को ओटावे एक तोले अंडी का तेल मिलाकर प्रा
त समय पीवे तो इस के पीने से दस्त हों
गे और पथ्य वैद्य अपनी मत के अनुसार
देवे॥

और जो सब सरीर में बादी से दर्द होता हो तो ये दवा करनी चाहिये॥

दवा

महूआ तीन भाग॰ खाने का नमारव एक भाग॰ इन दोनों को पीस कर गरम करके जहां सरीर में दर्द होता हो वहां बांधे ये दर्द गठिया का न हीं होता है इस्को साधारण बादी का दर्द क हते हैं॥

और गठिया के वास्ते जोग राज गूगल बहुत गुण करता है और दूसरी माजून चोबचीनी भी बहुत फायदा करती है और हमने ये दोनों नुस्खे इस वास्ते नहीं लिखे क्यों कि ये दवा अम्रत सागर आदि ग्रंथो में लिखी है सो समझ कर बना लेना लेकिन इस्में इतनी बात करनी चाहिये कि जो गठिया थोड़े दिन की होवतो के वल जोग राज गूगल के खाने से आराम होजा यगा और जो बहुत दिन का रोग होतो उस रोगी को एक वक्त गूगल खवावे और वक्त माजून चोब चीनी खवावे इस प्रकार के इ लाज करने से बहुत दिन की गठिया होगी तोभी बहुत शीघ्र आराम हो जायगा और बहुत से मूर्ख जराह वो हकीम अपने लेने की खातर रोगी को भिलाये आदि की गोली

खिला देते है और उस गोली के खाने से रोगी को मुंह आजाता है उस वक्त वह रोगी बड़ा दुख पाता है बस हमारा इन बातों के लिषने से ये प्रयोजन है कि इन गोलियों के देने से आराम तो हो जाता है परंतु एक यह बडी हानि होती है कि उस रोगी के दांत किसी काम के नहीं रहते और दांत बहुत जल्दी गिरजाते हैं तो वह विना दांतों के जन्म भर दुख पाता है और उसे कोसता है इस वास्ते जहां तक बने वहां तक इस को मुख आने की दवा न देनी चाहिये

और जो साधारण छाती और पीठ और हाथ पांव में वायु का दर्द होने लगे तो उन के वास्ते दो चार दवा नीचे लिषते है कि जिन के लगाने से ये दर्द वहुत जल्दी आराम होता है

दवा

वनपसा का तेल· पांच तोले आंच पर धरके उस्में सफेद मोम दो तोले कतीरा नौ माशे मिलावे और जहां दर्द होता हो वहां मर्दन करावे तो इस लगाने से वहुत जलदी फायदा हो जाता है॥

दवा

वनपसा के पता· सफेद चंदन· खतमी के बीज· नाखूना· जौ का चून· गेहूं की भुसी -

ये सब दवा बराबर लेके कूट छान के इन सब को मोम रोगन में और कनफाके तेल में तथा गुलरोगन में मिला कर पकावे जब रोगन् मात्र रहजाय तब उतार कर इस का मर्दन दर्द के मुकाम पर लगावे तो दर्द बहुत जलदी रफे होगा

अथवा

खतमी के बीज अलसी मकोय के पतों का रस अमल तास का गूदा इन सब को पीस कर छाती पर लेप करना॥

अथवा

मीठे तेल में थोडा मोम औटा कर उस का-लेप करना॥४॥

अथवा बारह सींगे का सींग सोंठ अरंड की जड इन को पानी में घिस कर लगाना॥

अथवा मीठे तेल में अफीम औटा कर मल्वाना अच्छा है

अब जानना चाहिये कि इन रोगों के वास्ते बडे बडे हकीमों नें हजारों नुस्खे और लेप आदि लिखे हैं जो सब को हम लिखते तो एक बडा भारी ग्रंथ हो जाता इस वास्ते

जो दवा हमारी आज माई है वही

दवा इस पुस्तक में वर्णन

करी गई है

और अब सबरे शरीर के फोड़ो और घाव तथा
शस्त्रा दिकों के घावों की चिकित्सा मय
तसवीरों के इस पुस्तक के दूस
रे भाग में बिस्तार पूर्वक
लिखे गये हैं और
समस्त नेत्रों के
यत्न इसके
तीसरे भाग
में लिखे
हैं

इति श्रीजर्राही प्रकार नाम ग्रंथे पंडित रंगी
लाल संग्रहीते प्रथम भाग सम्पूर्णम्
सम्वत्
१९४५

सूचीपत्र

इस से सिवाय जो और भी पुस्तकें हमारे यहां मौजूद हैं सो उन के नाम और कीमत नीचे लिखे हैं सो जिन महाशयों को लेने की इच्छा हो वे सहर मथुरा तथा कंसार खाना श्या मलाल की दुकान से मंगाले

नाम पुस्तक	की	डा.	नाम पुस्तक	की.	डा.
जर्राही प्रकार दूसरा-			किस्सा तोता मै		
भाग	।)	-॥	नाका जिस्में च		
तथा तीसरा भाग	॥)	-॥	हुनउमदा उमदा		
अनोपान चिंतामनी			तच्छेदार खती		
सटीक	।)	-)	फे लिखे हैं आठों		
स्त्री चि किस्सा प्रथम			भाग	॥।)	।)
भाग	-)	-॥	ब्रज विहार का		
योग चिंतामणि भाषा			दो भाग जिस्में रा		
टीका	[illegible]	-)	सथा रियोंकी वा		
करावादीन सिमानी	॥-)	-)	त पर बहुत सी		
अर्क प्रकाश	-)	-॥	लीला श्री कृष्ण		
रिसाले आन शाक	-)॥	-॥	राधिका की ललि		
नाडी प्रकाश	-)॥	-॥	त ललित पदों में		
अजीर्ण मंजरी	-)॥	-॥	मयनस वीरान		
मीजान तिब्ब हिंदी	॥)	-)	लिखी है	२॥)	
औषधि कल्पद्रुम प्र			तथा पतले काग		
थम भाग	-)॥	-॥	ज का	॥।)	-)

इश्तिहार

प्रकट हो कि यह पुस्तक जरोही प्रकार तीन हिस्सों में पंडित रंगी लाल मथुरा निवासी ने संग्रह करि के बनाया और इसके छापने का हक्क मुसन्न फी लाला श्यामला ल मुहत मिम मतबे श्याम काशी प्रेश को दिया और ला ला श्याम लाल ने इस के छापने का हक्क लाला हरि प्रशाद महोत मिम मतबे काशी ममान प्रेश को दिया । इस वास्ते कोई साहब विना इजाजत मालिक मतबे के छापने का यत्न न करै और अब अपनी मरजी से लाला हरि प्रशाद ने लाला श्याम लाल को एक बार छापने की इजाजत दी है

फकत

सन १८८९ ईशवी

जर्राहीप्रकार
दूसराभाग
पंडितरवी
लालकृत
श्रीमथुराश्यामकाशीयंत्रमेंलाला
श्यामलालकेप्रबंधसेछापागया-

निघंटभाषा	।)	=)	मुत्फर्कात		
वैद्यमंजरीभाषा	।)	-)	ब्रजविहारचारोंभाग		
वैद्यमनोत्सवभाषा	=)	-)॥	जिसमें ३२लीलारा		
अमृतसागरछापाम			शधारियोंकीरीति		
शुरा	॥)	=)	परललितपदोंमें		
शालहोत्रजिसमेंघो			लिखीहैंमोटाकाग		
डोंकेइलाजहैं	=)	-)॥	जमोटाअक्षर	२॥)	०
इलाजुलगुरबा	।॥)	=)	तथा	॥)	=)
करावादीनसफाई	।॥)	=)	किस्सातोतामैना		
औषधिकल्पद्रुमप्र			काआठभागोंमेंपं		
थमभाग	=)॥	-)॥	डितरंगीलालकृत		
औषधिसार	=)॥	-)॥	जिसमेंतोताऔरमैना		
मुजरबातवसीर	=)	-)॥	केबहुतउमदाउम्दा		
इलाजिस्मानी	।)	-)	जवावसवालइश्क		
योगचिंतामणिस			मेंबेहुदोदिलचस्प		
टीक	॥)	=)	नच्छेदारदोहा·सो		
मदनसुधाकर	=)	-)॥	रठा·कवित्त·चोबोला		
वाजीकर्णप्रकाश			ग़ज़लआदिरागिनी		
सटीक	-)	-)॥	योंसहितलतीफों		
विरेचनकल्पलता			मेंवर्णनहैं	॥)	=)
सटीक	-)	-)॥	मजमेउलअसारहिं		
माधवकृतकूटस			दीजिसमेंहरेकशायरों		
टीक	-)	-)॥	कीग़ज़ललिखीहैं	।)	=)॥

॥श्रीगणेशायनमः॥

अथजर्राहीप्रकारदूसराभागलिख्यते॥

मंगलाचरण

दोहा

श्रीधन्वंतरिकेचरणरजनिजमस्तकधार॥
जर्राहीपरकारयेरच्योंपंथसुखकार॥१॥
मुनिगुरुचरणसरोजको [illegible]
रोगिनकेउपकारहितपूरणाकियावनाय॥२
नानाग्रंथनकोरतनअरुनिजमतिअनुसार
लिखीचिकित्सादेहकीसुखपावेसंसार॥

अथमाथेकेफोडेका

यत्न

जाननाचाहियेकिएकफोडासिरकेतालूपरहोताहे सूरतउसकीयहहेकिपोस्तकेदानेकीवरावरहोताहे औरउसकेआसपासहथेलीकेवावरस्याहीहोतीहे औरयहस्याहीहवाकेसदृशदोडतीहे औरजहरवादसेसंवंधरखतीहे यहांतकयेस्याहीफैलतीहेकिसवसरीरस्याहहोजाताहे औरवहरोगीचारपहरयाआठपहरकेपीछेमृत्युकेसमीपपहुंचजाताहे

परंतु परमेश्वर के अनुग्रह से कोई अच्छा जर्राह चिकित्सा करने वाला मिलजाताहै तो निस्संदेह आराम होजाता है और चिकित्सा करनेवाले को चाहिये कि जो यह स्याही कंठसे नीचे न उतरी होय तो चिकित्सा करने से आराम होजाताहै और जो स्याही कंठसे नीचे उतर आई होय तो इलाज करना नहीं चाहिये और इस फोड़े का निसान नीचे लिखीत तसवीर में देखलेना और जो इसकी चिकित्सा करे तो इस प्रकार से करे कि पहिलें सर रू नस की फस्त खोले और पंद्रह तोले रुधिर निकाले और फस्त के बाद वमन करावे क्योंकि ये रोग दिल अर्थात हृदय का हानि करनेवाला होताहै ऐसा न हो कि [illegible] नीचे उतर आवे -

इससववसे वमन करानाउचित है॥

नुसखा वमन का

मिसका १० तोले तालचूरा ५ तोले मैनफल ३६ माशे इन सबको दो सेर जलमें औटावे जब आधा जल बाकी रहिजाय तब ठंडा करर खले फिर इसको दो तथा तीन बार में पिलादे तौ वमन होजायगी और उस फोडे पर तथा उसस्याही पर तेजाब लगावे तथा पलास्टर रक्खै जब खाल पकजावे तो दूसरे दिन प्रातःकालके समय काटडाले फिर ऐसा मल्हम लगावै कि जिसमें घाव भर जावे और खूब मवाद निकल जावे॥

नुसखा मल्हम

नीलाथोथा १ तोले जंगाल हरा १ तोले तबकिया हरताल ६ माशे इन सब दवाइयों को महीन पीस कर सुहागा चौकिया १ तोले विरोजा तर ४ तोले फिटकरी १ तोले आंबा हलदी १ तोले इन सबको भी पीस कर फिर सबको विरोजे में मिलावे फिर उसमें गौका घृत ४ तोले थोडा थोडा करके मिलावे फिर वरांडी शराब तथा तेज सिरके से इस मल्हम को खूब धोकर घाव पर लगावै जब वो घाव सुरखी पर आजाय तब ये दूसरी मल्हम लगाना चाहिये॥

दूसरी मल्हम

काले तिलों का तैल ½ सेर लेकर गरम करे फिर आदमी की सिर की हड्डी २ तोले नीम के पत्ते २ तोले इन दोनों को तेल में डालकर जलावे जब जल जाय तब निकाल डाले पीछे ६ तोले मोम मिलावे और मुरदासंग ६ माशे सफेदा का

शकारी ६ माशे इनसबको पृथक पृथक उस तेलमें डाले
और आंच मंदी करदे कि चासनी मल्हम की खूब होजावे ज
ब उस चासनी का तार बंधने लगे तब अफीम छै माशे मिला
वे जब अफीम उसमें मिलजावे तब उतार कर ठंडा करके रख
छोडे फिर इस मल्हम को उस घाव पर लगावे और देखे कि
किसी तरफ को सूजन तो नहीं है और जो सूजन होवे तो उ
स सूजन पर ये लेप लगावे॥

लेपकी विधि

मोरंजान कड़वा ६ मा० नाखूना १ तोले अमलतास का
गूदा २ तोले बाबूने के फूल एक तोले अफीम २ माशे इन
सबको हरी मकोय के रसमें पीस कर गुनगुना करके ल
गावे फिर दो चार दिन के पीछे फिर उसको देखो कि उस घा
वमें से पीब निकलती है या पानी निकलता है जो पानी नि
कलता हो तो ये मल्हम लगावे॥

मल्हम की विधि

पहिले गुलाब के फूलों का तेल गरम करे १२ तोले और पी
ला मोम दो तोले उसमें डाल कर पिघलावे फिर मेल खडी
दो माशे रस कपूर दो माशे सफेदा काशकारी २ माशे मु
रदासंग २ माशे मुरगी के अंडे के छिलके की भस्म ३ माशे
नीला थोथा जला हुआ २ रत्ती इन सबको पीस छान कर
उस तेलमें मिलावे जब थोड़ी सी चासनी हो जाय तो उ
से उतार लेवे और ठंडा करके घाव पर लगावे और जो य
ह फोड़ा मुसलमान के माथे में होय तो उसको हलवान

के मांस का शोरवा और रोटी खिलाना चाहिये और हिंदू को मूंग की दाल रोटी खिलावे और खटाई लाल मिर्च व गैरह सबसे परहेज करना चाहिये और जो इस दवा के लगाने से पानी निकलना बंद न होवे तो इसकी चिकित्सा करनी छोड़दे और जान ले कि ये फोड़ा जहर बाद का है आदि में छाला प्रगट होवे तो उस्में चीरा देवे और दो तीन दिन तक नीम के पते बांधे पीछे ये मल्हम लगावे॥

मल्हम की विधि

पहिलें २२ तोले गुलाब के फूलों का तेल गरम करे फिर उस्में नीम के पतों का रस ४ माशे बकायन के पतों का रस ४ माशे बेरके पत्तों का रस ४ मा॰ हरे आमलों का रस ४ मा॰ इन सब रसों को उस तेल में मिलावे जब सब रस जल जाय और तेल मात्र रहि जाय तब पीला मोम २ तोले सफेद मोम २ तोले डाले फिर सफेदा २ तो॰ मुरदासंग ४ मासे दम्मुल अखवेन ४ मा॰ नीला थोथा चार रती इन सब को महीन पीस कर उस तेल में मिलावे जब चासनी हो जाय तब उतार ले फिर इसको घाव पर लगावे॥

और एक फोड़ा माथे पर तथा कान पटी पर तथा गुदी पर ऐसा होता है कि उस्में कुछ भय नहीं होता या तो वे आपही फूट कर अच्छे हो जाते हैं या चीरने से या मल्हम लगाने से अच्छे हो जाते हैं ऐसे सब प्रकार के फोड़ों के वास्ते बहुत अच्छी अच्छी दो चार मल्हम इस ग्रंथ के अंत

में लिखेंगे सबप्रकार के फोड़ा और घावों को बहुत जल्दी अच्छा करदेती है और एकरोग सिर में यह होता है कि बहुत सी छोटी छोटी फुनसियां सिर में होजाती है और उनमें से पानी निकलता है और जहां वह पानी लगजाता है वहां छत्तासा होजाता है और वह पानी चेपदार गोंद के पानी के सदृश होता है इन फुनसियों का स्थान इस नीचे लिषी तसवीर में समझ लेना और इसरोग की चिकित्सा इस प्रकार से करनी चाहिये कि नीचे लिखा मल्हम लगावे ॥

मल्हम की विधि

घी का घृत धोया हुआ ७- आधपाव कपेला १माशे काली मिर्च दो माशे सिंगरफ २ माशे इन सब को पीस छानक र उस घी में मिलावे फिर उस घी को एक रात्रि भर ओस में धर रक्खे दूसरे दिन उन फुनसियों पर लगावे परंतु इस दवा के लगाने से पहिले उस स्थान को गरम जल में सांभ र लोन मिला कर धो डाले फिर उस मल्हम को लगावे इ सी तरह सात दिन तक मल्हम लगावे तो आराम हो जाय गा और जो इस से आराम न हो तो पारा छै माशे अजावाय न खुरासानी पान बंगला मसाले समेत चार नग और प- हिले मल्म की दवाइयां उस में मिलावें फिर सांभर नो न और गरम जल से धो कर यही मल्हम लगावे और यह औषधि पिलावे॥

दवा पीने की

गुलाब के फूल ४ माशे मुनक्का ७ दाने बनपसा के फूल ६ मा- सुरवीमकोय ६ मा- इन सब को रात को पानी में भिगो दे और सवेरे ही औटा कर छान ले फिर इस में २ तोले मिश्री मिलाक र पिलावे और चौथे दिन यह दवा देवे॥

दवा दूसरी

रेवतचीनी का सत २ माशे ले कर एक तोले गुलकंद में मि ला कर पिलावे इस के पीने से वमन होगी और दस्त भी आ वेंगे और दो पहर के बाद ऐसा भोजन करावे कि जो अव गुण न करे फिर दूसरे दिन ये दवाई देवे॥

दवा तीसरी

बीदाना २ माशे रेसारवतमी ४मा· मिश्री १तोले इनकाश
र्बत तथालुआव बनाकर पिलावे जब मवाद निकलजा
वेगा तब आराम हो जायगा॥

गलेके फोडेकायत्न

एक फोडागले पर होता है सूरत उस्की यह है कि पहिलेतो
सूरतसी मालूम होती है उसवक्तउसके घरके माता पिता
तथा अन्य पुर्ष अपनी मतके अनुसार सुनी सुनाई दवा
तथा सेका दिक करते हैंजबये पांच चार दिन का होजा
ताहै तब उसमें पीडा और जलन पैदा होतीहै तबहाकीम
के पासजाते हैं जबउस पीडा के कारणकरकेज्वर होजा
ताहै तब बहुत सेमूर्ख हकीम उसको अमल देते हैं जबउ
स्से कुछ नहीं होता तब जर्राह को बुलाते हैं और कोई
जर्राह भी ऐसा मूर्ख होताहै कि उस सूजन पर तेल लेप
लगा देता है तोउस्से भी रोगी को कष्ट पहुंचताहै और
जबये सूजन पैदा होती है उस वक्त इस्की सूरत कछुए
कीसी होती है फिर भिंडके छत्तेके समान होजाताहै इस
का निशानइस आगे लिषी तसवीर में समझ लेना
इस रोग पर ऐसा लेप लगाना चाहिये जो इससूजन को नर
म करे और इस्को फोडकर मवाद को निकाले वो दवा ये है

लेप

बालछड १तोले नागर मोथा ६माशे रेवंद खताई-
६माशे· नाखूना ६माशे उश्नक रूमी ६माशे अमल
तास का गूदा २तोले इन सब को हरी मकोय के

के अर्क में पीस कर गुनगुना लेप करै और मरे रोनस की फस्द खोले जब उस फोड़े की सूरत बदल जावे तब वो मल्हम लगावे जो पहिले वर्णन किया गया है और घावों पर ये दवा लगावे ॥

दवा

नान पाव का गूदा ५ तोले लेकर बकरी के दूध में भिगोदे फिर उस्को निचोड़ कर खरल करे और उसमें दम्मुल अखवेन केशर अंजरूत अफीम ये सब दवा छै छै माशे ले और शहत ४ तोले मुर्गी के अंडे की जरदी ३ नग इन सब को एकत्र कर खरल करै और फोड़ा जहां तक फैला हो उस्से नही बड़ा एक फाया बनाकर उसपर इस दवा को लगाक

र इस फाये को फोड़े पर लगादे जब उसमें छीछड़े दीखें तो काटकर निकाल देवे जब फोड़ा लाल होजाय और उसमें से दुर्गंधि न आवे तब इस दवा को बंद करे और ये मल्हम लगाना सुरू करे॥

मल्हम की विधि

गुलाब के फूलों का तेल परम करके उसमें रत्नजोति २ तोले डाले जब उस का रङ्ग रंग कबूतर के रुधिर के समान- होजावे तब उस्को छानले फिर उस्में मोम २ तोले नीला थोथा २ रत्ती मिलावे और इस्में एक तोले जैतून का तेल मिला कर रख छोडे और उस घाव पर लगावै और इस रोग वाले मनुष्य को धोवा मूंग की दाल और रोटी खिलाना चाहिये फिर एक सेर पानी को औटावे जब आधा पानी जल जावे तब ठंडा करके रख छोडे फिर प्यास लगे जब इसी पानी को पीवे कच्चा पानी न पीवे॥

कान की लो के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा कान की लो के नीचे होता है और यह फोड़ा भी पहिले मालूम नहीं होता केवल सूजन की गांठ सी होती है पीछे पक कर फोड़ा होजाता है इस फोड़े का निशान आगे लिखी तसवीर में समझ लेना इस फोड़े की चिकित्सा इस प्रकार करनी चाहिये कि पहिले इस पे पोसीद वा लगावे जिस में ये फोड़ा नरम होजावे क्योंकि जो इस कच्चे फोड़े में चीरा लगाया जावे तो अपयश होता है अर्थात् रोग बढ़ जाता है इस लिये चार दिन की देरी होजाय

तो कुछ डर नहीं परंतु पके पर चीरा देने से रोग की बहुत काल
दीघांति होती है और पकने में दवा लगावे॥

दवा

सहसुत के पते २ तोले नीम के पत्ते २ तोले सफेद प्याज २
तोले सांभर नोन ६ मासे इन सब को महीन पीस गरम क
रिके लगावे जो इस दवा के लगाने से फूट जाय तो बहुत
अच्छा है नहीं तो इसको नश्तर से चीरा देवे अथवा
जैसा समय पर उचित समझे वैसा करैं और ये मल्हम
लगावें॥

मल्हम

सरसों का तेल सात तोले लेकर इसको आंच पर गरम-

करे फिर इस्में पीला मोम एक तोले खपरिया ५ तोले उड़द का आटा दो तोले इन सब को उस तेल में मिलाकर खूब गढ़े और ठंडे करिके फोड़े पर लगावे और जो इस मल्हम से आराम न होतौ वह मल्हम लगावे कि जिस्में रत्न जोति मिली है और इस पुस्तक के ९१ के सफे में वर्णन कर आये हैं और जब मांस बराबर होजावे तब ये काली मल्हम लगावे॥

काली मल्हम की विधि:

कडुवा तेल १० तोले सिंदूर ४ तोले इन दोनों को कढाई में गेर कर आंच पर पकावे और नीम के घोटे से घोटे जब इसका तार बंधने लगै तब उतार कर ठंडा कर रख छोड़े — फिर समय पर लगावे और फोड़े में चीरा दे उस वक्त चौड़ा चीरा देवे क्योंकि कम चीरा देने से इस्में चीरा रह जाता है इस वास्ते चौड़ा चीरा देना अच्छा होता है

नेत्र के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा आंख के कोने में होता है और यह आपही फूट जाता है इस फोड़े का निसान इस्मीत सवीर में समझ लेना॥

इसफोडेकीचिकित्सा यहहैकि पाहिलें तो वह मल्हमलगा वैजिस्में नीला थोथा और जंगाल पड़ाहै जब इसका मवा दानिकलजावे तबयहमल्हमलगावे॥

मल्हमकीविधि॥

ऊंटके दाहने घुटने कीहड्डी २ तोले घुटनेजला कर निकालडाले और मोम सफेद २ माशे सिंदूर ४ माशे मिलाकर रखवरगड़े और लगावे और नाकमें यह दवासुंघावे॥

सूंघनेकीदवा

नकछिकनी एक तोले सूखा नमा खू २ माशे कालीमिर्च ३ माशे सबको पीसकर सुंघावे क्योंकि मादा ऊपरकी ओर झुकजायगा तो शीघ्र आराम होगा किसवास्ते कि यह स्थान नासूर का है और जो इस दवासे आराम नहो तो ऊंटके दाहिने घुटने की हड्डी बासी पानी में घिसकर उसकी बत्ती रक्खे और उस्में का फाया बनाकर रक्खे क्यों कि यह चिकित्सा नासूर की है और यह फोडा भी नासूर ही के भेदों में से है दूसरे उपाय से कम आराम होता है

नेत्रों की बाफनी का यत्न

एकरोग पलकों में ऐसा होता है कि वह तमाम पलकों के वालों को उड़ादेता है और पलक लाल पड़जाते हैं इसका इलाज इसप्रकार से करे॥

दवा

तिलों का तेल पौने छे छटांक लेकर उसे इमरतवान में करे और उस्में गुलाब के फूल २ तोले ताजा मिलाकर-

४० दिन तक चूने में रक्खे और जो मसे फूल होंय तो वो बेर पानी में औटावे जब आधा पानी रहे तब छान लेवे फिर उस में तिल का तेल डाल कर औटावे जब पानी जल जाय और तेल मात्र रहि जाय तब ठंडा करि के सीसी में भर रक्खे इस को हकीम लोग गुल रोगन बोलते हैं और अकसर बना बनाया अत्तारों की दुकान पर मिलता है ऐसा गुल रोगन दो माशे मुर्गी के अंडे की सफेदी दो माशे कुलफा के पत्ते दो माशे इन सब को मिला कर पलकों पर लेप करै

दवा दूसरी

बादाम की मींगी स्त्री के दूध में घिस कर लगाया करै अथवा अजमोद को मुर्गी के अंडे की सफेदी में घिस कर लगाया करै २ अथवा धतूरे के पत्तों का अर्क और भांग के पत्तों का अर्क इन दोनों को मिला कर इस में सफेद साफ कपड़ा भिजो कर सुखा ले और गौ के घी में उस कपड़े की बत्ती बना कर जलावे और मिट्टी के बरतन में उस का काजल पाड़ कर नित्य प्रति लगाने से सब पलक ठीक अपनी असली सूरत पर आ जावेंगे॥

और दूसरा रोग यह होता है कि नेत्र की ऊपर की वा पलकों में खपटा सा जम जाता है इस रोग के होने से पलक भारी हो जाते हैं और भेंडे आदमी की तरह देखने लगता है ऐसे रोग की यह चिकित्सा करे कि इस को आंखों में सलाई का फेरना बहुत गुण करता है॥

॥२॥

नेत्रकेनासूरकायत्न

एक फोड़ा आंखके कोनेमें जिसजगहसे गीड़ निकलती है उस मुकामपर होता है और परीक्षा इस फोड़ेकी यह है कि पहिलें तो इसकी रंगत सुर्ख होती है फिर इसका मुख सफेद होजाता है फिर पककर घाव होजाता है फिर घावके होनेपर नेत्रोंको कष्ट दुःख दाई होता है इसको पहिले हकीमोंने नासूर वर्णन किया है और इस फोड़े में और पहिले आंखके फोड़ेमें जो वर्णन पहिलें कर आये हैं इतनाही भेद है कि इसका मुख सफेद होता है और पहिले फोड़ेका मुख लाल होता है इस रोगका निसान नीचे लिखे तसवीरमें समझ लेना॥

औरये फोड़ा कभीतो बहने लगता है और कभी फिर भर आता है इसकी चिकित्सा यह है॥

इलाज

अलसी और मेथी का लुआब निकाल कर आखों में टप कानेसे ये रोग जाता है १ अथवा मुर्गी के अंडे की जर्दी और केशर इन दोनों को पीस कर घाव पर लगाना॥ अथवा अफीम केशर इन दोनों को पीस कर नेत्रों के ऊपर लगाना॥ और जो ये रोग बहुत ही दुष देने लगे तो कुते की जीव जला कर उसे मनुष्य की लार में घिस कर नेत्रों में लगाने से नासूर बहुत जलदी अच्छा होता है॥ और पहिले जो आंख के कोन में फोड़ा का इलाज हम लिख आये हैं वे भी इसको फायदा करते हैं अथवा एलुआ· लोवान· अनार के फूल· सोहन मारवी· दम्मुल अखवेन· फिटकरी ये सब दवा तीन तीन माशे ले औ इन को महीन पीस कर गुलाब जल में मिला कर इस की लंबी गोली बनाले फिर नासूर के मुख को पोंछ कर उसमें टपकावे तो सात दिन के लगाने से बिलकुल आराम हो जायगा॥

नेत्रों के घाव का यत्न

एक फोड़ा इस प्रकार का होता है कि नेत्रों में गेहूं के आकार का एक घाव हो जाता है उसका निशान इस तसवीर में समझो इस रोग की चिकित्सा ये है

गोली

सोना माषी को गधी के दूध में आठ पहर भिगो कर छाया में सुखावे और अफीम ३॥ माशे कतीरा ३॥ माशे-

शे दरयाई २॥ माशे कुंदरू गोंद २॥ माशे सफेदा १ तोले चार माशे बबूल का गोंद २४ माशे सब को कूट छान मुर्गी के अंडे की सफेदी में मिला कर गोली बनावे और एक गोली को पानी में घिसकर नित्य आंखों में लगाया करै तो यह घाव अच्छा होय॥

पलकों की सूजन का यत्न

एक रोग यह होता है कि नेत्रों के किनारों पर सूजन होती है इस की चिकित्सा यह है॥

दवा

मोम को गरम कर के लगावे १ अथवा किस मिस को चीर कर उसे गुन गुनी करि के सूजन पर लगावै २ अथवा बड़ी कौड़ी पानी में पीस कर पलक की सूजन पर लगावै मक्खी के सिर को काट कर सूजन पर मले तो सूजन अच्छी होय अथवा रसोत को पानी में घिस कर पलक

की सूजन पर लगाया करै तो सूजन जाती रहे ५ प्रकट हो कि नेत्रों के रोग तो बहुत हैं इस वास्ते उन सब नेत्र रोगों के इलाज विस्तार पूर्वक इस के तीसरे भाग में लिखेंगे यहां तो केवल घाव और फोडों का इलाज लिखा गया है॥

नाक के फोडे का यत्न

एक फोडा नाक में होता है उसको नाकडा कहते हैं इस फोडे का निशान नीचे लिखी तसवीर में समझ लेना इस रोग की चिकित्सा हकीमों ने इस प्रकार लिखी है कि पहिले यह सूघने की दवा सुंघावे॥

सुंघनीदवा

सेंधानोन चौकिया सुहागा फिटकरी कच्ची जंगालजला हुआ इन सब को बराबर ले महीन पीस कर नाक में नास देवे जब वह फोड़ा चारों तरफ से नाक की त्वचा को छोड़ देवे तो उस बुरे मांस को सुई से छेद कर निकाल डाले फिर ये मल्हम लगावे॥

मल्हम

गौका घी २ तोले नीला थोथा २ माशे जंगाल दो माशे पीली राल २ माशे सफेदा कासगरी ६ माशे इन सब को महीन पीस कर उस घृत में मिला कर पानी से खूब धोके लगावे ईश्वर की कृपा से बहुत जलदी आराम होगा॥ अथवा नाक के भीतर घाव होय तो ये दवा लगाना चाहिये मोम पीला १ तोले गुल रोगन ३ तोले लेकर इस्में मोम को पिघलावे फिर उस्में मुर्दा संग २ माशे कथा ४ मा॰ मिलाकर नाक में भरे तो घाव अच्छा होय अथवा बनपसा के फूल ६ मा॰ बीहदाने ६ मा॰ इन दोनों को पानी में औटावे फिर इन को मसल कर छान ले फिर इस्को दो तोले गुल रोगन में मिलावे और एक तोले सफेद मोम मिलाके मल्हम बनाके घाव पर लगावे॥

नाक के दूसरे घाव का यत्न

एक घाव नाक के भीतर ऐसा होता है कि उस्में से कभी तो राधि निकलती है और कभी बंद हो जाती है इस घाव के वास्ते ये दवा बहुत फायदा करती है॥

मुरगे की चर्बी और मोम दोनों को बराबर ले कर घी में पका वे जब ठंडा होजाय तब उस्में सफेद कपड़े की बती बना कर उसे नाक में रक्खे अथवा कत्था सफेद मुरगी की चर्बी इन दोनों को पीस कर नाक के भीतर लेप करे ॥ अथवा मुरदा संग भेंस के सींग का चूरा मुरगे की चर्बी इन सब को गुल रोगन में पकावे जब मल्हम होजाय तब रुई की बती भिगो कर नाक में रक्खे ॥

अथवा मोम कपूर ३॥ माशे शफेदा २॥। तेले गुल रोगन २८ माशे पहिले गुल रोगन को गरम करे फिर उस्में मोम को मिलावे और सफेदा को पानी में धोकर मिलावे फिर इसे गरम कर खूब घोटे जब मल्हम के सदृश हो जाय तब रख छोड़े फिर उस घाव को देखे जो घाव नाक में बहुत भीतरा होवे तो इस्की बती बना कर नाक में रक्खे और जो घाव पास होतो वैसे ही लगादें इन घावों का निसान नीचे लिखी नस चीर में समझ लेना चाहिये ॥

नकसीर की चिकित्सा

और जो नाक से रुधिर बहा करता है उसे नकसीर कहते हैं ये दो प्रकार की होती है एक तो वो हरान से दूसरी खून की गरमी से जो नकसीर वहरान के कारण से होती उस्के लक्षण ये हैं कि चौथे सातवें नवें ग्यारवें और चौदमे दिन गरमी के दिनों में उत्पन्न होती है उसे बंद न करें क्यों कि इस के बंद करने से जान का भय है और जो वो हरान के कारण से न होतो कुदरू गोंद से बंद कर दें॥

विधि

कुदरू गोंद को महीन पीस कर नास लेवे। अथवा धनिये के सीर में कुदरू गोंद को पीस कर मिलावे और धनिये के सीर में मिला कर नाक में डाले २ अथवा इस्की वती बनाकर नाक में डाले॥ अथवा जूफा अफीम कुदरू गोंद· काही· ममर· अनार के फूल· वबूल की पतियों का सत· कपूर इन सब को पीस कर ललाट में तथा कनपटी पर लेप करे॥ इति॥

और दूसी नकसीर ऐसी होती है कि उस्का खून बंद नहीं होता उस रोग में मनुष्य मृत्यु के समीप पहुंच जाता है· जर्राह को चाहिये कि इस रोग वाले मनुष्य की सेरे रोनस की और वासलीक नस की फस्त खोले ये लगावे॥

दवा

मुंडी ६ माशे खखा धनियां ६ माशे· गाजवां ४ माशे सफेद चंदन ४ माशे इन सब को रात्रि के समय जल में भिगो दे

में भिगोवे और सवेरे ही मल छानकर उसमें अनार का शर्बत मिलाकर पीवे और नाक में यह दवा ड़ेसघे॥

नुसखा

घारबे फंदे की भस्म घंडे के छिलके की भस्म जंगालज महुआ इन सबको पीसकर सुंघावे॥ और जो इससे बंद नहो तो यह नास दें॥

दवा

जहरमोहरा खताई बंशलोचन सफेद कत्था बड़ी इलाय चीके बीज सेलखड़ी इन सबको समान ले पीसकर सुंघा वे और माथे पर तथा कनपटी पर ये दवा लगावे॥

दवा

बबूल की फली १ तोले बबूल के पते १ तो० हरी मेहदी १ तो० सूखे आमले १ तो० सफेद चंदन १ तो० इन सबको पीसक र लगावे जो इस्से भी न बंद हो तो यह लगावे॥

दवा

गाजके बीज सफेद चंदन एक एक तोले कपूर ६ मा० इनको महीन पीस हरे धनिये के अर्क में मिलाकर लेप करें ये चि कित्सा याद रखने योग्य है॥

पीनस का यत्न

और एक रोग नाक में ये होता है और उसे पीनस कहते हैं ये उपदंस रोग से संबंध रखता है जो रोग उपदंश को प्रकट न करे और वो कहे कि मुझे उपदंश नहीं हुआ तो कभी विश्वास न करे क्यों कि उपदंश की नासी बापदादे से भी

हुआ करती है क्योंकि बहुत से हकीमों ने और डाक्टरों ने लिखा है और कोई२ कहते हैं कि पीनस गरम न जले में भी होती है और अपनी आंखों से भी देखा है सूरत उस्की यह है कि पहिले तो सुगंध और दुर्गंधि कुछ नहीं आती जाती फिर मस्तक और ललाट में पीड़ा हुआ करती है और वाणी में भी कुछ विक्षेप होजाता है और उस्की चिकित्सा यही है उस रोगी को जुलाब देवे और फस्त खोले और वमन करावे और ये दवा सुंघावे॥

दवा

पालास पापड़ा· कंजा की मींगी· लाल फिटकरी· नकछिकनी स्याह नमक· इन सब को बराबर ले पीस छान कर सुंघावे जो छींकें बहुत आवें तो शीघ्र आराम होगा॥ नहीं तो नाक के बीच की हड्डी जाती रहती है उस्के लिये देवदारू का तेल और नारवीन का तेल अंग्रेजी बहुत गुणदायक होता है अथवा कद्दू का तेल वा काहू का तेल वा भीठ के बीजों का तेल गुण करता है और जो सामर्थ्य होतो चोवचीनी का या उस्की माजून का सेवन करे अंत को हड्डी बैठकर नाक बैठ जाती है और वाणी बदल जाती है - ऐसी दवा औ सेधाव अच्छा होजाता है परंतु रूप तो बिगड़ होजाता है और जो रोग उपदंश के कारण से होवे उस्की चिकित्सा यह करे कि पहिले तो जमालगोटे का जुलाब देवे फिर वे गोली खिलावे जो उपदंश की चिकित्सा में लिखी है और यह गोली देवे॥

गोली

कालीमिर्च · पीपल · सूखे आमले एक एक तोले ले और स
बको कूटछानकर सात वर्षके पुराने गुड़ में मिला कर जंग
ली बेर के प्रमाण गोली बनावे और प्रातकालके समय ए
क गोली मलाई में लपेट कर खिलावे और ऊपरसे दहीका
तोड़ पिलावै और दाल मूंग की रोटी खवावे और औटाहु
आ जल पिलावै इस गोलीके सेवन करने से नाक के स
ब रोग अच्छे होंय॥

नाककीनोकके फोड़ेकायत्न

एक फोड़ा नाककी नोक पर होता है और रंगत उस्की काली
होती है और वो जोंक के सदृश बढ़जाता है परन्तु काटना
उस्का कठिन है क्योंकि इस्का रुधिर बंद नहीं होता है॥
और ये रोग मैंने एक बार एक मनुष्य के देखा है और उस्की
चिकित्सा को देखी और अपने हाथ से करी परंतु ठीक नहीं
बनी अंतको मैंने और हमारे मित्र डाक्टर बाबू जमना पर
शाद साहब ने उस्के कुटुंब के लोगों से खून क्षमा करा लिया
और फिर उस्की चिकित्सा बहुत प्रकार से अपनी बुद्धि
माफिक करी परंतु कुछ बस नहीं चला ये बातें इस लि
ये वर्णन करी हैं कि यदि कोई सज्जन मनुष्य इस फोड़े
वाले मनुष्य को देखे तो एकही बार इस्की चिकित्सा का म
यत्न न करे क्योंकि मेरी बुद्धि में यह रोग असाध्य है और सर
न इस्की इसन सर्वार में समझ लेना॥
और एक फोड़ा मुखके भीतर कागके पास होता है॥

उस्को खुनाक कहन है उस्की चिकित्सा यह है कि पहिले सरो नसकी फस्त खोले फिर ये जुलाब दे॥

दवा

शहतूत के पत्ते ४ नग कोकनार ४ नग इसपंद २ तोला मखर सावत २ तोले इन सब को दो सेर पानी में औटावे आधा पानी रहे तब इस्के कुल्ले करै पीछे यह दवा दे॥

दवा

गेहूं की भुसी ६ मा· नारवूला १ तो· खतमी के फूल एक तोले· तूंभर १ तो· सरवाजूफा १ तो· सेंधा नोन ६ माशे इन सब को तीन सेर पानी में औटावै जब एक सेर पानी रहे तब कुल्ले करै॥

और जो इस दवाई करने से फोड़ा फूट जावे तो उत्तम है नहीं तो इस दवा के कुल्ले करै

दवा

अनार की छाल ६ माशे· मूली के बीज छै माशे स

सफ़ेदजाज छै माशे नौसादर दो माशे इन सव को श्रा धसेर तेज सिरके में औटा कर कुल्ले करावै जव फो डा फूटजावे तो ध्यान रक्खे कि घाव है या मिलगया जो मिलजाय तो ये दवा करे॥

दवा

कोकनार २नग· गेहूं की भुसी ६माशे खतमी के फू ल ६माशे· गुलनार ६मा· इन सव को पानी में औटा कर कुल्ले करावे जो घाव होय तो ये दवा करे

दवा

खतमी १तो· खतमी के फूल १तो· वनपसा के फूल १तो लिसोडे १तो· मेथी के वीज १तो· इन सव को जो कुट क रके सेरभर नदी के जल में औटावे पहिले भिगो कर फिर काले तिलों का तेल मिला कर औटावे जव पानी जल जाय और तेल मात्र रहि जाय तव छान कर उ स घाव पर लगाया करै॥

एक फोडा मुख में जीभ के नीचे होता है और उस की सूरत छाले कीसी होती है और एक फोडा कोने की ओर झुका हुआ होता है और उस्के कार ण करिके वाहर की ओर एक गुठली सी हो जाती है उस गुठली पर यह लेप लगावे॥

निर्विसी हरी मकोय इन दोनो को पीस कर गरम करके लगावे॥ और जो छाला सा होता है उस्की चिकित्सा यह है॥

दवा

वायविडंग· माईछोटी· माईबडी· माजूफल हरा· सेंधलो न· बराबर ले पानी में ओटा के कुल्ला करे और फूटजा वे तब ये दवा करे

दवा

धनियां सूखा· कत्था सफेद· माजूफल· इन को बराबर ले महीन पीस कर लगावे और इन्ही को जल में ओटा कर कुल्ले करे और उस में बुरा मांस उत्पन्न होजाता है और सबरी जीभ पर छा जाता है तो उस को बीस बाईस वर्ष के उपदंश का मवाद जानो इस की दवा बहुत कठिन है और बहुत से फोडे इसी के कारण कि के होते हैं इसी सबब से कोई मनुष्य रोग की चिकित्सा करी जाती है कि उस बुरे मांस को जीभ परसे काट डाले तब उस में से रुधिर निकलने को ये दवा करे॥

दवा

बनात की भस्म· सीप की चूना सर बूका कोयला· सेलखली· रूमी मस्तगी· खरगोश की खाल· गोमा का रस छुंयांटे के पत्तों का रस· इन को पीस कर लगावे जब रुधिर बंद हो जाय तब जुलाब देवे और प्रकृति के अनुसार दवाई खिलावे घाव पर ये लगावे

दवा

फिटकरी कच्ची ४मा· नीलाथोथा भुना ४मा शेगोका घृत ४ तोले इन दोनो दवाओं को पीस कर घी में मिलावे और जल में खूब धो कर लगावे और जो

रोगी माने तो यही चिकित्सा करे और जो नमाने तो
कभी उस्की चिकित्सा न करे जैसा सुना सिवृहो करे
और दूसरा फोड़ा जो मुख के कोने की ओर को मु
का हुआ होता है और बाहर की ओर उस्की गुठली होती
है उस गुठली परतो यह लेप करे जो वर्णन करचुके हैं
और भीतर ये दवा लगावे॥

दवा

रूमी मस्तगी सफेद कत्था माजूफल भुना वंशलोच
न गाजवांकी भस्म ये सब दवा धार २ मा इन को मही
न पीस कर लगावे और मुंग की धोवा दाल और वि
ना चुपड़ी गेंहूं की रोटी खाय॥

होठके फोड़े का यत्न

एक फुनसी होठों पर होती है उस पर पुट्ठ करने वा
ला मल्हम लगावे जिससे मवाद शीघ्र ही निकल
जावे और केले के पते घृत में चिकने कर गले में बां
धे कि सूजन को गुण करता है और इस्की चिकित्सा
शीघ्र करे क्योंकि ये फोड़ा पेट में उतर जाता है औ
र उस्के बाहर फूटने का यह मल्हम है॥

दवा

बिरोजा २ तो रेवतचीनी १ मा अंजरूत ४ मा इन को पी
स बिरोजे में मिला जल से खूब धोवे कि मल्हम होजाय त
ब लगावे जब फूट जाय और मवाद निकल जावे तब ये ल
गावे॥ दवा

रसौत २मा· नगरकी लकडी २मा· इन सबको पीसकर
गौके घीमें मिलावे और औरजो कढाई में डाल कर
खूब घोटे तौ बहुत अमल है इस दवा के दस पांच बार
लगाने से आराम हो जाय॥

डाढ के फोडे का यत्न

एक फोडा दाढ में होता है उसकी दवाई यह है

दवा

नीमके पत्ते चकायन के पत्ते· संभालू के पत्ते· नर्गी के-
पत्ते इन चारों को बराबर लेकर जलमें औटावे और वफा
रादे और उसी को बांधे और उसी के जल से कुल्ले करे
औरजो भीतर ही फूट जावे तौ अमल है और बाहर फू
टै तौ बिनादांत के उखाडे आराम न होगा औरजो यह
फोडा बाहर हुआहो और बाहर ही फूटे तौ उसको चीर-
डाले और चार फांक करे और नीम के पत्ते तथा नोन बां
धे औरजो मल्हम ऊपर वर्णन किये गये हैं उनमें से को
ई सी मल्हम लगावे॥

अथवा

काले तिलों का तेल पांचतोले मोम सफेद एक तोले लो
हबान एक तोले मुरदा संग पांच माशे नीला थोथा ए
क माशे पहिले तेल को गरम करे फिर मोम डालकर
पिघलावे पीछे सब दवाई यों को पीस कर मिलावै-
जब पकजावे तब खूब गाढे ठंढाकर काम में लावे औरजो
भीतर फूटे तौ वह कुल्ले करावे जो खुनाकरोग में वर्णन कर

आये हैं और जो घाव भीतर से शुद्ध हो जाय तो तेल भर दें जो जो ऊपर कह आये हैं और यहां भी लिखते हैं कि यह तेल ताखीन या जल पाई का तेल है और जो मुख के भीतर छोटे छाले होंय तो बरफ के पानी से कुल्ले करावे तो निश्चै आराम हो

ठोडी के फोडे का यत्न

एक फोडा ठोडी पर होता है और उसके पास लाल सूजन होती है इस फोडे का निसान आगे की नसतबीर में लिखा है

इलाज

इस फोडे पर जंगाली मल्हम लगाना चाहिये और जंगाली मल्हम वह है जिस्में रेवत चीनी और विरोजा मिला है जब मवाद निकल जावे तब इसपर मल्हम लगावे और जो उस के नीचे गुठली हो जाय तो उस्पर नीम के पत्ते और नोन पीस कर बांधे जब वो पक जावे तब वे मल्हम लगावे जो अभी वर्णन किये हैं॥

कानके फोडेका यत्न

एक छोटासा फोडा कानके भीतर होता है उस्की सूरत येहै फिटकरी सफेद तथा समुद्र फेन पीसकर कानमें डाले- और ऊपरसे कागजी नीबूका रस डालदेवे जव पवाद बंद होजाय और पीडा शांति होजाय तौ मूलीके पत्ते मीठे तेल में जला कर छान ले और उस तेलको कानमें डाले तो आराम हो और इसका निसान इस तसवीर में देषो॥

दांतोंकी पीडाका यत्न

जो दांतोंमें पीडा हो अथवा दांत हिलते होंय या दांतोंसे रुधिर वहता हो तथा दांतोंसे दुर्गंधि आती हो तो येदवा करे॥

दवा

माजू सफेद तीनमाशे अनारका छिलका तीनमाशे इन दोनोंको एक सेर पानीमें ओटा कर कुल्ले करावे

ओर जमीरी के पत दांतों पर मले अथवा हरा धनिया ने जा सिरके में पीस कर मले अथवा नाड के वृक्ष का छिलका खजूर का छिलका कचनार की छाल महुए की छाल इन सब को एक २ तोले लेकर जलावे अथवा इन सब की राख एक २ तोले ले और रूमी मस्तगी चार माशे सफेद मूंगे की जड छे माशे माजूफल भुना हुआ छे माशे मापा सफेद कत्था छे माशे सोना मारवी तीन माशे इन सब को पीस कर मिस्सी के सदृश दांतो पर मले॥

अथवा

सफेद कत्था एक तोले फिटकरी सफेद छे माशे माजू-फल छे इन तीनों को जो कुट करके एक सेर जल में औटावे जब आधा पानी जल जाय तब कुल्ले करावे॥ अथवा लोह चूरा ८ तोले हरा माजू फल ४ तो· लीला थोथा भुना हुआ १ तोले सफेद कत्था २ तोले छोटी इलायची के दाने ६ माशे इन सब को महीन पीस कर मिस्सी की तरह दांतो पर मले अथवा

लोह चूरा ।। सेर विना छेद के माजू फल ।:- पाव छोटी इलायची छिल के समेत एक तोले लीला थोथा १ तोले लाल कत्था १ तो· रूमी मस्तगी ४ मा· हीरा कसीस ४ मा· सोना माखी ४ माशे सब को महीन पीस कर दांतो पर मले अथवा तांवे का बुरादा १ छटांक अनार का छिलका ।- माजूफल २।। तो· फिटकरी १ तो· इन सब को महीन पीस कर दांतो पर मले अथवा रूमी मस्तगी माजूफल - हरी कसीस मई

वडी हर्ड का छिलका· फिटकरी भुनी· नीला थोथा भुना मौलसिरी के पेड की छाल· सब को बराबर लेके महीन पीस कर दांतो के मलै और मुख को नीचा करके लार टपकावे फिर पान खा कर लार को बंद करै

अथवा

कपूर को गुलाब जल में और सिरके में मिला कर गौ के दूध में मिला कर कुल्ले करै॥

अथवा

फिटकरी भुनी एक भाग· सहत दो भाग· सिरका एक भाग· इन तीनों को आंच पर पकावे जब गाढा होजावे तब दांतो पर मलै

अथवा

सुपारी की राख· कत्था सफेद· काली मिर्च· रूमी मस्तगी· सेंधानोन इन सब को बराबर ले महीन पीस दांतों के मलै॥

अथवा

माजूफल· कुलफा के बीज· इन को पानी में पीस कर कुल्ला करै तो मसूडों से खून बहना बंद होय॥

अथवा

बारह सींगे के सींग की भस्म और सेंधा नोन महीन पीस कर मलै तो मसूडों से खून निकलना बंद होय

अथवा कुदरू गोंद मस्तगी· इन को महीन पीस मसूडों के घाव पर लगाना॥

गंजे का इलाज

जो सिर मे गंज होतो काली मिर्च २मा. कलोंजी २तो. दो नो को गोके घी में जलावे और घोटे जब मल्हम के सदृ
श होजाय तब पानी में घोले फिर नितार ले पहिले इस
के जल से सिरको धोवे फिर इस इस मल्हम को लगा
वे॥

अथवा

काली मिर्च छे माशे कवेला हरा छे माशे महदी के
पते हरे छे माशे सूखे आमले छे माशे नीम के पते
छे माशे नीला थोथा छे मा. सरसोंका तेल ५तो. ८सब
दवाओंको तेल में जलाकर घोट कर ठंडा करलगावे

अथवा

हालम दो तोले लेकर जलावे जब जल कर राख हो
जाय तब पीस कर कडवे तेल में मिलावे फिर इ
सको दो पहर तक धूप में धर राखे फिर इस को-
लगावे तो गंज मिटजाय॥

हाल

जानना चाहिये कि सिर के फोडों के भेद
तो बहुत हैं जो सबों को वर्णन करता तो ग्रंथ
बहुत बढ जाता इस लिये संक्षेप से लिषा है परं
तु जो फोडे सिरमें होते हैं उन सबों का इलाज इ
न्ही मल्हमों से करना चाहिये क्योंकि ये सब मल्हम
बहुत ही गुण दायक हैं॥

कठके फोडे का यत्न

एक फोड़ा कंठ में होता है उसे कंठ माला भी कहते हैं इ-
सकी सूरत पहिलें ऐसी होती है कि बाईं ओर वा दाहिनी
ओर गले में गुठली सी हो जाती हैं फिर बढ़ कर बड़ी गां
ठ हो जाती है इस फोड़े का निशान इस तसवीर में स
मझ लेना ॥

इस फोड़े की चिकित्सा इस प्रकार से करनी चाहिये
कि पहिलें तो बैठाने वाली दवाई लगाना चाहिये क्यों
कि जो ये बैठ जावे तो बहुत ही अच्छा है। बैठाने की
दवा येहै॥

रवूब कला पांच तोले और जान कड़वा एक तोले कु
दरू गोंद एक तोले इन सब को हरी कासनी के रस
में पीस कर लगावे और उसके पते और मकोय के
पते गरम कर के बांधे जब गुठलीयां न बैठें तो फस्त
खोले और वमन करावे और ये दवा लगावे

कि उक्त दवाईयों को सोये के अर्क में पीस कर लगा वे और जो वर्णन करी हुई दवा ओं से गुठलियां न बै ठे तो यह लेप करे॥

लेप

गुलाब के फूल गेरू गुलनार सखी मकोय दम्मुल अखवेन मूरिद के बीज· इन सब दवाओं को एक एक तोला ले महीन पीस मुरगी के अंडे की सफेदी में मिला कर गोलियां बना कर छाया में सुखा वे फि र एक गोली अंगूर के सिरके में पीस कर लगावे औ र जो इस्के लगाने से भी न बैठे और पक जावे तो ये दवा करे॥

अथवा

कडवा तेल ।=आध पाव और एक गिरगट रवि वार वा मंगल वार को मारे आक के पते नग ७ मिलाये नग ७ इन सब को तेल में जला कर खूब घोटे और ठंडा क रके लगावे और कदाचित इस घाव के आस पास- स्याही आजाय और घाव में से पानी निकलता हो तो बहुत बुरा है॥

और जो स्याही न हो और गांठ फूटी भी न हो तो उ सके बठाने को और दवा लिखते हैं॥

छुहारे की गुठली· इमली के चीयां· महदी के पते इनको पीस गुनगुना पतला लेप करे अथवा मूसे को मीठे तेल में पका उस तेल को लगावे॥

अथवा दो मुहडे के सांप को मार कर जमीन में गा-

दे जब उस का मास गल जावे नब हड्डी को डेरे में बांधग लेपर बाधे॥ अथवा वृदारच्चमड़ा बांधना अच्छा है॥

धुकधुकीकायत्न

एक घाव कंठ में होता है उस्को लौकिक में धुकधुकी कहतेहैं उसमें से दुर्गंधि आया करती है और कंठ से लेकर छाती के नीचे तक घाव होता है जो घाव में गढे हों तो ये इलाज न करे क्यों कि महान वैद्यों ने लिखा है कि यह फोडा अच्छा काम होता है और जो दवा करनी भवश्य होतो ये करे और इस घाव का निशान इक्सनसीर में लिखाहै॥

दवा

समुद्रफेन २० तोले को पास छान कर एक तोले नित्य फकावे और उस्के ऊपर जामुन के पते पानी में पीस कर पिलावे और उस घाव पर ये दवा—

मनुष्य के सिर की हड्डी वासी जल में पीस लगावे॥

अथवा

सूअर की विष्टा कन्या के मूत्र में पीस कर लगाया करे

अथवा

एक घूंस को मार कर शुद्ध करे और छछूंदर मार कर शुद्ध करे फिर इन को आध सेर कड़वे तेल में जलावे फिर इस तेल को छान कर लगावे॥

कखलाई का यत्न

एक फोड़ा बगल में होता है उसे कखलाई कहते हैं बगल में एक या कई गुठली सी होती हैं और एक उन में से पक जाता है जब तक वह अच्छी नहीं होने पाती तब तक दूसरी पक जाती है इसी प्रकार से कई बार करिके छैसात हो जाती हैं और एक लक्षण ये हैं कि एक गुठली सी हो कर पक जाती है फिर वह पक कर शीघ्र ही फूट जाती है तो अच्छी है नहीं तो विना चीरा देने के अच्छी नहीं होती जो रोगी बलवान होती फोड़े की वो सूरत होती है जो ऊपर कहि आये हैं और जो बल हीन होती ये सूरत होती है कि पहिले बगल में सूजन सी होती है और बहुत सख्ती होती है वह बहुत दिनों में पकती है देर होने के कारण कर के नस्तर या तिजाब लगाते हैं तो रुधिर निकलता है बस यही हानि है जब नीम के पत्ते बांध चुकते हैं तो मल्हम लगाने के पीछे पानी निकला करता है सो इसी प्रकार से रोग बढ़ जाता है

इस फोडे का निशान नीचे की तसवीर में समझ लेना
इस फोडे का यत्न यह है कि पहिलें वे पत्तियां बांधे जो
हाद के फोडे के वास्ते लिख आये हैं जब नरम हो जाय त
ब वो मल्हम लगावे जिस्में बान पाव का रद्दा लिखा है अ
थवा ये दवा लगावे॥

गेहूं का मैदा· सहत· मुरगी के अंडे की जरदी तीनों को मि
लाकर लगावे इस दवा के लगाने से फूट जावेगा और जो
नरम होतो चीर देवे फिर नीम के पते मैंन सहत बांधे
और ये मल्हम लगावे॥

नीला थोथा ३ मा· कोकनार जला हुआ १तो· इन दो
नों को पीस थोडा सहत मिला कर रगडे जब मल्हम
के समान हो जाय तब लगावे॥

अथवा

खच्चर की हड्डी और सूअर के बाल जला कर खच्चर
की चरबी में मिला कर खूब रगडे और लगावे॥

और घाव सूखा नहो तौ मनुष्य की हड्डी तथा बालों की भस्म बुरके तो घाव सूख जाय॥
और जरहि को चाहिये कि घाव पर निघा रक्खे कि घाव पानी न देवे जो घाव में से पानी निकलता हो तौ उस्के कारण को जाने कि किसी कारण करिके उस में से पानी निकलता है मनुष्य की प्रकृति चार प्रकार की होती है पानी तौ रतूबत के कारण से निकलता है और रुधिर पित्त के कारण से और पीली पीव कफ के कारण से और असल पीव खुस्की के कारण से निकला करती है और उचित है कि जो मल्हम योग समझे सो लगाया करे॥

छाती के फोडे का यत्न

एक फोडा छाती में तीन चार अंगुल होता है उस्की सूरत यह है कि प्रथम तौ ददोडासा होता है फिर बढ जाता है फिर अपना विकार बहुत फैला देता है इस फोडे को बैठाना अच्छा नहीं क्योंकि दाहिनी ओर को होता है तौ इस्में बडा भय रहता है कि फोडा पेटमें न उतर जावे और जो बाई ओर होवे तौ कुछ डर नहीं और जो आदि में बैठि जाय तोभी कुछ डर नहीं॥
और पक जावे तौ चीर डाले और नीम के पत्ते बांधे फिर उस्के घाव पर ये मल्हम लगावे॥

मल्हम की विधि

सफेदा २ तोले नीला थोथा १ रत्ती विलायती साबन

एक माशे इन सबको पीसकर गौके पांच तोले घीमें मिलावे फिर इसको पानी से धोकर घाव पर लगावे इसी सूरत का फोडा बालक के हो वा तरुण के तो शुद्ध मनीसे चिकित्सा करे और इस फोडे का पीव सफेद पीलापन लिये निकले तो शीघ्र आराम हो और जो पीव पुलाबी हो तो इसी मल्हम में कासगारी सफेदा चार माशे मिलावे और घाव पर लगावे तो घाव अच्छा होय॥

स्त्री की छाती के फोडे का यत्न

एक फोडा स्त्री की चूंची पर होता है उसकी चिकित्सा-भी इसी प्रकार हो सकती है जैसा कि ऊपर छाती के फोडे में अभी लिख चुके हैं और उस फोडे पर पहिले कीम ल्हम लगावे जिसमें भेद फीजरदी लिखी है अथवा वो मल्हम लगावे जिसमें पुरान घाव का पूरा लिखा है इन

मल्हमों के लगाने से फोड़ा फूट जाता है अथवा ये म
ल्हम लगावे जिसमें आमा हल्दी लिखी है इनके लगा
ने से न फूटे तो चीरा देवे और जो फूटे फोड़े के घाव का
मुख ऊपर को हो और दबाने से पीप निकलती हो तो उ
सके नीचे नमल लगावे वा पुट्टी के नीचे बांधे और बालक
को दूध पिलाना बंद न करे और जो दूध पिलाने में हानि
समझे तो न पिलावे और ये मल्हम लगावे॥

मल्हम

सुपारी अधभुनी छै माशे कत्था सफेद अधभुना छै मा
शे सिंदूर गुजराती छै माशे सफेदा कासगरी छै माशे
गौ का घृत सात तोले पहिले घी को गरम करके उसमें
एक तोला पीला मोम पिघलावे फिर सब दवाईयों को
पीस कर मिलादे और खूब घोंटे जब ठंडा हो जाय तब छै
माशे पारा मिलाकर खूब रगड़े फिर इसको लगावे तो घा
घाव शीघ्र अच्छा होय॥

और एक फोड़ा बिना दूध की चूंची में होता है उसकी
सूरत यह है कि पहिले एक फुन्सी मसूर की दाल की बरा
बर होती है और भीतर एक गुठली चने के प्रमाण होती
है वह दिन प्रति बढ़ती जाती है और वो फुन्सी अच्छी हो
जाती है और वो गुठली तकलीफ न देती एक अथवा
दो वर्ष के पीछे आम की बराबर हो जाती है और जो वृद्ध
स्त्री के होय तो आठ नौ महीने के पीछे आम की बराबर
हो जाती है जब गुठली इतनी बढ़ जाती है तब उसमें पीड़ा

होतीहै औरज्वरभीहोजाताहै यपाषाणकेभेदोंमेसेहै इसको फंकर बेल कहते है और काटसे भीनही कटती इसकीचिकित्सा करने वाले को उचित है कि हकीम की सम्मति भी लेता रहे क्योंकि दवाइयों की प्रकृति को ये लोग खूबजानते हैं उनकी सम्मति और अपनी सम्मति मिली रक्खे अंग्रेजी दवाई को लोग शक्ती नही रखते इसी लिये हकीम की सम्मति लेना अच्छा है कि वो प्रकृति के अनुसार चिकित्सा करेगा पीने और लेप करने की ये औषधि है पहिले ये बफारा देवे॥

बफारे की दवा

संभालू के पते· मह्ना के पते· इन दोनों को पानी मे औटा कर बफारा देवे और इन्ही पत्तों को बांधे अथवा सोये का साग औटाकर बांधे अथवा ये लेप करे॥

लेप की विधि

नारखूना एक तोला· खुब्बाजी के बीज एक तोला खत मी के फूल एक तोला· खतमी के बीज एक तोला· अमलतास का गूदा दो तोला· शोरंजान कड़वा छै माशे· बनफ्सा के फूल छै माशे· उश्क रूमी छै माशे· अलसी छै माशे· इन सब को पीस गरम करके लगावे॥ अगर इसके लगाने से आराम न होतो इस रोगी को जुलाब देवे तथा फस्द खोले और जो आराम न होतो वे दवाई लगावे कि जिसमे खरबती है और हाल उसका ऊपर कहागया है और एक नुकसा लेप का यह है॥

लेपकीविधि

सुरदासंग·सोरंजानकडुवा·गेरू·मुलीमकोय·लवव
राबरलेइनसबकोपानीमेंपीसकरलगावे औरफो
डेकोदेखेकिकहांसेनरमहै उस्परजैतकेपते औरनी
मकेपते औरसांभरनोंन पानीमेंपीसकरबांधे और
आसपास वोहलेप लगावेजोऊपर कहआये हैं और
जोइनसेन फूटेतौनीमकीछाल पानीमें घिसकेल
गावे औरजो किसीसे आराम नहोतोये फायालगा
वे॥

फायेकीविधि

लालमैनफल· बबूरकागोंद·लौंग·विलायतीसावन
भैंसागूगल· सबकोबराबरले पानीमें पीसकरक
पडेपरजमाकर रखछोडे फिरसमयपर फोडेकोबरा
बरफायाकतरकरलगावेजब फूटजाय तो जैतकेप
ते औरनीमकेपते बांधेजबफोडेमें सख्तीनरहेतोऊ
परकहेहुए मल्हमोंमें से कोईतेज सामल्हम लगावे।
औरजो फोडाके फूटनेकेपीछे उस्में बुरामास उत्पन्न
होजावेतो चिकित्सानकरे औरजो करेतौ सबी चूंबी
कटवाडाले औरहकीमको चाहिये किदवा प्रकृति
केअनुसारकरे औरवो मल्हम लगावे जिस्से घावपा
नीनदेवे औरजो चूंबीनकाटीजावेतो मल्हम येहै॥

मल्हम

मंगालएकतोले·शहदएकतोले·सिरकादोतोले·
इनसबको मिलाकर पकावे जबतार बंधनेलगे तबउता

करकेलगावे और घावको देखे कि घावमें रुधिर निकल
ताहै या पानी निकलता है और असाध्य का लक्षण यहहै
कि घाव के चारो ओर स्याही होती है और दुर्गंधि आती है
और पीव काली निकलती है और फफोंदी के सदृश स
फेदी होती फिर उस घाव घाव की चिकित्सा न करे क्यों
कि उस्को कभी आराम नहीं होगा और साध्य का यह ल
क्षण है कि घाव चारों ओर से लाल होता है और पीव गा
ढी पीला पन लिये निकलती है जो घाव की सूरत ऐसी हो
तो निस्संदेह चिकित्सा करे परमेश्वर के अनुग्रह से नि
श्चय आराम होगा॥
एक फोडा छाती पर कोडोके पास अथवा कोडी के स्था
न पर होता है उस्को तेज मल्हमों पकाकर फोडे अथवा
चीर डाले उस्के भी चिकित्सा शीघ्र करनी चाहिये क्यों
कि ये फोडा रहजाता है॥ और जो घावमे सामान वर्ता जा
वे तो चिकित्सा न करे और जो दाहीन था वाहीं ओर व
नी जावे तो इसी प्रकार से चिकित्सा करे जैसी कि ऊप
र वर्णन कर आये हैं॥
और एक फोडा पेट पर होता है उस्की चिकित्सा
इस प्रकार से करनी चाहिये जैसी छाती के ऊपर
के फोडे की वर्णन कर आये हैं और यह मल्हम
लगावे जिस्में जला हुआ कांकनार लिखा है
और एक फोडा नाभि के ऊपर होता है उस्की
चिकित्सा ऐसी करनी उचित है जैसी कि पेट के-

फोड़े की वर्णन करी है और वह मल्हम लगावे जि
स्मे रसोत और तगर की लकड़ी लिखी है इनती
नों फोड़ों की एकही चिकित्सा करी जाती है

और एक फोड़ा पेट के ऊपर होता है उस्का
चौड़ाव और लंबाव बहुत होता है यहां तक बढ
ता है कि तरबूज की बराबर हो जाता है इस की
चिकित्सा भी शीघ्र करनी चाहिये कि स्याही न
आने पावे और जब स्याही आजावे तो चिकित्सा
न करे क्योंकि ये असाध्य है परंतु जो चिकित्सा
करनी अवश्य होतो इस प्रकार से करे और ये म
ल्हम लगावे॥

मल्हम

नीमके पते एकसेर आंबाहलदी आधपाव हलदी क
च्ची आधपाव कालेतिलों का तेल सेरभर पहिले
तेल को तांबे के बरतन में गरम करे फिर उसमें नी
मके पत्ते डाले जब नीम के पत्ते जल कर स्याह हो
जावें तब उन को निकाल कर दोनों हलदियों को
जौ कुट करिके तेल में डाले जब वोभी स्याह होने
लगे तब तेल को छान कर रक्खे और फोड़े पर-
लगावे और जो इस के लगाने से कुछ आराम न
होतो वही करे जो ऊपर वर्णन किया है और सम
य पर जैसी सम्मति हो वैसा करे परंतु मेरी सम
झ में तो यह बात आती है कि इस रोग की चिकि
त्सा करनी योग्य नहीं है

और बहुत से फोड़े आगे की ओर को होवे हैं-
और ये फोड़े जो कहे हैं उनकी चिकित्सा करने से
अच्छे हो जाते हैं और ये फोड़े पेट के जो कहे हैं उ
नकी चिकित्सा बहुत ही कठिन है जैसा मेरी बुद्धि
में आया वैसा तो मैंने लिखा आगे जराह अपनी स
म्मति के अनुसार करे॥

और एक फोड़ा पेड़ू और जंघा के बीच में हो
ता है वह भी फंट माला के भेदों में से है और लौकि
क में उसका नाम बद [illegible] है उसकी सूरत यह है
कि पहिले एक फुन्सी सी होती है और [illegible]

पदंसकेसंदेहमें छिपातेहैं यद्यपि वो बालकों कू भी हो जाती है और जो उसको न छिपावे तो शीघ्र आराम हो सक्ता है और फिर इसकी चिकित्सा कठिन पड जाती है और इसके इलाज बहुत से हकीमों ने अपनी अपनी किताबों में लिखे हैं अपनी बुद्धि के अनुसार अब हम भी लिखते हैं बुद्धिमानों को चाहिये कि पहिले वे दवा लगायें जिससे बैठ जावे बैठालने वाली दवा ये हैं

दवा

एक तोले चूने को लेकर मुर्गी के अंडे की सफेदी में मिला कर लेप करे॥

अथवा मनुष्य के सिर की हड्डी को पानी में घिस कर लगावे॥

अथवा ईसबगोल को पानी में पीस कर बद पर लेप करे॥

अथवा सफेद कत्था कलमीतज · कवेला · व बूल का गोंद · छै छै माशे इन सबको पीस पानी में पीस गाढा गाढा लेप करे॥

और जो नहीं बैठे तो पकाने वाली दवाई लगावे- वो दवाई यह है

दवा

एक अंडे की जरदी · निरचालिस सहत एक तोले गेहूं का मैदा एक तोले इनको मिलाकर लगावे॥

और जो न फूटे तो नश्तर देवे जो नश्तर देने से कच्चा नि-

कच्चे तो नीम के पत्ते और हरी मकोय और नर्मो के पत्ते औ
रजैन के पत्ते और घकायन के पत्ते इन सब को पानी में औ
टा कर भपारा देवे और इन्हीं को बांधे सात दिन तक यही
करते रहें इस्से खूब नरम होकर मवाद को निकल जावे
फिर ये मल्हम लगावे

मल्हम

प्रथम आध पाव गौ का घृत लेकर गरम करै फिर उ
स्में दो तोले पीला मोम पिघलावे फिर सफेद राल सा
त तोले मिलावे जब खूब मिल जावे तब एक सकोरे
में रख कर पानी से धोवे और चार तोले भांगरे का रस मि
ला कर घाव पर लगावे और एक लेप यह है कि आदि
में फोड़े को तहलील करता और पके हुए को फोड़ देता
है और कच्चे को पका देता है॥

लेप

हहालों · तज · अलसी · मेथी के बीज · ये सब एक एक
तोले एलुआ कमंगरी · सावन · भैंसा गूगल · रेवतचीनी ·
गुलाबी सज्जी · ये सब छै छै माशे इन सब को पानी में
पीस गरम कर गाढ़ा गाढ़ा लेप करै और ऊपर से चग
ला पान गरम करके बांध देवे और इस लेप के बहुत
से गुण है और जो इस लेप को चोट पर लगावे तो स
ज्जी न डाले किंतु सज्जी के बदले सेंधा नोन मिलावे
और जो चोट से हड्डी टूट गई हो तो आंबा हल्दी और ब
ढ़ा कर लगावे॥

एक फोड़ा अंडकोषों के नीचे होता है उस्को भगंदर कहते हैं उस्में सूजन होती है और ज्वर भी हो आता है उस्की चिकित्सा यद की चिकित्सा के अनुसार करनी योग्य है और वन्हीं पत्तियों का यफारा देवे और वो मल्हम लगावे जिस्में अलसी और मेथी लिखी है जब नरम हो जावे तो चीरने में देरी न करै पीछे नीम के पत्ते और नोन बांधे और ये मल्हम लगावे॥

मल्हम

पहिले सात तोले गौ का घृत गरम करो फिर तोले भर सफेद मोम उस्में पिघलावे फिर गुजराती सिंदूर दो तोले सिंगरफ रूमी· सफेद जीरा· खिलखड़ी· काली मिर्च· कत्था सफेद सुपारी· ये सब एक एक तोले ले और नीला थोथा· एक माशे· इन सब को महीन पीस कर उसी घृत में मिलावे और आंच पर रक्खे जब खूब चासनी हो जाय तो ठंडा करके लगावे और जो इस्से आराम न हो तो वह मल्हम लगावे जिस्में बेर के पत्ते हैं और जो रह जावे तो तेजाब लगावे जिस्में गिरगट है॥

गुदा के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा गुदा में होता है उस्को बवासीर कहते हैं वो फोड़ा कई भेद का होता है एक भेद उस्का यह है कि घाव हो और उसे आराम न हो वह फिर पकेगा और फटेगा और इसी प्रकार से रहेगा और जो बहुत से घाव हो तो सब को अच्छा करदे और एक

क घावको रहने दे जिस्से मवाद निकलतारहे इस फोडेको हकीम और डाक्टर असाध्य कहते हैं और इसी से इस पर ये मल्हम लगाना सुना सिवहै॥

मल्हम

काले तिलोंका तेल छै मारो कच्चा मोम चार मारो सूअरकी चरवी दो तोले राल विलायती एक तोले इन सबकी मल्हम वनाले और मूत्र से धोकर लगावे॥ अथवा सांपका सिर नग १ छछूंदर नग १ सूअरकी विष्ठा सात तोले सूआर की चरवी दो तोले हुक्का नारियल पुराना २ काले तिलों का तेल एक सेर इन सव दवाई यों को तेल में जला कर तेल को छान कर लगावे जव इस ओर से मल और अपाना वायु निकलने लगे तो चिकित्सा न करे इस घाव में से पीव नहीं निकलती है किंतु पानी निकला करता है और जर्राह को उचित है कि कोई वात ऐसी निकाले कि चिकित्सा करनी छूट जावे

गर्दन के फोड़े का यत्न

एक फोडा दोनों कंधों के वीच में होता है और वडे वडे ग्रंथों में उस्को खंजर वेग लिखा है और सुना भी है और सूरत उस्की यह है कि पहिले सूजन के साथ सख्ती होती है जव वह फूटता है तो वुरा मांस हो जाता है उसकी दोनों ओर से मुंह एक जंतु के सदृश होता है और उस्को न्योला कहते हैं और ये रोग रोगी के कलेजे को खाता है परंतु निश्चे किया गया तो मालूम हुआ कि ये

बात झूंठहै जब उस्को गौर करके देषा तो बुरा मांस मालू
म हुआ परंतु इस फोड़े को अच्छा होता कहीं नहीं देषा है
और किसी को चिकित्सा करता देषा कि बुरा मांस कट
जावे तो कुछ आराम होना कठिन नहीं परंतु उस मांस को
जहां तांई बने वहां तांई दवा से काटना चाहिये काटने
वाली दवा ये है ॥

दवा

सांखिया सफेद· नीला थोथा· नोसादर· फिटकडी भुनी·
कच्चा सुहागा· गुलाबी सज्जी· हलदी जली हुई· इन-
सब को पीस कर लगावे॥

अथवा सहत तीन तोले· जंगाल दो तोले· सिरका
तेज सात तोले· इन सब को मिला कर औटावे जब ता
र बंधने लगे तब उतार ले और ठंडा करके लगावे॥

अथवा कास्टिक की बत्ती लगावे कास्टिक एक अं
ग्रेजी दवाई है और इस फोड़े को छुरे से काटना अ
च्छा नहीं क्यों कि नित्य घटता बढ़ता है इसी लिये
नैस्तर से नहीं काटते हैं और सब जर्राह इस फोड़े को
छुरे से ही काटते हैं इसी कारण वह फोड़ा खराब-
हो जाता है और अच्छा नहीं होता है इसी से सब को
सुनासिब है कि इस फोड़े को दवा के जोर से काट
ना चाहिये और उस के आस पास यह लेप लगाना
चाहिये ॥

लेप॥

त्रिवीखताई· जहरमोहराखताई· मूरिदकेवीज· गुलनार· गुलावकेफूल· दव्बुलअखवेन। इनसवकोवरावरले हरीमकोयमेंपीसकरलगावे परंतु इस रोगवाले की फस्त अवश्य खोले और वमन भी करावे और येरोग मुसलमान के होयतो वकरी के मांस का सोरवा और रोटी खिलावे और हिन्दु के होयतो हकीम अपनी मतके अनुसार पथ्य दे॥

कंधेके फोडेकायत्न

एक फोडा कंधे पर होताहै और येभीनासूरकास्थान है उसकोभी चीरडाले अथवा तिजाब लगावे और फोडझ ले इस फोडे का निसान नीचे लिषी तसवीरमें समझो॥ और वो तसवीर इस फोडे के इलाज के अंत में लिखी है और जो ये फोडा आप ही फूट जावे तो वह मल्हम लगावे जिस्में सुहागा और नीला थोथा है जववो घाव अच्छा होजाय और वतीजाने के मा फिकस्थान रहि जावे तो चीर डाले वा तिजाव लगावे और जो चारों ओर से वरावर अच्छा हो जाय तो सुखाने के वास्ते यह मल्हम लगावे॥

मल्हम

पहिलें सीसे की गोली का कुस्ता करे उसकी भस्म ६ माशे और रसफेदा काशगरी ६ माशे· सिंदूर ६ माशे सलसफेद २ माशे गौ का घी ६ माशे· इनसव को पीस कर गरम करके मिलावे फिर पीला मोम ६ माशे मिलाकर रखछोड़दे और लगावे॥

बांहके फोड़ेकायत्न

एक फोड़ा बांहपर होता है इसका निशान आगे कौनसवी रमें समझो और चिकित्सा इसकी इसप्रकार से करो जैसी कंधके फोड़े की वर्णन की गई है और कंधेसे घुटने तक सात फोड़े होते हैं और एक फोड़ा कोहनी पर होता है उस्में से पानी निकलता है उस्पर ये मल्हम लगावे॥

मल्हम

काले तिलों का तेल पाव भर· सफेद मोम दो तोले नीला थोथा दो माशे· सोनामाखी दो माशे· मस्तगी रूमी छै· माशे· विरोजा हरा छै माशे· माजूफल दो तोले· फिरोजा सूखा एक तोला· नौसादर पांच माशे· मुर्दासंग पांच माशे· सेलखड़ी तीन माशे चूरा लाल दो माशे· सुहागा चौकिया भुना दो माशे अंगाल एक तोले प्रथम तेल को गरम कर

ए फिरउसमें मोमकोपिघलावे फिरयेसबदवामहीनपीस करडालेजब मल्हमके मदृशहोजावेतबठंढाकरकेलगा वे ओरघुटनेसनीचेसातफोड़ेहोतेहैं इनकेनिशानआगे कीतसवीरमेंसमझो॥

उंगलीके फोड़े का यत्न

एक फोड़ा अंगुलीमेंहोताहैउसकोविसभरीकहतेहैं ओर बहुतसेमनुष्यइसकोविसारा कहते हैं जोउसमें बुरा मांस होतोचीरडालेओरजोनचीरेतोतिजावलगावेतबमांसक टजावेतबवोमल्हमलगावेजिसमेंशीशेकाकुस्ताहै॥

हथेलीके फोड़ेका यत्न

एक फोड़ाहथेलीमेंहोताहैउसकोभीचीरडालनाचाहि ये ओरजोफूटनेकीराहदेषेंगेतोअंगुलियांजातीरहेंगी- ओरजोअंगुलियांसीधीनहोतोभेडीकीमिंगनियां पानीमें

औटाकर वफारा देवे और भेडी के दूध का मर्दन करे अथवा दो आतशी शराव मले और कंधे से अंगुलीनक चौदह फोडे होते हैं जिनकी चिकित्सा कठिनाई से होती है और वह नसोंसे फोडे होते हैं वे शीघ्र ही अच्छे होजाते हैं॥

पीठके फोडे का इलाज

और एक फोडा पीठ में होता है उस्को अदीठ कहते हैं और उसके आस पास छोटी छोटी फुन्सियां होती हैं और वह फोडा पीठ के वीच में होता है वह केकडे के सदृश होता है और लंबाव तथा चोडाव में बहुत बडा होता है और उस फोडे में पकजाने के पीछे एक छिद्र होता है और उस्में पानी निकलता है अथवा पकी पीव निकलती है और छीछडा नहीं निकलता है उस फोडे का निसान नीचा लिपी तसवीर में समझो इस फोडे की चिकित्सा इस प्रकार से करनी चाहिये कि उस की चार फांक करके चीरडाले और उस्पर सांभर नोंन
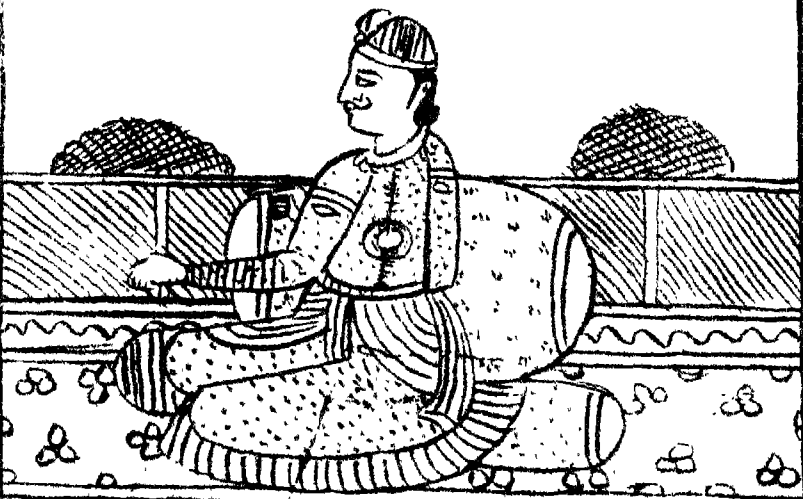
नीमके पते ∙ फिटकरी ∙ और सहत बांधते रहें कि मलादि से भुद्ध रहे परंतु ध्यान रक्खे कि इस्की सूजन बांईं ओर कोन आजावे और जो दैव योग से सूजन बांईं तरफ को हो आवे तो दाहिने हाथ की वासलीक नाम नस की फस्त खोले और पंद्रह तोले रुधिर निकाले और जो इतना रुधिर न निकले तो चार दिन के पीछें बायें हाथ की भी बासलीक नस की फस्त खोले और फोड़े पर ये मल्हम लगावे॥

मल्हम

चूक ∙ चूना ∙ सज्जी ∙ नीला थोथा ∙ सावुन ∙ राई ∙ सुहागा ∙ आख का दूध ये सब दवा एक एक तोले गौ का घी बारह तोले प्रथम घृत को गरम करि के सावुन मिलावे जब खूब चाशनी होजाय तब ठंडा करि के लगावे और जो घाव भर आने के पीछे सूजन होआवे और सूजन के पीछे पेचश होजावे तो चिकित्सा करना छोड़दे अथवा ये दवा पिलावे॥

दवा ∙

खनमी के बीज ∙ कनमी का रसा ∙ छेछे माशे इनको रात्रि को पानी में भिगोदे और सवेरे ही छान कर फिर पहिले चार माशे नाजवूक के बीज फका के ऊपर से उसे पिलादे और जो इन चारों फोड़ों में से जेमनी ओर को फोड़ा होवे तो भी इसी प्रकार से चिकित्सा करे जैसा कि अभी वर्णन किया है और जो फोड़ा बांईं ओर हो तो उसी के अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये और ये तीन फोड़े कुछ बहुत भयानक नहीं हैं जैसे चाहें तैसी चिकित्सा करे॥

पसली के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा पसली पर होता है इसका निसान नीचे की नसवीर में समझो क्योंकि ये भी स्थान नासूर का है और बाईं ओर की पसली का फोड़ा पेट में उतर जाता है उसमें से आहार निकलता है और ये फोड़ा बड़ी मुसकिल से अच्छा होता है वरन अच्छा नहीं होता॥

कोष के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा कोष पर होता है उसकी चिकित्सा उसी प्रकार से करनी योग्य है जैसी कि ऊपर वर्णन करी गई है और इन दोनों फोड़ों का निसान इसी नसवीर में समझ लेना
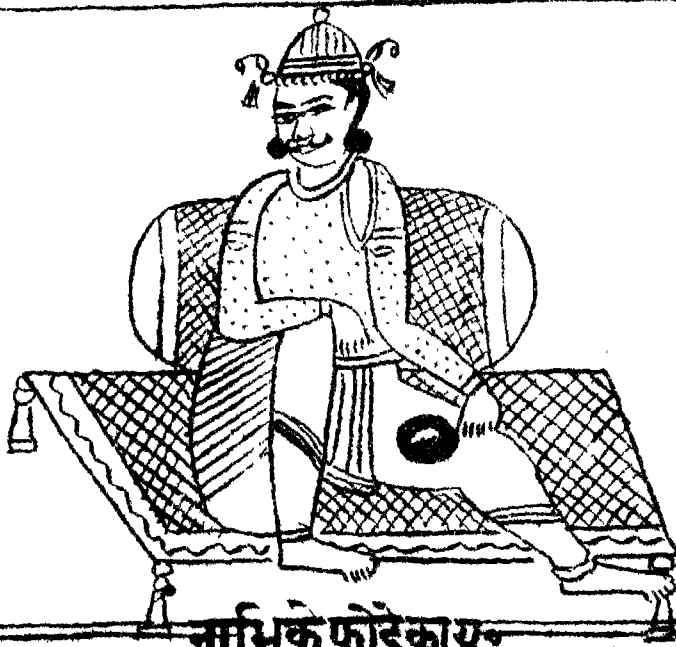
नाभि के फोड़े का य॰

एक फोड़ा नाभि पर होता है इसका निशान भी आगे की नसवीर में समझ लेना और चिकित्सा इसकी यों करे

किपहिलेउनपतियोंकावफारादेवेजोऊपर अंडकोषोंके फोडेकीचिकित्सामेंकहीगई है और नीमके पते · सफेद प्याजकेपते खारीनोन इनसवको पीसकर गरमकरके लगावे और जो फोडाठीकठीक पकजावे तो चीरडाले औ रजो आपही फूटजावे तो भीनस्तर देना अवश्य है क्योंकि विनानस्तर लगाये इसका मवादनिकलना नहीं किंतु गुदाके द्वाराहोकर निकलने लगता है इसलिये नस्तरसे चारखांप करिकेये मल्हम लगावे

मल्हम

कालेतिलोंका तेल आधसेर · सफेदमोम ३ तोले · मुरदासंग छै तोले · सफेद कत्था एकतोले कपूर छै माशे नीला थोथा चार रत्ती अरंडके पत्तोंकारस चार तोले प्रथम तेल को गरम करे फिर मोम डालकर पिघलावे फिर इन सव दवाओंको मिलाकर जलावे फिरसवकोपीसचासनी कर ठंडाकरकेलगावे और गादो पुरी पीव निकलेतो ये दवा पिलादे॥

दवा

पित पापडे के पते· सफेद चंदन· रक्त चंदन· गांजवां· मुलेठी· छिली हुई· खतमी के फूल· चनसा के फूल· ये सब छे छे माशे और इन सब को रात को पानी में भिगो दे फिर सवेरे ही मल छान कर उस्में गेहूं का सत· बंशलोचन· जहर मोहरा खताई· दम्मुल अखवेन· ये सब एक एक माशे लेकर· महीन पीस पानी में मिला कर पिलावे और फोडे के आस पास ये लेप लगावे॥

लेप

पित पापडे के पते· चिरायते के पते· पित पापडे के बीज· ये सब एक तोले निर्विशी छे माशे रक्त चंदन एक तोले सफेद चंदन एक तोले अफीम एक तोले मिश्री एक तोले नीम की छाल एक तोले बकायन की छाल एक तोले इन सब को पानी में पीस कर गरम कर के लगावे औ राजितने फोडे पीठ की ओर होते हैं उन सब की चिकित्सा बहुत कठिन हैं उन सब पर लेप लगाना गुण करता है॥

चूतड के फोडे का यत्न

एक फोडा चूतड के ऊपर होता है वो दाई ओर हो वा बाई ओर हो उस्की चिकित्सा भी इन्ही मल्हमों से करनी चाहिये क्यों कि कुछ डर का स्थान नहीं है और जो इन मल्हमों से आराम न हो तो यह मल्हम लगावे॥

मल्हम

काले तिलों का तेल पंद्रह तोले विलायती साबुन तीन तो

तोले सफेदा कासगरी दो तोले सफेदा गुजराती दो तोले · प्रथम तेल को गरम कर उस्में साबुन को पिघलाकर चास नी करे जब मल्हम ठीक होजावे तब ठंडा करके लगावे ॥

अथवा

सफेद राल दो तोले महीन पीस छानकर चार तोले तेल में मिलावै और नदी के जल से धोवे जब खूब सफेद होजाय तब कत्था सफेद चार माशे · नीला थोथा दो माशे · रस कपूर तीन माशे · सब को पीस कर मिला कर लगाया करें

चूनड के नीचे के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा चूतड से नीचे उतर कर होता है लोग उस्को भी बवासीर कहते हैं परंतु ये फोड़ा बवासीर के भेदों में से नहीं है लेकिन ये स्थान नासूर का है उस्की सूरत येहै कि पहिले गुठली सी होती है और अपने आप रिसने ल गती है उस्का चिकित्सा इस प्रकार से करें कि पहिले उ स्में चीरा देकर उस्की चार फांख करें क्यों कि उस्के भीत र एक छीछड़ा होता है सो बिना चीरा देने के वह नहीं निकलता इस वास्ते इस्में चीरा देकर छीछडे को नि काले फिर ये मल्हम लगावे ॥

मल्हम

पहिले काले तिलों का तेल पांच तोले गरम करे फिर उ स्में छै माशे मोम डाले और सोफ · गेरू · मुर्दासंग · नीला थोथा · ये सब एक एक तोले लेकर महीन पीस कर मिला वे और मंदी आंच से चासनी करे ठंडा करके लगावे ॥

जांघके फोड़ेका यत्न

एक फोड़ा जंघामें होता है उस्को गम्भर कहते हैं इस्में भी एक बड़ी गुठली सी होजाती है और वो सात मासके पीछे प्रगट होती है और इस फोड़े में डर है इस फोड़े का निसान आगे लिषी तसवीरमें समझ लेना और चिकित्सा उसकी यह है कि उस्को चीर डाले और सब मवाद निकाल देवे पीछे उस्के बुरे मांसको इतना काटे कि चार अंगुल गाढ़ा होजावे फिर उसपर नीमके पत्ते · सफेद बूरा · फिटकरी · इन सबको सात दिनतक बांधे फिर ये मल्हम लगावे॥

मल्हम

राल सफेद दो तोले · नीला थोथा एक रत्ती · इन दोनोंको महीन पीस कर छै तोले घृतमें मिलावे फिर उस्में एक माशे साबुन डाले फिर उस्को नदीके जलसे अथवा वर्षा के जलसे तथा बरफके पानीसे खूब धो कर लगावे और एक फोड़ा जंघाके नीचेकी ओरको होता है वो भी भी इन्ही मल्हमोंसे अच्छा होता है॥

घोंटूके फोड़े का यत्न

एक फोड़ा घुटनेके जोड़पर होता है उस्की चिकित्सा बहु नही कठिन है क्योंकि पहिले एक पोली फुनसी होती है जब वह फूट जाती है तो उसके चेपसे बहुत घाव हो जाता है अंतको सबमें बढ़ी जाने लगती है फिर यह असाध्य होजाता है और जो मनुष्य उस्की चिकित्सा करे तो पहिले निजाब लगाकर घाव घटादे और उस्में एक-

सफेद सा मांस होता है उसको निकाल डाले जब घाव कडा होजावे तौ वह मल्हम लगावे जिसमें रत्नजोति है औ र जो उसके लगाने मे आराम न हो तो ये मल्हम लगावे॥

कुंदरू गोंद एक तोले पारा ३ माशे काले तिलों का तेल दो तोले इन सब को कढाई में डाल कर खूब रगडे जब म ल्हम के सदृश होजावे तब लगावे॥

पिंडली के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा पिंडली पर होता है इस्का सूरत ये है कि पहिलें सो
यह होता है इस का निसान नीचे लिषी तसवीर में समझ
लेना इस्की चिकित्सा यह है कि तहलील करने वाला ले
पलगावे तो तहलील हो जावे और वासलीक की फस्त षो
ले॥ लेप

अमलतास दो तोले· वाबूने के फूल एक तोले· स्वतमी
के फूल एक तोले· मूखीमकोय एक तोले नारवूना एक
तोले गेरू एक तोले मूरिद के बीज छै माशे· अफीम दो
माशे औरंजान कडवा छै माशे निर्वसी छै माशे इन स
व को पानी में पीस कर गरम करके लगावे और अंड
के पत्ते बांधे और जो घाव लाल हो जाय तो वह मल्हम
लगावे कि जिस्में नान पाव का गूदा है और जो वह फूट
जावे तो देषे कि घाव के नीचे सख्त ती है या नरमी जो नरमी हो
तो नस्तर देवे और जो सषती हो तो नरम करके नस्तर देवे -
और वो मल्हम लगावे जिस्में वर्षा का पानी लिखा है और
दूसरी सूरत उस फोडे की यह है कि पहिलें एक छाला सा
होता है और उस घाव से दो अंगुल नीचे मवाद होता है
जब वो छाला फूट जावे और मवाद निकले या स्वाम से नि
कले तो नस्तर दे और ये मल्हम लगावे॥

मल्हम

पहिलें काले तिलों का तेल पाव सेर लेकर गरम करे फि
र सफेद सलगम दो तोले मिलाय गुज राती नग—

नीमके पत्तोंकी टिकिया दो तोले उस्में जलाकर फेंक दे औ रसिंदूर मिलाकर मंदी आंच पर ओटावे परन्तु सिंदूर पांच तोले डाले जब चासनी होजाय तब ठंडा करिके लगावे ॥

पिंडली के दूसरे फोड़े का यत्न

एक फोड़ा पिंडली से छे अंगुल नीचे होता है और वह बहुत काल में पकता है एक वर्ष वा दो वर्ष के पीछे फूटता है उस्में से पानी निकलता है और कभी कभी रुधिर भी निकला करता है उस्पर वो मल्हम लगावे जिस्में सफेदजो राहै अथवा यह मल्हम लगावे

मल्हम की विधि

लाल मैनफल· बबूर का गोंद· लोंग फूलदार· बिलायती साबुन· भैंसा गूगर· इनसब को बराबर लेजल में महीन पीस कर एक कपड़े पर जमावे और मोमजामा बना रखे और समय पर फाया कतर कर लगावे। ये लेप बहुत ही उत्तम है और इस फोड़े को बांदा कहते हैं जब वो पक जावे तब उस्पर मल्हम लगावे जिस्में साबन है अथवा ये मल्हम लगावे ॥

नुसखा

जंगाल· चौकिया सुहागा कच्चा· आवाहलदी· तीन२ माशे फिरोजा पांच तोले साबन छे माशे· इन सब को मिलाकर और पानी से धो कर समय पर लगाया करै ॥

गदे के फोड़े का यत्न·

एक फोड़ा पावके गट्टे पर होता है जो वो शीघ्र अच्छा होजा यतो उत्तम है नहिं तो उस्मे से हड्डियां निकला करती हैं और हमने अपनी आंखों से भी देखा है कि एसा फोड़ा वर्षों में अच्छा होता है और इस फोड़े की वही चिकित्सा करे जो अभी ऊपर वर्णन करी है॥

पावके तलुओं के फोड़े कय॰

एक फोड़ा पांव के तलुओं में होता है इस्की भी यही चिकित्सा है जो अभी ऊपर कह आये हैं॥

पाव की अंगुली के फोड़े काय॰

एक फोड़ा पाव की अंगुलीयों पर होता है ध्यान करे कि वह उपदंश के कारण करके तो नहीं है जो उस कायका रागन होतो वही चिकित्सा करे जो हाथ की अंगुलियों के फोड़े की है और जो उपदंश के कारण करि के होता उस्की यह सूरत होती है कि अंगुलियां पाव की गल कर गिर पड़ती है और चिकित्सा करने से घाव होजाता है पाव निस्फल होता है॥

अब जानना चाहिये कि शरीर में बहुत से फोड़े होते हैं उन सब की व्यवस्था वर्णन करूं तो ग्रंथ बहुत बढ जायगा इस लिये दो चार नुस्खे मल्हम और तेल के लिखे देता हूं जो सब प्रकार के फोड़ों को गुण दायक हैं

नुस्खा १

गुलाब की पत्तीयों को गुलाब जल में पीस गरम करके

गाढा गाढा लेप करे और ऊपर से बंगला पान बांधे तो स
ब प्रकार के फोड़े को तहलील करे और जो मवाद
तहलील होने के योग्य न होगा तो पका देगा

अथवा

बबूल का गोंद· कवेला· कुचला· एक एक तोले
इनको पानी में पीस कर लगावे और ऊपर से बंगला
पान गरम करिके बांधे॥

अथवा

हल्दी की गुठली· अलसी· बनारसी राई· ये दवा एक २
तोले इनको पानी में पीस कर लगावे और ऊपर से बंग
ला पान गरम करके बांधे॥

अथवा

पहिले घृत को गरम करके उस्में काली मिर्चों को पी
स कर डाले और कलौंजी चार माशे· और मिर्च भी
चार माशे ही ले सब को मिला कर पकावे जब दवा
जल जावे तब लोहे के घोटे से खूब घोटे जब म-
ल्हम के सदृश होजावे तब लगावे॥

अथवा

कड़वा तेल पांच तोले कवेला· काली मिर्च· मेहदी के
पत्ते हरे· नीम के पत्ते· सूखे आमले· ये सब छै छै माशे
नीला थोथा चार माशे· इन सब को तेल में जला कर
लोहे के दस्ते से खूब रगड़ कर लगावे॥

दाद का यत्न·

जो दाद रोग थोड़े दिनों का होय तो ये दवा लगाना चाहिये

दवा

सूखे आमले · सफेद कत्था · पवार के बीज इन तीनों को बराबर लेकर दही के तोड़ में पीस कर महदी के सदृश लगावे ॥

अथवा

पलास पापड़ा · नीला थोथा · सफेद कत्था इन सबको बराबर ले कागजी नीबू के रस में पीस कर दाद पै लेप करे और थोड़ी देर धूप में बैठ

अथवा

कपास के बीजों को कागजी नीबू के रस में पीस कर रक्खे पहिले दाद को कंडे से खुजा कर फिर इस लेप को लगावे ॥

अथवा

अफीम · पमाड़ के बीज · नौसादर · खैरसार इन सबको बराबर ले नीबू के रस में पीस दाद पर लेप करने से दाद बहुत जल्दी अच्छा होगा

अथवा

माल · माजूफल · नीला थोथा · इन तीनों को बराबर लेके हुक्के के पानी में तथा कागजी नीबू के रस में खरल करके दाद पर लगाया करे तो शीघ्र गुण करे ॥

अथवा

राई २२॥ माशे कूट छान कर सिरके में मिला कर लेप करे तो दाद जाय॥ ये दवा उस वक्त करनी उचित है कि जब दाद खाल के नीचे पहुंच गया हो और जो खाल के नीचे न पहुंचा हो तो ये लेप करे॥

लेप

पीली गंधक ६ माशे लेकर कूट पीस कर उसमें थोडा पारा कपडे में छान कर गंधक को बराबर ले और गौ का घी और बकरे की चरबी तीन बार जल से धोई हुई इन दोनों को साढ़े सोले सोले माशे ले इन सब को मिला कर खूब मथो कि पारा मर जावे फिर इसके दो भाग करले और इसका एक भाग धूप में या अग्नि के सामने बैठ कर मले फिर एक घडी पीछे गरम जल से स्नान करे ये दवा खुजली को भी दूर करती है॥

और जो किसी मनुष्य के दाद बहुत दिन के हो गये हों तो उसको ये दवा करे॥

नुसखा

पवाड के बीज एक तोला पानी में पीस कर और तीन माशे पारा मिला कर खूब खरल करे जब मल्हम के सदृश हो जावे तो दाद को खुजा के इस को लगावे॥

अथ खुजली का यत्न

जानना चाहिये कि खुजली रोग दो प्रकार का होता है एक सूखी दूसरी तर अब हम पहिले तर खुजली का यत्न लिखते हैं॥

नुसखा

खाल कवेला एक तोले · चौकिया सुहागा भुना एक तोले फिटकरी एक तोला इन तीनों को महीन पीस कर दो तोले कडवे तेल में मिलाकर शरीर में मर्दन करे इसी तरह तीन दिन सेवन करे फिर तीन दिन के पीछे लोनी - मिट्टी शरीर में मल कर स्नान कर डाले तो तरखुजली को आराम होय ॥

अथवा

कवेला · सफेद कत्था · हल्दी · ये तीनों दवा एक एक तोले भुना सुहागा तीन माशे · काली मिर्च एक माशे इन सब को महीन पीस छान कर गौ के धुले हुए घृत में मिला कर चार दिन तक मर्दन करे फिर लोनी माटी को शरीर पर मल कर स्नान करे तो खुजली जाय

और जो खुजली सूखी हो तो हम्माम में स्नान करना गुण करता है और जुल्लाब लेना फायदा करता है और करूत का लेप करना भी फायदा करता है ॥

करूत के लेप की विधि

करूत को पीस कर दो घड़ी तक गरम जल में भिगो रक्खे फिर इसको खूब मले जब मल्हम के सदृश होजाय तब उसमें खहा दही वा सिरका २२ तोले और गंधक आमला सार ३॥ तोले कूट छान कर सब को २२॥ माशे तिल के तेल में मिलाकर तीन भाग करे और सवेरे ही एक भाग को शरीर पर मले फिर हम्माम में जाकर गे

हूं की भुसी और सिरका वदन पर मल के गरम जल से-
स्नान कर डाले तौ खुजली मिट्टी जाय ये लेप दोनों तर
ह की खुजली को गुण करता है॥

अथवा

पित्त के उत्पन्न करने वाली वस्तु पिस्ता मदिरा और
सहत न खाय- और नित्य हम्माम में स्नान करे और
जुल्लाव लेवे और मुंजिज के वाद नित्य रात को नींबू का
रस वा अंगूर का रस अथवा सिरका थोड़े गुलावजल
और रोगन अथवा मीठे तेल में मिला कर गुनगुना कर
मालिश करे तौ सूखी खुजली जाय॥

और जो खुजली थोड़े दिन की होय तौ ये दवा लगा
वे

दवा

सिरसों चार तोले लेकर जल में महीन पीस गुन गुनी
करिके उबटना करै फिर गरम जल से स्नान करै तौ सू
खी खुजली जाय॥

अथ घावों का यत्न

अब हर प्रकार के घावों का यत्न लिखते हैं जानना चा
हिये कि मनुष्य के शरीर में घाव वहुत प्रकार से होते
हैं जो सवों का यथा क्रम से नाम लिखूं तो ग्रंथ वहुत
वढ़ जायगा इस सवव से मुख्य घावों का नाम लिख
ता हूं॥

घावों के नाम

अग्नि से जला १ तेल घृत आदि से जला २ चोटल

गने का ३ लाठी आदि की चोट का ४ पत्थर ईंट की चोट का ५ तलवार का ६ बंदूक की गोली का ७ तीर का ८ इत्यादि आठ प्रकार के घाव हैं और बहुत से हिन्दुस्तानी ग्रंथो का ये मत है कि घाव और सूजन ६ प्रकार की हैं वायु का १ पित का २ कफ का ३ सन्निपात का ४ रुधिर के दुष्टपने का ५ किसी तरह की लकड़ी आदि की चोट लगने का ॥६॥

वायु के घाव का लक्षण

वायु का घाव और सूजन विषम पके॥ पित का तत्काल पके॥ कफ का देर से पके॥ रुधिर और चोट लगने का भी तत्काल पकता है॥

और जो घाव शोथ पका नहीं होय उसका लक्षण लिखते हैं

जिस व्रण में घाव और गरमी और सूजन थोड़ी होय और कड़ा होय और उस का त्वचा के सदृश रंग होय और उस्में दर्द कम होय इतने लक्षण होंय उस व्रण को कच्चा जानिये और ये भी जानना चाहिये कि व्रण उसको कहते हैं कि प्रथम शरीर के किसी मुकाम पर सूजन होय और फिर वह पके फिर फोड़े के सदृश हो जाय फिर फूट कर घाव हो जाय उस्को व्रण कहते हैं॥

जिस मनुष्य की सूजन अग्नि की तरह जले और खार की तरह पके और चेंटी की तरह काटे और चव का होय और जो हाथ से दावे तब दर्द अधिक हो मानो-

कोई सुईसे वेधताहै और उस्में दाह वहुत होय उस्का रंग व दल जाय और सोने के समय शांति हो और उसमें विच्छू के काटने कासा दर्द होय और सूजन गाढी होय और जित ने उस्के पकने के यत्न करें तोभी पके नहीं और उस सूजन में तृषाज्वर अरुचि होय येलक्षण जिस्में होंय तो जानि ये कि यह सूजन पक गई है और जो सूजन पक जाती है तो उस्की पहिचान ये हैं कि उस्में पीडा होय नहीं ललाई थो डी होय वहुत ऊंची नहोय और सूजन में तह पड जाय औ र पीडा होय खुजाल वहुत चले सब रे उपद्रव जाते रहे पी छें वह सूजन नजाय खाल फटने लगे और उस्मे अंगुली लगानेसे पीडा होय राद निकले इतने लक्षण होंय तोजा नियें कि सूजन पक गई है इन कच्चे पके व्रणों को जर्राह भली प्रकार से पहिंचान कर यत्न करें और जो जर्राह क च्चीसूजन को तथा फोडे को चीरे और पके को जानन हो ऐसे जर्राह से यत्न नहीं कराना चाहिये येतो व्रण की सू जन के लक्षण कहे अब और मत से व्रण रोग लिख तेहैं वहुत से हिन्दुस्तानी वैद्यों ने घाव ८ प्रकार के लि खेहैं वायु · कफ · पित · इनके दोषों का · शस्त्रादिक के लगने का · वायु पित · कफका ३ रुधिर का ४ वायु पित का ५ वायु कफ का ६ कफापित का ७ सन्निपात का ८

घावोंका यत्न

अब जो हिन्दुस्तानी ग्रंथों को देषता हूं तो अकल वडी हैरान होती है क्यों कि जिस जिस किताब को देखाउ

सीउसी किताबमें हरकिस्मकी न्यारी न्यारी बात पाई जाती हैं इससबबसे मैंने हरेक ग्रंथ कार का मत नहीं लिया क्योंकि उनमें क्रम ठीकठीक नहीं लिखा इसवा स्ते अपने और अपने उस्ताद के आजमाये हुए नुकसे लिखता हूं कि जिन के लगाने से हजारों रोगियों को आराम किया है॥

अग्निसेजलेकायत्न

जो मनुष्य अग्नि से जलजाय तो उस्को उसी वक्त अग्नि से तपावे तो शीघ्र अच्छा होय॥

अथवा

अगर को आदिले गरम वस्तुओं का लेपकरे॥ अथवा औषधियों के घृत को अथवा घृत को गरम करै फिर ठंडा करके लेप करे॥

अथवा

नवासीर · बडकीजड · रक्तचंदन · रसोत · गेरू · गिलोय - इनको महीन पीस घृत में मिलाय लेप करे

अथवा

बुरेमांसको दूरकर पीछे मोठा चांवल लेदु · इन्हे मही नपीस घृत में मिलाय लेप करे॥ अथवा मोम · महुआ लोध · राल · मजीठ · रक्तचंदन · मूर्वा इनको बराबर ले कर महीन पीस गौके घी में पकावे और लगावै॥

अथवा

पटोलका पंचांगलेकर उसे पानी में औटावे जब -

पानीजलकर चोथाहिस्सा रहिजावे तव कडुवे तेलमें मिलाकर पकावेजव पानीजलजाय और तेलमात्र रह जाय तव ठंडा करके लगावे॥

अथवा

पुरानाखानेका गीला चूनालेकर दहीकेतोडमें मिला के लेप करे॥ औरजोतेलसे जला होतो उस्के फफोला दूर होजायगे॥ अथवा॥ जौको जला कर इसकी राख कोति लोंके तेलमें मिला करलगावे॥ अथवा॥ भुनेजीरेको म हीन पीस कर उस्की वरावर मोम राल घृत मिलाय लेप करे॥

तेल आदिमे जलेकायत्न

तिलोंका तेलपाव भर खानेकाचूनापुराना ४पैसे भर उस्को हाथमें तीन घंटे तक मसले जव मल्हमके सदृ शहोजावे तव रूईके फायेसे जले हुए स्थानपर लगा वे तो अच्छा होय॥

तलवार आदि के घावका यत्न

जिस मनुष्य के तलवार को आदिले शस्त्रोंकी अनेक प्रकारकी धार लगनेसेखाल फटजाय अथवा त्वचा की नाना प्रकारकी आकृति होजाय तो जर्राह को उचि त है कि ऐसे रोगीको ऐसे मकानमें रक्खे जिस्मे हवा न लगे फिर पाटके सूत सेसिवावे पीछे उन टांकों के घाव के स्थानमें गेहूंकी मैदामें पानी और घृत मिलाय पका वे जव पानीजलजाय घृतमात्र रहिजाय तव उस्की –

लोई बनाकर सुहाता सुहाता सेक करै तो घाव तत्काल अच्छा होय॥

अथवा

कुटकी· मोम· हलदी· मुलेठी· कणगच की जड· और कणगच के पते· और कणगच के फूल· पटोल· चमेली· नींमके पते· इन सबको बराबर लेके घृत में पकावे जब सब दवा जल जांय तब इस घृत का सुहाता सुहाता लेप करे॥

अथवा

शस्त्र के लगने से जिस मनुष्य का खून बहुत निकल गया हो और उस्के वायु की पीडा होय आवे तो उसके दूर करने के वास्ते उस रोगी को घी पिलाना चाहिये॥

और जिस मनुष्य का शस्त्र लगने से शरीर कट जाय उस्के घाव में गंगेरन की जड का रस भरदे तो घाव तत्काल भरजाय इस घाव वाले का शीतल यत्न करे

और जो घाव का रुधिर पेट् में उतर जाय तो जुल्लाब देना चाहिये॥

बांस की छाल· अरंड का बकल· गोखरू· पाषाणभेद· इन सबको बराबर लेकर पानीमें कादा करै फिर इस्में भुनी हींग और सेंधा नोन मिला कर पिलावे तो कोठेका रुधिर निकल वहै॥

अथवा

जव· कुलत्थ· सेंधानोन· रूखा अन्न· इनका खाना भी बहुत फायदा करता है॥

अथवा

चमेलीके पते · नीमके पते · पटोल · कुटकी · दारूहलदी · गोरीसर · मजीठ · हडकीछाल · मोम · तोला थोथा · शहत · कणगच के बीज · ये सब बराबर ले और सबकी बराबर गौ का घृत ले और अठगुना पानी ले सबको इकट्ठा कर मंदी आंच से पकावे जब पानी जल जाय और घृत मात्र रहिजावे तब उतार ठंढा कर इसकी बती बना कर लगावै ॥

अथवा

चमेली · नीम · पटोल · किरमाला इन चारोंके पते · मोम · महुआ · कूट · दारूहलदी · पीली हलदी · कुटकी · मजीठ · पयारव · हरकीछाल · लोध तज · कमलगट्टे · गोरीसर · नीला थोथा · किरमालाकी गिरी · ये सब दवा बराबर ले इनको पानी में औटावे फिर इन के पानी में मीठा तेल मिला कर मंदी आंच से पकावे जब पानी जल जावे और खालिस तेल रह जावे तब इस तेल की बती बनाकर घाव पर लगावे तो घाव शीघ्र अच्छा होय ॥

अथवा

चीता · लहसन · हींग · सरपोरवा · कलिहारीकीजड · सिंदूर · अतीस · कूट · इन औषधियों पानी में औटावे जब चौथाई पानी रहिजावे तब उस्मे कडवा तेल मिला कर मंदी आंच से पकावे जब पानी जल जाय और तेल रहजाय तब इस तेल को रुई तथा कपडे की बती आदि

किसीतरहंसेघाव परलगावेतोशीघ्रअच्छाहोजाय

अथवा

गिलोय· पटोलकीजड़· त्रिफला· वायविडंग· इन सबको बराबरले महीन पीस सबकी बराबर गूगल मिलायएकजीवकर धर रक्खे फिर इसमें से १) तोलेपानी केसाथ नित्यखाय तो घाव निश्चैभर आवेगा॥

अबये तो हमने शास्त्रादिकका मिलाहुआयत्न लिखा इसमें कुछ स्थान भेद नहीं लिखा चाहे सब शरीर में किसी अंग शस्त्रलगा हो तो इन्ही दवा औस यत्न करना चाहिये अब हम स्थानस्थान के घावों का यथा क्रम से यत्न लिखते हैं॥

जिस किसी मनुष्य के सिर में तलवार लगी हो और घाव गहरा होगयाहो और हड्डी तक उतरगई हो और चोटसे कईटक होगये हों तो सब टुकड़ों को असल के अनुसार मिलावे और जो चूरा हो तो निकाल डाले और उस घाव पर गामाका रस लगावे फिर घाव में टांके लगादे और इसदवाईसे सेके॥

सेक की दवा

अमा हलदी· मेदालकडी· कालेतिल· सफेद बूरा- गेहूंकीमेदा· घी इन सबका हलुआ बना कर सेके औरउसी को बांधे॥

औरजो तलवार आडी पडी हो और सिर की खोपडी जुदीहोजावे तो इसको चिकित्सा इस प्रकार से करे

कि प्रथम दोनों को मिलाकर बांधे और पूर्वोक्त रीत से सेंक करके यह मल्हम लगावे॥

मल्हम की विधि

सफेदा कासगरी· मुर्दासंग· रसकपूर· अकरकरा गुजराती· माजू· ये सब दवा एक एक तोले सिंगरफ चार माशे· इन सब को पीस कर चार तोले घृत में मिलाकर नदी के जल से धोकर घाव पर लगावे और ध्यान रक्खे कि घाव में स्याही न आने पावे

और जो किसी के गले पर तलवार लगे और उस के लगने से घाव बहुत होजावे तो जर्राह को उचित है कि पहिले रुधिर से घाव को शुद्ध करे फिर टांके लगावे और केवल आवाहलदी से अथवा हल्दी से सेके और पाहिले वह मल्हम लगावे जिस में चौकिया सुहागा लिखा है जब पीव गाढी और सफेद निकले और पीलापन लीये हो तो वह मल्हम लगावे जो अभी ऊपर इसी पत्र में वर्णन कर चुके हैं॥

और जो तलवार कांधे पर पड़े और हाथ लटक जाये तो उसको मिला कर टांके भर देवे और उसमें भी यही मल्हम लगावे जो अभी ऊपर कहि आये हैं॥

और एक सांचा लकड़ी का बना कर कांधे पर बांधे तो आराम होजायगा॥

और जो किसी मनुष्य के गले से लेकर कांटि तक तलवार लगे और घाव चार अंगुल गहरा हो तो डरना न चा

हिये और उस रोगी की मन लगाकर चिकित्सा करे जो टुकडे होगये हों तो देखे कि रोगी में सांस है या नहीं - जो सांस हो तो चिकित्सा करे और जो स्वास बल के साथ आता हो तो और घायल की बुद्धी और औसान ठीक हों तो समझना चाहिये कि ये रोगी की केवल धीरता है और कोई क्षण मात्र का महमान है और संसार के बीच कोई पल की हवा पानी है और उसको जीतू का घाव बोलते हैं परंतु यहां मेरी बुद्धी यह कहती है कि जो हृदे में गुर्दे में और कलेजे में घाव न आया हो तो निस्संदेह टांके लगा कर चिकित्सा करे जो परमेश्वर अनुग्रह करेगा तो घायल मृत्यु से बच जायगा और जो हृदे गुर्दे कलेजे में घाव होगा तो उस घायल की चिकित्सा न करे और जो इन में घाव न हो तो चिकित्सा करे और उक्त मल्हम को बना कर लगावे अथवा जैसा समय पर उचित जाने वैसा करे अथवा ये तेल लगावे॥

तेलकी विधि

दारू हलदी - अमा हलदी - भड भूजे की छान का धूम ये तीनों दो दो तोले इन सब को जो कूट करके नदी के जल में अथवा वर्षा के जल में भिगो दे और सवेरे ही काले तिलों का तेल पाव सेर मिला कर मंद मंद आंच पर औटाय जब पानी जल जाय तेल मात्र रहि जाय तब छान कर धर राखे और उस में पुराना कता का कपडा भिगोकर घाव पर रक्खे और जो कतां का वस्त्र प्राप्ति न हो सके

तो बिलायतीसूत काम में लावे और खूब बांधे और मकोय का अर्क पिलावे बा गोमा का सागपका कर कभी कभी कभी खिलाया करे और यथोचित पथ्य करावे और घाव पर ध्यान रक्खे कि पीव पोवही के सदृश हो और स्याही न हो और ऐसे घायल को ऐसे एकांत में रक्खे कि जहां किसका शब्द भी न पहुंचे ॥

और जो किसी मनुष्य के हाथ पर तलवार लगी हो और दो घड़ी बीतगई हों तो वह घायल अच्छा न होगा और जो दो घड़ी से कम हुआ हो तो आराम हो सकता है और जो हड्डी बराबर कटि गई हो तो उसी समय चिकित्सा करे तो आराम होगा और जो कुछ भी विलंब होजायगा तो आराम न होगा किस वास्ते कि जब तक कटा हुआ हाथ गरम है तब तक साध्य है और ठंडा होने पर असाध्य है और जो तलवार से अंगुलियां कटि जावे और गिर न पडें तो अच्छी हो सक्ती हैं और जो किसी के चूतड़ पर तलवार लगे तो उसकी चिकित्सा जर्राह की सम्मति पर है क्यों कि ये स्थान कुछ बहुत भयानक नहीं है और जो किसी के अंड कोशो पर ऐसी तलवार लगे कि अंडे तक कटि जावें तो जर्राह को उचित है कि भीतर दोनों टुकड़े मिलाकर ऊपर से शीघ्र ही टांके लगा दे और इस प्रकार से बांधे कि भीतर से अंडे का मिला रहै और उस पर वो रोगन लगावे जो अंग्रेजों के यहां लड़ाई पर लगाते हैं और जो समय पर वह प्राप्त न हो स

केतोदेवदारुकातेलवाछिभूटाकातेललगावेश्रोर
श्रोरजोकूलहसे पांवकेनखतक घावहोतोउसकीचि
कित्साउसकेश्रनुसारकरनी चाहिये श्रोरजोसिरसे
पांवतककोई घाववहुतकठिनहोतोउस्कीवहचिकि
त्साकरेजोकमरवाहाथके घावोंकीवर्णनकीगईहै
श्रोर इन स्थानोंके सिवायशरीरमें किसीजगे परत
लवारकेलगनेसे घावहोतोसवजगेकीचिकित्सा
इसीतरह इन्हीं श्रोषधोसे करनी चाहिये श्रोर तल
वार·सेल·फरसा·चक्र इतनेशस्त्रोंके घावोंकाइ
लाजइन्हीदवाश्रोंसे होताहै॥

श्रथतीरके घावका

यत्न

जोकिसीमनुष्यकेवदनमेंतीरलगाहो श्रोर घावके
भीतरश्रटकरहाहोतो घावकोचारों श्रोरसेदवाकर
निकालेवा घावकोचौडाकरो किहाथसेतीरनिक
लश्रावे श्रोर भीतरके तीरकी यह परीक्षाहै कि जो
घाव दूसरेतीसरे दिन रुधिरदिया करताहै श्रोरती
रजोड़की जगह जाता है
श्रोरजोमांस मेंलगता है तो पारहोजाताहै उसके
घावपरदोनों श्रोरमल्हमलगावे श्रोर वीचमें एक
गद्दी बांधे इस प्रकारकीचिकित्सामें परमेश्वरश्रप
नेश्रनुग्रहसेश्राराम करदेताहै॥

श्रथवा

किसी की छाती वा नाभि में तीर लगे और पार होजावे वा भीतर अटक रहे जो तीर लग कर अलग निकल जावे तो पूर्व रीति से चिकित्सा करे और जो भीतर अटक रहे तो औजार से निकाल कर ये रोगन भरे॥

रोगन की विधि

भांगरे का रस · गोमा का रस · नीम के पत्तों का रस · छिवृक्ष का रस ये चारों रस दो दो तोले गेरू · अफीम · एक एक तोले सब को पाव भर मीठे तेल में मिला कर चालीस दिवस तक धूप में रक्खे और समय पर काम में लावे और ये तेल सब प्रकार के घावों को फायदा करता है॥

अथवा किसी के पेट में तीर लगा हो तो बहुत बुद्धिमानी से चिकित्सा करे क्योंकि ये स्थान बहुत कोमल है जो इस स्थान में तीर लग कर निकल गया हो तो उत्तम है और जो रह गया हो तो कठिनता से निकलता है क्योंकि ये स्थान न तो घाव चीरने का है और न तिजाब लगाने का है पस जो वहां मकनातीस पत्थर को पहुंचावे तो उत्तम है क्यों कि लोहा व मकनातीस का अनुरक्त है और जो तीर निकल गया हो तो वह चिकित्सा करे जो ऊपर वर्णन करी गई है और घाव में वह तेल भरे जिस में भांगरे का रस लिखा है॥

अथवा

किसी की जंघा में तीर लगे तो वह स्थान भी तीर के भीत

रहजानेका है क्योंकि मांस और हड्डी यहांकी गंदी है उचित है कि घावको चीरकर नीरको निकाले इसमें कुछ डर नहीं है परंतु इतना डर है कि जो घाव रहिजाय जो बहुत कालमें अच्छा होता है और जोडोंकी व्याख्या ऊपर वर्णन हो चुकी है इस लिये घावको चौडा करके नीर निकाले तो हड्डीका हाल जाना जावे कि हड्डी में कुछ हानि पहुंची था नहीं जो हड्डी पर हानि पहुंची हो तो हड्डीकी किरचें निकालकर चिकित्सा करे॥

अथवा

किसीके घुटनेमें तीर लगे तो उसकी भी यही व्याख्या है जो जंघाके घावमें वर्णन की गई है और मैंने तीरके घाव घुटनेसे पांव तकमें देखे हैं यदि दैवयोगसे तीर लगभी जाय तो उसी प्रकारसे चिकित्सा करे जैसा कि ऊपरसे वर्णन करते आये हैं॥

घावकी परीक्षा

जिस घावमें तीर आदि किसी शस्त्रकी नोक रहिजाय उसकी पहिंचान ये है कि घाव काला और सूजन संयुक्त हो फुनसियों को लिये हो और उस घावका मांस बुद बुद समान ऊंचा होय और उसमें पीडा होय तो उस घावको शस्त्र समेत जानिये॥

कोठेकी परीक्षा

जिस मनुष्यके कोठेमें तीर रह गया हो उसकी पहिंचान यह है कि शरीरकी सातों त्वचा और शरीरकी नसोंको

नांघकर पीछें उन नसों को चीरकर और कोष्ट के विषें रहा जो वह शस्त्र सो अफरा करे और घाव के मुख में अन्न और मलमूत्र को ले आवे तब जानियें कि इस के कोष्ट में शस्त्र रहा है॥

गोली के घाव का यत्न

जो किसी मनुष्य के सिर पर गोली लगती हुई चली गई हो और दूसरा यह कि गोली दूर से लगी हो ऐसी गोली शिर की त्वचा में रह जाती है इस कारण कर के सिर में सूजन आजाती है और मूर्ष लोग कहते हैं कि गोली सिर के भीतर से निकाल लावे परन्तु ठीक व्यवस्था तो यह है कि जो गोली पास से लगी हो तो दोनों ओर की हड्डी को तोड़कर निकल जाती है और जो कुछ दूर से लगी हो तो भेजे के भीतर रह जाती है और निकालने के समय रोगी के बल को देखना चाहिये कि गोली निकालने में वह मर न जायगा और जो उस का मर जाना संभव हो तो चिकित्सा न करे और जो देखे कि रोगी इस कष्ट को सह सका है और उसके भाई बंधु लोग प्रसन्नता पूर्वक आज्ञा देते हैं तो निःसंदेह भेजे में से गोली को निकाले और सिर के घाव को कम सेकते हैं और चिकित्सा के समय पहिलें यह मल्हम लगावें जिससे जला हुआ मांस निकल जावे॥

मल्हम की विधि

अंगरत हरा· निरखा लिस शहत· एक एक तोले सिरका

सिरका दो तोले इन सब को मिला कर कड़छी में पकावे जब चासनी होने पर आवे तब ठंडा कर के लगावे

अथवा

मुरगी के अंडे की सफेदी दो आतशी सराब चार तोले दोनों को मिला कर लगावे ॥

अथवा

जो गोली गले में लगी हो तो उसकी भी चिकित्सा इसी प्रकार से करे जैसा कि ऊपर वर्णन कर चुके हैं

अथवा

जो किसी की छाती में गोली लगी हो तो उसकी व्यवस्था यह है कि जिस ओर को रोगी फिरता है तो गोली भी उसी ओर को फिर जाती है यदि कोई बलवान होगा तो गोली निकल जायगी और निर्बल होगा तो रह जायगी इस पर खूब ध्यान रखना चाहिये क्योंकि उसका घाव टेढ़ा होता है और छाती की बराबर में दिल यानी हृदय उपस्थित है उसका ध्यान भी अवश्य रखना चाहिये और बाजी गोली कपड़े से लिपटी हुई होती है तो वह गोली निकल जाती है और कपड़ा रह जाता है और जिस ओर को गोली निकलती है उस ओर का घाव चौड़ा हो जाता है उचित है कि घाव को चीर कर वा पका कर पहिले कपड़े को निकाल लेवे और कपड़े रह जाने की यह पहिचान है कि घाव में से पतली और काली पीव निकला करती है पहिले घाव को शुद्ध कर ले क्योंकि जब घाव शुद्ध-

होजायगा और जला हुआ मांस निकल जाता है तो घाव-शीघ्र अच्छा होजाता है और धीरज से उसकी चिकित्सा करै घवराहट को काम में न लावे॥

अथवा

जो किसी की छाती से पेडू तक गोली लगी होतो उसकी भी चिकित्सा इसी प्रकार से करनी योग्य है जैसी जैसी कि ऊपर वर्णन करी गई है

अथवा

किसी के अंडकोषों में वा जंघा से पिंडली तक कहीं गोली लगी होतो चिकित्सा के समय देषे कि गोली निकलगई वा नहीं निकल गई है जो निकल गई होतो उत्तम है और जो रह गई होतो गोली को निकाल कर घाव को देषे कि हड्डी तो नहीं टूटी यदि हड्डी टूट गई होतो छोटे टुकड़ों को निकाल डाले और बड़े टुकड़े को वहीं जमा दे और उसमें विलायती रसोन भरदे और स्टिफिन एक अंग्रेजी दवा है उसका फाया लगा देवे और खूब कसकर बांधे और तीन दिन के पीछे खोल कर देषे कि हड्डी जमी वा नहीं जो जम गई होतो उत्तम है नहीं तो उसको भी निकाल डाले अथवा समय पर जैसी सम्मति हो वैसा करै और देषते रहैं कि घाव में सफेदी और उसके आसपास स्याही तो नहीं है और घाव में से दुर्गंधि तो नहीं आती और पीव पानी सा तो नहीं निकलता है क्यों कि ये लक्षण बहुत बुरे होते हैं और गोली जो हर एक

घावमें वहदवाई लगावे जो सिरके घावमें वर्णन की गीहै अथवा उसदवाई को लगावे जिसमें अंडे की सफेदीहै उसदवाई में रुई को भिगो कर घावपर रखना चाहिये और सवरे शरीर में किसी मुकाम पर गोली लगीहो उनसव अंगके घावोंका इलाज इन्हीं औषधियों से होताहै॥

अथवा

किसीके विषकीबुझी तलवार·तीर·बरछी·कटार·फरसा·चक्र आदि शस्त्र लगेहों तो उसकी यह परीक्षा है कि घावतो ऊपर वढता जाताहै और मांसगलताजाता है और दुर्गंधि आती है और प्रति दिन घावकारंग बुराहोताजाता है और वहांका मांस तथा रुधिरस्याह पडजाताहै वसउचितहै कि पहिले सव स्याह मांस को काट डालेजो रुधिर जारी होजाय तो रुधिर वंदकरनेवाली दवाई करे और दूसरेदिन गेरू·नोन·फिटकरी·गुनगुनी करके वांधे और ये मल्हम लगावे॥

मल्हमकीविधि

पहिले गी का घी आध पावले कर गरम करे फिर उसमें एक तोला मोमडाल कर पिघलावे पीछे कवेला एक तोले·राल सफेद एक तोला·रतनज्योति एक तोले इनतीनोंको भी पीस कर उसमें मिलादे फिर थोडा सा औटावै फिर ठंडा करिके एक फाया घाघके अनु

सारथनाकरउस्परइसमल्हमकोलगाकरघावपररक्खे श्रो
रजोकोई कहे किये जहरवाद है तो उत्तर देवे कि येसत्य है प
रंतु उस्में से मैला मैला पानी निकलता है और लाली लिये-
हुए जिस्को कच्ची लोह बोलते हैं और जहरवाद का घाव
शीघ्र बढ़ता है और यह घाव देर में बढ़ता है और जहरवाद
शीघ्र गलता है और यह देर में जहरवाद के घाव में मनुष्य
शीघ्र मरजाता है और इस्में देर में मरता है और जहरबाद
के रोगी को किसी समय कल नहीं पड़ती और ऐसे घाय
लको जितनी पीड़ा होती है उस्में न्यूनाधिक नहीं हो सक्ती-
उचित है कि चिकित्सा बुद्धिमानी से करे और जो सूषा जा
नेके पीछे कोई किरच हड्डी की फिर दोष पड़े तो फिर नेजा
वलगावे कि घाव चौड़ा होजावे तब हड्डी को निकालडाले

तिजाव की विधि

लहसन का रस·कागजी नीबू का रस·चार चार तोले
सुहागा चौकिया एक तोला इन दोनों को महीन पीस
कर पहिले दोनों अर्को में मिलाकर चार दिवस पर्यंत
धूपमें रक्खे और एक बूंद घाव पर लगावे॥ फिर किसी
मल्हम का फाया रक्खे॥

अथ हाड़ टूटे का यत्न

जानना चाहिये कि हड्डी टूटने के बारह भेद हैं सो यथा-
क्रम लिखते हैं तो ग्रंथ बहुत बढ़जाता है और कुछ मत
लब हां सिल नहीं होता है इसवास्ते बहुत सा बखेड़ा
नहीं लिखा केवल जो जो मतलब की बात है सोई लि

खतेहैं॥

हाडटूटेकीपहिचान

अंगसिथिलहोजाय औरउसजगेस्पर्शसुहावेनहीं औरवहांशरीरफड़के औरशरीरमें पीड़ा औरभूलहोय नवजानियेंकि इसमनुष्य काकिसीप्रकारसे हाडटूटगयाहै॥

हाडटूटेकाकष्टसाध्य

जिसमनुष्यकी अग्निमंदहोजाय औरकुपथ्यकरा करैवायुकाशरीरहोय औरउस्मेंज्वरअनीसारादिक भीहोय ऐसेलक्षणों वालारोगी कष्टसेबचे और जिसमनुष्यका मस्तक फटगयाहो कमरटूटगईहो य औरसांधिखुलजाय औरजांघपिसजाय ललाट का चूर्णहोजाय हृदय·गुदा·कनपटी·मांथा·फटि जाय जिसरोगी केये लक्षण असाध्यहै औरहाड को अच्छे प्रकारबांधे पीछेकडाबांधे औरवह बुरी तरहबंधजाय औरउस्में चोट आजाय औरमैथुन आदिकरतारहे तोउस रोगीकाटूटा हाडभी असा ध्यहोजाताहै अबशरीरके स्थानस्थानकेहाडोमें चोटलगीहो उनकेलक्षण कंठ·तालू·कनपटी·कं धा·सिर·पेर·कपाल·नाक·आंख इनस्थानोंमेंकि सीतरहकी चोटलगजावे तोउसजगेके हाड नवजाय और पहूंचा पीठ·आदिके सबे हाड हैसो टेढेहोजा य कपाल कोआदिलेजोगोल हाडहैसो फटिजाय

और दांत वगैरा जो छोटे हाड हैं सो टूट जाय इन सब हा डों का यत्न लिखता हूं ओ किसी मनुष्य के चोट आदि किसी तरह से हाड और संधि टूट जावे तो चतुर जर्राह को चाहिये कि उसी समय उस जगह चोट पर शीत ल पानी डाले पीछे उस्पर औषधियों का सेक करे॥ अथवा पट्टी बांधे और उस जगह जो लेप करे सो सीत ल इलाज करे और बुद्धिमान जर्राह को चाहिये कि उस मुकाम पर जो पट्टी बांधे तो ढीली न बांधे और बहुत कड़ी भी न बांधे साधारण पट्टी बांधनी योग्य है क्यों कि जो पट्टी ढीली बंधेगी तो हाड जमेगा नहीं और बहुत कड़ी बांधने से शरीर की खाल में सूजन हो आवेगी और पीडा होगी और चमड़ी पक जायगी इस कारण पट्टी साधारण बांधनी अच्छी होती है व स जिस मनुष्य के चोट आदि हो उस के यह लेप लगा ना चाहिये॥

लेप की विधि

मेदा लकड़ी· आवले· आंबा हलदी· पवार के बीज· साबुन· पुरानी ईंट· ये सब बराबर लेके महीन पीस थोड़ा तिलों का तेल मिला कर आंच पर रख कर गर म गरम लेप करे॥

अथवा

मुगास· गेरू· खतमी के बीज· उड़द· रालुआ· ये सब द वा एक एक तोले और हलदी छै माशे· सोया छै

लोवानछैमाशे· इनसवकोपीसकरलेपकरै॥

अथवा

गेरूछैमाशे· झाऊकेपत्तानौमाशे· गुलावकेपत्ता ६ माशे· बेरकपत्तानौमाशे· इनसवकोमहीन पीसकरलेपकरनेसेलाठीआदिकीचोट गिरपडनेकीचोट और पत्थर आदिसे कुचलजाने की चोटको आराम होसक्ताहै॥

अथवा

हलदी· हरीमकोयकेपत्ते· गेरू· येतीनोंदवाएक एकतोले खिलोसरसोंदोतोले इनकोमहीन पीस करलेपकरनेसे सवप्रकारकी सूजन को अत्यंत फायदा होताहै॥

अथवा

गेरू कालेतिल· आवाहलदी· हालोंकेवीज· ये सवबरावरलेके थोडाअलसी का तेल मिला के लेप करनेसे सवप्रकारकी चोटअच्छी होतीहै

अथवा

मटरकोचून· चनाकोचून· छडीलो· अलसी केवीजयेसवदवानोनोमाशे लालवूराछैमाशे· कालीमिरचतीनमाशे· इनसवकोपीस करथोडे सिरके मे मिलाकरलेपकरै॥

अथवा

गेरू एकतोले· सुपारीएकतोले· सफेदचंदनएक

तोले · रसौतछैमाशे · मुर्दासंगछैमाशे · एलुआछैमाशे इनसबको हरीमकोयकेरसमेंपीसकरलगावेतौसब प्रकारकीचोटजाय॥

अथवा

एलुआतीनमाशे · खतमीकेबीजछैमाशे · बनफ्शाके पतेछैमाशे दोनोचंदनबारहमाशे · भटवासछैमाशे · नारखूनाछैमाशे · इनसबकाचूरनकरिके मुर्गीकेअंडेकीसफेदीमें मिलाकेगुनगुना करके लेप लगावे॥

अथवा

खिलेकालेतिल · खिलीसरसों · गेरू एकएकतोले सभालूकेपते डेढतोले · मकोयकेपतेडेढतोले · इनसबको पानीमें महीन पीसकरगरम गरम लेपकरे तौसबप्रकारकी चोटअच्छीहोय॥

अथवा

बारहसींगेकेसींगका। भस्मतीनमाशे · लोबानतीनमाशे · ८ भटवासकाचूनदोमाशे · बाकलाकाचूनदोमाशे · नौसादरछैमाशे · बबूलकागोंदछैमाशे · क६ डवे बादामकीमींगीएकतोला इनसबकोपानीमें पीसकरलगावेतौसबप्रकारकीचोटजाय॥

अथवा

कडवेबादामकीमींगी · पुरानीहड्डी एकएकतोला सीपकीभस्म · समुद्रफेन पीलीफिटकरी · छैछैमाशे ·

इनसबको पानीमें पीस करलगावेतो सब प्रकारकी चोट को फायदाहोताहै॥

अथहड्डीटूटे कायत्न

इसहड्डीटूटीजानेकी चिकित्सा इसरीतिसे करैजैसा कि पट्टी वगैरा पहिलै लिखआयेहैं सो करै और चोटकी जगह गीली प्याजलगावेतो टूटाहाड अच्छाहोय

अथवा

मजीठ महुआ इनदोनोंको ठंडे पानीमें पीस टूटे हाड परलेप करैतो अच्छाहोय॥

अथवा

बेर पीपलकी लाख गेंहू काहूका दरख्तका वक्कल इनसबको महीनपीस घृतमें मिलाय २॥ डेढ तोले नित्यखायतो और ऊपरसे दूध पीवे तो टूटा हुआ हाड अच्छाहोय॥

अथवा

लाख काहूकावक्कल असगंध खरेटी गूगल ये सब बराबरले इनसबको कूटपीस करएकजीव कर २॥ डेढ तोले दूधके साथ नित्य खाय तो टूटा हा ड अच्छाहोय॥

अथवा

गेंहूओंको ठीकरेमें धरकर अधजलेकरले पीछे इ न्हे महीन पीस तीन तोले ले फर उस्में छैतोले सहत मिलाकरसात दिन तक नित्य चाटे तो टूटा हाड जुडे

अथवा

मैदालकड़ी· आमला· त्रिल· इनसबको बराबरलेठंडेपानीमें महीन पीसउसजगेलेपकरे और इस्में घृत भी मिलावैतो टूटाहाड अच्छा होय॥

अथवा

मनुष्यके मांसकी चोषी मिमाई अनुमानमाफिक लेओर शहत मिलाके उसे चटावैतोटूटाहाडअच्छा हो।

अथवा

चोटवाले मनुष्यको मांसका सोरवादूध· घृत· पुष्टाई की औषधिदेना अच्छाहै और चोटवाले मनुष्य को इतनी चीजोंसे परहेज कराना चाहिये॥

नोन· कडवी· वस्तु· खार· खटाई· मैथुन· धूपमें बैठना· रूखे अन्न का खाना· इन चीजोंसे परहेज रक्खे॥

बालक और तरुण पुरुषके लगी चोट जलदी अच्छी होतीहै और वृद्ध मनुष्यकी और रोगी मनुष्य की और क्षीण मनुष्यकी चोट जलदी अच्छी नहीं होती

अथवा

लाख १॥ तोले· लेकर महीन पीसगौ के दूध के साथ पंद्रह दिन पियेतो टूटा हाड अच्छाहोय।

अथवा

पीली कौडियोंका चूना २ तथा ३ रत्ती· औटाय दूधमें पीयेतो टूटा हाडजुडे॥

अथवा

अथवा बेरकाबकल त्रिफला सोंठ मिरच पीपल इन सबको बराबर ले और इन सबकी बराबर गूगल डाल सबको एकजीव कर १ एक तोले नित्य २१ दिन तक दूध के साथ लो तो शरीर वज्र के समान होय और सरीर की सब कसक जाय॥

अथवा

बेरकाबक्कल एक तोला महीन पीस कर सहत मिलाय एक महीने तक चाटे तो शरीर की सब प्रकार की चोट टूटी हड्डी अच्छी होय

अथवा

जो किसी मनुष्य के मुगदर आदि किसी तरह की चोट लगी होय उसके वास्ते ये दवा बहुत फायदा करती है॥

दवा

मेदा लकडी मेथी सोंठ आंवले इन सबको महीन पीस गोमूत्र में मिलाय जहां चोट लगी होय तहां लेप करे तो चोट अच्छी होय और जो किसी मनुष्य को किसी पसु ने मारा हो तथा किसी ऊंचे मुकाम से गिरा हो तथा भीत आदि के नीचे दब जाय और इस कारण करके दब गया होय और घायल होगया होय तो उस के यह लेप लगावे॥

लेप की विधि

पुराना खोपड़ा आंबा हलदी मेदालकड़ी काले तिल सफेद मोम ये सब दवा एक एक तोले ले और पीस कर

चोटपरलेपकरे औरजोउसपरघावआगयाहोतोपहिलेकहे हुएमल्हमोंमेंसेकोईकाकरलगावे

अथवा

प्याजएकतोले· गेहूंकीमेदादोतोले· प्रथमप्याजकोछी लउसकीमींगीनिकालकरतेलमें छौकले फिरउसमेंमेदा कोडालथोडापानीमिलाकरलपसीबनावे औरचोटको सेके फिरइसीकोबांधेतोचोटअच्छीहोय

औरजाडेकेदिनोंमें शीतकालमेंघीवामसनमेंजमजाता है औरउसकेनिकालनेसेहाथकेनखोंमेंघीकीफांस लगजातीहै औरहाथपकजाताहैतोउसकीचिकित्सा यहहैकि पहिलेंहाथकोआगपरखूबसेके फिरयेद वालगावे॥

दवा

अजवायनखुराशानी· भैंसागूगल· विलायतीसावुन· सेंधानोन· गुड·ये सबबराबरले पानीमेंमहीनपीसे जबमल्हमकेसदृश [illegible] देतबउसघावपरलगावे औरजोइससेआराम नहोतोयेमल्हमलगावे

नुसखा

सावन· गुड· गेंहूकीमेदा· एकएकतोलेपानीमेंपीस इसकाफायाबनाकरलगावे और इसकेऊपरएकपा नगरमकरकेबांधे औरसेके जो घावसबअच्छाहो औरपानीनिकलनाबंदहोताहोतोयेतिजाबलगाक रघावकोचौडाकरे॥

नुस्खमाल्तिजावका

गंधकदोतोले· नीलाथोथादोतोले फिटकरीसफेद दो तोले· नौसादरदोतोले· इनसबको महीनपीसकरआ धपावदहीमें मिलाकरएकहांडीमें भरकरचोवाके सदृशतिजावखेंचे और एकबूंदघावपरलगावेतो घाव गहराहोय पीछे इस परवही मल्हम लगावेजो ति-आबके नुसखेसे पहिलेंलिखाहै

अबक्रमसेतो सब घावोंका इलाजलिखचुके परंतु अबदो चारनुसखे मल्हमके यहां लिखता है येमल्हमसब प्रकारके घावोंको फायदा करतीहैं

मल्हम १

रालएक पैसेभर· सफेदमोमदोपैसेभर· मुरदासंगए कपैसेभर· इनसबको महीन कररक्खे प्रथमगौका घृतछैपैसेभरलेकरगरमकरे फिरउस्में मोमडालेज बमोमपिघलजाय तब सबदवाईयोंको मिलावे फि रइस्को कांसीकी थालीमें डालकर १०८ वार पानीमे धोवे पीछे इस्को घाव परलगावेतो सबप्रकारकाघा व अच्छाहोय इस्को सफेदमल्हम कहतेहैं॥

मल्हम २

सोधापारा एकतोले आंवलासारगंधक एकतोले मुरदासंग दोतोले· कवेलाचार तोले· नीलाथोथा चारमाशे· गौकाघृतपावभर· औरनीमकेपत्तोंका रस अनुमानमाफिकडालकर इनसबको मिला·

करदोदिनतकखूबपीसेजबमल्हमकेसदृशहोजायतब घावपरलगावेतौसबप्रकारकेघावअच्छेहोंय

मल्हम३

सफेदमोम·मस्तगी·गोंद·मेंदल·नीलाथोथा·सुहागा सज्जी·सिंदूर·कबेला·मुरदासंग·गूगल·कालीमिर्चें सोने·गेरू·इलायची·बेर·सफेदा·सिंगरफ·ओधीगं धक येसबदवाबराबरले और मोमको छोड़करसब दवाओंकोन्यारीन्यारीमहीनपीसकररक्खे प्रथम-घतकोगरमकरउस्मेंमोमपिगलावे फिर सब औषधियों को मिलायखरलमेंगेरदो दिनतकखूब घोटेजब एक जीवहोजायतबधररक्खें और घावोंपरलगावे येमल्हम चोटकेघावशस्त्रादिककेघाव फोड़ेआदिकेघाव और सबप्रकारकेघावोंको फायदा करता है॥

मल्हम४

नीलाथोथा·मुरदासंग·सफेदा·खैरसार·सिंदूर-सिंगरफ·मोम·क[illegible]का घत ये सबबराबरले फिर घतकोगरमकर नीचेउतार इस्में पहिले नीला थोथा पीसकरडाले पीछे उसी समय उस्में मोमडाल कर पिघलायले फिर इस्में सब औषधिमहीन पी सकरडाले इन सबको एकजीव कर कांसे की थाली में डाले और उस्में ज्यादापानी डाल कर एक दिनभर हथेली से रगड़े फिर घावों पर लगावे तो सब प्रकार के घाव अच्छे होंय॥

मल्हम ५

सिंगरफ तीन पैसे भर. सफेद मोम तीन पैसे भर. सज्जी एक पैसे भर. नीम के पतों की टिकिया तीन पैसे भर. मुरदा संग एक पैसे भर. प्रथम घृत को औटाय उस्में नीम की टिकिया पका कर उन टिकियों को जला कर फेंक दे फिर उस घृत में मोम को पिघलावे फिर सब औषधों को महीन पीस कर मिलावे जब मल्हम के सदृश हो जावे तब लगावे तो घाव मात्र अच्छे होंय॥

मल्हम ६

जिस मनुष्य के हाथ पावों में बिवाई फटी होय उस के वास्ते य मल्हम बहुत अच्छी है

राल एक पैसे भर. कत्था एक पैसे भर. काली मिर्च एक पैसे भर. गौ का घृत दो पैसे भर. चमेली का तेल चार पैसे भर. इन सब औषधों को महीन पीस लोहे के पात्र में मल्हम बना ले पीछे इस को लगावे तो हाथ पावों की बिवाई अच्छी होय॥

मल्हम ७

नीम के पतों का रस एक सेर ले और गौ का घृत पाव सेर ले प्रथम घृत को लोहे के बरतन में गरम करे और उस्में नीम के पतों का रस मिलावे जब ये दोनों खूब गरम हो जाय तब उस्में राल चार पैसे भर डाल कर पिघलावे जब वो पतों का रस जल जाय और गाढा हो जाय तब कत्था एक पैसे भर. नीला थोथा एक पैसे भर.

मुरदासंग एक पैसे भर· इन सबको महीन पीस उसमें डाल एक जीव कर पीछे कपड़े में लगाय घाव के ऊपर लगावे तो घाव निश्चै अच्छा होय॥

मल्हम ८

रांग की भस्म छै माशे· सफेद मोम एक तोले· गुलरोगन दो तोले· इन सब को पीस कर गुल रोगन में मल्हम बनावे और घाव पर लगावे तो बहुत जल्दी अच्छा करे

मल्हम ९

जिस घाव में से पानी निकला करे उस के वास्ते ये मल्हम बहुत अच्छी है॥

गूगल चार माशे· रसोन एक माशे· इन दोनों को पानी में खूब घोटे पीछे चार माशे पीला मोम मिला के घोटके मल्हम बनाले और लगावे तो अच्छा होय।

मल्हम

उस्क ऽगार गूगल पांच माशे· इन दोनों को चार तोले सिरसों के तेल में घोट के एक तोला पीला मोम मिला के आंच पर धरे और राई· समुद्र फेन· जरावंद तवीजि· गंधक आंवला सार· पांच पांच माशे चूरन करके मिलावे और जिस स्थान पर फोड़ा को तुरत पकाया चाहे वहां पर इसी मल्हम में गुल खतमी और उस्के पत्ते दो दो तोले लेकर महीन पीस कर मिलावे और गुनगुना करके फोड़े पर लगावे तो फोड़े को बहुत जल्दी पका कर फोड़ देगा॥

मल्हम ११

मीठा तेल और कूएका पानी पांच पांच तोले मिलाके कसकूट वासनमें हाथसे खूब घोटे कि मही के तुल्य होजावे पीछे। फिटकरी नीला थोथा लाल कत्था सफेदराल सवा सवा तोले महीन पीस कर उस्में मिलावे और हथेलीसे खूब रगडे जब मल्हमके सदृश होजावे तब चीनीके वासनमें धर राखे और जब इस मल्हम को काम में लावे तब नोनकी पोटलीसे घाव को सेका करे ये मल्हम बंदूककी गोलीके घावको और नासूर के घावको और छुरे बुरवादी आदिके घावों को अच्छा करती है।

मल्हम १२

आध पाव कडवे तेलमें पांच तोले पीला मोम पिघलाके उस्में एक तोले विरोजा मिलाके पीछे दो तोले सफेदराल फिटकिरी भुनी छै माशे मस्तगी छै माशे इनको भी चूरन करके मिलावे और खूब घोटके मल्हमके सदृश बनाकर लगावे तो सब घाव अच्छे होय

अंडकोषों के छिटक जाने का यत्न॥

जानना चाहिये कि फतक रोग अंडकोषों के बढ जाने को कहते हैं और ये रोग अंडकोषों में तीन प्रकार से होता है एक तो यह कि किसी कारण करिके चोट लगजाती है इस कारण से भीतर अंडा बढ जाता है उक्तान्वि कित्सा में बहुत से लेप और बफार काम में आते हैं और

और इस रोगके वास्ते ये दवाई बहुत श्रेष्ठ है॥

दवा

हरीसोंफ· सूखी मकोय· खुरासानी अजवायन· बा
बूनेके फूल· मूरिदके बीज· गेरू· ये सब दवा एक एक
तोले इन सब को पानी में पीसकर राखे और इस के
पहिले अंड कोषों को सोये के साग का बफारा देकर
ये लेप जो बना रक्खा है लगावे ऊपर से वही साग बांधे
जिस्का बफारा दिया गया है पानी न लगने दे॥

और एक कारण इस रोग के होने का यह है कि प
हले किसी की प्रकृति में तरी और सरदी की विशेषता
होती है इस कारण करिके हर एक जोड में बादी उत्पन्न
होजाती है और पेट के सब अवयवों को बादी अंड को
षों में भर पूर कर भीतर से अंडे को बढा देती हैं तो अज्ञा
नी लोग उस्की चिकित्सा पूछते फिरते हैं और किसी
जर्राह से नहीं पूछते कि ये वह फस्त या जुल्लाब बतला
वे या कोई लेप तथा बफारा बतावे॥ और बहुत से मू
र्खलोग उस को तमाखू का पत्ता तथा आटे सूके फूल बत
ला देते हैं उन दवाओं के करने से रोग और भी बढ जाता है
उचित है कि हकीम हो या जर्राह हो रोगी की प्रकृ
ती के माफिक इलाज करे और पहिले फस्त खुल
वावे अथवा जुल्लाब देवे पीछे उस्पर ये लेप करे॥

लेपकी विधि

नाखूना· सूखी मकोय· कछुए के अंडे की जरदी -

चार २ नग छीमोफ मूसेकीमेंगनी एकतोले इनसवको पानीमें पीस कर गरम करिके लगावे और जो जराह की सम्मति होतौ पहले वफारा देवे और वफारे की येदवा है॥

नुसखा

सीयेकेवीज सोयेकी पती चमेलीकी पती इमली की पती हरीमकोय पितपापड़ा येसव दवादोदो तोले इन सवको पानीमें औटाकर भफारा देवे और इसी का फोक बांधे जो कुछ आराम दीखे तो यही करते रहे और जो इसमें से आराम न हो तोयह वफारा देवे॥

नुसखा

संभालूके पते सूखे महुए दोदोतोले इनदोनो वस्तुओं कोजल में औटाकर भफारा देवे॥ औरऊपर से इसी का फोक वांधे॥

औरतीसरा कारण इस रोग का यहहै कि वहुत से मनुष्य जल पान करिके दौड़ते हैं और यह नहीं जानते कि इस्में क्या हानि होगी यहकाम वहुत ही बुरा है और इसको सिवाय एक वात यह है कि किसी की प्रकृतीमें रतूवत अर्थात् तरी अधिक होती है और ज्वरकी विशेषतामें वाज मनुष्य पानी रुककर पीते हैं और कोई २ वहुत जल पीते हैं इस वहुत जल पीनेसे दो वा तीन रोग उत्पन्न होते हैं एक तो यह कि नले वढ़जाते हैं और दूसरा यह कि अंडकोषोंमें पानी उतर

आताहै तीसरा यहकि तिल्ली फूलजातीहै ऐसा करने
से कभी कभी अंडकोष वढजाते हैं और इसकी चि
कित्सा हकीमोंने वहुत पुस्तकोंमें लिखीहै और ह
मारे मित्र डाक्टर साहवने इसकी चिकित्सा इस प्रका
रसे लिखीहै कि पहिले इसमें नस्तर लगावे और उ
सका सव पानी निकालकर घावमें कोई ऐसी वस्तु
लगावे कि घाव वहता रहे और सात आठ दिन के पीछे
अच्छे होने का मल्हम लगावे और यह दवाई खिलावे
क्यों कि भीतर से पानी का विकार दूर होवे तो घाव सू
खकर जलदी अच्छा होजाता है और फिर कभी रोग
उभरने नहीं पाता और वह खाने की दवा येहै॥

नुसखा

कुदरू गोंद · वंशलोचन ताला · जहरमुहराखताई ·
केशर · रीठा · मुलेठी · येसव दवा एक एक तोले ले
अलसी छै माशे · खतमी के वीज छै माशे · इन सव
को पीसकर चार माशे सवेरे खिलावे और ऊपर से
एक तोले सहत और चार तोले पानी मिलाकर नित्य
पिये और यह रोग इस कारण करि के भी होता है ·
कि किसी मनुष्य के सोजाक होता है और यह इन्द्री
में पिचकारी लगवाता है तो अंडकोषोंमें पानी उतर
आता है तो वह पानी अंडकोषोंमें भीतर तेजाव के स
मान मांसको काटता है जव वो मनुष्य सीधा सोता है
तो पानी पेटकी ओर ठहरता है तो इस कारण करिके

भीतरके मांस के कटिजाने करिके आंतें उतर आती हैं फिर ये रोग असाध्य होजाताहै॥
और ये रोग इस कारण करके भी होता है कि कोई मनुष्य भोजन करिके और जल पीकर चलफिरे वा किसी से कुस्ती लडे अथवा दीवल पर चढे और कूद पडे इन के सिवाय और भी कितने ही कारण हैं कि जिन से आंतें उतर आती हैं पहले पेडू पर एक गुठली सी होती है फिर मनुष्य के चलने फिरने से कुछ दिनों के पीछे वह आंत अंड कोषों में रहती है जब वह मनुष्य सोता है तौ वही आंत पेट में चली जाती है और उठते समय लोटते समय तथा बैठने समय उसका शब्द होता है उस रोग की चिकित्सा यह है कि एक लंगोटा वा अंग्रेजी कपडा बांधा करैं अथवा वे उपाय करैं जो पानी के कारण के अंड कोषों के प्रकर्ण में वर्णन कर आये हैं कुछ आश्चर्य की बात नहीं है परमेश्वर की कृपा हो तौ आराम होजावे॥

अथ सफेद दाग का यत्न

जिस मनुष्य के शरीर में फोडा तथा शस्त्रादि के घाव हुए हों और वे मल्हम आदि के लगाने से अच्छे होगये हों फिर उन घावों के निशान सफेद होगये हों तो ये दवा लगाना चाहिये॥

दवा

मैनाशिल· मजीठ· लाख· दोनों हलदी· ये सब दवा बरा

खरलेमहीनपीस घनऔरसहतमिलायदागकेऊपरलेप करेतौ घावकादाग मिटकर शरीरकीत्वचा के शदृश होजावेगा॥

सीपऔरझाईंका यत्न

जो किसी मनुष्यके मुखपैतथा छातीपरया शरीरपर किसी जगहपरसफेदीलिये दाग होतौ बहुत सेमनुष्य उसको बंदरफ कहतेहैं इसका यत्न येहै॥

दवा

सफेदसनाय· ककरोंदाकीजड· मूलीकेबीज· चौकिया सुहागा· इन सबको पीसकर जलमेंलेप करेतौ सरीरके दाग अच्छे होंय॥

अथवा

मूलीके बीजोंको पानी में पीसकर लगावे और धूप में बैठे इसीप्रकारसात दिन करे

विदितहो कि इस पुस्तक में मैंने फोडाफुनसीशस्त्रादिकके घावआदिअनेकरोगोंके यत्न यथा क्रम से लिखे परंतु औषध बनानेकी विधि और हड्डीजोडने की विधि और तलवारके उस घावकीजो चार अंगुल गहरा हो और उस घावकीजो सबेरे हुआ और सामको अच्छाहो गया और गोलीके लगनेको वह विधि कि जिस्में घाव चीरा नजावे और गोली निकल आवेये इलाज मैंने इसवास्ते नहीं लिखे कि बिना उस्तादसे सीखे

नहीं आने क्यों कि ये काम बहुत कठिन है इस मेरे न लिष
ने का कारण ये है कि इस पुस्तक में हरेक प्रकार के फो
डों का इलाज लिखा है इस वास्ते मुझ को यकीन है
कि इस पुस्तक को हरेक ग्रहस्ती गरीब तथा अमीर अ
हमें जरूर रक्खेंगे क्योंकि इसमें बहुत फायदा होगा
और जो कदापि इसमें वे रोग जो हमने कर चुके हैं उने
लिख देते और कोई मनुष्य उन इलाजों को लिखा देख
बिन समझे इलाज करता और उस रोगी को नुसखा न
पहुंचाता तो पाप का भागी मुझ को भी होना पडता क्यों
कि ये नेत्रादिक के स्थान बडे नाजुक होते हैं और इस
के सिवाय यह भी बात प्रत्यक्ष है कि इस शरीर में नेत्रों
ही सुख के दाता हैं

फस्त का प्रकरण

अब फस्त का वर्णन किया जाता है मनुष्यों को उचित है
कि जिस दिन निराहार हो उस दिन फस्त खुलवावे अ
ब फस्त खोलने की तारीषों के गुण औगुण लिखते हैं
दूसरी तारीष को फस्त खुलवाने से मुख का पीलापन
दूर होता है ॥ २
तीसरी तारीष को फस्त खुलवाने से मुख पर पीला
पन छा जाता है ॥ ३
चौथी तारीष में शरीर के दाग धब्बे दूर होते हैं ॥ ४
पांचमी तारीष में मनुष्य प्रसन्न रहता है ५
छठी तारीष में मुष की ज्योति तेज होती है ॥ ६

सातमी को शरीर मोटा होता है ७
आठमी को निर्वलता उत्पन्न होती है ८
नवी को शरीर में खुजली होती है ९
दशमी में बल होता है १०
ग्यारवी में कंपन वायु दूर होती है ११
बारवीं तारीष में फस्त खोलना निषेध है १२
तेरमी में पीडा उत्पन्न होती है १३
चौदमी में नींद नष्ट हो जाती है १४
पदमी को बीमारी नहीं होती १५
सोलमी को वाल सफेद नहीं होते १६
सतरमी को मन अप्रसन्न नहीं होता १७
अठारमी को हृदय बलवान नहीं होता १८
उन्नीसमी को मस्तक प्रबल होता है १९
बीसमी को सब प्रकार के रोग दूर होते हैं २०
इक्कीसमी को प्रसन्नता प्राप्त होती है २१
बाईसवी को कंठ पीडा और दंत पीडा दूर होती है २२
तेईसमी को निर्वलता अधिक होती है २३
चोवीसमी को शोकत नहीं होता है ॥ २४
पच्चीसमी को रवफ्फान रोग दूर होता है २५
छब्बीसमी को गुरदे की तथा पसली की पीडा दूर होती है
सत्ताईसमी को बवासीर आती है २७
अट्ठाईशवी को सब प्रकार की पीडा नष्ट होती है २८
उनतीसमी को रक्त भजाना २९

तीसवींको मनको भ्रम और बेकलीहोतीहै ३०

या प्रकारतीसों तारीषमें फस्त खुलवानेका शुभाशुभ फल कह्यो ये तारीष मुसल मानीजाननी ॥

अथवार फलानि

शनिवारको फस्त खुलवाना जनून आदि रोगों को दूरकरताहै ॥

रविवारको सब प्रकारके रोगों को दूर करता है

सोमवारको रुधिर विकार को शांति करताहै

मंगलवारको शरीर की खुजली को शांति करताहै

बुधवार को निषेध कहाहै

बृहस्पतिवारको खफकानरोगको पैदा करताहै और शरीर में वादीबढाताहै

शुक्रवारको जनून रोगको पैदा करताहै

फस्तोंके नाम्

जिननसों की फस्त खोलीजातीहै उन प्रसिद्ध नसोंके नाम लिखतेहैं ॥

कीफाल १ बासलीक २ अकहल ३ हबलुलजरा ४ असीलम ५ साफन ६ अर्कोन्निसा ७ ये सात नस हैं

प्रकटहो कि जो लोग प्रतिवर्ष फस्त खुलवाते वा जुलाब लेतेहैं उनको अभ्यास वैसाही पडजाताहै औ रये अभ्यास अच्छा नहीं और फस्त का न खुलवाना उत्तम है क्योंकि वर्षकी असल ऋतु तीन हैं और रुधिर भी तीन प्रकार परहोताहै और जो फस्त खुलानेकी अवश्यक

ताहोतो शीतकाल में मध्यान्ह के समय खुलवावे कि उ
स ऋतु में रुधिर उसी समय चक्कर में होता है फिर ठहर
जाता है और कोई कोई हकीम यों भी कहते हैं कि रुधि
र जम जाता है सो बात झूठ है क्योंकि जो मनुष्य के शरी
र में रुधिर जम जावे तो मनुष्य जीवे नहीं किंतु अंतर गर
मी होती है और रुधिर निकलने में ये परीक्षा नहीं हो
ती कि यह रुधिर अच्छा है या बुरा और उस समय में फ
स्त खुलवाने से मनुष्य दुर्बल हो जाता है क्यों कि बुरे
रुधिर के साथ अच्छा रुधिर भी निकलता है और गी
षम काल में रुधिर पृथक २ होता होता है इस ऋतु
में संझा के समय फस्त खुलवाना उचित है और सवे
रे खुलवाने में रुधिर कम होजाता है किन्तु खुश्की भी
अधिक होती है और बाज मनुष्यों के फस्त का अभ्या
स पड़जाता है और फिर वे फस्त न खुलवावें तो उनको
एक न एक रोग सताता रहता है और वर्षा काल में रु
धिर मो हिल होता है उस ऋतु में फस्त खुलवाना योग्य
नहीं और जो हकीम की सम्मति हो वैसा करे और जिन दि
नों में रुधिर कम होता है तब खुश्की के कारण करिके
कई रोग होजाते हैं और पीड़ा भी हरेक प्रकार की हो
ती है और जब फस्त लगवाने की बहुत ही अवश्यक
ता होती है उस वक्त दिन तारीख ऋतु और समय का कु
छ विचार नहीं किया जाता॥

इति दूसरा भाग जर्राही प्रकार संपूर्णम्

इश्तिहार

प्रकट हो कि इस पुस्तक जरांहीप्रकार को तीन हिस्सों में
पंडित रंगीलाल ने अपनी बुद्धीबल से बनाया और इस
के छापने का अधिकार मुझ श्यामलाल सुहृत्मि
त्र श्याम काशीप्रेस को दिया परंतु अब इस जर्रा
हीप्रकार तीनों हिस्सों का हक मुसन्नफी मुझ
श्यामलाल ने लाला हरिप्रशाद महोतमि
म छापेखाने काशीसमान सहर मथुरा के
को दिया इस्से विना आज्ञा लाला ह
रिप्रशाद के कोई साहब छापने व
छपवाने का प्रबंध न करें॥+॥
अब लाला हरिप्रशाद ने अप
नी खुशी से एक वार छाप
ने की इजाजत मुज श्या
मलाल को दी है फ
कत सम्वत +॥
१९४५
विक्रमी
सन्
१८८८
ईसवी

सूचीपत्र

इसपुस्तककेसिवायऔरभीजोपुस्तकेंहमारेपुस्तकालयमेंविक्रीकेवास्तेमौजूदहैंउनकेनामऔरकीमत नीचेलिखीहै जिनमहाशयोंकोलेनेकी इच्छाहोउनकोसहरमथुरानयाबाजारलालाश्यामलालकीदुकानसेमगालें॥

नामपुस्तक	की॰	डा॰	नामपुस्तक	की॰	डा॰
जर्राहीप्रकारप्रथम			तीसराखंड	॥)	-)
भाग	≡॥	-॥	चौथाखंड	१)	-)
तीसराभाग	।)	-॥	योगचिंतामणिभाषा		
तिब्बएहसानीहिंदि	≡।	-॥	टीकासहित	॥।)	≡)
अनोपानचिंताम			हंसराजनिदानभाषा		
नीसटीक	।)	-)	टीका	॥।)	≡)
स्त्रीचिकित्साप्रथ			माधवनिदानभाषा		
मभाग॰	≡)	-॥	टीका	२)	।)
करावादीनरोसानी			मीजानातिब्बहिन्दी	॥।)	=)
हिंदी	।≡)	≡)	शारंगधरभाषा	।≡)	≡)
रिसालेआतशक	=॥	-॥	वैद्यकसारभाषा	≡)	-॥
नाडीप्रकाश	=॥	-॥	वैद्यकसारयूनानी॰	≡)	-॥
अजीर्णमंजरी	=।	-॥	वैद्यरत्नयूनानी	≡)	-॥
रसराजसुंदरप्रथ			दिह्वगनभाषा॰	≡)	-॥
मखंड	॥)	-)	वैद्यजीवनभाषाटी॰	=)	-)
द्वितीयखंड	॥)	-)	रामविनोदभाषा॰	।॥	-)

किस्साहीररांझा	~	~।।	रागमाला	~	~।।
किस्सागोपीचंद	~	~।।	राधाफाग	~।।	~।।
दीनवचनका	~	~।।	फागचमन	~।।	~।।
लावनीमनोहरबाग			बसंतबहार	~।।	~।।
प्रथमभाग	~।।	~।।	जुगलफाग	~।।	~।।
दूसराभाग	उ	~।।	नगमेंदिलकश	।)	~
किस्साजाहरपीर	उ	~।।	भजनमुक्तावली	।)।।	~
सिंहासनबत्तीसी	।)	~	पावसप्रमोद	।उ	~।।
बैतालपचीसी	उ	~।।	बीणारस मंजरी	।)	~।।
शुकबहत्तरी	उ	~।।	मनोजमंजरीतीनों		
किस्साछबीलीभटि			हिस्से	।।)	उ
यारी	~।।	~।।	भजनरामायण	~।।	~।।
प्रह्लादसांगीत	~।।	~।।	बूढेमुंहमुहासे	उ	~।।
किस्साढोलामारू	।।)	।)	कलिकौतुकनाटक	उ	~।।
सांगसौदागर	~।	~।।	जैनारसिंहकीनाटक	उ	~।।
विनयपत्रिकातुलसी			महाअंधेरनगरीनाटक	।)।।	~।।
दासकी	।)	~	हिंदीउर्दूकीलडाई	उ	~।।
विनैपत्रिकासूरदास			लावनीगुलजार		
जीकृत	उ	~।।	शकुनतुराचारोंभा		
षटऋतुप्रकाश	~।।	~।।	ग	।।।)	उ
रागमनोहर	~।।	~।।	बुढियाबखान	~	~।।
हरिवंशचोरासी	~।।	~।।	मनहरसागर	~	~।।
मजमूआराग	उ	~।।	ज्ञानभाग	~।।	~।।

विज्ञापन

प्रकटहो किआजकेजमानेमेंहमदेखतेहैंतोहरएकमनुष्य कोअनेकप्रकारकेरोगोंसेग्रसितदेखाक्योंकिकिसीकोकुष्ठ रादिकऔर किसीकोफोडेफुन्सीऔरघावादिकरोगोंसेपीडि तदेखाऔरजोसौ१०० मनुष्योंमेंसेदस मनुष्यविना रोगवा लेहुए तोउनकीकुछगिनतीनहींहै सोमैंजानताहूं किउनमनु ष्योंकेभीकोईनकोईरोगजरूरहोताहैक्योंकि रोगबहुतप्रकार केहैं औरइन्हींरोगोंकीशांतिकरनेको बडे२मुनीश्वरऔरऋषी श्वरोंनें अनेकग्रंथवैधककेरचनाकि येउन्हीग्रंथोंकीसहायता लेकरवैद्यलोगअनेकरोगियोंकेप्राणवचातेहैं परंतु जिसहिन्दु स्तानीवैद्यकोदेषाउसकोज्वरादिकरोगोंका इलाजकरतादेषा परंतुआजकलकेजो प्रचंडरोग आतशक शोजाक फोडा फु न्सी घाव आदिका इलाजकरतेनदेषाक्याजानियेंयेरोगउ न लोगोंकीसमझमेंक्योंनहींआतेहैं औरइसकेउपरांत यहभी बातहै रकियेरोग सुश्रुत आदिवडे२ग्रंथोंमेंलिखेहैसोउ नकोकोईदेषतानहीं इसीलियेंमुझरंगीलालनेंसंस्कृत वो उर्दूकीवहुतसीपुस्तकोंकीसहायतालेकरयेजर्राहीप्रकार नामग्रंथरचाजोमहाशयमेरीमूढताकोक्षमाकर इसग्रं थकोदेखेंगेवे इससमयमेंअवश्य फायदाउठावेंगे यह ग्रंथसर्वसुखदाईहै॥

इति

तीसरा भाग
श्यामकाशीयंत्रमें लाला
श्यामलालके प्रबंधसे छपा

जर्राही प्रकाश
तीसरा भाग
रंगीलाल
श्याम काशी यंत्र में लाला श्यामलाल
के प्रबंध से छपा॥
मथुरा नया बाजार में॥

॥श्रीगणेशायनमः॥

अथजर्राहीप्रकार तीसरा भाग लिख्यते

जानना चाहिये किनेत्रोंमेंसातपरदे औरतीन रतूवतहोती है और एक असवा है इसीअसवाकोमनुष्य पुतली और तिल कहतेहैं येएकके सदृशवीचमें सेरवालीहै औरइसीमेंसे सबको दिखाई देताहै औरबीचोंबीचमें आकर रतूवतजलादियातकपहुंचीहै इसरतूवत जलादियामें सब दिषाई देता है औरअसवेसें निकलकर दृष्टीकी इन्द्रीतक पहुंचतीहै वह इनको पहिंचानसकतीहै और इसीरतूवत और असवेके वचाव के लिये औरसव परदे और रतूवतें आस पास हैं॥

नेत्र केसातों परदोंके नाम

मुलतहिमा १ करनिया २ इनवीया ३ अनकवूतिया ४ शबकिया ५ मसामियां ६ सलवीया ७

तीनों रतूवतोंकेनाम

वेजिया १ जलादिया २ जजाजिया ३

अव जिस तरहसेनेत्रोंमेंयेसात परदे औरतीन रतूवत लगी हैं उनका वयान विस्तारसे कियाजाता है नेत्रका परदा जो वाहरकीओरहवासे मिलाहुआ है अर्थात् नेत्रोंमें जो सफेदी दिखलाई देती है वह मुलतहिमा नाम पहिला परदा है और नेत्रोंमेंजो गोलस्याही की चिन्ह दिखाई देता है अर्थात् जिसको पुतली कहते हैं वह करनियां नाम दूसरा-

परदा है और ये दोनों परदे आपस में मिले हुए हैं और इन के पीछे क
ओ तीसरा परदा है उसका नाम इनबीया है यह परदा रंगदार है और
करनिया नाम जो परदा है ऊपर कह आये हैं उस में जो रंग है सो इसी
का है इस परदे के बीच में एक छिद्र है रोशनी के और विषों के नि
कलने के लिये और नेत्रों में पानी उतरने की जगह भी यही है॥

इस परदे के पीछे रतूबत बैजिया है इसका रंग अंडे की स
फेदी के समान है इस रतूबत के पीछे परदा अनकबूतिया पाच
वां मकड़ी के जाले के समान है॥
इसके पीछे रतूबत जलादिया है और इसके पीछे रतूबत अजा
जिया है जो पिघली हुई कांच के सदृश है॥
और इसके पीछे परदा शबकीया है जो जाल के अनुसार है औ
र इन दोनों रतूबतों को घेरे हुए है॥
और इस के पीछे परदा मसीमिया है॥
और इसके पीछे परदा शलबीया है जो नेत्रों के ढेले से लगा
हुआ है ये सात परदे और तीन रतूबतों से नेत्रों का समस्त बना
व बना है सो इन परदों को एक के पीछे एक क्रम से जानना चा
हिये और हर परदों और हर रतूबतों में अलग अलग रोग हो
ते हैं उनका वर्णन आगे करूंगा॥

अथ रमद अर्थात् आंख दुखने की चिकित्सा

मुलतहिमा जो पहिला परदा है उसपर जो सूजन आजाती है उ
सको रमद कहते हैं और ये रोग पांच प्रकार का होता है वायका
१ पित का २ कफका ३ रुधिरका ४ रीहका ५

जो ये रोग रुधिर से हो तो उसके लक्षण ये हैं कि नेत्र लाल और भारी हो जायेंगे और दर्द होगा और कीचड़ अर्थात् गीद इनसे बहुत निकलेगी॥

और जो बलगम अर्थात् कफ़ से हो तो रंग इसका सफ़ेद होगा आंखें फूल जायंगी और कीचड़ आंसू इनसे बहुत निकलेंगे॥

और जो ये रोग सौदा अर्थात् वात से हो तो सूजन बहुत होगी परंतु कीचड़ नहीं निकलेगी और पलक नहीं चिपकेंगे और नेत्र बोझल होंगे और सिर में दर्द भी होगा॥

और जो ये रोग रीह के कारण से होगा तो न कीचड़ निकलेगी और न बोझल होंगी॥

उपाय इस रोग का यह है कि मवाद के अनुसार उसे साफ़ करे और फ़स्त और जुल्लाब से पहिले कोई औषधि नेत्रों में न डाले परंतु जब यह रोग हलका हो तो दो तीन दिन पीछे बिना फ़स्त और जुलाब के दवा डालनी फायदा करती है॥

और दूसरे हकीमों का मत है कि इस रोग में शेररू नस की फ़स्त खोले कि सब प्रकार के रमद को माफ़िक आती है और जोंक लगाना भी गुण करता है इस रोग में मांस और मिष्ठान्न खट्टा खारा न खाय रमद रोग की आदि में नेत्रों को शीतल जल लगाना नहीं चाहिये और हरदी में कपड़ा रंग करके अथवा नीला कपड़ा नेत्रों के सन्मुख लटकाना बहुत फ़ायदा करता है॥

अब इस रमद रोग के वास्ते अनेक प्रकार के अंजन व गोली

वोलेप आदिलिखवाहूं॥

इलाज

जोयेरोगगरमीसेहोतोश्मोतकोलडकीकीमाकेदूधमेंघो लकरनेत्रोंकेऊपरश्रोरभीतरलगानाश्रतिलाभदायकहै श्रोरजोनेत्रोंमेंपीडाज्यादाहोतोथोडीसीश्रफीमभीइसमें मिलानीश्रच्छीहे॥

गोली

हकीमजालीनूसनेंलिखाहेकिश्रांखदूखनेकेवास्तेयहगो लीवहुतफ़ायदाकरताहै फिटकरीभुनीहुई ३॥ तोले हलदी ७ माशे श्रफ़ीम ४ माशे इनसवकोपकेकागज़ीनीवूकेरसमें मिलाकरलोहेकीकढाईमेंमंदीश्रांचसेपकावेजवगाढाहो जायतवगोलियांवनाले फिरइसगोलीकोपानीमेंरगडक रनेत्रोंकेऊपरपतलालेपकरेश्रोरनेत्रोंकेकिनारोंपरश्रांजे-

सफ़ेदाकाफाया

धोयाहुश्रासफ़ेदा १॥ तोले निशाशता कतीरा ववूलका गोंद श्रफ़ीम येचारोंदवादोदोमाशेले इनसवकोमहीन पीसकरइसकाफायावनाकरनेत्रोंपरवांधे॥

श्रथवा

लोध· गेहूं की मेदा· घी ये सव चोदह २ माशेले सवोंका मोयावनाकरचारगोलीवनावेश्रोरएकठीकराश्रांचपर रखकरवामेंएकगोलीरखदेजवथोडीगरमहोजायतव ठंढीकरनेत्रोंपरवांधेइसीप्रकार चारोंगोलियांवांधे तो व हुतजलदीफ़ायदाहोय॥

लेप

हरड़की छाल· सेंधानोन· गेरू रसौत ये सब बराबर ले इन्हे जलमें पीस नेत्रों के ऊपर लेप करे तो सर्व नेत्रों के रोग जाय

अथवा

लोहे के पात्र में नीबू का रस डाले पीछे उस रस को कुछ के गा ढा करे पीछे नेत्रों के ऊपर लगावे तो सर्व नेत्र पीड़ा जाय॥

अथवा

अफीम १ माशे फूली फिटकरी १ माशे लोध १ माशे इन सब को नीम के रस में पीस लोहे की कड़ाही में थोड़ा सा गरम करिके पीछे नेत्रों पर लेप करे तो नेत्रों का दुखना अच्छा होय॥

अथवा

मुलेठी गेरू सेंधानोन· दारुहलदी· रसौत ये सब बराबर ले इन्हे जल में महीन पीस नेत्रों पर लेप करे तो नेत्र पीड़ा जाय॥

पोटली

पठानी लोध १ मा· फूली फिटकरी १ मा· रसौत १ मा· मुलेठी १ मा· इन सब को महीन पीस ग्वार पाठे के रस में अथवा पोस्त के डोडे के पानी में वा जल में १ माशे की पोटली करिके पीछे नेत्रों पर बार बार फेरे तो नेत्र पीड़ा जाय

अथवा नेत्रों में हवा लगने से शूल चले उसका यत्न

पठानी लोध को सेककर महीन पीस कपड़े में छानकर घ नमें भूने पीछे उसे गरम पानी से सेक करे तो नेत्रन का शूल बंद होय॥

अथवा

ग्वारपाठेकागूदा१मा० अफीम२रत्तीभर पीसकर ग्वारपाठेके गूदेमें मिलाकर पोटलीबांधकर पानीमें भिजोकर नेत्रोंपर फेरे और एकबूंदनेत्रके भीतर टपकावे तो नेत्रपीड़ा जाय॥

अथवा

लोध१मा० भुनीफिटकरी१मा० अफीम४रत्ती इमलीकी पती४मा० इनसब को पीसकर पोटलीबनाकर वारवार नेत्रों पर फेरे॥

अथवा

इमलीकीपती० सिरसकीपती० हलदी० फिटकरी ये सबदवा पोनेदो माशेभरलीन पीसकर पोटलीबना कर पानी में भिगो करवार वार नेत्रों पर फेरे और थोड़ासा पानी इसका नेत्रों के भीतरजानेदे तोनेत्र पीड़ा जाय॥

अथवा

पोस्तकाडोडा१नग अफीम२रत्ती लोंग२नग भुनीवेलगिरी४मा शे चनेकीवरावर हलदी थोडीसी इमलीकीपती इनसबकी पोटली बांधकर पानीमें भिगोकर नेत्रोंपर फेरे॥

अथवा

कपूर तीनभाग० पठानीलोध१भाग पीसकर पोटली बांधे और दो घड़ी पानीमें भिगोकर नेत्रोंपर फेरे और टपकावे॥

अथवा

लोध० फिटकरी० मुरदासंग० हलदी० सफेदजीरा० ये सब चार२मा शे अफीमचनावरावर कालीमिर्च नग४ नीलाथोथा उड़द प्रमा

णइनसवकाकूटछानकरपोटलीबांधकरनेत्रोंमेंफेरे॥

अथवा

बड़ीहड़ेकावक्कल·बहेड़ेकेवक्कल·आमला·रसोत·गेरू·इ
मलीकीपती·अफीम·भुनीफिटकरी·सफ़ेदज़ीराये सबब
राबरलेकपड़ेमेंपोटलीबांधकरगुलाबजलमें·अथवापानीमें
भिंजोकरनेत्रोंपरबारबारफेरेतोनेत्रपीड़ाजाय॥

अथवा

सफ़ेदज़ीरा·लोधपिसाहुआ·भुनीफिटकरीपिसीहुई इनस
बकोबराबरले थोड़ेग्वारपाठेकेगूदेमेंमिलाकरपोटलीबां
धकरपानीमेंभिगोकरनेत्रोंपरफेरे॥

अथवा

अफीमएकमाशे·फिटकरीभुनीदोमा·इमलीकीपती१मा·
इनसबकोमहीनपीसकरपोटलीबांधकरनेत्रोंमेंटपकाना
भीबहुतगुणकरताहै॥

अथवा

फिटकरीएकमाशे·अलसीदोमाशे इनदोनोंकीपोटली
बांधकरबारबारनेत्रोंपरफेरे॥

अथवा

ईशवगोलाकालुआबनेत्रोंपरलगानेसेगरमीकीपीड़ाजाय॥

जिसदिनमनुष्यकेनेत्रमेंपीड़ाहोयउसीदिनधतूरेकेपतों
कारसगुनगुनाकानमेंटपकावेपरंतुजोदाहिनीआंखमेंपीड़ा
होयतोबायेंकानमेंरसडालेऔरबाईंआंखमेंदर्दहोतोबायें
कानमेंरसटपकानाफायदाकरताहै॥

और जो चक्षोंकी आंख दूखनी आवे तो नीमकी पतीयोंका रस ऊपर लिखे रीतके अनुसार कान में टपकावें॥

और जो दोनों नेत्रों में पीड़ा होतो दोनों कानों में टपकावे॥

अथवा

निराग्वार पाठेका गूदा पीसकर सोते समय कानमें टपकावे॥

ये दवा गरमी की नेत्र पीड़ाको शान्ति करती है चांदनी की पती मलकर उसका रस निचोड़कर नेत्रों में टपकावे॥

अथवा हलदी पानी में पीसकर उसी प्रकार कानमें टपकावे तो नेत्र पीड़ा जाय॥

दवा जो गरमी की नेत्र पीड़ाको फायदा करे वोह दानेका लुआब और धनिये के पतों का रस लड़की की माके दूधमें मिलाकर छानकर नेत्रों में टपकावे॥

अथवा नींबूका रस लोहे के खरल में लोहे के दस्ता से घोटे जब उसका रंग काला होजाय तब नेत्रों के आसपास पतला-पतला लेप करे॥

अथवा लोध आमले गाय के घीमें भूनकर ठंडे पानी में पीस पतला पतला लेप करे परंतु नेत्रों के भीतर न जाने पावे॥

अथवा बड़ी हर्डका बकला गेरू रसोत छोटी हरड़ घिस कर लेप करे अथवा सूखी इमली के चीयां निकास कर पानी में भिजोकर मसल छानकर तीन रती अफीम पांच रती फिटकरी इन दोनों को उसी इमली के पानी में डालकर लोहे के बासन में पकावे जब रस गाढ़ा होजाय तब सीप में धरकर पतला लेप करे और जो किसी समय में इमली न मिले तो उसके पतों का रस लेकर पतला लेप करे

अथवा सोंठ ४ माशे बबूर का गोंद ३ माशे इन दोनों को कूट छा
नकर पानी में पीस कर लेप करै॥

अथवा अमचूर लोहे के तवे पर लोहे के दस्ते से थोड़ा थोड़ा पानी
के संग खूब पीस कर पतला लेप करै और नेत्र में टपकावे॥

अथवा बड़ का दूध को नेत्रों में आंजे॥

अथवा नीम के पत्ता और सोंठ बराबर लेके अलग अलग पीस क
र छान कर चने प्रमाण गोलियां बांधे पीड़ा के समें पानी में लगावे

दवा जो नेत्रों की सुरखी और वगल गंध को गुण करै काली मिर्च
२ नग थोड़ी सी चूल्हे की माटी लाल जली हुई बांस के चोंगे अथ
वा चीनी के प्याले में खूब पीसे जब काली हो जाय तब नेत्रों में आंजे

अथवा अड़ूसे के पत्ते पीस कर टिकिया बना कर तीन दिन नेत्रों
पर बांधे॥

अथवा कपास की पत्ती दही में पीस के नेत्रों पर लगावे॥

अथवा

अनार की पत्तियों को पीस कर उसकी टिकिया बनाकर सो
ने के समय नेत्रों पर बांधे॥

अथवा

गोभी को पीस कर उसकी टिकिया बनाकर नेत्रों पर बांधे॥

और जो इस रोग में नेत्र खाती और पेट में जलन होतो ये दवा
करै मकोय· आमले· मुलेठी· नागरमोथा· खस· चीला फर
के बीज ये सब साढ़े तीन २ माशे मिश्री दो तोले ढ़ाई माशे इन
सब को कूट छान कर सात माशे नित खाय तो जलन मिटै॥

दवा· जो कफ को नेत्र पीड़ा को फायदा करै सहजने के पत्तों का

थोड़ा सा रस सहत में मिला कर नेत्रों पर लगावे तीन दिन में आराम होय॥

दवा· जो पशुओं की नेत्र पीडा को गुण करै चाकसू रू ६॥ माशे- लाई १॥ माशे मिश्री १॥ माशे इन तीनों को महीन पीस छान कर छिड़के और लाई न मिले तो ममीरा डालने ना उचित है॥

दवा· थोड़ी मेथी का लुआब थोड़े से कतीरा के संग टपकाना विशेष पीड़ा को आराम करता है॥

दवा· कटेरी के पत्ता पीस कर नेत्रों पर बांधे और पत्तों का रस नेत्रों में निचोड़े तो भी गुण करता है॥

अथवा कच्चे आम को पीस कर नेत्रों पर बांधे॥

अथवा छिली हुई मुलैठी को कूट के थोड़े पानी में पीस कर उसमें रुई भिगो कर नेत्रों पर रक्खे तो नेत्रों की सुर्खी जाय

अथवा लोध १॥ तोले· बड़ी हड़ का बक्कल ७ मा· इन दोनों को अनार के पत्तों के रस में पीस कर इसमें रुई भिजो कर नेत्रों पर रक्खे इसी प्रकार तीन रात्रि पर्यंत करने से सब प्रकार की नेत्र पीड़ा को फायदा करै॥

अथवा

ये दवा नेत्रों की गर्मी और खुजली को मिटावै और रमद के रोग को दूर करै त्रिफला का बक्कल जौ कुट कर के रात्रि को पानी में भिगोवे फिर प्रात काल उस पानी से नेत्रों को धोवे जो यह औषधि एक दिन करै तो एक वर्ष पर्यंत पीड़ा न होयगी परंतु इतना ध्यान रखना चाहिये कि आंख दूखते नहीं होय॥

अथवा

जो मनुष्य वीस मुंडी निगल जाय तो एक वर्ष तक ये रोग न हो गा और जो मनुष्य चालीस मुंडी निगले उसको दो वर्ष न होगा और वहुत से हकीम यह कहते हैं कि जो कुंडी को दिन सूर्य्य उदय के समय एक अनार की कली जो फूली हो उसे पेड़ पर से मुंह से तोड़ कर निगल जाय तो एक वर्ष पर्यंत आंख न दूखै और जो दो कली निगले तौ दो वर्ष तक न होगी॥

रतोंध का यत्न

जिस मनुष्य के रतोंद का रोग हो वो ये दवा करे कालीमिर्च· कत्थेला· पीपल· इन सब को बराबर लेमहीन पीस नेत्रों में आंजे

अथवा

छोटी हर्ड· सोंठ· कालीमिर्च इन सब को बराबर लेकर पीस छानकर गोली बनाकर पानी में घिसकर नेत्रों में आंजे॥

अथवा

ये दवा हकीम बूअली सीना की आजमाई हुई है सो लिखते है बकरी के कलेजे का कवाब बनावे उस का जो पानी टपके उस को नेत्रों में लगावे तो भारी भी रतोंध जाय॥

अथवा

प्या जका रस नेत्रों में आंजे॥
सिर्स के पत्तों का रस नेत्रों में लगावै॥

अथवा

समुद्र फल की गुठली बकरी के मूत्र में घिसकर लगावे· अथवा सेंधानोन की सलाई नेत्रों में फेरे॥

अथवा दही के तोड में थूक मिलाकर नेत्रों में आंजे॥
अथवा अदरक को पीस कर उसका रस निकाल कर नेत्रों में टपकावे॥
अथवा सोंठ को पानी में घिस कर नेत्रों में आंजे॥
अथवा काली मिर्च थूक में घिस कर लगावे॥
अथवा रोहू मछली का पिता नेत्र में लगावे॥
अथवा कमोदी के फूलों का रस नेत्रों में लगावे॥
अथवा सहजने की नरम नरम डालियों का मात माशे सहत में मिलाकर नेत्रों में टपकावे॥
अथवा सिरस के बीज चार तोले आठ माशे पीस कर चून में मिलाकर रोटी पकावे इसी तरह तीन दिन रोटी पका कर खाय॥
अथवा हर्ड और लाल मिर्च शहत में घिस कर आंजे॥
अथवा काली मिर्च रोहू मछली को पित्ते में भिजोकर सुखा लेजब सब पित्तों को मिर्च सोख लें तब उन मिर्चों को घिस कर नेत्रों में लगावे॥
अथवा गधे का रुधिर तुर्त का निकला हुआ नेत्रों में लगावे
अथवा मनुष्य के कान का मैल और बडी हर्ड का बक्कल बराबर पीस कर गोली बनावे पानी से घिस कर नेत्र में लगावे॥
अथवा सरकंडे को गांठ पर से तोड़ कर उसका खोखला जलावे जब चार अंगुल जलने रहे उसके दो टुकड़े करे वह लाल लाल तर जो उसमें कुछ कठी हो गई हो उसको नेत्रों में लगावे वह धा तेजी के कारण करके पीडा और जलन पैदा करेगी परंतु दोष को आंसुओं के संग बहा कर रोग को शांति करती है॥

अथवा

हुक्केकेनैचेकीकीट अर्थात् नेचेकेभीतर जो काली कीचड निकलतीहैउसकोनेत्रोंमेंआंजे॥

फसलुजहर अर्थात् दिनौं धीकी चिकित्सामें

दिनौंधीउसरोगकानामहैकि मनुष्यको दिनमेंतोकुछदीखेनहीं औररात्रिमेंदीखे इसरोगकाउपाययहहैकिलडकीकीमाकादूधसिरपरमलेऔरनाकमेंभीटपकावे औरठंडे पानीमेंगोतालगाकरनेत्रोंकोखोले॥

अथवा उन्नावकाशरबतपीवे उन्नावकेशरबतबनानेकी यहरीतिहै कि उन्नाव एकहिस्सेचार हिस्से पानीमें भिगोके औटावेजबचौथाईजलजावे तबछानले फिरउसमें दुगनीचूराडालकरचासनीबनाले॥

अथवा उडदकीदालखायाकरे कि इसकेखानेसे रुधिर गाढा होजाता है॥

पलकोंकेरोगोंका बयान

इसरोगमेंनेत्रोंकेपलकमोटेहोजातेहैं औरउनमें खुजली और खुष्कीभीहोतीहै और पलकोंके बालगिरजाते हैं इसकी चिकित्सायहहै किसरूनसकीफस्तखोले और मस्तककोपिछाडीपछनेलगानाउसकेपीछे औषधिकाम मेंलाना॥

दवा जो आकके दूधमें रुई भिगोकर सुखाले औरदीयेमें

मीठा तेल भर कर उस रुई की वत्ती बना कर उस तेल में दीपक जोर
का काजल पाड़े फिर उस काजल को नेत्रों में लगावे और बाज़ी कि
तावों में तेल के बदले घी लिखा है॥

अथवा धतूरे और भांगरे की पत्तियों का रस लेकर उसमें रुई भिजो
कर छाया में सुखा कर उसकी वत्ती बना कर मीठे तेल में जला कर
काजल पाड़ फिर इसे पानी से नेत्रों में लगावे॥

अथवा पुराने ढोल की खाल को कोयलों की आंच पर जला क
र पीसे फिर गाले की रुई में रख कर वत्ती बनावे और सरसों के
तेल में जला कर काजल पाड़े और नेत्रों में लगावे॥

अथवा आक की जड़ जला कर उसकी राख पानी में मिला कर
नेत्रों के आस पास पतला २ लेप करे तो नेत्रों का खुजली और
खुश्की और पलकों के फूलने को दूर करे है बाज़ी पुस्तकों में
लिखा है कि नीम के पत्तों का रस नेत्रों में लगावे तो भी यही
गुण करते हैं॥

दवा· जो परवालों और बाफनी गल जाने को और नेत्रों से आं
सूं बहने को और आंखों की खुजली और सुर्खी को गुण क
रे है अब्ब दो तोले चार माशे लोहे के बासन में कोयलों की
आंच पर पिघला कर थोड़ा २ उस पर बथुए के साग का रस ट
पकावे कि पीलो वा सफेद भस्म होजावे उसे महीन पीस कर
नेत्रों में आंजे॥

अथवा ये दवा पलकों के गिर पड़ने को और बाफनी गल जा
ने को गुण करे च कचूंदर की बीट आधी कच्ची आधी पक्की दो
नों को पीस कर सहत में मिला कर पतला २ लेप करे॥

अथवा

सफेदविसखपराकीजड छाया में सुखाकर पानी में घिस कर नेत्र में लगावे॥

अथवा

माखी का सिर जुदा करके सुखाकर पानी में पीस कर पतला लेप करै॥

अथवा

सीपजलाकर उसे पीस कर नेत्रों में लगावे॥

अथवा फटेरी के फल को पानी में औटाकर बफारा दे॥

अथवा कबूतर की बीठ को सहत में मिला कर पलक पर ले पलगावे॥

अथवा सांपकी कांचली जलाकर तिलके तेल में मिला कर पलक पर पतला लेप करे॥

जिस मनुष्य की बाफनी गल जाय और पलक गिर पडें और किनारे लाल पड जांय उस मनुष्य के ये दवा लगाना उचित है॥

बबूल की पती एक सेर लेकर पांच सेर पानी में औटावे जब चौथाई पानी रह जाय तब छानकर दोनों वक्त नित्य पलकों पर पतला लेप करै थोडे दिनों में बिलकुल आराम हो जायगा॥

अथवा गधे की लीद को सुखा कर उसका पाताल यंत्र की राह से तेल खेंचले और उस तेल को पलकों पर मसले—

अथवा कदू अर्थात् घीया को जलाकर उसकी राख सुर्मे की तरह नेत्रों में लगावै॥

अथवा पुराना कपड़ा लेयाकई तीनवेर हल्दी में रंगकर सुखा
कर फिर इसी प्रकार बिनौले के पूदे में तीनवार भिजोकर सु
खाले फिर इसकी वत्ती बनाकर सरसों के तेल में काजल पा
ड़कर उस काजल को नेत्रों में लगावे॥

अथवा

खपरिया · लीलाथोथा · कपूर । मिश्री इन सबको बराबर
ले कूट छान कर पानी में खरल करके गोलियां बनावे फिर
जब काम परै तब एक गोली पानी में घिसकर नेत्रों में लगावे

अथवा

कुदरू गोंद को काजल के समान पीसकर नेत्रों में लगाने से
नेत्रों की जोति को बढ़ावे और नेत्र के घाव और जमे हुए रुधि
र को और आंसू बहने को और नाखूनी गलजाने को और नेत्रों
की सफेदी और खुजली को गुण करे और धुंध को भी दूर
करता है और जो कुदरू गोंद का काजल बनाकर लगावें
तौभी यही गुण करता है इसके काजल बनाने की विधि
यह है कि कुदरू गोंद को दीये में धरके जलावै और वाके
ऊपर एक सरैया औंधी धरदे कि उसमें काजल पड़जाय त
ब उसको नेत्रों में आंजे ये दवा पलकों के झड़जाने को भी फाय
दा करती है॥

अथवा छुहारे की गुठली २ मासे बालछड़ ७ मासे इन दो
नों को पानी में महीन पीस नेत्रों में लगावै तो पलकों का झ
ड़ना बंद होय॥

मोतियाबिंदकीचिकित्सा॥

जिसमनुष्यकेनेत्रोंकेआगेमच्छरतथामक्खीकेसदृश उड़तेहुएमालूमपड़ेंदिनप्रतिदिनविशेषता होतीजायतोजानियेंकि इसमनुष्यकेमोतियाबिंद होगा और इससेपीछे पुतलीबदलजाय औरनेत्रोंकीजोतिजातीरहे॥

और बहुतसेहकीम इसप्रकारबयानकरतेहैंकि यहनजलाहैकि थोड़ाथोड़ायाएकहीबारनेत्रोंमेंउतरता है और अबन्नियानामजोपरदाहैउसकोछिद्रमेंठहररहता हैजोयहगाढ़ाहोतोदृष्टिबिलकुलजातीरहतीहै और जोपतलाहोगातोधुंधलादिषाईदेगा इसकोहकीमलोगमुनशिरकीफ कहतेहैंजोनजला पूराछागयाहोगातोनेत्रों मेंकुछभीदिषाईनदेगा और पुतलीबदलीहुईदिखाई देगी परंतुमोतियाबिंदसेपहिलेखयालातकारोगअवस्यहोगा॥

खयालातकावर्णन

खयालातउसरोगकोकहतेहैंकिनेत्रोंकेआगेभुनगेसे उड़तेमालूमहोतेहैंयेरोगतीनप्रकारकाहैएकतोमोतिया बिंदकेहोनेसेपहिलेहोताहैदूसरापेटकेबिगड़नेसेतीसरे दृष्टीकेतीव्रहोनेसे॥

मोतियाबिंदकेहोनेसेपहिलेंजोहोताहैउसकीपहिंचान यहहैकिभुनगेसेहरदमदिषाईदेंगे औरप्रतिदिनबढ़ तेजायगे औरवहधोकनेत्रमेंहोंगे उपायइसकामोतिया बिंदकेइलाजमेंलिखेंगे॥

औरजोयेरोगपेटकेबिगड़नेसेहोतोपेटकेखालीहोने
औरभरेहोनेपरअधिकादिखाईदेऔरजोनेत्रोंकेपरदों
औररतूबतोंकेबिगड़नेसेहोतोनेत्ररोगीनहोगयाहोउससेप
हिलेंकोईरोगहुआहोगाउपायइनदोनोंरोगोंकायहहैकि
भेजेऔरपेटकोमवादसेसाफकरेऔरइसकेपीछेनेत्रके
परदोंपररतूबतोंकामवादकारणकेअनुसारनिकालेऔर
जोदृष्टिकेतीव्रहोनेसेहोतोउसकाचिन्हयहहैकिदृष्टिठी
कहोगीऔरभेजेकीइन्द्रीसबतीव्रहोंगीयहकोईरोगन
हींहै वदनसेजोधुआंऔरहवामेंछोटीछोटीवस्तुउड़ती
हुईदिखलाईदेतीहैं

मोतियाबिंदकायत्न

हकीमोंकोचाहियेकिइसरोगमेंप्रथमकनपटीपरगुल
लगावेंजिससेवोरगजलजायऔरगुललगानेकेपीछे
तीनदिनतकउसपरहरामग़ज़मलेंफिररोटीकोतिली
केतेलमेंभिगोकरउसपररक्खेंऔरगुललगानेसेजितना
पानीवहेउतनाहीअच्छाहैऔरभारीवस्तुकेखानेसेऔर
मैथुनकरनेसेबचेंऔरपानीउतरआनेकेपीछेजबएक
बरसव्यतीतहोजायतबदेखेकिआंखमलनेसेपानीफै
लकरफटजाताहैयानहींजोफटजायतौफस्तखोलेऔ
रजुलाबदेपीछेदस्तकारीकरे॥

दस्तकारीउसकोकहतेहैंकिजोसलाईआदिकोआंखोंमें
फेरकरजालानिकालेऔरनेत्रोंमेंचीराआदिकालगानाद
स्तकारीकहतेहैंसोयेदस्तकारीकाइल्मऔरहमकीतर-

पीस करलगावे॥

अथवा कोआका पिना आधे सहद में मिलाकर खूब रगडे फिर नेत्रों में लगावे॥

अथवा

निर्मली·हींग·फिटकरी·सफेदा·खपरिया·नीलाथोथा चौदह २ माशे इनसबको महीन पीस कर दही में घोटे कि आठ सेर दही उस्में समाजाय पीछे उसकी गोली बनावे और समय के ऊपर गोली को स्त्री के दूधमे घिस कर लगावे॥

और जब जाने कि इस मनुष्य के मोतियाविंद होने वाले हैं तब पहिले ही से यह दवा करै तो मोतिया विंद को नहीं होने देता हई की मींगी को निर्मल पानी में पीस तीस पहर घोटै और गोलियां बना कर नित्य प्रति नेत्रों में आंजा करै॥

अथवा

दो नग कागजी नीबू का रस लेकर चार तोले गऊ के मक्खन में खूब मसल मसल के माखन में थोडा पानी डाल कर दो दिन राति धरदें फिर मकखन को पानी से धोकर वाही प्रकार दो नीबू के रस में घोट कर पानी डाल कर के चीनी तथा सीसी में रक्खे और खस २ के दो दानों की बराबर नेत्रों में लगाया करै तो मोतिया विंद जाय॥ ऊपर लिखी रीति से माखन को पचीस दिन करै॥

अथवा कालेसांपकेमांसका घृत और शंखकीनाभि नि र्मली इन्हें महीन पीसनेत्रोंमें अंजन करेतो मोतिया विं दकारोगजाय॥

अथवामुर्गीके अंडेका छिलका मैनशिल कांच शंख कीनाभि चंदन सेंधानोन येसववरावरले इने महीन पीस अंजन करैतो मोतिया विंद फूला आदि सब रोगजांय॥

अथवा कालीमिर्च २मासे पीपल दोमासे समुद्र फेन दोमासे सेंधानोन दोमासे सुरमा ३६मासे इन्हें मही न पीस चित्रा नक्षत्र के दिन इस कासेवन अर्थात् अंजन करैतो फूला खाज काचसे आदिले सब नेत्र रोगजांय॥

अथवा खापरेको महीन पीस उस को जलमें डवोय दे पीछे उसका पानी लेताजाय उसे जुदा राखे वारवा र का पानीले और नीचे रहा जो खापरे का चूर्ण उसेले नहिं और उस खापरे के पानी को जुदे पात्र में सुखा य दे जव उसकी पापडी होजाय पीछेउम पापडी में त्रिफले के रसकी तीन पुट दे पीछे इस पापडी का दशमा भाग कपूरमिलावे फिर इसको महीन पीस नेत्रों में अंजन करै तो नेत्रों के समस्त प्रकार के रोग जाय॥

अथवा सुरमे को अग्नि में गरम कर त्रिफले के रस में सातवार वुझावे पीछे स्त्री के दूध में इसी प्रकार सा

नवार वुझावे पीछे गौके मूत्र में सात वार वुझावे इसी प्रकार सुरमे को तपाय तपाय स्त्री के दूध में पांच वार वुझावै फिर इस को महीन पीस कर नेत्रों में अंजन करै तो सर्व रोग जांय॥

अथवा सीसे को अग्नि गलाय गलाय त्रिफले के रस में १०० वार वुझावे पीछें इसी तरहं जलभांगरे के रस में ५० वार वुझावे पीछें इसी तरहं सोंठि के रसमें ५० वार वुझावे पीछें इसी तरह घृत में ५० वार वुझावे पीछें गोमूत्र में २५ वार वुझावे फिर सहत में २५वार वुझावे फिर बकरी के दूध में २५वार वुझावे फिर इस सीसे की सलाई बनावै फिर इस सलाई को जो मनुष्य नेत्रो में फेरे तो नेत्रों के सब रोग जाय॥

अब थोडा सा बयान इस मोतिया विंद का और भी करते हैं नेत्र के तिल के ऊपर दही या मठे के समान बूंद आजाय और वह बूंद नेत्र के तिल को ढकले फिर उस मनुष्य को कुछ भी दीखै नहीं और उन नेत्रों में पीडा दिक कुछ भी नही होय तव उस नेत्र का सलाई आदि से जल को उतारे परंतु जो मोतिया विंद का जाला कच्चा होय तो शलाई से न उतारे जब जाला पक जाय तव शलाई नेत्रों में गेरनी उचित है और हकीम को तथा सतिये को चाहिये कि इतने मनुष्यों का जाला न उतारे सो लिखते हैं पीनस के रोग वाले का और जिस के कान और नेत्रों मे मूल चलता होय और श्रावण को

किक और वैद्य इन तीन महीनों में जाला उतारिये नहीं और साधारण काल होय तब जुलाब दे शरीर को शुद्ध करै भोजन करे अच्छे निर्मल स्थान में रोगी को बैठावे जहां पवना दिक नहीं होय मध्यान्ह के पहिले नेत्र के रोग को दूर करने वाले प्रवीण वैद्य तथा हकीम के निकट नेत्र का जाला शलाई से लिवावे वैद्य है सो रोगी को पालथी मार कर बैठावे और रोगी के पीछे चतुर मनुष्य को बैठावे वह मनुष्य दोनों हाथों से रोगी को पकड़े और हलने नहीं दे इस तरह उस को बैठावे पीछे उस रोगी के नेत्र में हकीम सलाई डाले चतुरता से अत्यन्त उसको आंख में शलाई को फेरे सलाई से नेत्र के प्रान्त भाग में जाले को फोड़ सब नेत्र के जाले को दूर कर उस जाले में से नेत्र को तिल के ऊपर को वह विकार की बूंद ढल पड़े तब उस रोगी को सब वस्तु ठीक ठीक दिखाई दें शलाई के फेरने से पहिलें नेत्र को मुख की भाप से फूंक दें प्रस्वेद युक्त करलें और हकीम अपने अंगूठे से उस रोगी के नेत्र को मसल कर कोमल करले पीछे शलाई से जाले फोड़े और हकीम को भी चाहिये कि जाला उतारती वक्त अपने हाथ को हलने न दे इस विधि से नेत्र का जाला उतार पीछे रोगी को अच्छी बातों से प्रसन्न कर सुलाय दे पीछे उस रोगी की आंख के ऊपर घृत का फोहा बांधे और उस रोगी को सूधा सुलावे ऐसे स्थान में जहां पवन चकाचौंध आवे नहीं और रोगी का माथा आदि शरीर हिलने न दे और रोगी को

छींकखांसी डकार थूकना बहुत पानी दांतन करना स्नान करना खेद आदि इतने कर्म न करने दे और उस रोगी को अधो मुख सोने नहीं दे अत्यन्त हलका भोजन करावै॥

और घृतादिक गरिष्ठ वस्तु न खाने दे इस विधि से ७ दिन करे पीछे थोडा सा घृत डाल पतला हलका अन्न का हरीरा खवावै इसी तरह २ मंडल तक रक्खे कुछ कुपथ्य नहीं करने दे पवन तेज और महीन वस्तु आदि को देखे नहीं और जिससे नेत्रों में सीतलता होइ ऐसी दूब आदि वस्तु देखने दे तौ मोतिया बिंद आदि ले नेत्र के सब रोग जाय पीछे इसको सीतल चस्मा लगावै तौ यह रोग फिर कभी नहीं होय॥

यमैंने थोडा सा सलाई का प्रकार लिखा है

अथ नेत्र और पलकों की खुजली का यत्न

जब मनुष्य की आंखों में या पलकों में खुजली अत्यंत चलै तौ उस मनुष्य के रोग के आदि में शरू नस की फस्त खोले बाद उसके खुजली दूर करने वाली औषधि करनी चाहिये॥

माजूफल· जवाहड· इन दोनों को पीस कर नेत्र पर लेप करै तौ खुजली जाय॥

अथवा मनुष्य के मस्तक के बाल जलाकर महीन पीस कर नेत्रो में लगावे॥

अथवा अंडे का छिलका जलाकर महीन पीस लगावे॥

नीमकातेल

बहुधा करिके नेत्रों के खाज आदि रोगों को गुण करता है नीम के पतों को माटी के बरतन में धरकर कपरोटी कर इतनी देर आंच पर रक्खे कि जलकर भस्म हो जाय फिर उस भस्म को नीवू के अर्क में खरल करके नेत्रों में लगावे तो खुजली रोगजाय॥

अथवा सीसे का मैल नेत्रों में लगावे और सीसे का मैल उस कलास से प्रयोजन है कि सीसे के टूक को सूती की तथा वांस की चेंगली पर गडने से दृष्टी में आवे उस कलोस को अंगुली में ले कर नेत्रों में लगावे॥

नेत्रोंकीजोतघटजानेकी चिकित्सा

पूर्वरूप इस के विशेष हैं बहुधा नेत्रों की जोति वृद्धावस्था में घटजाती है मस्तक के क्षीण और निर्बल पड जाने के कारण करिके इसमें आराम नहीं होता परंतु चिकित्सा करना उचित है क्यों कि यत्न जाय इसकी चिकित्सा मस्तक की सफाई और बल प्राप्ति करना है॥

और जो कारण इस का रुधिर की अधिकता से होतो फस्त खोलनी चाहिये और तूतिये को कच्चे और खट्टे अंगूर के रस में भिजो कर आंख में लगावे॥

और जो बलगम के कारण से हो तो उसके पकाने के पीछे बलगम का जुलाब दें और बासलीकून नेत्रों में लगावे॥

बासलीकूनबनानेकीविधि

चांदी का मैल २॥ मासे समंदर फेन २॥ मासे शफेदा कलई नमक सुरको काली मिर्च नौसादर पीपल प्रत्येक ५॥ मा-जला हुआ तांबा ३॥ मासे लोंग छडीला अर्थात् छार छवी ला प्रत्येक १॥ मासे कपूर नोरती तेजपात जुन्द बिदस्तर-बालछड सुरमा प्रत्येक ३॥ मासे इन सब को पीस कर सुरमा बनाले॥

और इसका कोई और कारण होतो उपाय उसका-करे अथवा कच्ची पक्की सलगम खाना नेत्रों की जोति बढाती है॥

और बालों में कंघी करना इह्वो के नेत्र की जोति बढजा नको गुण करता है नित्य कांघी को दिन में पांच चार द फे मस्तक में फेरना नेत्रों की गरमी को हरती है॥

और शेख रईश अपनी किताब में यह वर्णन करत्ता है कि निर्मल जलमें फेरना और उस्मे नेत्रों को खोले रहना भी गुण करता है और थोडी सी उलटी करना औ र पांव दबाना और मसलवाना भी कम जोत को गुण करता है और विशेष रुदन करना और गले के पिछा री पछने लगाना और अत्यन्त भूखा रहना और अति मैथुन करना और खया मसर और जोजो अजीर्ण कर ने वाली वस्तु हैं यहसब औगुण करती है॥

अथवा गुल मुंडी का शरबत पीवे तो नेत्रों की जोति घटजाने को और मस्तक की नरी को गुण करता है और ऊपरको गरमी नहीं चढने देता है॥

गुलमुंडी का शरबत की विधि:

मुंडी के फूल पाव भर ॥ तीन पाव बूरा सफेद गुलमुंडी को रात्रि को डेढ़ सेर पानी में रात्रि को भिजो कर प्रातःकाल औ टावै जब तीसरा भाग रहे तब छान कर बूरा मिला कर चास नी करै फिर इसमें से चार तोले नित्य पीवै और मुंडी का अर्क भी नेत्रों को बल प्राप्ति करै है॥

अथवा

सात मासे सौंफ को कूट छान कर उसमें सात मासे सफे द बूरा मिला कर नित्य रात्रि को खाकर सो रहै इसी-प्रकार नित्य खाकर सो रहे और सौंफ का अतर सौं फ के अर्क में से निकाल कर नेत्रों में लगावे तो नेत्र की कम जोति को गुण करता है॥

चमेली की गोली

चमेली के फूलों की डंडी तोड़ कर बराबर की मिश्री मिला कर खरल करके नेत्र में लगावे नेत्र की कम-जोति को गुण करती है॥

अथवा

खपरिया छै मासे टूक टूक करिके दो तीन नींबू के रस में भिजोवे और माटी के बासन में धर कर कपरोटी करि के आरने कंडों में धर कर आंच लगावे फिर नि काल कर सीतल कर महीन पीस कर नेत्रों में लगावे तो कम जोती जाय॥

अथवा रीठा की गुठली की मींगी नींबू के रस में घोटै

और गोली बनाले [illegible] नित्य प्रातःकाल थूक में घिस कें नेत्रों में आंजे॥

अथवा जवाहड़ें और मिश्री दोनों को बराबर ले कर पीस कर गोली बनावे फिर इस गोली को घिस कर नेत्रों में आंजे तो नेत्रों की जोति को और लाली को गुण करै

सलाई

सीसे को आंच में गला कर त्रिफला के पानी में बुझावे फिर मेह के पानी में बुझावे फिर सहत में बुझाकर सलाई बनाकर नित्य प्रातःकाल नेत्रों में फेरै तो नेत्रों के सब प्रकार के नेत्र रोग जाय और नेत्रों की जोति को बढावे यह दवा बहुधा करि के नेत्रों के रोग मात्र को गुण करती है और जो इसे हमेशा करता रहे तो अत्यंत चैन रहै जिस समय सोते से उठे उस समय अपने थूक को नेत्रों में आंजे तो उस मनुष्य के नेत्रों में कभी रोग नहीं होय॥

अथवा हींगोटा की मींगी पानी में पीस कर नेत्रों में लगावे तो जोति बढे॥

अथवा निर्मली पानी में घिस कर नेत्रों में लगावे तो जोति बढे॥

अथवा सिर्स के पत्तों के रस में गजी भिगो कर सुखावे याही प्रकार तीन चार करि के फिर उस कपडे की बत्ती बनाकर चमेली के तेल में काजल पाड़ राखे इस काजल को नेत्रों में लगाया करै तो जोति बढे॥

अथवा प्याज के रस में शहद मिला कर नेत्रों में लगावे तो नेत्रों की जोति घट जाने को और नजले आदि नेत्र रोगों को गुण करै॥

सुरमा॥ जो नेत्रों की जोति की कमी को गुण करै मिरच २८ नग और पीपल ६० नग और चमेली की कली ५० नग तिल्ठ के फूल ८० नग इन सब को महीन पीस खरल करके सुरमा बनाकर लगावे॥

अथवा काली मिरच १ माशे बड़ी हरड़ का बक्कल-दो माशे हलदी छिली हुई तीन माशे इन सब को गुलाब जल में तथा पानी में घोट कर सुरमा बनाकर-आंखों में लगावे तो जोति बढे॥

अथवा अखरोट दो नग हड की गुठली तीन नग इन दोनों को जला कर पीसे और चार नग काली मिर्च मिला कर खरल करि के सुरमा बना कर नेत्रों में लगावे तो नेत्रों की जोति को बढावे॥

काजल॰ जो नेत्रों की जोति को बलवान करै नीम के फूलों को छाया में सुखा कर उन की बराबर कलमी-सोरा लेकर सुरमा सा करि के आंखों में लगावे तो फूली और नेत्रों की सुर्खी को भी गुण करै

अथवा धुनी हुई रुई आक के दूध में भिगो कर छाया में सुखावे फिर इस की बाती बना कर सरसों के तेल में जलाकर धीरज ताई से काजल पाडकर नीम के सोटे से जिस में तांबे का पैसा जड़ा हो फूल कांसी के बरतन में

गुलाव जल के साथ घोटे फिर सलाई से नेत्रों में लगावे तो नेत्रों की जोति बढे॥

मांडा-फूली-नाखूना-जाला इनका यत्न॥

जानना चाहिये कि जाला और फूली ये दोनो एक परदा हैं जो नेत्रों में मवाद भरजाने से उत्पन्न होते हैं और नाखूना नेत्र के पडे कोए की तर्फ उत्पन्न होता है और जाला सफेदी है जो नेत्र की स्याही पर उत्पन्न होती है और वाजे हकीमों ने इस तरह से वयान किया है कि करनिया नाम जो परदा है उसपर कोई वस्तु उत्पन्न हुई होगी और यह नेत्र के तिल पर होकर फिर नेत्र की सवरी स्याही पर फैल जाता है इस का उपाय यह है कि समंदर फेन को पानी में घिस कर आंख में लगावे तो थोडे दिनों के वाद अच्छा हो जायगा और जो मवाद पुष्ट होतो भेजे को मवाद से साफ करे और उसजाले को नाहर की तरह जीभ से चाटना अति गुण दायक होता है॥

और वाजे हकीम कहते हैं कि इस रोग में शरेरू नस की तथा ललाट देश की नस की फस्त खोले पीछें नेत्रों की जोति वढाने वाली दवा लगावे॥

गोली- जो नेत्र की पीडा और नाखूना और वहुत आंसुओं का वहना इतने रोगों को गुण करती है और हर के फलों का रस १४ माशे ले कपडे में छान नीम के घोटे से जिसपैसे

गढा हो उस से घोटे और उस्में दस कागजी नीवू का रस मि लाले फिर उसे खूब खरल करे फिर जब गाढा हो जाय तब उस की गोली बनाके नेत्रों में लगावे॥

गोली

ये गोली मांडा और फूली तथा जाले को गुण करे सिरस के बीजों की मींगी खिरनी के बीजों की मींगी इन दो नों को सिरस के पत्तों के रस में मिला कर खरल करै फि र इस की गोली बनाकर स्त्री के दूध में घिस कर लगावे॥

गोली

जो फूली और जाले को गुण करै जंगी हर्ड़· पलासपापड़ा सेंधानोन· लाल चंदन· इन सब को कूट छान कर गोली बनाकर पानी में घिस कर नेत्रों में लगावे॥

गोली

जो फूली और बाफ निगल जाने और मोतिया विंद को गुण करै॥ समंदर फल की मींगी रीठा की मींगी खिर नी के बीजों की मींगी और काली हर्ड़ की गुठली की मींगी इन सब को बराबर ले पीस छान नीवू के रस में घोट गोली बना नेत्रों में लगावै॥

गोली

लाल चंदन एक तोले भुनी फिटकरी इन दोनों को बरा बर ले पीस छान ग्वार के पाठे में खरल कर गोली बनावे और समय पर उस गोली को पानी में घिस कर नेत्रों में लगावै॥

गोली

जो नाखूने और सफेदी नजले के पानी उतरने आदि को गुण करे॥ साबन पांच तोले दश माशे नीला थोथा ३॥ माशे राल ४॥ माशे साबन के छुरी से टूकटूक करिके लोहे के बासन में रख कर आंच पर गलावे उसके पीछे नीला थोथा पीस कर मिलावे फिर राल को महीन पीस कर साबन में मिलावे और उस बासन को आंच पैही रहने दे फिर उसको लोहे के दस्ते से घोटे जब काला होजाय तब उतार ले फिर इसमें से एक खसखस के दाने की बराबर सीपी में साड कर नेत्र में लगावे फिर इसी प्रकार इसको तीन दिन बीच में देकर नेत्रों में लगावे

अथवा

हलदी· दालचीनी· आंबा हलदी· येसब चौदह२ माशे ले नीम के पत्ते पौने दो तोले कूट छान कर छः महीने-के बछडे के मूत में दो पहर साड कर गोली बनाले और छाया में सुखाले फिर गुलाबजल में घिस कर लगावे॥

दवा

हलदी लंबी चौडी एक गांठ ले उसमें छेद करके गेहूं की दो कच्ची रोटियों में बीच में उस गांठ को रख कर तवे के ऊपर आंच पर पकावे जब रोटी जल जाय तब हलदी को बाहर निकाल ले फिर इस हलदी को फिटकरी के संग घिस कर नेत्रों में लगावे

गोली॥ बारहसींगे के सींग को प्रथम पानी में पीसे फिर नीबू

केरसमेंखूबपीसकरकालीमिर्चके प्रमाणगोलीयनावे फिराघिसकरनेत्रोंमेंलगावे॥

सुरमा

जोजालेकोदूरकरेऔरमोतियाबिंदकोखोवे मिश्रीदोभा-रा सेंधानोनएकभागउनदोनोकोमिलाकर पीसेऔरसु-रमासमानकरकेनेत्रोंमेंलगावे

अथवा

कबूतर तथा मुरगीकी वीठकोनीबूकेरसमेंखरलकरिके तांबेकेबासनमेंरक्खेफिरनेत्रोंपरलगावै॥

अथवा

बाबीलकी वीठशहदमेंमिलाकरनेत्रोंमेंलगावेइस दवाको तिब्ब फरेदी वालेनेउतमलिखीहैइससेजालाजातो

अथवा

बारहसींगेकासींगदूधमेंपीसकरनेत्रोंमेंलगाना॥

अथवा सेंधेनोनकीसलाईबनाकरदिनमेंकोईबारने-त्रोंमेंफेरेतोजालाजाय॥

अथवा खिड़िया की वीठ पीस कर नेत्रों में लगावे तोना-खूना दूर होय॥

अथवा कटेरीकीजड़कोनीबूकेरसमेंघिस करनेत्रोंमें लगावैतोधुंधजाय॥

अथवा अरहरकीजड़कोघिसकरनेत्रोंमेंलगावे

अथवा बड़कादूधनेत्रोंमेंआंजे

अथवा बैंगनकीजड़पानीमेंघिसनेत्रोंमेंलगावेजालाजाय॥

अथवा कड़वीतोरई केबीजों कीमींगी मीठेतेलमें घिसकर लगावेतो फूलीजाय॥

अथवा समुद्रफेन पीसकर लगावे और बाजे समुद्रफेनको तेलमें लगाना लिखतेहैं॥

अथवा पुत्रवती स्त्रीकेदूधमें मिश्री पीसकर लगावेतो बच्चोंकी फूलीजाय॥

अथवा सोंठ फिटकरी सेंधानोन इनतीनों को बराबर ले कूटछानकर नित्यप्रति नेत्रोंमें लगावेतो फूलीजाय औ जाला मिटे।

अथवा गधीकेखुरको आगमेंजलाकर महीन पीसकर लगावेतो जालाजाय॥

अथवा चमेली के फूलोंकी गोलीजो जोतिघटजानेकेइलाजमें लिखआयेहैं वहजालेकोभी दूरकरती है।

अथवा लाल प्याज का रस नैनों में लगावे तो नाखूनादूरहोय॥

अथवा तेजपातमहीनपीस नेत्रोंमेंलगावेतोनेत्रों काजालाजाय॥

अथवा अत्यंतकलमीसोरामहीनपीसकरउस्में थोड़ीसी हलदी मिलावेकि जिससेरंगतआजावे फिर उसकोनेत्रोंमेंलगावेतोनेत्रोंकीजोति बढे और नाखूना और जालेआदि बहुत रोगोंको गुणकरै॥

अथवा बिसखपरेकीजड़ और सफेदा ये दोनों पीसकर लगावेतो नाखूनाजाय॥

अथवा रेंडीएकनग मिश्री ३॥ मासे चाकसु शुद्ध दश मासे इनसबको महीन पीस कर आखोंमें भरे तो फूली जाय

अथवा

जंगाल · बबूरका गोंद · सफेदा काशकारी इनसबको बराबर ले महीन पीस कर पानी में लंबी गोली बनाकर पानी में घोल कर लगावे तो फूली जाय॥

अथवा

आमले दो तोले चार माशे जो कुट करिके दो घंटे पानी में औटावे और फिर छान कर नित्य तीन वेर नेत्रों में टपकावे तो जाला दूर होय॥

सुर्मा

जो फूली · जाले · नाखूने · आदिको गुणकरे हर्ड़ी चूरी १४ माशे महीन पीस कर नींबू के रस में खूब घोट सुखाय नेत्रों में लगाया करे॥

अथवा

नौसादर · फिटकरी · इनदोनोंको पीसमहीन कर नेत्रों में लगावे तो जाला · फूली · रतोंधी जाय॥

अथवा प्याज आध सेर ले उसे कुट कर उसका रस निकाल उसमें कपड़ा भिगो वे फिर सुखावे और धूल मिट्टी का बचाव रक्खे फिर उसकी बत्ती बनाकर पाव सेर मीठे तेल में जलाकर उस का काजल पाड रक्खे फिर इसको नेत्रों में लगावे तो जाला जाय॥

दवा ये मिश्रानी वैद्यों की बनाई हुई जो इस पंद्रह दिन काम

मेंलावेतो फूलीदूरहोवे जायफलकावक्कल नीमकीछाल गिलोय कडवाचिरायता· लालचंदन पित्तपापडा स्वस गुलमुंडी येसवदवायएकएकतोलाले फिरइनको पानीमें ओटाकरछानले फिरइसमें चौदहमाशे निर्मलशहद मिलाकरपीवे॥

अथवा लालचंदन हाउबेर· नीमकीछाल· आमाहलदी· त्रिफला· अडूसाये सबदोतोलेचारचारमाशे कुटकी ३॥तोले अमलतासका गूदा चारतोले आठमाशे कडवा चिरायता पौनदोतोला सोंठि १४माशे गीलोय १४माशे नागरमोथा चौदहमाशे सबको कूटकर नित्य दोतोले चारमाशे लेकर तीनपाव पानीमें ओटावे जब आधपाव रहजाय तब छानकर दोतोलेचार माशे निर्मल शहद मिलाकर पीवे इसी प्रकार चौदहदिन सेवनकरे तो फूलीजाय

मुंडीपाक

येपाक नेत्रके रोगोंको अतिगुणदायक है त्रिफला कावक्कल १तोले जवाहड १तोले कावलीहड का वक्कल १तोले पित्तपापडा १तोले मुलेठी १तोले और सबकी बराबर गुलमुंडीले और हड आदिको घीमें भूनले फिर सबको कूटपीसतिगुने कंदकी चासनीकर उसमें सबदवा मिलाकर पाकबनाले फिर इसमें से दोतोले नित्य खाय और और अत्यंत गुणकारी है॥

अथवा सोंठि· हडकीछाल· कुलत्थ· खापरा· फिटकडी· माजूफल· येसब औषधि बराबरले और भीमसेनी

कपूर कस्तूरी अनीधमोती ये एक ओषधि की तोल से आधी लेपीछे इनसबकोखरलमें महीन पीसनीबूकेरसमें पांच दिनखरलकर पीछे इसकीगोली बना कर गोलीको पानी में घिस अंजन करे तौ तिमिरजाय और इसगोलीकोस्त्रीके दूधमें घिस अंजनकरेतौ फूलापटलजाय और सहतमें घि स अंजनकरेतौ नेत्रसेजलगिरनावंदहोय औरगोमूत्र में घिसअंजनकरेतौ रतौंधीजाय और केलेकेरसमें घि स अंजनकरेतौनेत्रकेमासकी वृद्धीजाय॥

अथवा

नीलाथोथा ४टंक फूली फिटकरी ४टंक भिगोयी पीपल के बीज ४टंक मिश्री ४मासे इनसबकोमहीनपीसका जलसमान करनेत्रोंमें अंजन करेतौ फूलाढलका जाय

अथवा

शंखकीनाभि बहेडेकीमींगी हडकीछाल मैनसिल पीपल मिरच कूठ बच येसब ओषधि बराबरले म हीन पीसबकरीके दूधमें खरल करगोली बनावे फिर इस गोलीको घिस अंजन करेतौ तिमिर नेत्रकीमासवृद्धी पटल कांच रतौंधी फूला इतना रोग जाय॥

अथवा हलदी नीमकेपत्ते पीपल मिरच बायविडंग नागर मोथा हडकीछाल ये सब बराबरले इने महीनपीसबकरी के मूत्रमें तीनदिनखरलकरे फिर इसकी गोलीबना छायामें सुखा गोमूत्रमें घिस अंजन करेतौ तिमिरकोदूरकरै और पा नीमें घिस अंजन करेतौ कांच कोदूर करै और सहतमें घिस

अंजन करैतौ पटलजाय और स्त्री के दूधमें घिसकर अंजन करै तौ फूला जाय॥

अथवा हर्डकी छाल १भाग बहेडे की छाल दोभाग आमले ४भाग सितावर दो टके भर मुलेठी दोटके भर तज दो टंक में धानीन १टंक इनसबकी बराबर मिश्री ले फिर इनसबको एकत्र करि महीन पीस दो टंक सहत और घृतके साथ ४९ दिन खाय तौ तिमिर पटल काच रतोंधी फूला नेत्रों से जल बहना सबल वाय आदि रोगजाय॥

अथवा त्रिफला का रस एक सेर जलभांगरे का रस एक सेर अडूसे का रस एक सेर सितावर का रस एक सेर बकरी का दूध एक सेर गिलोय का रस एक सेर आमले का रस एक सेर कमलगट्टा · मुलेठी · त्रिफला · पीपल · मुनक्कादाख · मिश्री · कटेली इनसबका रस आधसेर ले इनसबमें दो सेर गौका घृत डालकर मधुरी आंचसे पकावे जब सबरे रस जलजांय और घृतमात्र आय रहै तब इस घृतको किसीअ च्छे बासनमें धर राखे फिर इस घृतमें से दो टके भर नित्य खाय तौ नेत्र का तिमिर · काच · फूला · सबल वायु आदि सब रोग नेत्रों के जाय यह नुसखा तिब्ब अकबरी वाले ने बहुत सही करके लिखा है और लिखता है कि मैंने इस दवा को कई दफे अजमाया है॥

अथ बच्चों के नेत्र दुखने आमें उनका यत्न

इनका निदान तौ वही है जो पहिले हम रम्द रोग का कह आये हैं

जब बच्चों की आंख दूखने आवें तो तीन दिन तक कुछ दवा न लगावें बाद उसके ये दवा करे॥

दवा

फिटकरी को पानी में पीस उस्में रुई भिजोकर फाया बनावे और उस फाये को करछी या बेली में घी गरम करके उस्में पकावै जब उस फाये का चटकना बंद होजाय तब ठंढा करके रक्खे और पोतनी माटी को पानी में भिगोकर उस्की टिकिया बनावे प्रथम उस टिकिया को फाये से चार घड़ी पहले बना कर किसी पानी भरे माटी के बरतन के चिपकादे जब उस्में तरी पहुंच जावे तब उतारले प्रथम उस फिटकरी के फाये को नेत्र पर रक्खे बाद उस्के उस माटी की टिकिया को फाये पर रख ऊपर से कपड़े की पट्टी बांधे इसी प्रकार तीन चार दिन करने से बच्चों का रम्द रोग जाय

अथवा

गेरू को पानी में घिसे और उस्में थोड़ी फिटकड़ी भी डार ले फिर इस गेरू में रुई को भिगो कर फाये बनावे और उन फायों को ऊपर लिखी रीति के अनुसार नेत्रों पर रखे और ऊपर से वही टिकिया माटी की धरे जो ऊपर की दवा में वर्णन कर आये हैं फिर कपड़े की पट्टी बांधदे इसी तरह तीन-चार दिन करे तो नेत्र अच्छे होंय॥

अथवा

दूध की मलाई को रुई के फाये पर रख नेत्रों पर बांधे और ऊपर से वही माटी की टिकिया बांधे तो नेत्र अच्छे होंय॥

दवा

रसोत में थोडी फिट करी डाल पानी में घिस नेत्रों के ऊपर पतला लेप करे तो फायदा करे॥

दवा

वबूल की कोमल पतियां लाकर उन्हे महीन पीस कर उस की टिकिया वनाकर माटी के वासन के जो पानी से भरा हो उस्के चिपका दे वाद दो घंटे के उस टिकिया को दूषती आंख परबांधे तो सव प्रकार का रन्द जाय॥

जानना चाहिये कि हमने जो फायों के ऊपर माटी की टिकिया बांधना लिखा है उसका कारण यह है कि जव वच्चों की आंख दुखने आती हैं तो आंखे फूलजाती हैं तो इन टिकियों के वांधने से आंखे फूलने नहीं पाती॥

और जव वच्चों की आंख चिपक जाय तो उस्का उपाय यह है कि सवेरे के समय हथेली पर थोडा सा तेल और पानी रख कर दूसरी हथेली से खूव रगडे जव यह गाढा हो जाय तव उसे नेत्रों के मले फिर नेत्रों को कपडे से पोंछ दे परंतु पानी से न धोवे क्योंकि दूषती आंख में पानी लगाना हानि करता है॥

दवा

ये दवा वालक और जवान सवको फायदा करती है और शाह हजरी का अजमाया हुआ नुसखा है रसोत और वडी हर्ड इन दोनों औषधियों को पानी में घिस कर नेत्रों पर लेप करें तो वात पित कफ इन तीनों प्रकार के दोषों

की आंख दूषनी को फायदा करै ॥

दवा

हड की छाल सेंधानोन गेरू रसोत ये सब बराबर ले फिर इन्हे जल से महीन पीस नेत्रों के ऊपर लेप करे ये दवा बालक और जवान सब को मुफीद है ॥

अथवा

नीबू के रस को लोहे के पात्र में डाले पीछे उस को लोहे के घोटे से घोट कर गाढा कर नेत्रों पर लेप करै तो सब प्रकार के नेत्र दूषते अच्छे होयं ॥

और ये लेप कई दफे अजमाया है और बालअवस्था-से लेकर सब अवस्था वालों को फायदा करता है ॥

लेप

अफीम एक माशे फूली फिटकरी एक माशे लोध एक माशे इन तीनों को नीबू के रस में पीस लोहे के पात्र में थोडा गरम करे पीछे इस का नेत्रों के ऊपर लेप करे तो-नेत्रों का सब प्रकार से दूषना बंद होय ॥

अथवा

पठानी लोध एक माशे फूली फिटकरी एक माशे रसोत एक माशे मुलेठी एक माशे इन्हे महीन पीस ग्वारपाठे के रस में अथवा पोस्त के पानी में एक माशे भर की पोटली करै फेर इस पोटली को नेत्र पर वार वार फेरे ।

अथवा

और जो दूषते हुए नेत्रों में वायु भर जाय और नेत्रों में शूल

चले तो उसके वास्तें ये दवा लगावे पठानी लोध को मही
न पीस कपड़े में छान कर घृत में भूने पीछें उस का गरम
पानी से सेंक करे तो नेत्र का शूल मिटे॥

अथवा

खाने का सूखा चूना महीन पीस कर घृत में मिला कर
दोनों कन पटियों पर लेप करे तो शूल बंद होय॥

अथवा

जिस मनुष्य का सौदा अर्थात् वादी से नेत्र दूषने आय
हो उस को यह दवा है नीम के पतों का रस पानी डाल
काढे फिर उस्मे लोध को पीस गरम करे पीछें उस का-
आंखों पर लेप करे तो नेत्र अच्छे होय॥

दवा

जो रक्त पित और वायु से आंख दूषे तो ये दवा करे कि
स्त्री के दूध की आठ बूंद नेत्र में नित्य प्रति डाले तो ग
रमी सरदी सब प्रकार की नेत्र पीड़ा जाय॥

अथवा

जो वायु से नेत्र में शूल चले और दवा करने से आराम
न होय तो उसके ललाट की नस की रुधिर कढावे अ
थवा भौं के ऊपर दाग देतो शूल बंद होय॥

अथवा

सहंजने के पतों की पींडी नेत्रों के ऊपर बांधे तो कफसे
उत्पन्न नेत्र शूल बंद होय॥

अथवा

नीमकी हरी हरी पतियों की पींडी बनाकर नेत्रों पर बांधे तो कफजनित शूलबंद होय॥

और जो गरमी से नेत्र में शूल चले सो ये दवा करे आमलों को पानी में पीस उसकी पींडी अर्थात् टिकिया बनाकर नेत्रों पर बांधे तो गरमी का शूल जाय॥

अथवा

त्रिफला लोध इन्हें कांजी के पानी में पीस पीछे घृत में तले फिर इस की पींडी बनाकर नेत्रों पर बांधे तो गरमी का शूल मिटे॥

और जो कदापि नेत्रों में सूले चले और सूजन होय और खुजली भी चले तो उस के वास्ते ये दवा करनी योग्य है॥

सोंठ नीम के पते इनमें थोड़ा सेंधा नोन मिलाय महीन पीस इसकी पींडी नेत्रों के बांधे तो नेत्रों के सूले खुजली सूजन आदि रोग जाय॥

निरोग नेत्रोंकी पहिंचान

नेत्रोंमें कुछ भी पीड़ा न रहे और कुछ भी खाज और सूजन नहीं होय और आंसू आदि आवे नहीं नेत्रों का वर्ण अच्छा होय और सब महीन वस्तु भी यथार्थ दीखने लगें तो उस मनुष्य के नेत्रन का रोग गया जानिये यह परीक्षा है और जब तक नेत्रों में रोग रहे तब तक इतनी वस्तु नहीं करिये सो लिखते हैं नेत्र रोग वाला सुरमा

और काजल आदिका लगाना घृत और कसेली वस्तु और खटाई आदि कुपथ्य का त्यागन करे और स्त्री संग न करे

और वाजे वाजे हकीम कहते हैं कि नेत्र रोग वाला मनुष्य पान और गरिष्ठ करने वाली वस्तु भी न खाय औ र स्नान भी न करे इतनी वातों का मनुष्य को जरूर त्याग करना योग्य है॥

ढलके का इलाज

जो यह रोग गरमी से हो तो सुरमा लगावे और सरदी से हो तो वासली कून लगावे और जो आखों की कमजोरी से हो तो जली हुई पीली हर्ड और सेंधा नमक और माजूफल वरावर कूट छान कर आंख में लगावे॥

और जो थोडी थोडी देर में आंसू वहकर थम रहा करें तो उस्को हिंदी में मतना कहते हैं उपाय उस्का यह है कि पहिले मवाद को निकाले और उस्के पीछे आंसू वहाने वाली दवा लगावे जैसें वासली कून और सियाफह अहमर लगाना उत्तम है

वासली कून बनाने की विधि

चांदी का मैल २॥ माशे समंदर फेन २॥ माशे सफेदा कलई जोद नमक तुरकी काली मिर्च नोसादर पीपल ये सब दवा साढे चार चार माशे जला हुआ तांवा ३॥ माशे लोंग २॥ माशे छडीला २॥ माशे कपूर ५ रत्ती तेजपात ३॥ माशे जुंद विदस्तर ३॥ माशे वालछड ३॥ माशे इन सब को महीन पीस सुरमा वना ले और लगावे॥

स्याफहअहमरकीविधि

धुलाहुआसादना २१ माशे वबूलकागोंद १७॥ माशे जला हुआतांवा ७ माशे जंगालजलाहुआ ७ माशे अफीम १॥ माशे एलुआ १॥ माशे केशर १॥ दांग सुरमकी १॥ दांग इन सवको पीस कर लंबी गोली वनाले और वक्त जरूरत पे पानीमेंघिसकर नेत्रों में लगावै॥

गोली

येगोलीनेत्रकीखुजली और दलकेकोगुणकरे वडीहर्डकीगुठलीकीमींगीदोभाग वहेडेकीमींगी तीनभाग आमलेकीगुठलीकीमींगीतीनभाग इनतीनोंकोमहीनपीसकररखे औरसमयपरपानीमेंघिसकरनेत्रोंमेंलगावैतो नेत्रोंसेपानीवहनावंदहोय॥

गोली

सिरसकेवीज· कालीमिर्च· वनफ्शा इनसवकोवरावर लेअलगअलग कूटपीसकर सहदमें मिलाकर गोलीवनावै और घिसकरनेत्रोंमेंलगायाकरै तो नेत्रोंसेपानीवहना वंद होय॥

गोली

जवाहर्ड· माजूफल· वालछड· वडीहर्डका वकल· इन सवकोवरावरलेकर पानीमेंपीसकर गोलीवनाकर नेत्रमें लगावैतो दलकावंद होय॥

रिगडा

येरिगड़ाकोयेकीसुर्खी और दलका और नैत्रोंकी लाली

और खुजली को गुण करै समुद्र फेन सफेद कत्था भुनी फिटकरी बड़ी हर्ड का वक्कल रसोत अफीम नीला थोथा सब बराबर लेकर निर्मल जल में घोटकर गोली बनाले॥

सुरमा

जो ढलके को बहुत जलदी फायदा करै बड़ी हर्ड की गुठली की भस्म दश माशे माजूफल सेंधा नोन ये पांच पांच माशे इन सबको महीन पीस कर सुरमा बनाले फिर नेत्रों में आंजे तो ढलका बंद होय॥

और बाजे हकीमों ने बड़ी हर्ड की भस्म की जगह छोटी हर्ड की भस्म लिषी है॥

सुरमा

कालानोन काली मिर्च ये दोनों एक एक भाग पीपल दो भाग समुद्र फेन आधा भाग सुरमा सबसे तिगुना लेकर महीन पीस कर नेत्रों में लगावे तो ढलका बंद होय॥

दवा

घोड़े का ऊपर का दांत पानी में पीस कर नेत्र में लगावे तो ढलका बंद होय॥

दवा

ये दवा ढलके को विशेष गुण करती है धुनी हुई रुई की तीन बत्ती बनाकर दो तोले धतूरे के रस में दो बार भिगो के सुखावे और फिर आक के दूध में भिगो कर छाया में सुखा कर रेंडी के तेल में चिराग भर कर उसी उन्हीं बत्तियों को भिगो कर जलावे और काजल पाड़ कर उस में थोड़ी भुनी फिट

करी मिलाकर थोड़ा नीला थोथा मिलावे और नित्य प्रति नेत्रों में लगाया करे॥

अथवा

कुंदरू गोंद को गुलाव जल में मिला कर उस्में नेत्रों को धोवे और गुलाबजल न मिले तो पानी ही ले लेवे तौभी ढलके को फायदा करता है॥

अथवा

आबनूस की लकड़ी को घिस कर नेत्रों में लगावे तौ ढलका बंद होय॥

अथवा

बड़ी हड़ का वक्कल और चाकसू दोनों बराबर ले पीस कर नेत्रों में लगावे॥

अथवा

बबूल के पत्तों का काढा कर रस काढे पीछे रस को और गाढा करे फिर इस्में सहत मिलाय अंजन करे तो नेत्र से पानी वहना बंद होय॥

अथवा

निर्मली के फल को पानी में घिस अंजन करे तो नेत्र का पानी वहना बंद होय॥

अथवा

निर्मली के फल को सहत में घिस थोड़ा कपूर मिलाय अंजन करे तो नेत्र निर्मल होय॥

॥२॥

फूजे का इलाज

जो ये रोग जन्म से ही होय तो इस का इलाज नहीं है और जो किसी रोग के कारण से होय तो इस को वरसुलएन कहते हैं इस के उपाय कारण के अनुसार करें॥

जो यह रोग तरी की अधिकता से होय तो देह को-और आंखों में जो मवाद है उसे साफ़ करे और जो खुस्की से हो तो तरी पहुंचावे॥

और जो यह रोग खुस्की से हो तो उसे दिखाई नहीं देता इस्मे और मोतिया विंद में इतना ही अंतर है कि मोतिया विंद में पहिले भुनगे से उडते दिखाई-देते हैं और इस्मे यह बात नहीं होती आंख दुवली हो जायगी और दस्त कारी से लाभ न होगा यह रोग जो बच्चों की आंख में हो जाय तो जवान होने पर जाता रहेगा॥

और एक डाक्टर ने अपनी किताब में लिखा है कि जो बालक जन्म लेते समय ही कंजी आंखों वाला हो तो मनुष्य को चाहिये कि उस लडके को उसी वक्त से काली स्त्री का दूध पिलावे॥

अथवा

शेख रईस ने अपनी किताब में लिखा है कि इन्द्रायन के ताजा फलों में सलाई डुबो कर नेत्रों में फेरे और इसी प्रकार गाजर का छिलका महीन पीस कर लगाना अति गुण करता है॥

और इस रोग का इलाज हिंदुस्तानी पुस्तकों में

तो कहींलिखानहींहै परंतु यूनानी ग्रंथोमें लिखा है सो हमने भी अपनी इसकिताबमें लिखदियाहै परंतु हम कोतो इसमें विश्वासनहींहै॥

नासूरका इलाज

येरोग नाक के कोए की तर्फ होता है जबउसेउगुली से दबे तो उसमें से राध और लोहू निकलताहै उसका उपाय हम इस किताब के दूसरे भाग में भी लिख चुके है और कुछ यहां भी लिखते है

प्रथम इस रोगमें फस्त वो जुलाब देनाउत्तम है उसके पीछे स्याफह गर्व घावपर लगावे परंतु दवा लगाने से पहिले घावको रुईसे पोछिले॥

और घावकोसाफकरडाले औरऔषधि के प्रभाव के लिये मुर्दार मांस को काट डाले औरजो इससे आराम न होतो दाग दें और मरहम अस्फेदाज लगावें॥

स्याफेगर्वकीविधि

गुलुआ· कुंदर· इंजरूत· दम्मुलअखवेन· गुलनार- सुरमा· फिटकरी· ये सब दवा एक एक तोलेले और जंगाल तीन माशे ले इन सब को महीन पीस कर खड बनाले और वक्तपर घाव में टपकावे और ये स्याफे की विधि किसी किताब में तो लंबी गोली बना कर रखना और वक्त जरूरत के पानी में घिस कर काम में लावें और वाजी किताबों में रिगड़ा को स्याफा लिखा हैं॥

मरहमसफेदाजकिविधि

रोगनगुल चार तोले मोम एक तोले ले प्रथम मोम को रोग
न गुल में पिगला ले फिर इसमें इतना सफेदा मिलावे
कि वह रोगन और मोम दोनो को उठाले फिर इसमें
अंडे की सफेदी मिलावे और कभी थोड़ा सा कपूर भी
मिला लेते हैं और इस की मरहम बनाकर काम में लावे

और दूसरी रीति यह है कि फकत सफेदा और
सफेद मोम और रोगन गुल इन तीनो को ही मिलाक
र मरहम बनाले॥

और बहुत से हकीम ये भी लिखते हैं कि ये नासू
र बंद होकर फूल जाता है तो उस वक्त कनोंचे के बीज
स्त्री के दूध में या गधी के दूध में पकाके थोड़ी सी के
सर मिला कर लगावे इस से फूट कर फिर बहेगा-

अथवा

सेलखड़ी को रेंडी के तेल में घिसे जब वह गाढा होजा
य तब उसमें रुई की बत्ती भिजो कर नासूर में रखना
फायदा करता है।

अथवा

रीये की कीचड़ को कपड़े में लगा कर नासूर पर रक्खें

अथवा

बथुए के साग के पत्ते नवासब का फूल इन दोनों
को लेकर घीमें घोट कर नासूर पर लगावे॥

अथवा

हुक्के के नेचे मेंसे जो कीचड़ निकलती है वह और अफीम दोनो बराबर लेकर पीस कर बतीबना नासूर पर रक्खें

अथवा

समुद्र सोरव नरम पीस कर पानी में मिला कर बती बना कर नासूर पर रक्खें॥

अथवा

नीम के पते और पैमंदी बेर के पते पीस कर कपडे में लगाकर नासूर पर रखना फायदा करता है

अथवा

सफेद कत्था एलुआ इन दोनों को पीस कर नासूर पर लगाना अत्यंत गुण करता है॥

अथवा

कुत्ते की जीभ काट कर जलावे और उस की राखको मनुष्य के थूक में सान कर लगावे॥

अथवा

मिलोय हल्दी· इन दोनों को कूट कर मीठे तेल में औटावे फिर छान कर नासूर पर लगावे॥

अथवा

सहद को औटावे जब गाढ़ा होजावे तब थोड़ा समुद्र फेन मिलाकर उस्में रुई की बती भिगो कर नासूर पर रक्खे॥

अथवा

मसूर को पीनले और अनार का छिल का इन दोनों- को बराबर ले पीस छान कर लगावे॥

अथवा

असोत गेरू जवाहई पोस्त के डोडे इन सब को पीस कर नासूर पर लेप करने से शीघ्र फायदा होय॥

अथवा

असल हीरा हींग को सिर के में घोट कर नासूर पर गुनगुना लेप करै तो नासूर जाय॥

अथवा

पुरानी कच्ची भींत का कोयला गरम पानी में पीस कर नासूर पर लगाना अति गुण करता है॥

परवाल का यत्न

जो वाल पलक के उलटे हो कर आंख में जा लगे और चुभा करैं उसे यूनानी हकीम शरमुनकलिब कहते हैं और जो वाल पलक के सिवाय अपनी जगह के भितर की तरफ निकलें और उन के चुभने से आंख खटका करै उसको शरज़ायद कहते हैं॥

उपाय उसका यह है कि पहिलें मवाद को साफ करै फिर वह वाल जो नये आगे हैं उनको चोमटी से उखवाडे और उस ठौर पर नौसादर रगड देतो फिर कभी परवाल न होंगे॥

अथवा

चेंदी के अंडे और इंजीर का दूध और उस कलीली का रुधिर जो कुत्ते या ऊंट के वदन में होती है या हरे मेंडक का रुधिर या हुदहुद जानवर का पिता उस जगे पर मले तो परवाल जाय॥

अथवा

ये कोई वस्तु न मिले तो केवल चेटी के अंडे ही मलना काफ़ी है

अथवा

समंदर फेन को ईशब गोल के लुआब में पीस कर लगाना बाल उत्पन्न होने की जगह को भस्म कर देना है

अथवा

बालों को उखाड़ कर उस जगह खटमल का रुधिर लगावे॥

अथवा

बालों को उखाड़ कर नौसादर को बकरी के पित्त में मिला कर पतला लेप करै॥

फकी

ये दवा नेत्रों के बहुत से रोगों को गुण करै है मुंडी की जड़ छाया में सुखा कर उसकी बराबर बूरा मिला कर सात मा शे नित्य पंद्रह दिन तक खाय॥

तुरफा का यत्न

तुरफा उस रोग को कहते हैं कि मुल्तहिमा जो पहिला परदा है उस्पर रुधिर की फुटकी सी पड़ जाती है उपाय- उस्का यह है कि कबूतर या बतक का कच्चा पर उखाड़ कर उस्के रुधिर की बूंद अकेली या गिले अरमनी के संग नेत्र में टपकावे॥

अथवा

कुन्दर को जलाकर उस्की धूनी आंखों को दे तो ये रोग जाय॥ और जो उस्का कारण अति पुष्ट हो तो पहिले फस्त करै औ र फछने लगावे और जुल्लाब दे॥

सबल्लकायत्न

सबल रोगउसकानामहै कि जिस रोगमें आंखोंकी रगेंला
ल औरमोटी होजातीहैं औरखुजली होती हैजो इसमें आंसू
भीनिकलें और पलकोंमें पानी भरा रहैतो उसको सबल रत
व कहेंगे औरजो ऐसान होतो सबलयाविस कहेंगे उपाय
इसका यहहै कि शेररूनसकी फस्ल खोलले पीछे माथे कीर
गऔर कोएकीरगकी फस्ल खोलले औरजोये रोग थोड़ा होतो
स्याफेदीनारआंखमें लगावे औरजो रोग भारी होतो स्याफे
अहमरऔर वासलीकूनलगावे औरसबलयाविसमें सुरमा
औरऔषधोंकेलगानेसे पहिले और पीछे गरमस्थान में बैठ
करस्नानकरनाअवस्य है जबरमद औरसबल दोनों मिलेहु
एहोंयतो दोनोंकेचिन्हपायेजायगे ऐसे रोगमेंन गर्म औष
धिनठंडी औषधिदेना चाहिये परंतु मवादको निकाले औ
र अंडेकी सफेदी आंख परमलेतो इनदोनोंप्रकारके मिले
रोगको फायदाकरै और स्याफेअहमरकी वनानेकी वि
धि पहिलें कहिआये हैं॥

स्याफेदीनारकीवि॰

जर्दचोवा· धोयाहुआसादना· एलुआ· स्याफेमामीरा· बरा
बरलेकेसबको पीसरगड़ावनाले॥
औरवासलीकून वनानेकीविधि पत्रा २७मेंपहिलें लिख
आयेहैं॥
और स्याफेअहमरकीविधिसफे ५५में पहिलें लिखआ
येहैं॥

मुल्तहिमाकी सूजनका
यत्न

मुल्तहिमा जो नेत्र का पहिला परदा है वह फूल जावे तो उस्का उपाय यह है कि जो यह सूजन रीह के कारण से होय तो चिन्ह उस्का यह है कि अचानक उत्पन्न होगा और पहिले आंख के कोने में मक्खी या मच्छर के काटने की सी जलन होगी और जो बलगम अर्थात कफ से होतो होले होले उत्पन्न होगा और पीड़ा बहुत न होगी और अंगुली के दवाने से चिन्ह रहिजायगा और जो मवाद बहुत और पतला होगा तो वह चिन्ह देर तक न होगा उपाय उस्का यह है कि जैसा मवाद होवे साही जुलाब दें और ठंडी रमद रोग की औषधें काम में लावे और जो ये रोग रीह से होतो तीन दिन तक उपाय न करें क्यों कि विना औषधि किये ही आप से आप आराम हो जाता है ये इस रोग का निदान कहा॥

मुल्तहिमा की खुजली का
यत्न

इस रोग में बहुधा पल के लाल और घायल हो जाती है उपाय उस्का यह है कि नमकीन और चरपरा भोजन न खाय और फस्त खोले तथा जुलाब दें और जस्त को नर कुल पर रगड़ कर नेत्रों में लगावे और गर्म पानी से मुख धावे॥

दोकतुल मुल्तहिमा का यत्न

जिस मनुष्य की आंख में कोये की ओर बड़े और लाल और काले दाने पड़ जाते हैं उस्को दोकतुल कहते हैं और जो का

ले दाने पड़जाते हैं उस्को टीकतुल कहते हैं
उपाय उस्का यह है कि जो मवाद अधिक हो तो उसे साफ
करे नहीं तो गुलाब में कपड़ा भिगो कर आंख पर रखना
अच्छा है और अ इससे अधिक उपाय की आवश्यकता
ना इस रोग के वास्ते और कोई नहीं है॥

नेत्रों में जलन होने का य०

जो ये गर्म मवाद के कारण से हो तो उस मवाद को निकाले औ
र जो कोई मवाद नहीं होय तो ठ्लिया को कच्चे आर रखदे अ
गूर के रस में भिगो कर सलाई से आंख में लगावे॥

अथवा

हरी कासनी के पते कूट कर उस के रस को तेल में मिला
कर लगावे और जो इस्में थोड़ा कपूर भी मिला लेय तो
अति लाभ दायक है॥

अथ आंख में किसी वस्तु के पड़ जाने से आंख क डके उस का यत्न॥

जिस मनुष्य की आंख में कोई वस्तु गिर पड़े तो उस मनु
ष्य को चाहिये कि आंख को मले नहीं क्यों कि जो कोई
कड़ी वस्तु हो तो आंख में मलने से चुभजाय तो बड़ी हा
नि करती है॥

उपाय उस्का यह है कि आंख को गरम पानी से धोवे और
स्त्री का दूध नेत्र में डाले॥
और जो वह वस्तु दिखाई देती हो तो उसे रुई के फाये से-

यानर्मेकपडेसेउठासे॥

अथवा जो वस्तु भीतर चिपटी हुई होय तो और वह छूट न सके तो निशास्ते को पीस कर आंख में भरदे और थोडी देर तक बैठ रहैं इस्से वह वस्तु निशास्ते में लिपट जायगी फिर उसे अलग रुई से उठाले॥

और जो कोई भुनगा या मच्छर आदि आंख में गिरा होय तो मुलतानी माटी या गेरू पीस कर आंख में डाले॥

और थोडी देर तक आंख को बांध दे वह उस्में लिपट आवेगा फिर उस्को रुई से उठाले॥

अथवा

जब मनुष्य की आंख में भुनगा या मच्छर आपडे उस सम य मनुष्य को चाहिये कि दस बीस कदम उलटा चले तो तो भुनगा या मच्छर निकल जायगा॥

अथवा

और जो शीशे का चूरा आदि आंखों में जापडे उस समय ब ह्रत्विमटी जो परवाल आदि उखाडने के वास्ते बनवाई जा ती है। उससे निकाले या जिस प्रकार से बने निकाल डाले और निकालने के पीछे स्त्री का दूध और अंडे की सफेदी मिलाकर आंख में डाले इससे पंद करने में आंख नहीं चि पटेगी॥

आंख में किसी प्रकार की चोट लग जाय उसका यत्न॥

जो चोट के लगने से आंख पै लाली या सूजन होतो उपाय उस

का यह है कि फस्लखोले और मुलैयनजुकूअफचाका

पिलावै

इस के पीछे अंडे की सफेदी रोगनगुल में मिला के आंख पर लगाये और जो पीडा जाने के पीछे चोट का चिन्ह अर्थात मिलाहट रहिजाय तो धनियां पोदीना और काला पत्थर जो काली मिरचों में निकलता है और हरताल इन को पीस कर लेप करै इस्सो नीला छट जाती रहैगी॥

अथवा

तलवार या पत्थर की चोट मुल्तहिमा नाम नेत्र के परदे पर लगी होय तो उस्का उपाय यह है कि फस्लखोले और कई वार जुल्लावदे और अंडे की जरदी आंखों पर लेप करै इसके पीछे वह उपाय करै जो आंख के घाव का उपाय आगे लिखा जायगा॥

आंख के घाव का

यत्न

ये घाव नेत्र के सब परदों में होता है परंतु जो घाव केवल मुल्तहिमा पर लगा हो और सब परदे बचे हो तो उसे सालिम कहते हैं इस्में पीडा कम होती है॥

मुल्तहिमा करनिया अवनिया इन तीनों परदों को घाव को तो आंखों से देख सकते हैं परंतु और परदों के घाव में केवल पीडा ही अधिक मालूम होती है और जब तक पीव न हो पडती और कोई चिन्ह घाव का नहीं मालूम होता उपाय उस्का यह है कि सरूलसकी फसन तुरंत खोले और रोसी-

औषधें देते रहें जिससे कब्ज न होवे और जो पीड़ा होय तो स्त्री का दूध टपकावे और जो वह घाव जलदी न पके तो धोई हुई मेथी का लुआव टपकावे अर्थात् मेथी के बीजों को दो पहर तक पानी में भिगो रक्खे फिर निकाल कर चौगुने पानी से पकावे जब वह पानी आधा रह जाय उस को हिलाकर निकाल ले इसी को धोई मेथी का लुआब कहते हैं

अथवा

जब घाव पक कर बहने लगे तब दूध और सहत मिलाकर आंख में डालें इस से घाव साफ होजायगा इस के पीछे स्याफ कुन्दर काम में लावें॥

स्याफ कुंदर की विधि

कुन्दर ३५ माशे उश्क २७॥ माशे इजरूत २७॥ माशे फिटकिरी ७ माशे इन सब को महीन पीस कर मेथी के लुआव में पीस कर रगड़ा बनाकर आंख में लगावें और जो घाव और फुन्सियों को पकाना होय तो इस को लगाकर पट्टी बांधना अति योग्य है॥

अथवा

जो असर घाव भर जाने पर भी रह जाय तो जो उपाय फूली नखूने के दानों के घाव दूर करने को है वही काम में लावे

अथ कमना का वर्णन

यह कई रोगों का नाम है तिनमें एक तो यह कि जब पलक रोग से भारी हो जाय और फूल जाय और सोये के जगने के पीछे ऐसा मालूम होवे की आंखों में धूल पड़ गई है॥ २॥

दूसरा रोग यह है कि करनिया नाम परदे के पीछे पीव इकट्ठा होजाय॥

तीसरे मुल्तहिमा पर जाली हो इससे कम दिखाई दे और सब वस्तु धूंधली मालूम हों॥

और वह जो केवल पलक का रोग है उसका उपाय पलकों के रोगों में अगाड़ी लिखेंगे॥

और करनियां के रोग का यत्न कहे हैं कि मेथी और अलसी का लुआब आंख में डालकर मवाद को पकावे और कई वार गरम पानी से स्नान करे इसके पीछे साफ करने के लिये रूपा मक्खी पीस कर आंख में लगावे और जो इस्से लाभ न हो तो दस्त कारी करे और नहीं तो इसे छोड़े नहीं ऐसा न हो कि कोई और रोग उठ खड़ा हो॥

और जो मुल्तहिमा को रोग है उस्का वही उपाय करे जो बादी के रमद रोग का लिख आये हैं॥

और अकेले मेथी और बाबूना और अकेले नौकमुल्क को औटा के आंख को धारें॥

आंख में धमक होने का यत्न

यह वह रोग है कि बाजे मनुष्य की आंख में अंदर धमक सी मालूम होती है और नकुआ से छिदते हैं और ऐसा मालूम होता है कि कोई दबोचता है और कभी पीड़ा जाती रहती है और कभी फिर हो आती है जैसे आधासीसी और इसका कोई चिन्ह नहीं होता है॥

उपाय इसका यह है कि इतरी फल कमनीजी खवावे तो धमक वंद होय॥

इतरी फल कमनीजी की विधि

वडी हर्ड का वकल काबली हर्ड· काली हर्ड· धनियां ये सब दवा एक एक तोले ले कूट छान कर घी में मकरोय कर तिगुने सहद की चासनी में मिलाकर माजून अर्थात् पाक बनाले और दो तोले नित्य खावै॥

अथवा

इस रोग में इतरी फल मुलैयन का खाना भी गुण करता है

इतरी फल मुलैयन की विधि:

काबली हर्ड का वकल· वडी हर्ड का वकल· आमले का वकल· वहेडे का वकल काली हर्ड· ये सब दवा तीन-तीन तोले गुलाव के फूल मनाप· निसोत छिली हुई-ये सब दवा चौदह चौदह माशे सोंठ पौने दो माशे इन सब को कूट छान कर बदाम रोगन में मकरो कर तिगुने शहद या कंद की चासनी में मिला कर माजून बनावे और मात्रा प्रकृति के अनुसार खवावे॥

पासोया

खारी नोन दो तोले चार माशे· गेंहूं की भुसी दो मुठी बेर की पती· खतमी की पती· मकोय के पते· ये सब आध आध पाव खतमी के बीज चार तोले आठ माशे इन सब को पा

नीमें औटावैजवआधा पानी रहैतव गुनगुना पाशोयाक
र औरजोयेसम्पूर्ण औषधिन मिलैंतो जितनी मिल सकें
उतनी हींउतमहैं औरजो येदवा कोई भीन मिलेंतोगरम
पानी और गहूं की भुसी और खारीनमक इनतीनों हीं से-
पासोया करैं॥

पासोया करनेकी विधि

लिखी हुई दवाइयोंको पानी में औटा कर उसपानी को
घुटने की तर्फसे पावों पर गेरे और दूसरा आदमी दोनों हाथों
सेउस पानीको पांवकी पिंडली की तर्फ सूते इसीको ह
कीमलोग पासोया कहतेहैं इसके करनेसे मगज कीग
रमी दूर होती है॥

अथवा

पांवको दवाना मलना और तलुओंको मलना अत्यंत गुण
करने वाला है॥

अथवा एक तगार में पानी भर कर अपने आगे रक्खे और अपने
शरीर पर चारों ओर से दोहर ओढ कर एक मिट्टी का डेला गरम
करके उसमें पटके और मस्तक को झुका कर उसके धुएं का बफा
रा ले॥

अथवा

काकजंगा के टूकटूक करिके पानी में औटाकर बफारा
ले पीछे दो भाग चंदन और एक भाग गेंहूंपीस कर पतला
पतलालेप करे

अथवा

छीलेचने दोतोले आठमाशे महीन पीस कर तीन-

तोले आठ माशे बादाम रोगन में भूने और निशास्ता दो तोले आठ माशे सफेद पोस्त के दाने दो तोले आठ माशे इन सब में चौदह तोले कंद मिलाकर गाय के दूध में हरीरा बना कर दो तोले आठ माशे घी का भंगार देकर गुनगुना गुनगुना पान करै॥

अथवा

धनियां साढे तीन माशे काहू साढे ३॥ माशे इन दोनों को पानी में पीस छान कर थोडासा मीठा मिला कर और तोले भर ईशबगोल उसमें बुरक कर पान करैं

अथवा

सीप को सिरके में घिस कर कानों की लौ पर नित्य लगावे

अथवा

कद्दू · काहू · हरा धनियां · कासनी · ताजा मकोय की पति सब को अथवा एक एक दो दो जैसें जानों निचोड छान कर थोडी थोडी बूंद कान में टपकावे

अथवा

काली मिरच पीपल लोंग इन सब को अथवा दो एक जैसा मुनासिब जानें सोफ के अर्क में पीस नाक में डाले॥

अथवा

काली मिर्च १ नग और उसी की बराबर माखी की विष्ठा इन दोनों को लडकी की मा के दूध में पीस कान में टपकावे और थोडा नेत्रों में भी लगावे॥

और इन औषधें के सिवाय जो इलाज आधासीसी के हैं

यही इसका है॥

अथ करनियां के उभर आने

का यत्न

जिस मनुष्य का करनियां नाम परदा उभर आवे उसकी पहिचान यह है कि कड़ी होती है और सलाई से नहीं दवती और आंसू नहीं वहते और उसमें पीड़ा नहीं होती और फुनसी जो करनियां में हो जाती हैं वह नर्म होती है और दवाये से दवजाती है और उनमें पीड़ा भी होती है उपाय इसका यह है कि मवाद गाढ़ा हो तो उसे साफ करे और जरूर अफसर को सलाई से आंख में लगावे और गर्म पानी से मोंह धोया करे और उसकी भांफ आंख को दे॥

जरूर अस्फर के बनाने की

विधि

इंजरूत सात माशे गल्कुआ सात माशे रसोत सात माशे केशर ३ माशे मुर ३॥ माशे पीस छान कर आंख में लगावे

करनियां की फुनसियों का

यत्न

जानना चाहिये कि करनियां के चार परदे हैं कभी तो सब में फुन्सी होती हैं और कभी एक में परन्तु फुन्सी पड़ने की जगह सफेद दिखाई देती है और किसी में नहीं उपाय इस का यह है कि प्रथम फस्त और जुलाब दे और पहिले ऐसी ठंडी औषधे लगावें जो मवाद को इधर गिरने से रोके और पीछे स्याफे अहमर लीन लगावे फिर स्याफे अवियज-

कुंदरीलगानाचाहिये॥

स्याफेअहमरलीनकीविधि

धुलाहुआसादना ३२मा· जलाहुआतांवा २मा· ववूलका गोंद ७माशे कतीरा ७मा· ५ मुरम्मकी ७मा· वुसुद २८मा· नेजपात २४मा· दम्मुलअखवैन ३॥माशे केशर ३॥माशे इनसवकोमहीन पीसकररिगडावनाकरलगावे॥

स्याफेअवियजकुंदरीकीविधि

कतीरा २०॥मा· ववूलकागोंद २०॥मा· निशास्ता ३॥मा· कुंदर ५जौ इनसवकोपीसछानकेंईशवगोलकेलुआव मेंरिगडावनाले॥

मोरासिरचकायत्न

मोरासिरचउसरोगकोकहतेहैं किमनुष्यकीआंखकाक रनियानामजोपरदाहैवह फटजायओरउसकेनीचेसेअ वनियांनामजोपरदाहैसोऊपरकोऊभरआवेतौप्रथम उस्काउस्से पहिलेंकरेजवाकिकिनारेकरानियाकेमोटे नपडजांयओरऐसाउपायकरेंजोअधिकउभरनेकोरोके अर्थात्ज्यादाउभरनेनदे ओरअवनियाकोभीतरकीन फैदवावे॥

इसरोगकेरोकनेवालीदवायेहैं

धोयाहुआसादना ओरचांदीकीडली मियां जलीहुई सीपी पीसकरआखोंमेंलगावे॥

अथवा

धोयेहुएसादनेकासुरमाआंखमेंभरे ओरऊपरमेगद्दी

कपड़ेकीरखकर पट्टीसेबांधदे॥

अथवा

सीसेकाटुकड़ाआंखकीबराबरखना केयासीसेकाचुरादा छोटीसी थेलीमेंभरकर आंखपररखदे औरकपड़ेकी पट्टीसेकसदे॥

अथवा

पिसा हुआसुरमाछोटीसीकपड़ेकी थेलीमेंभरके आंखपरधरकर कपड़ेकी पट्टीसेकसदे इन औषधोंकेकरने सेभीतरकापरदा बाहरको आनेसे रुका रहेगा॥

औरजबकिनारेकरनियांके मोटे होजांयगेतो फिर किसी प्रकारसे अच्छा नहोगा इसीसे इस रोगका उपाय जलदी करना चाहिये॥

और इसरोग वाले मनुष्य को हमने भी अपनी आंखोंसे देखाहै कि इस रोगके बढ़जाने पर आंख बिगड़जातीहै॥

भेंगाहोनेकायत्न

भेंगा उसरोगका नामहै कि मनुष्यको एकवस्तुकी दोदिखाई देतीहैं जो यह रोगजन्म सेही होयतो इसका इलाजनहींहै परंतु बच्चोंके मृगीकेरोगसे और एककरवट सुलानेसेया भयानक शब्दसुनकर अचानक चौंक पड़नसे भीयेरोग होजाताहै उपाय उसकायहहैकि कोई लाल्या चमकदारवस्तु आंखके किनारेरखदे जिधरकी आंखको फिराना चाहतेहैं जब बच्चा उसे हररदम देखेगा इस्से आंख उसकी सीधी होजायगी॥

और जो ये रोग जवानी में उत्पन्न होय तो कारण इसका नज ्नुज इम तलाई या विस होगा पहिचान नसन्नुज या वि मकी यह है कि इससे पहिले गर्म रोग हुए होंगे उपाय उस्का यह है॥

कि आंख को तरी पहुंचावे और लड़की की मा का दूध सिर पर दारे और पहिचान इमातिलाई की यह है कि पह ले इस रोग वाले को मृगी आई होगी और नसन्नुज इमाति लाई के चिन्ह पाये जायगे उपाय उस्का मवाद को साफ करना और निकालना है॥

और जो ये रोग आंख के ढीले हो जाने से होय तो इ सके चिन्ह और उपाय यही हैं जो इस्तरखा में लिखे गये

और जो रीह के कारण से कोई परदा या रतूवत जा नी रही होय तो आंख फड़केगी उस्का उपाय यह है कि भेजे से बलगम को निकाले और हब्ब अयारज खिलावे ये द वा अत्तारों के बनी बनाई मिलती है और बद हजमी को दूर करती है॥

इत तिसा और इंतसार रोग का यत्न

असव के चौड़े होने को या अनबीया के छेद के बढ़ जाने को इतातिसा कहते हैं और आंख में रोशनी फैल जाने को इन्तसार कहते हैं॥

जानना चाहिये कि इतातिसा रोग के साथ इन्तसार का रोग अवश्य होता है परन्तु ऐसा हो सक्ता है इतातिसा

अवनियाके साथ इन्तमारनहो और कभी कभी इतनि
सा असवा और इत निसा अवनिया दोनो साथ होतेहैं इ
नानिसा असवे का अच्छा होना वहुत कठिन है परंतु इत
निसाय अनवीया का उपाय कारण के अनुसार होसक्ता
है इसवास्ते इसके कारण जानके उपाय करे जैसे किसी
प्रकारकी चोट लगजाने से होय नो फस्त शरेरूनसकी षो
ले और पिंडिलीयों पर पछने लगावे॥

और जो किसी मवाद की अधिकता या रतूवत बेजि
याकी अधिकता से हो जैसा कि वच्चों को हुआ करता है
या अनवीया की सूजन से होतो फस्त और हुकना करे

और जो अनवीया की खुस्की से होय तो चिन्ह और
उपाय इस्के यह है कि दूतिया की कच्चे और खट्टे अंगूर के
रस में भिगो कर आंख में लगावे और जो यह वलगम के
कारण से होतो उस्के पकाने के पीछे वलगम का जुलाव
दे और वासली कून आंख में लगावे॥

और हरेक प्रकार के जुलावों की विधि इस की
नाव के अंत में लिखेंगे॥

अवनियाके छेदके सकड़ा होजानेका यत्न

ये रोग जन्म सेही होय तो अच्छा है इस्से दृष्टी तीक्ष्ण होती
है और जो किसी रोग से होतो दृष्टि कम होजाती है पहि
ले इसको देखे कि कारण इसका अनवीया की तरी है
या खुष्की या रतूवत बेजीयाकी कमी खुश्की और तरी

केचिन्हसहजमेंमालूमहोजायगे॥ औररतूवतबेजिया
कीकमीकाचिन्हयहहैकिआंखछोटीहोजायगीऔर
वस्तुभलीभांति दिषाईनदेगी औरकेमूसअनबीयाके
कड़ेहोजानेको औरबिगड़जानेसेभीयहरोगहोजाता
है उसकाउपाययहहै कि पुतलीनदिखाईदेजबकिअ
नबीयाकीखुश्कीयारतूवतबेजियाकीकमीकेकार
णसेयहरोगहोयतोचाहिये किआंखकोतरी पहुंचावे
औरजबरतूवत अनबीयाकीअधिकतासे होतोउस
तरीकोदूरकरे औरकेमूसकेबिगड़जानेमेंमवादको
साफकरे औरतरी भी पहुंचावे येमवाद कोसाफ करने
वाली औरतरी पहुंचानेवालीदवा इसकिताबके अंत
मेंलिखीजायगी॥

बसारतकायत्न

यहरोगवहहैकिअंधेरीजागहमेंबहुत बेठनेसे दृष्टि धुंध
लीहोजातीहै औरसब चीज धुंधलीमालूमहोती हैं
यारतूवतबेजियाकालीपड़जातीहै इससेयहरोगउत्प
न्न होता है॥

अथवा ऐसेरोगमें आंखमेंबासलीकूनजोसफे
२७मेंवर्णनकरआयेहैंउसेनित्यलगावे॥

और हलकी हलकीदवालगावें और हलका ही
भोजनखानेकोदें॥

औरजोअचानकअंधेरेकेबाहरनिकालने के
कारणसेयहरोगउत्पन्नहोतो नीला अस्मानीरंग का

कपडा आंखो पर डाले रहे या आस्मानी रंग की ऐनक लग
ना बहुत फायदा करती है॥
और हलका भोजन का भोजन करे और भूखा रहना और
मैथुन करना इस रोग मैं बुरा है और इस रोग वाला मनु
ष्य रात्रि में कुछ न खाय॥

वुन्धा होने का यत्न

इस रोग में दिन में कम दिखाई देता है यह रोग जो जन्म
से हो यती इस्का उपाय कोई नहीं है परंतु तोभी मनुष्य को
चाहिये कि नेत्र के परदों को और पलकों को काला क
रने का उपाय करें वो इस प्रकार से है कि वनपसे औ
र बादाम के तेल के काजल बना कर नेत्रों में लगाया क
रे इस्से दृष्टि पुष्ट हो जायगी॥

दृष्टि के थक जाने का यत्न

यह रोग सफेद और चमकीली वस्तु के देखने से जैसे
सूर्य और बरफादिक के ऊपर दृष्टि जमाने से उत्पन्न हो
जाता है उपाय इसका यह है कि काला कपडा लेकर आं
खों पर लटकावे और जहां तक हो सके वहां तक पहर
ने और विछाने के कपडे भी काले ही रक्खे

अथवा

दूध में कपडा भिगो कर आखों पर रक्खे या स्त्री के स्तनों
की धार नेत्रों में लगाना॥

अथवा कडवे बादाम को पीस के या कुचले के
आखों पर बांधे॥

अथ चकाचौंधी का विषय

इस रोग में धूप और रोशनी की तरफ देखना बुरा लगता है उपाय इसका यह है कि जो ये रोग गरमी से हो तो ठंडी दवा करिके आंखों को तरी पहुंचावे

अथवा

इलायची का इतर दोनो कनपटियों पर तथा पलकों पर लगाने से नेत्रों में से गरमी का पानी निकल जायगा इस दवा का तीन दिन सेवन करे और इस दवा को हमने केई दफे अजमाई है इसके लगाने से नेत्रों में तरी पहुचती है

अथवा

जो रमद आदिके कारण से होय तो वह दवा करे जो रमद के-वास्ते लिख आये हैं॥

आंखके मिजाज पहिचाननेकी विधि

जानना चाहिये कि आंखों का मिजाज गर्म और नर्म है और जो इसके विपरीत हो तो जानलो कि कोई रोग होगा

ऊपर से छूने में आंख गर्म मालूम हो और डोरे रंगीन हों और आंख जल्दी जल्दी फड़के तो आंख में गरमी का चिन्ह जानियें॥

और जो इससे विपरीत चिन्ह पाये जाय उन्हे शरदी के जानो और जो आंख में गीड आंसू बहुत निकले और फूली हुई मालूम हो तो ये चिन्ह तरी के हैं आंख खुश्की के चिन्ह इससे विपरीत पाये जायगे॥

कान्नी पुतलीकी आंखमें सब मकानकी आंखोसे यधि कु-
गर्म और तर होती हैं इसीलिये ऐसी आंखमें जोतियावि
द और गरमीके रोग बहुधा होते हैं परंतु बहुत से हकीम य
ह कहते हैं कि वाजी आंखसे मोतियाबिंद जादा होता है॥
इस जगे तक तीनों की के परदों के रोगों का वर्णन कि
या अब आगें पलकों के रोगों का वर्णन करते हैं॥

पलकोंके रोगोंके विष यमें॥

अथ केमनाका यत्न और चिन्ह

अथ केमना उस रोगको कहते हैं कि मनुष्य जब सोय के
जागे तो आंखमें खटक हो जैसे रेतके पड़जानेमें होती है
और थोडी देर के पीछे यह खटक जाती रहती है ऐसे रोग
वाले मनुष्यके वास्ते पहिलें जुलाब दें और पीछें स्याफ
अहमर लीन और स्याफ अहमर लगावे इन दोनों स्या
फोंके बनानेकी विधि पहिलें लिख आये हैं और इसरो
गमें गरम जलसे स्नान कराना अतिलाभदायक है

पपोटकेढीले होजाने का यत्न

पहिलें मवादको निकाले पीछे एलुआ अकाकिया
मुरमकी इन तीनोंको पीसकर पलक और माथे पर
लगावे॥
और जो इससे लाभ न हो तो पलक काटनी पड़ेगी इस प
लकके काटनेकी रीति दस्तकार जानते हैं और इस रोग

वाले मनुष्य की नाक की गांठों को फस्त खोलना अच्छा है॥

पलकों को चिपट जाने का

यत्न

ये रोग रम्द के पीछे या पलक के कोवे के पीछे या सबलया नारखून में होता है उपाय इसका यह है कि सलाई से दोनों पलकों को छुडावै और फिर जीरा और नमक चबाकर पानी उसका आंख में डाले॥

और रूई को रोगन गुल में भिगोकर पलकों के बीच में रक्खे और अंडे की जरदी में रोगन गुल मिलाकर आंख के ऊपर लगावे तो यह रोग निश्चय ही जाता है॥

पलकों के छोट होने का

यत्न

इस रोग में ऊपर की पलक सुकड जाती है और नीचे की पलक बाहर पलट ही आती है और दोनों पलकें बराबर बंद नहीं होतीं इस रोग का कारण पपोटे के ढीले हो जाने के कारण से विपरीत है और अधिक मांस जो पपोटे में हो जाता है उसे काटकर निकालने से भी यह रोग उत्पन्न होता है जो ये रोग किसी मवाद से होवे तो पहिले उस मवाद को निकाले फिर कारण के अनुसार उपाय करे और जो दस्तकारी हो सके तो उसे भी करे॥

शिरनाक का यत्न

इस रोग में पलक पर नरम मांस उत्पन्न हो जाने से पलक मोटी हो जाती है और आंखों में पानी भरा रहता है उपाय

इस्का यह है कि पहिलें मवाद को निकाले और फिर आंख ब हाने वाली औषधें आंख में डाले और जो इस्से भी लाभ न होतो दस्तकारी करना उचित है॥

पलकों के झड़जाने का यत्न

जो ये रोग बुरा भोजन खाने से या पित्तों के तथा बादी के अधिक होने से होय तो उस मवाद को निकाले और जो पलक की कमजोरी से होय तो जैसा करानी तम और गर्म नपके पीछे होता है तो उस जगह को पुष्ट करना और तरी पहुंचाना चाहिये॥

और बासली कूनजो पहिलें लिख आये हैं उसको और सुरमा रोशनाई आंख में लगावें॥

सुरमा रोशनाई की विधि

तुहास जला हुआ २॥मा॰ शादना २॥मा॰ गोल मिर्चें १॥ माशे पीपल २॥मा॰ केशर २॥मा॰ वकायन २॥मा॰ जंगार ३॥मा॰ गलुआ ३॥मा॰ नमक अर्मनी ३॥माशे इकली मियां ७माशे इन सब औषधों को महीन पीस कपड़ा में छानकर घोटकर सुरमा बनाले और समय पर काम में लावै॥

और जो यह रोग बलगम के जोर से होतो बलगम को निकाले और पुष्ट करने वाली दवा काम में लावे॥

पलकों के सफेद होजाने का यत्न॥

उपाय उसका यह है कि पहिले बलगम को दूर करै फिर जंग लीलाले के पत्ते जैत के तेल में मिला कर मलैं और सुरमा रोशनाई सलाई से आंख में लगावे॥

पलक में खुजली और फुन सियां हो पड़ उसका यत्न॥

जैसा मवाद हो उस के अनुसार उपाय करना चाहिये और चरूदवनपसीजी आंख में सुरमे की तरह लगावे

चरूदवनपसजी की विधि

वनपसे के फूल· धनियां बवूल का गोंद कतीरा ये सब दवा साढे तीन तीन माशे निशास्ता २०॥ माशे इन सब को कूट पीस कर इस में सिरके की सात पुट दे और छाया में सुखाले फिर इसका सुरमा बना कर काम में लावे॥

वरदा का यत्न

वरदा एक मवाद गाढा और सफेद ओले की सदृश पपोटे के ऊपर उत्पन्न हो जाता है उपाय उस का यह है कि रोगन मोम और दारचली पून मिला कर लगाने से नर्म हो कर बैठ जायगा और नहीं तो नस्तर से काटना योग्य है

पलक मोटे और कड़े हो जाने का यत्न

जब मनुष्य की पलक मोटी और कड़ी हो जाती है तो आंख बंद करना और खोलना कठिन हो जाता है और यह

रोग ओटा के मवाद से होता है इस लिये उपाय इसका यह है कि पहिले ओटा को पकावे और मवाद को निकाले और उस जगह को नर्म करे और अकलील उलमुल्क बाबूना चनपसा खतमी के पत्ते इन को पानी में ओटा के आंख को बफारा दे॥

और जो बिना किसी मवाद के इस रोग में खुजली होय उसको पथूस तुल्य सेन कहते हैं॥

पलकों के मोटे और लाल होजाने का विषय

इस रोग में पलकों के किनारे चहुधा मोटे होजाते हैं और लाल भी होते हैं उपाय इसका यह है कि पहिले मेवों का नुकूह पीवे और समाक को गुलाब में भिगो कर पानी उसका टपकावे और फिटकरी कुलफा और कासनी के पत्तों को रोगन गुल में मिला कर लेप करना लाभदायक है॥

और जब ये रोग पुराना होजाय तो पहिले फस्त और जुलाब दें फिर स्याफ अहमरलीन आंख में लगावे इसके बनाने की विधि पहिले लिख आये हैं॥

पलकों में जुवां पड़जांय उसका यत्न॥

ये रोग बलगम से होता है पहिले बलगम का मवाद निकाले फिर पलक में से जुवां बीने और जो जुवां छोटे होंय और बीनने में न आवें तो फिटकरी और नमक को पानी में

ओंटा के पलक को धोवे॥
और सलाई को थोडी देर पानी में रखकर हाले से हाथ से पों छले फिर उस सलाई को आंख में फेरे तो आंख के जन्तु मरजांय॥

गुहांजनी का यत्न

यह एक सुजन का नाम है और सुजन जो कि वोवा पलकपर होती है जो अवश्यकता मवाद निकालने की होय तो मवाद को निकाले नहीं तो रसोत और एलुआ मिले अरमनी हरी काशनी के पानी में पीसकर आंख पर लगावे और इस्से आराम न हो तो उस्को नारवून से कुरेद डाले या कैंची से काट डाले और थोडी देर तक उस्का रुधिर वहने दे जलदी वंद न करे क्यों कि जलदी वंद करने में रुका हुआ बुरा रुधिर नुकसान लाता है और जलदी आराम नहीं होता वाद उस्के जरूर अस्फर उस्पर लगावे॥

अजफान का यत्न

यह वो रोग है कि आंख के नीचे के पलक में सहनूत के सदृश एक वस्तु उत्पन्न हो जाती है उपाय उस्का यह है कि फस्ल और जुलाव के पीछे दस्तकारी करे और जीरा और नमक दोनों को दांतों से चवाकर उसके ऊपर लगावे और इस रोग का उपाय इस किताव के दूसरे भाग में लिखा है॥

जफन का यत्न

जफन उस रोग को कहते हैं कि वाजे मनुष्य के पलक प

स्पर के सदृश कड़े होजाते हैं फारसमें अर्थात् उत्पत्ती इ
सकी सौदा के गाढे मवाद के जमजाने से है इसमें वरद से
अधिक पलक मोटी होजाती है उपाय इसका यह है कि
पहिले मवाद को निकाले और रोगन मोम को पिगला के
लगावे और कभी यह रोग फोडे की तुल्य होजाता है तो
फिर इसका इलाज कठिनसे होता है॥

पलकमें घाव पड़जाने का यत्न

ये रोग वह है कि पलक के भीतर या बाहर घाव होजाते हैं
तो बहुत दुष दाई होते हैं इस रोग का यत्न तिब्ब अकबरी
वालेनें इस प्रकार लिखा है कि इसका इलाज घाव के
उत्पन्न होने सेही पर करना चाहिये क्योंकि जो ये घाव प
ड़जाता है तो समस्त पलकों को घेर लेता है उपाय उसका
यह है कि मसूर अनार और पिस्ते के छिलके इन तीनों
को बराबर ले महीन पीस सिरके मे पका कर लेप करै
और जब पुरंड जमने लगे तब अंडे की जरदी को केशर
सें मिलाकर घाव के मुकाम पर लगावे॥

पपोटे के फूलजाने का
यत्न

पपोटा उस स्थान को कहते हैं जो पलकों के भीतर की तर्फ
गुलाबी ठौर दिखाई देती है यह रोग जिगर की और मेदे की
कमजोरी के कारण से होय तो इनको पहिलें पुष्ट करे॥
और जो बलगम के अधिक होने से होय तो इतरी फल खि
लावे और फस्त की फाल करै और चंदन को हरे धनिये के

पानीमें पीस कर लेप करे॥

इतिजरोंही प्रकार तीसरा भाग सम्पूर्णम्॥

दोषोंकी प्रबलताका वर्णन

अब हम उन बातोंको लिखते हैं कि जिसके देखनसे दोषोंकी प्रबलता मालूम होजाय कि इस मनुष्यके कोन सा दोष प्रबल है सोनीचे लिखेके अनुसार जानो॥

रुधिरकी प्रबलताका वर्णन

जिस मनुष्यका मुख मीठा रहे और चहरा नेत्र मूत्र सुर्खी लिये हो और मस्तक सरीर भारी रहे और सरीरमें फुन्सियां निकलें और नाक तथा डोंसे रुधिर निकले ये लक्षण रुधिरकी प्रबलताके हैं॥

पित्तके लक्षण

जिस मनुष्यके नेत्र मुख और जीभ और मूत्र इनका रंग पीला पड़िजाय और मुहमें कड़वा पन और नाकमें खुश्की और खरास्वरा हट पायाजाय और निद्रा कम आवे और जलन विशेष होतो पित्तका कोप जानो॥

कफके लक्षण

जिस मनुष्यके चहरा जीभ और नेत्र और मूत्रका रंग सफेद हो शरीर और त्वचा ढीली पड़िजाय और मुख और नाक ठंडी रहे और नाकसे पानी टपका करे और [illegible] रहे और

निद्रा विशेष आवे और मुख फीका रहे तो कफ की प्रबलता जानो ।।

वात के लक्षण

जिस मनुष्य का रंग रूप काला पड़ जाय और मूत्र में स्याही आजाय और जलन उत्पन्न हो और बदन रूखा और दुबला होजाय और मुख खट्टा रहे और बदन के जोड़ भारी रहें और थक जायं और क्षुधा मंद पड़ जाय मूत्र गादा हो जाय तो बात की प्रबलता जानो ।।

पित के निकालने वाली दवा

पीलीहर्ड़ · इमली · तुरंजबीन · बनपसे के फूल · इफ सन्तीन सकमूनीया भुनीहुई · इश्क पेचां · आलूबुखारे · स्यातरे के पते एलुआ · गुलाब के फूल · शीरखिस्त · इनमें से सब दवा या थोड़ी दवाइयां मिलाकर जुलाब दें ।।

कफ के निकालने वाली दवा

बकायन के फल का छिलका · कंतयून · माहीजहजीज · गाराकून · हब्बुलनाल · तुर्बद · हुर्मल · कड़ विस फायज · कलोंजी · सुफाई ·

बाय के निकालने वाली दवा

काबलीहर्ड़ · कालीहर्ड़ · सनाय मक्की · बालंगू · अर्थात् बादरंजबोया · इफतीमून · उस्तखुद्दूस · साज बर्द भुनाहु

हजरअरमनी · आमले ·

दृष्टिकीहानिकरनेवाली वस्तु

खारीभोजनकरना · गरमपानीसिरपरडालना · सूरज कीतर्फदेषना · वैरीअर्थातशत्रुकोदेखाकरना · मसर · कुलफा · चूका · करम्व · काहू · चिरचिरा · गन्दना · अधिकमैथुनकरना · धूपमें अधिकरहना · अग्निकेपासअधिकबैठना लालमिर्चोंका अधिकखाना · चमकदारवस्तुकोदेषना · इतनीवस्तु नेत्रोंकोहानिकारकजाननी॥

दृष्टिकोपुष्टीकरनेवाली वस्तु

आमला · पीलीहर्ड · बादाम · सोंफ · मुंडी · पकाप्याज शहद · सीपीकीभस्म · रेसम · सुरमा · सोने चांदीका मैल गोलमिर्च · कालीमिर्च · मुश्क · केशर · और मोती पीसकर सोनकी सलाईसे लगाना · चंद्रमाकीतर्फ देषना · कालीमिरचकोकच्चीषांड और घी मिलाकर ओसमें जमाकरखाना हरियालीको देषना · सिरका · ये दवा दृष्टिकरनेवाली हैं

उनऔषधोंकाचूर्णजोमवादकोआंष परगिरनेसेरोके

तरबूजकेछिलके · कुन्दर · कानुलइकलदकोक · आबनूस · चजरुलयनज · केशरस्त्रीके दूधमें मिली हुई ०

वनपसा · लबलाव · छातिया · तिरियाकफारूक · इंज रूत · मकोय · बिही · मम्रर · बादरूज · सफेद सन्दल · बकायन · फिस्तक · जरवर्द · अकाकिया · जौ · सिमाक अमरूद · वुसुद · तातिया · रसोत · कुलरान ·

मेदेकी पुष्टि करनेवाली दवा

ठंडी

आमला · अनारदाना · सिमाक · बहेडा · हडका मुरब्बा · हर्ड · बिही · वंशलोचन · गुलाबके फूल ·

गरम

सरकंडेकीजड · तुरंजके छिलके · बिल्लीलोटन · जायफल · दारचीनी · नरकचूर · मोथा · तज · तेजपात · लोंग · इलायची · कुन्दुर · करोया · रूमीमस्तगी · मश्कतरामशी · नाना · ऊदगर्की ·

जिगरके पुष्ट करनेवाली दवा

ठंडी

काशनी · जरिश्क · अनार · और उनके पानी लुआब · ईशबगोल · शर्बतसंदल · सिकंजबीन ·

गरम

छडीला · इजफाकलाव · जायफल · हम्मामा · हब्बबिलसान · दारचीनी · नाकिस · लोंग · तज · कुसुम · रूमीमस्तगी · नारदीन · सोंफ · करफसकेबीज · फुलकंद असली · असाना सिपा · दवाउल करकम ॥

इति

जराहीप्रकारतीसरेभागकासूचीपत्र

भावप्रकाश का गुटका
पंडित हरदेव सहाय के यत्न से

भूमिका

प्रकट होकि यह पुस्तक मैंने बड़े परिश्रम से चक्रदत्त शारङ्गधर तिमिर भास्कर लोलिंवराज त्रिशती वैद्य जीवन वैद्यरहस्य और विशेष करके भाव प्रकाश इन सब का आशय एक बड़े ग्रंथ से लेकर मल्लछंद भाषा अर्थात दोहा चौपई कुंडलिया कवित्त और छंदों में इस प्रयोजन से बनाई है कि ये बहु प्रसिद्ध हैं और केवल भाषा जान ने वाले भी इनको खूब समझ सके हैं यद्यपि इसकी कविता बहुत सरल है परंतु पिंगल के मतानुसार द्विगण विचार व [illegible] के लिखा है अशुभगण या दग्ध अक्षर [illegible] में कहीं न हो जाय इसलिये बनाने वाले और पढ़ने वालों को शुभदायक है॥ इसमें वैद्य और उसकी स्त्री की अतिमनोहर प्रश्नोत्तरी है॥

P. Soojan Singh
Head Master

श्रीगणेशायनमः

वैद्यक गुटका

हकीम और हकीमकी स्त्रीके प्रश्न उत्तर दोहा

गुरु गणपत वागीश्वरी वादी मूकन हार ॥
करहु कृपा आधीनपर रचैग्रंथसुविचार ॥

वाक्य ग्रंथकार दोहा

पूर्वसमय इक विप्रबर वैद्यक राजबषान ॥
ताकीपत्नी अति चतुर सुमुखिरूपगुणखान ॥

कुंडलियां

सुमुखिरूप गुनखानगेनसव जानन हारी ॥
पतिव्रताके धर्म सकलवह वरतै नारी ॥
भांतिभांतिके रोगी जन जो द्वारे आवैं ॥
तिनकी नाड़ी देखवैद्यपुन जतनवतावैं ॥
देखदेखयह चरित्रवैद्यसेबोली प्यारी ॥
सुमुखीरूपगुनखानगेनसव जाननहारी ॥

प्रार्थना स्त्रीकीवैद्यप्रति

दोहा

वैद्यक विद्या में निपुण सब विधि चतुर सुजान
ऐसा ग्रंथ जु भाषये बचें सहस्रों प्रान ॥

कुंडलियां

बचैं हजारों जान तुम्हारा यश सब गावैं ॥ देख देख बन बपुस्तक नीके जतन करावैं ॥ रहै जगत में नाम काम हो पूरन सारे ॥ करो मनोरथ मम उर के सब पीतम प्यारे कर यह जीवन सुफल जक्त में सुर पुर पावैं ॥ बचैं हजारों जान तुम्हारा यश सब गावैं ॥

वाक्य ग्रंथ कार का दोहा

नारी का सुन कर बचन बोले वैद्य सप्रेम ॥
बात कही परमार्थ की धन्य तुम्हारा नेम ॥

कुंडलियां ॥ सुफल तुम्हारा नेम धर्म की बात विचारी ॥ चतुर सुघर गंभीर मनो हर सब बिधि प्यारी ॥ पूछत जावो प्रश्न उत्तर मैं देता जाऊं ॥ सब रोगों के भेद जतन लक्षण समझाऊं ॥ नारायेव कुछ गुप्त पहीरे विरद हमारी ॥ सुफल तुम्हारा नेम धर्म की बात बिचारी ॥

॥ प्रश्न स्त्री का दोहा ॥

नाड़ीके लक्षण जिते कहे सकल समझाय
जैसे जिसके भेद हैं सो सब देह बताय ॥

कुंडलियां ॥ सो सब हम हि बताव चलें जिस विधये नारी ॥ कहो भेद कफ पित्त बात की गति विस्तारी ॥ तुम हो चतुर प्रवीन दीन रक्षक हितकारी ॥ हम नारी का ज्ञान महा मति मंद हमारी ॥ बड़े धर्म की बात जक्त में सुख दिन चारी ॥ सो सब देह बताय चलें जिस विधये नारी ॥

अथ पित्त कफ़ बाय की नाड़ी की परीक्षा

उत्तर वैद्य का दोहा

मूल अंगूठा बाम कर धरे आंगुरी तीन ॥
प्रथम पित्त कफ दूसरी तीजी बाय प्रवीन ॥

कुंडलियां ॥ तीजी बाय प्रवीन कहूं सबकी गति न्यारी जो वैद्यक में लिखा सुनो मम प्रानन प्यारी ॥ मेडक काक कुलंग चाल पित्त की पहिचानो ॥ पंडुक मोर मराल नाड़ि का कफ की जानो ॥ सांप जोंक ज्यों चलै मंद गति बाय विचारी ॥ तीजी बाय प्रवीन कहूं सबकी गति न्यारी ॥ ॥ अर्थ शुरू ॥
बांये हाथ के अंगूठे के नीचे तीन उंगली धेर पहली

पित्त की दूसरी कफ और तीसरी वाय की जानिये॥ मेंडक काग और कुलंग की भांति जो चलि सो पित्त की नाड़ी जानो॥ पारावत मोर और हंस की नाई कफ की चलती है॥ सांप और जोंक की चाल वाय की है॥ अथ मन्दी पान और ज्वर के कोप में नाड़ी की परीक्षा॥

दोहा

थंभ थंभ कर नाड़ी चलै महा मंद गति जान
टेढ़ी सो जो स्वबहै सुन्न पानी सो जान॥

कुंडलियां

सुन पानी सो जान दूत जम के दिखलावे॥ जिस की यह गति होय वैद्य फिर कौन जिलावे॥ वेग वती अति चलै कोप में ज्वर के नारी॥ निज निज घर आ वहै रहै फिर क्या बीमारी॥

अथ कामातुर भूष और भरे पेट वाले की नाड़ी की चाल की परीक्षा॥ ॥दोहा॥

कामातुर अरु क्षुधित की वेगवती ह्वै साय
मंदाग्नि औ क्षीण की धीमी सी ह्वै जाय

कुंडलियां॥ धीमी सी ह्वै जाय उदर में आंव बनावै अनिमारी जो चलै पेट सो भर के आवै॥ नाड़ी भेद

अनेक क हांलों बरने कोई ॥ जो होवै चप्रवीनबुद्धि सो जाने सोई ॥ ॥ इतिनाडीपरीक्षा ॥

अथमुख्य रोगों का वर्णन ॥ वाकाजीकावैद्यप्रति

॥ दोहा ॥

अहो कंत मति मंद हम हैं नारी की जान
कहो भेद सम प्राय के मुख्य रोग की बात

कुंडलियां ॥ सकल रुजन के भेद जिते वैद्यों ने गाये सभी कृपाकर कहो तुम्हें जो शास्त्र बताये ॥ वचन प्रेमरस भरे रवरे मुखसे उच्चारो ॥ तुम हो चतुर सुजान धर्म के मग पग धारो ॥

उत्तर वैद्यका दोहा

सकल रुजन के भेद दो सुन मम प्रान अधार
एक मानसिक दूसरे कायक रोग अपार ॥

कुंडलियां ॥ यही रोग उरधारभिन्न कर बरनो सोई ॥ सोच फिकर में हैं चित्त अंग दुबला होई ॥ नासा बैन खाय रैन दिन जी घबरावै ॥ ऐसा रोगी होय मानसिक बाधक हावै ॥

॥ अथ कायक रोग के लक्षण दोहा

कबहुक मिथ्या हारतै उपजत अंग में पीर

कायक नाही वरणानिये कहै वैद्य धार धीर

कुंडलिया ॥ कहै वैद्य धार धीर कुपथ्य भोजन जो पावै वढ़ै पित्त या वाय घटै बल रोग बितावै ॥ अनुचित मारे मोग रोग तिस को लग जावै ॥ मात पिता का कर्म पुत्र को आन सतावै ॥ ॥ अर्थ ॥

मुख्य रोग दो प्रकार के हैं मानसिक और कायक इनके १४ भेद हैं सो आगे बरणन किये हैं फिक्र और बिचैनी के दिल पर रहने से नींद कम आवे अन्न न भावे अंग दुबला होने से वैद्य मानसिक रोग कहते हैं और ॥ कुपथ्य भोजन करने से पित्त या बाय बढ़ जाती है मिथ्या विहार यानी कुमार्ग में रत करने से और माता पिता के कर्मों से जो बीमारी होती है सो कायक कहाती हैं ॥ ॥ अथ १४ प्रकार के रोगों के नाम ॥

॥ चौपाई ॥

प्रथम हि सहज रोग सुम जानो ॥ दूजा गर्भज रोग बखानो ॥ तीजा जातरोग है प्यारी ॥ चौथी पीडज है बीमारी ॥ पंचम कालरोग कबि गनै ॥ छठी प्रभावक व्याधा भनै ॥ सप्तम रोग स्वभावज भाषे ॥ अष्टम कर्म दोष गुरु दाखे ॥ ॥ दोहा ॥

आगंतुक दूज कै नवीं कायक दसमा जान ॥
अंतर पीड़ा ग्यारवीं दोशज बारा शमान ॥
चौपाई ॥ कर्मज पीड़ा तेरह जान ॥ दोशज चौदह भनै सुजान ॥ इन सबके लक्षण सुन आगै ॥ जिस २ बिध बीमारी जागै ॥ ॥ अथ सहज रोग का वर्णन ॥

॥ कुंडा ॥

मात पिता के बीर्ज दोष से उपजे पीरा ॥ ताको सहज सुजान कहै सुन चातुर धीरा ॥ ववासीर और कुष्ट आन शक आदिक रोगा ॥ मात पिता को दोय पुत्र को निश्चय होगा ॥ ॥ अथ गर्भ रोग और जात रोग का वर्णन

॥ दोहा ॥

बौने पिंगले है गले गर्भ रोग के रूप ॥
इनको औषधी क्या करै चातुर सुभीष अनूप

कुंडलियां

चातुर सुभरिष अनूप जान के लक्षण भाषै ॥ मिथ्या हार विहार गर्भ में मात रापै ॥ पंगे वहरे होय बाल तिन के सुत प्यारी ॥ यही जात के रोग कहावे जब मैमारी ॥ ॥ अथ पीड़ वर्णन ॥ दोहा ॥
शस्त्रो की जो चोट से उपजे पीड़ा अंग ॥

अथवा ऊंचेसेगिरे कौरे देहकोभंग ॥

॥ अथ काल रोग दोहा ॥

शीत समय सरदी लगे उदम कालमें धूप ॥
वर्षा मे जलमेंरहे काल रोग के रूप ॥

अथ प्रभावज़रोग की उत्पत्ति दोहा ॥

मात पिता के श्रापसे अंगपीड़ हो जाय ॥
सोइ प्रभावज़ रोग है कहै वैद्य सन भाय ॥

अथ स्वभाव रोग की उत्पत्ति दोहा ॥

प्यास भूष ते ऊपजे तथा अबलता जान ॥
स्वाभाविक सो रोग है परमानंद सुजान ॥

अथ कर्म दोष रोग की उत्पत्ति दोहा ॥

पाप वाय कफ पित्त से पीड़ा अंगजो होय ॥
परमानंद सुजान कह कर्मदोष है सोय ॥

अथ आगंतुक ॥ कायक ॥ कर्मज ॥ अंतर ॥ देशज ॥ दोषज ॥ रोगो का वर्णन

॥ रोड़ा छंद ॥

काम क्रोध मद लोभ मोह पुन भूतादिक जे रोगा ॥ आगंतुक ये व्याधि क हावे दूर करे सब भोगा ॥ ज्वर आदिक जो पीड़ा सिगरी सो कायक पहिचानो ॥

तीनदिनीया तीजी अरु सीडी अंतर रोग हि जानो ॥ कालें मीर लालरंग के जितने लोग लुगाई ॥ देराज रोग कहावें मिगेरे तिनकी औषधी नाही ॥ गौ ब्राह्मण हत्या से उपजे कर्मज रोग कहावे ॥ वायपित्त कफ की जो पीड़ा दोषज वैद्य बतावे ॥

इति चतुरदश रोगों का वर्णन ॥ अथ ज्वर के भेद लिख्यंते

॥ वाक्य स्त्री का पुरुष से

॥ दोहा ॥

वरणन चौदह रोग का भ्रवक हा सम गाय ॥
प्रथम भेद ज्वर के कहो संसय सब मिट जाय

॥ कुंडलियां ॥

संसय सब मिट जाय हटे मम चिंता सारी ॥ तुम हो च तुर सुजान कंत हम हैं बलिहारी ॥ जितने तप के भेद कहो सब न्यारे न्यारे ॥ जिस जिस विध से जाय बतावो प्रीतम प्यारे ॥ ॥ उत्तर वैद्य का दोहा ॥

तप हैं आठ प्रकार के सुनो प्रिया सुख धाम
भिन्न भिन्न करके कहूं तिन आठों के नाम

॥ कुंडलियां ॥

तिन आठों के नाम जतन सब भेद जताऊं ॥ हृद मन हो

करसुनो औषधीसहित बनाऊं ॥ पहला ज्वर है वायपि
त ज्वर दूजा जानो ॥ तीजा कफ ज्वर कहा वायपित
चौथा मानो ॥ पंचम कफ और वाय मिले इक ठौर
पियारी ॥ षष्टम कफपित मिलै सुनोतुम बात हमारी

॥ दोहा ॥

सप्तम ज्वर सनपात है आगंतुक ज्वर आठ
इनसबके लक्षण कहूं जुदे जुदे लखपाठ

॥ अथ ज्वरमात्रके सामान्य लक्षण ॥

॥ दोहा ॥

[illegible] नाम्पावदा हो जाय ॥
स्वेद नहो अंग डाय ननलक्षण दिये बताय

॥ अथ ज्वरमात्र का सामान्य जतन ॥

॥ दोहा ॥

पीनींद औटाय के ढांह सुला वैनाहि
भोजन हलका स्वेनपट मैल कचैलो नांहि

॥ कुंडलिया ॥

मैल कुचेले नाहि सोंठ है मासा लीजे ॥ धनियां प
चगुन नासु काथ कर इनकापीजे ॥ तीनदिवस के
बाद दवा यह दीजे प्यारी ॥ निश्चै लागे भूखमिटै

नन पीड़ा सरि ॥ ॥ अर्थ ॥
सोंठ २ मासे धनियां १० मासे इनका काढ़ा कर पिलावै तो
ज्वर जाय और भूष लगै ॥ ॥ वाक्य स्त्री का पुरुष से ॥

॥ दोहा ॥

कहे आठ ज्वर आपने दिये सकल समझाय
आठों के लक्षण जतन दीजे मोहि बनाय ॥

कुंडलिया ॥ दीजे सबै बनाय मोहि जग के सुख कारी ॥
करें नाम विख्यात नाथ सब नर और नारी ॥ जो है मरूप
प्रीत रीत वैद्यक की भाषे ॥ यह संसार असार सार इसमें
कुछ राखे ॥

अथ वात ज्वर के लक्षण जतन लिख्यते ॥

वाय ॥ ज्वर वाले को ॥ खड़ रोग वाले को ॥ अनि जठ
राग्नि वाले को ॥ गर्भणी स्त्री को ॥ कम ताकत वाले
को ॥ वालक को ॥ बूढ़े को ॥ इतने बीमारों को लंघन
नहीं कराना चाहिये हलका पथ्य देना है ॥

॥ अथ इलाज लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

सोनालाव कट हलियां नागरमोथा जान ॥
सोंठ गिलाय चिरायता तेज्वर वाला आन ॥

कुंडलिया ॥ छै छै मारो नौल बराबर सब ले आवो ॥ कर इनके दो भाग काथ कर एक पिलावो ॥ दिवस पांच तक देय सकल ये औषध प्यारी ॥ ताजानूं कहां जाय वात ज्वर की बीमारी ॥ ॥ अर्थ ॥

दोनो कटेली नागरमोथा सोंठ गिलोय चिरायता नेत्रवाला येसब दवा छह छह मासे डाले जौकुट कर दो भाग करके एक हिस्से का काढ़ा कर सुबह को पिलावे दूसरे का शाम को दे इसी प्रकार ५ दिन पिलावे तो वाय ज्वर जाय और जतन दूसरी औषधी ॥

॥ कुंडा ॥

सोंठ धमासा छाल नींब की पोहकर मूला ॥ जड़ अरंड की पट कचूर अडूसा तूला ॥ भाग बराबर ले यटका भर औषधि सारी ॥ दीजो कर के काथ वात ज्वर से नथारी ॥ ॥ अर्थ ॥

सोंठ नीम की छाल पट कचूर धमासा अडूसा अरंड की जड़ पोहकर मूल ये सब औषधि छदाम छदाम भर ले काढ़ा कर पिलावे तो वात ज्वर दूर होय तीसरा जतन सतावरी गिलोय छदाम छदाम भर ले काढ़ा कर छदाम भर पुराना गुड़ डाल ५ दिन तक पीवे

तोवात ज्वर जाय चौथा जतन ॥ ॥रोड़ा छंद ॥
दाष मुनका पीत पापड़ा पीपल सौंफ न तीनों ॥ भाग
रावर सब पैसा भर लीने रंग रंगीलो ॥ सैर कूट करथ्वर
न्दे पर इनका काथ पिलावै ॥ वात ज्वर वाले के हिय
का कमल सुजान खिलावै ॥ ॥ अर्थ ॥
मुनका दाख पीत पापड़ा पीपल सौंफ तीन तीन
माशे ले काढ़ा कर पिलावै तो वात ज्वर जाय ॥

॥ प्रश्न स्त्रीका दोहा ॥

वात ज्वर भलि भांति से दीना आप बषान
अब पित्त ज्वर के जतन भाषो कंत सुजान
अथ पित्त ज्वर के लक्षण उत्तर वैद्य का

॥ दोहा ॥

नेत्रों में गरमी रहै देह तचै गरमाय ॥
प्यास लगै अनिद्री तिसे मुष कड़वा होजाय

कड़ा ॥ मुख कड़वा हो जाय नैन से नींद नसावै ॥ जि
ह्वा सूखी जाय पसाने देह न आवै ॥ मिष्ठा पवना दे
ष मूत पीला दरसावै ॥ पीत्ती ओर रैवे देह चैन अनि
चैन न पावै ॥ ॥ अथ पित्त ज्वर के जतन ॥
॥ रोड़ा छन्द ॥

नवल धमासा नागर मोथा पीत पापड़ा वाल॥ पुनचि
रायता नेत्रवाला नवल नीम की छाल॥ ले इदाम भर
हरेक औषध कूट काथ कर प्यावै॥ पित्त ज्वर की जित
नी बाधा सब को वेग नसावै॥ ॥ अर्थ ॥
धमासा नागर मोथा पीत पापड़ा चिरायता नेत्र
वाला नीम की छाल हरेक दवा छदाम २ भर ले
काथ कर प्यावै तो पित्त ज्वर जाय॥

॥ दूसरा जतन दोहा ॥

चंदन षस सम तोल के टक टक भर लाव
नीके पके फालसे शरबत स्वच्छ बनाव

कुंडलिया॥ शरबत स्वच्छ बनाव चार पैसे भर लेके
षस चंदन ले पीस टका भर मिसरी दे के॥ सब रा कत्र
मिलाय छान कर पीवै प्यारी॥ पित्त ज्वर की विथा नाश
होनि श्चय सारी॥ ॥ अर्थ॥
चंदन टंक १॥ षस टंक १॥ इनको महीन पीस
७ पैसे भर फालसे के रस में २ पैसे भर मिसरी और चंद
न डाल पीवै तो पित्त ज्वर जाय यह औषधि निघंटु
और पित्त सागर में भी लिखी है॥

॥ तीसरा जतन दोहा ॥

पीलधानकीलायके पानीलेयमिलाय ॥
तामेंमिसरीडालपी पित्तज्वरहटजाय ॥
अर्थ ॥ पीलोंकाशरबतकरमिसरीडालपीवेतोपित्त
ज्वरजाय और चौथाजतन ॥ चौपाई ॥
किरमालाकीमींगींलावो ॥ कुटकीनागरमोथमिलावो ॥
पीतपापड़ाहड़कीछाल ॥ सबसम औषधलेहुसंभाल ॥
हरेकलोछदामभरप्यारी ॥ कुटकरयेकाढासुखकारी ॥
पित्तज्वरनिसदाहमिटावे ॥ मूर्छारोगरहननहिंपावे
प्रलापभूराकौनविचारे ॥ सुनयहऔषधवेगसिधारे
॥ अर्थ ॥ किरमालाकीगिरी ॥ नागरमोथा ॥
कुटकी ॥ पित्तपापड़ा ॥ बड़ीहैडकीछाल ॥ ये
सबदवाछदाम२भरकूटकाढाकरपिलावेतोपित्त
ज्वर ॥ निस ॥ दाहमूर्छा ॥ भौरा ॥ प्रलापयेसब
रोगदूरहोंयहवैद्यविनोदका आशयहै ॥
पांचवाजतन ॥ सिर्फशर्बतअनारसेभीपित्तज्वर
कीदाहदूरहोतीहै ॥ ॥ छटाजतन ॥
॥ दोहा ॥
गजगमनीकटिकेहरीसोलहवर्षजुआय
तानारीकेभोगतेदाहतुरतमिटजाय ॥

क.डा ॥ दाह तुरत मिट जाय सुनै पिक कीर जु बानी॥ कौमें बालक बैन सुनै जो द्विन से प्रानी॥ धार सुगंधित हार मनोहर करैं सिंगारा॥ चंदन घिसा कपूर छुटै चहुं ओर फुहारा॥ सेंधा नमक मिलाय फालसे का रस पीवे॥ पित्त ज्वर मिट जाय सुखी हो बरसों जीवे॥ ॥अर्थ॥ महासुंदरी स्त्री जिसकी हाथी कैसी चाल झूमती हुई चीते कैसी कमर सोलह वर्ष की उमर ऐसी स्त्री से भोग करे तो पित्त दाह हरै बातोंने मैना के पढाने से उनका शब्द सुनने से और साफ वस्त्र पहर ओढ़ बालक से बातें करने से सुगंधित फूलों के हार पहरने से कपूर सहित घिसा चंदन लगाने से सुंदर स्त्रीयों के साथ बात करने से मनोहर शृंगार करने से फुहारे छुटने देखने से फालसे के रस मे सेंधा नमक मिलाके पीने से इन सब यत्नों से पित्त ज्वर की दाह निसंदेह दूर होती है॥ ॥और जतन॥

॥दोहा॥

दाख मुनक्का लाय रस मिसरी लेय मिलाय
पान जु करै सुजान यह पित्त ज्वर मिट जाय
॥ और जतन दोहा ॥

मूंग दाल पक वाय कर पानी लिय छनाय
तामें मिसरी डाल पी पित्त दाह मिट जाय
॥ और जतन दोहा ॥
नागर मोथा ले अभग पीत पापड़ा आन
धनचिरायता येसकल पांच टंक परमान
काढ़ा कर दिन तीन लो पीवे दोनो याम
पित्त ज्वर की पीड़ का फेर न रहे कछु काम
अर्थ ॥ नागर मोथा ॥ पीत पापड़ा ॥ चिरायता ॥
ये तीनो छह २ माशे ले काढ़ा कर पिलावे तो पित्त
ज्वर दूर होय येसब जतन निमर भास्कर का आ
शय है ॥ ॥ और जतन दोहा ॥
नीम वकल पदमाष पुन धनियां चंदन लाल
नवल गिलोय मगायके दो दो मासे डाल
कुंडलियां ॥ दो दो माशे डाल काथ नीका वनवावे
पित्त ज्वर की दाह एक छन माहे नसावे ॥
अर्थ ॥ नीमकी छाल ॥ पदमाष ॥ धनियें ॥
ये तीनो दो दो माशे ले काढ़ा करे पित्त ज्वर जाय
॥ और जतन दोहा ॥
पित्त ज्वर के कोप में दाह वहुत जो होय

पीपल पुहकर मूल काकड़ा सींगी आनौन ब्व कायफल ज लकूट कपड़े में छाने ॥ चवनी शहद मिलाय करे कहमासे नटि ॥ कफ ज्वर की जड़ जाय श्वास खांसी सब काटि ॥

अर्थ ॥ पीपल ॥ पोहकरमूल ॥ काकड़ा सींगी ॥ कायफल ॥ इन सबको बारीक पीस कपड़ छन कर ३ मासे शहद के साथ चाटे स्वास षांसी कफ ज्वर दूर होय ये वैद्यविनोद का आशय है ॥ कफ वाले को सेर का तीन पा पानी औटन २ रह जाय नब दे दिन में सोने न दे बारह दिन के बाद पथ्य के लिये मूंग या मोट का कुलथ का पानी दे और पथ्य के साथ बिजौरे की केसर में सेंधा नमक मिलाय कर दे अदरक दे ॥

अथ पाचन की औषधि ॥ कड़ा ॥

दोनो जीरे लोंग लायची धजन नैनी ॥ सोंठ पीपलामूल मिरच चित्रक पिक वैनी ॥ अजवायन अजमोद बराबर सब ले आवै ॥ पीपल सींग मिलाय सबका चूरन बनवावै गरम नीर के साथ तीन मासे ले प्यारी ॥ भूख लगे अल्प पी कफ ज्वर वृक्ष कुहारी ॥ ॥ अर्थ ॥

दोनो जीरे ॥ लोंग ॥ इलायची ॥ सोंठ ॥ मिरच स्याह ॥ पीपल ॥ धना सींग ॥ अजमोद ॥ अजवायन

पीपलामूल॥ चीता॥ येदवा सब बराबर ले बारीकपीस चूरण करे गरम पानीके साथ तीन माशे दे कफ ज्वरदूर होय भूख लगै अन्न पचै॥ और जतन॥

॥ दोहा ॥

पुहकरमूल कटेहली सोंठ गिलोय सुजान
नवल अडूसा डालके लीजे भाग समान

कड़ा॥ लीजै सकल बराबर छ छ मांशे डाले॥ जौकूट करके काथ आंचपै खूब उबाले॥ दिवस सात पर्यंत दवा ये दीजे प्यारी॥ ना जानूं कहां जाय कफ ज्वरकी बीमारी॥ ॥ अर्थ॥

सोंठ॥ गिलोय॥ पोहकरमूल॥ कटेली॥ अडूसा॥ ये चारों छ छ माशे कूट काढाकर ७ दिन दे तो कफ ज्वर जाय॥ ॥ और जतन॥

॥ चौपाई ॥

पीपल नवल कटेली लीजे॥ और काकड़ासींगी दीजे॥ नवलगिलोय अडूसा प्यारी॥ टंक टंक ले औषध सारी॥ दस दिन काथ जतनसे पीवे॥ कफ ज्वर जाय सुखी हो जीवे

अर्थ॥ पीपल॥ कटेली॥ काकड़ासींगी॥ अड़ूसा॥ गिलोय॥ ये दवा चार २ माशे ले काढाकर १० दिन पीवे

नो कफ ज्वर जाय॥ ॥ और जतन ॥

केवल अडूसा के काढ़े सेभी १० दिन पीवे नो कफ ज्वर जाय॥

इति कफज्वर लक्षण जतन संपूर्णम् ॥ + ॥

अथ वात पित्त ज्वर के लक्षण जतन लिख्यते॥

॥ वाक्यस्त्री का दोहा ॥

करुणानिधमम प्राणपति सर्व शास्त्र की खान ॥

वायपित्त ज्वर जतन सब कहिये कंथ सुजान ॥

॥ कुंडा ॥

कहो नाथ अब वात पित्त के लक्षण सारे॥ कीनी कृपा अपार हमारे प्रानपियारे॥ लाखौं रोगी फिरे जगतमें भये अनंदा सौसौ देय असीस कहै मुखभरण चंदा॥

अथवातपित्तज्वरके लक्षण जतन लिख्यते ॥

उत्तरवैद्य का॥ सोरठा ॥

नैन नींद विसराय रोमखड़े अरु अरुचि हो॥ पीड़ा होय जंभाय कंठ जीभ सूके रहै ॥ ॥ कुंडा ॥

देह सकल भर ह्राय अंधेरी आंखों आगे ॥ बार बार बकवाद उठै निसदिन सो जागे ॥ ऐसे लक्षण लखै वात पित रोग बतावै॥ आगे इसके जतन विचार सुजान जतावै॥ ॥ अथ वायपित्त ज्वर के जतन ॥

॥ दोहा ॥

नवल गिलोय अरंड जड़ पीपल चन्दन लाल
भांडंगी पदमाष खस नागर मोथा डाल ॥

कड़ा ॥ नागर मोथा डाल सुजान परोटी लावै ॥ ले ले मासे पांच कूट कैर क्वाथ करावै ॥ बारह दिन जो देय वाय पित्त ज्वर की पीरा ॥ निश्चै होवे दूर सुनो नृप चतुर धीरा ॥

॥ अर्थ ॥ गिलोय ॥ अरंड की जड़ ॥ पीपल ॥ लाल चंदन ॥ भाडंगी ॥ पदमाष ॥ खस ॥ नागर मोथा ॥ ये सब दवा पांच २ मासे ले जौ कूट कर ३ मासे का काढ़ा कर बारह दिन तक दे तो वात पित्त ज्वर जाय ॥

॥ और जतन ॥

॥ रोड़ा छंद ॥

नागर मोथा पीत पापड़ा सौंठ गिलोय नवीनी ॥ ले चिरायता तोल बराबर सब को रंग रंगीनी ॥ मासे तीन पकावे काढ़ा बारह दिन जो प्यावै ॥ वात पित्त ज्वर दूर होय फिर वैनी फेर न आवै ॥ ॥ अर्थ ॥

नागर मोथा ॥ पीत पापड़ा ॥ सौंठ ॥ गिलोय ॥ चिरायता ॥ ये सब दवा बराबर ले कूट कर के ३ मासे का काढ़ा कर १२ दिन तक दे तो वात पित्त ज्वर

॥ अर्थ ॥ नागरमोथा ॥ सोंठ ॥ चिरायता ॥ गिलेय ॥ ये चारो दो दो माशे आलकाढ़ा कर पिलावे तीन रोज तक बाद इसके दूसरा दे जो लिखता हूं ॥

॥ अथ दूसरा क्वाथ ॥

कड़ा ॥ नागर मोथा देवदारु भाड़ंगी लावै ॥ धणी का यफल पित्तपापड़ा सोंठ मिलावै ॥ हैड़ छाल कणाग च की जड़ सब करो बराबर ॥ जो कुट करके करो क्वाथ लेवै क दो पभर ॥ वात कफ ज्वर खांसी सूजन स्वास नसावै ॥ जो दस दिन लों देय रोग ढूंढा नहिं पावै ॥

॥ अर्थ ॥ नागरमोथा ॥ देवदार ॥ भाड़ंगी ॥ धनियां ॥ कायफल ॥ पित्तपापड़ा ॥ सोंठ ॥ हैड़ की छाल ॥ कणागच की जड़ ॥ ये सब दवा बराबर ले कूट रक्खै ८ माशे लेके काढ़ा कर १० दिन पिलावे तो ऊपर लिखे रोग जांय ॥ ॥ और जतन ॥

॥ रोड़ा छंद ॥

नागरमोथा पीतपापड़ा सोंठ गिलोय धमासा ॥ लाय बराबर क्वाथ पकावै और द्वादस मासा ॥ वात कफः ज्वर वमन शोष को निश्चै देय नसाई ॥ जैसे सूरज उदय होनही तारागण छिप जाई ॥ ॥ और जतन ॥

काढा ॥ शालपरणी अरु प्रष्टपरणी अरनी अरलबेली॥ दोउ कटेली बेलगिरी सुन नार नबेली ॥ गोखुर अरलू पाढ कुंभेर बराबर लावै॥ जौकुट करके धरै क्वाथ दशमूल कहावै नामें पीपल डाल क्वाथ दस दिन जो प्यावै॥ वात कफः ज्वर जाय सही यह वैद्य बतावै॥ ॥अर्थ ॥

शालपर्णी १॥ पिष्टपर्णी २ ॥ अरनी ३॥ दोनों कटेली४ बेलगिरी ६ ॥ गोषरू ७॥ अरलू ८ ॥ पाढ ९ ॥ कुंभेर१०॥ यह दश मूल क्वाथ है इसमें पीपल डाल के पिलावे तो वातकफः ज्वर जाय जो वातकफ ज्वर मे मुह और तालवा सूख जाय और जीभपर षरकी बहुत होतो बिजौरे की केसर में सेंधानमक और स्याह मिरच मिलाय जीभ परम लैतो षरकी जाय चिरायता गिलोय देवदारु कायफल तीन तीन माशे ले काढा कर पिलावे तो वायकफः ज्वर जाय॥ ये जतन तिमर भास्कर का आशय हैं ॥ इति वातकफः ज्वर चिकित्सा संपूर्णम् ॥

॥ अथ कफः पित्त ज्वर के लक्षण लिख्यते॥

॥ दोहा ॥

लिये कफारा जीभ मुख तंद्रा अरु ची जान
बार बार शरीर में दाह शीत हो आन ॥

कड़ा ॥ निसदिन पीड़ा दाह शीन की होवे जाको ॥ अक
जा रहे शरीर हिया दुख भोगे नाको ॥ मुख मीठा सा रहे कभी
कड़वा हो जावे ॥ जीभ लाल अरु स्वेत नेत्र मेंडक रंग लावे ॥
लिपिलल्लाई स्वेत मूत्र निसका तुम जानो ॥ नाड़ी की गति
हंस काक मेंडक पहिचानो ॥

ये लक्षण तिमिर भास्कर की आशय हैं ॥ कंटि हु वेहें ॥

॥ अथ कफ पित्त ज्वर का जतन लिख्यते ॥

इस बीमारी वाले को अष्टावशेष जल पिलावो ॥ अथ औषध
चौपाई ॥ नेत्रबाला सोंठ नवीली ॥ चंदन लाल गिलोय र
सीली ॥ दारहलद नीकी ले आवो ॥ कठा कायफल कूट
मिलावो ॥ तीन तीन माशे भर प्यारी ॥ दस दिन काढा दे उप
पकारी ॥ ॥ अर्थ ॥

नेत्रबाला ॥ सोंठ ॥ लाल चंदन ॥ गिलोय ॥ दार
हलद ॥ कायफल ॥ हरेक तीन २ माशे ले काढ़ा कर
१० दिन पिलावे तो कफ पित्त ज्वर जाय ॥

॥ और जतन ॥ दोहा ॥

नागर पद माष मंगाव पुन हरिजतीव की छाल
धनिया और गिलोय लो नीका चंदन लाल

कड़ा ॥ नीका चंदन लाल बराबर सब ले आवे ॥ कूटप

कवेकाथ छान कर दसदिनप्यावे ॥ कफ पित निश्चै जाय दाहनिस वमनसमीना ॥ जोंपवण को मार एम अ्रयेलेसीना

॥ अर्थ ॥ पद्माख ॥ नीवकी छाल ॥ धनियां ॥ गिलोय ॥ इसकाढे कोदसदिनपिलावे ॥

॥ औरजतन दोहा ॥

नागरमोथापीप्पली सोंठ नीमकीछाल ॥

नीकीकुटकी इंद्रजव शशिमुखिचालमराल

कडा ॥ शशिमुखिचालमराल स्वेतचंदनलोप्यारी ॥ हरितगिलोयपटोल सुनोमुख चंदउजारी ॥ औषधिसवयेकूट छानकर चूर्णकरावे ॥ फंकी माशे चार जलाष्ट शेश पिलावे ॥ ज्वर षासी अरु स्वास हिया दुखनाजो होवे ॥ नेरी होसों नवल दुःख ये निश्चै षोवे ॥ ॥ अर्थ ॥

नागरमोथा ॥ पीपल ॥ सोंठ ॥ नीमकी छाल ॥ कुटकी ॥ इंद्रजो ॥ सपेद चंदन ॥ गिलोय ॥ पटोल येसव औषधि बराबर ले कूट कपड़ छनकर अष्टावशेष जल के साथ ४ माशे की फंकी कराव तो ऊपर लिखेरोग जांय ॥ ॥ औरजतन ॥

॥ दोहा ॥

दारहलद पुननीवका छालगिलोयमंगाय

पीपल और चिरायता लेक चूर सम भाय ॥
कड़ा ॥ लेक चूर समभाय कटेली दोनो लावै ॥ सुघरपटो
ल मंगाय अडूसा और मिलावै ॥ लेले मासे तीन पकावै
काढ़ा नीका ॥ जो यदस दिन देय मिटे ज्वर पित कफ ही
का ॥ ॥ अर्थ ॥
दार हलदी ॥ नीम की छाल ॥ गिलोय ॥ पीपल ॥ चि
रायता ॥ कचूर ॥ दोनो कटेली ॥ पटोल ॥ अडूसा ॥
ये सब दवा बराबर लाय कूट रखै ३ मासे का काढ़ा १० दि
न तक देनो पित्त कफ दूर होय ॥

॥ और जतन चौपाई ॥

नागर मोथा पीपल सोंठी ॥ किर माला की गिरी अनोठी ॥
धनियां कुटकी दाष सुहागन ॥ मूल पीपला ले सम भागन ॥

॥ दोहा ॥

ग्यारह दिन यह दीजिये काढ़ा सो बेदर्द ॥
अलमूर्छा अरुचि ज्वर मिटे सहित भ्रम छर्द ॥
॥ अर्थ ॥ नागर मोथा ॥ पीपल ॥ सोंठ ॥ किर
माला की गिरी ॥ धनियां ॥ कुटकी ॥ दाष ॥ पीपला
मूल ॥ ये सब बराबर ले कूट काढ़ा कर ११ दिन देनो
अल मूर्छा भ्रम अरुचि छर्द सहित पित्त कफ ज्वर दूर होय

इतिपित्तकफ ज्वरके लक्षण जतनसंपूर्णम ।

अथसन्निपातकीउत्पत्ति लक्षणजतनलिख्यते ॥

॥ प्रश्नस्त्रीका सोरठा ॥

पंडितचतुरगंभीर ॥ सर्वशिरोमणिवैद्यवर
कहोसकलमतिधीर ॥ सन्निपातलक्षणजतन

कुंडा ॥ कहोसकलमतिधीररोगयहकैसेजाहै ॥ सन्निपातमेंदबासुनोविरलाहीबचाहै ॥ वर्णोंएमेजतनवचेंइससेनरनारी ॥ जगसुखकारिबानकंनयहकहोविचारी ॥ अथसन्निपातज्वरकीउत्पत्तिकेलक्षणलिख्यते ॥ ॥ उत्तरवैद्यकादोहा ॥

कीनाप्रश्नसुहावना परहितकारीबात ॥
सन्निपातलक्षणजतनसकलसुनोतजकाम

कुंडा ॥ सकलसुनोतजकामएकमनहोकरप्यारी ॥ सन्निपातकेभेदकहूंमेंसबविस्तारी ॥ उपजैजिसबिधरोगसोइतुमसुनोसुहागन ॥ जिनजतनोसेजायहैंसबहोबड़भागन ॥ ॥ दोहा ॥

अतिहिगरमअतिचीकना अतितीषाजोखाय
अतितीषापहाअतीसीन्नपानउपजाय ॥

कडा ॥ षन्निपात उपजाय मासक ज्ञा जो पावै ॥ रोगवती स्त्री नार संग रैन गवावै ॥ क्रोधवती सेर मेभेदक कुछ नारा रवै ॥ परमानंद सुजान सनातन वैद्यक भावै ॥

अथसन्निपातके लक्षणलिख्यतेदोहा

छिनछिनमें गरमी उठे छिनछिन शीत दबाय
हंसी कोडे कामनिज पलट स्वभावजुजाय

कडा ॥ पलटस्वभावजुजाय देहमें हडकलहोवे ॥ आंखोंमें जलवहै देहकी सुधबुध खोवै ॥ नैन लाल कुछ श्याम शब्द नहिं देय सुनाई ॥ उठे स्वांस अरु कास कंठमें कफ षषराई ॥ जिव्हा काली पडे देह सब दिन स्वके ॥ रैन आवे नींद मिला कफ लोहू थूके ॥ दोहा ॥

अकस्मात रोवे हंसे नाचे गावे गीत ॥
पुनरोवे अरु सिरधुने छिन गरमी छिन शीत

कुंडलिया ॥ छिन गरमी छिन शीत होठ मुखपक रजावे ॥ नाडी की गति मंद सिथलसूक्षम फरकावे ॥ काला पीला लाल मूत्र की रंगत जानो ॥ ये सब लक्षण होंय सिसनपात वषानो ॥

॥ अथसन्निपातज्वरके लक्षणसमाप्तम् ॥

॥ अथसन्निपातको जतन लिख्यते ॥

दो० पानी सोंठ मिलायके अध औटा कर लेय
दिनका औटा दिवसमें निशिका निशकोदेय
दोहा॥ बिना पवनके मंदमें रषे नाकोसेज॥ सात दिवस पर्यंत सब वस्तुनका परहेज॥ शिव जीके पूजन सहित कीजे पुन्य और दान॥ सात दिवसके बाद फिर काढा कहे सुजान॥ ॥ अथ काढा दोहा॥
वच छड चव्य दोउ कटकी पीपलपुहकारमूल
सोंठ इंद्र जवकायफल भाडंगी सम तूल॥
का.डा॥ भाडंगी सम तूल पीपलामूल नवीली॥ मिरच स्याह अजमोद काकडासींगी जीली॥ पाठल राय सना चिरायता लीजो प्यारी॥ भाग बराबर कूट मिलाकर धरे सवांरी॥ टंक प्रात अरु टंक शाम कर काढा दीजे॥ सन्निपात शीतांग अफारा शूलहु छीजे॥ अर्थ॥
वच छड चव्य दोनों कटेली पीपल पुहकर मूल सोंठ इंद्रजव कायफल भाडंगी पीपलामूल स्याह मिरच अजमोद काकड़ सींगी पाठल रास्ना चिरायता ये सब द्रव्य बराबर ले कूट कर धरे ४ माशेका काढा कर सुबहको दे इतनाही शामको पिलावे तो शीतांग अफारा शूल कफ व

कवाद सब दूर होय ॥ ॥ और जतन दोहा ॥

निर्गुंडी जलभांगरा देवदार कुलनार
अर्णी पीपल रास्ना सोंठ जवासा डार

कड़ा ॥ सोंठ जवासा डार आक जड़ चित्रक प्यारी ॥ चव्य पीपलामूल सहंजना बच सुखकारी ॥ नवल अतीस विरायता ये औषधि ले लीजे ॥ टंक २ परमाण काथ दोनो खन दीजे ॥ सन्निपात ज्वर धनुर्वात कफ खांसी जावे ॥ वंद जा कब्ज खुले स्वास पीनस न सावे ॥

॥ अर्थ ॥ निर्गुंडी जलभांगरा देवदार अर्णी पीपल रास्ना सोंठ जवासा आक की जड़ चीता चव्य पीपलामूल सहंजना बच अतीस चिरायता ये सब दवा बराबर ले चार २ मासे का काढा सुबह और इतना ही शाम को देनो ऊपर लिखे रोग दूर हों यह लोलिंबराज का आशय है ॥ जो सन्निपात मे जीभ सिथल होजाय तो जीभ पर बिजौर की केस रमैं मेथी सेंधा नमक स्याह मिरच मिलायके मलेतो जीभ की जड़ता जाय ॥ अथ सन्निपात को इलास उन्मत्तरस ॥ ॥ चौपाई ॥

मरुवा मिरच बराबर लावै ॥ पीपल सेंधा नमक मिलावै ॥

जलमेंपीसनाकमेंडारै॥ ज्ञान होय अज्ञान सिधारै॥
जोसन्निपातमें ज्ञान जाता रहा होतो इस इलाज से ज्ञा
न होवे॥ अथसन्निपातको और इलाज॥
चौपाई॥ पाँचटंक गंधक समपाय॥ षल्लकरे दोनोइ
कवाय॥ दोनोंकीसमत्रिकुटा लीजे॥ कूट छान चूरण
करदीजे॥ लाय धतूरारस कढ़वावै॥ तीन तीन पुट
देता जावै॥ एक दिवस पुन षरल जु कीजे॥ ले इला
सरोगीको दीजे॥ सन्निपातको छिनमें नासै॥ वैद्यक
देखसुजानप्रकासै॥ ॥ अर्थ ॥
आधी छटांक गंधक इतनाही पारा दोनोंके बराबर
यानि एक छटांक त्रिकुटा यानि सोंठ मिरच स्या
ह और पीपल तीनोंको पहले बारीक पीसबाद षर
लमें पारे गंधककी कजली कर उन तीनोंका चूर्ण मिला
य धतूरेके रसकी ३ पुट दे ८ पहर खरलकर सूंघने दी
सन्निपात जाय॥ ॥ अथसन्निपातको अंजन ॥
जमालगोटेकीगिरी माशे १० पीपलामूल माशे ५
स्याह मिरच माशा १ तीनोंको जंभीरीके अरकमें ७
दिन षरलकरै आँखमें डालै सन्निपात जाय॥
॥ अथभैरवांजन ॥

पारा गंधक स्याह मिरच पीपल येसब बराबर ले और ज
मालगोटा इनसे चौथाई पहले पारा गंधक पीसखरल
में कजली करे बाद बाकी तीनों को पीसकर मिलावे जंभी
री के रस में ८ दिन खरल करे आंखों में आंजते ही सन्नि
पात जाय ये वैद्यरहस्य का आसय है ॥

॥ और अंजन दोहा ॥

॥ सिरस बीज लहसन मिरच सेंधानमक मिलाव
॥ पीपल सिलवच सब दवा तोल बराबर लाव

कड़ा ॥ तोल बराबर लाव पीस गोमूत्र मिलावे ॥ खरल
करे दिन एक तिसे फिर छांह सुकावै ॥ अंजन करके धरै
नेत्र में जिसके डारै ॥ स्वांस कास शीतांग सीहत सुनपात
सिधारै ॥ अथ महासन्निपात का जतन लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

पारा सींगी मोहरा काली मिरच मंगाव ॥
नीला थोथा डार पुन नौसादर ले आव ॥

कड़ा ॥ ये औषध सब डार बराबर चूरन कीजे ॥ कोमल
लहसन और धतूरे का रस लीजे ॥ चूरन में रस डार ऐं
टिकर मस्तक बांधै ॥ एक पहर में चढ़े ताप नव शिव आ
राधै ॥ जो चैन न्यन होय और तपभी ना आवे ॥

तो फिर रोगी मरे नहीं कोइ वैद्य बचावे ॥ अर्थ ॥ पारा सींगीमोहरा कालीमिरच नीलाथोथा नौसादर येसब बराबर ले पीस धतूरा और ल्हसन के अरक में रोटी बनायके माथेपर बांधे जो एक पहर में तप चढ़े तो रोगी बचे वरना असाध्य है ॥

॥ और जतन दोहा ॥

ल्हसन राइ पीसये मूल सहंजना डार

गोऊ मूत्र मिलायके रोटी लेय सवांर

कड़ा ॥ रोटी लेय सवांर और रोगी करवावे ॥ मस्तक ऊपर धरे पहर दो तप चढ़ आवे ॥ जो रोगी ना तपे मूरछा में रह जावे ॥ तो फिर वह जन मरे नही कोइ बैद्य बचावे ॥ यह वैद्य विनोद का आशय है ॥ सन्निपात को वाज वैद्योंने ५२ प्रकार का लिषा है उस्के लक्षण जतन इस पुस्तक में नहीं लिखे क्योंकि सुश्रुत वाग्भट आदिने सन्निपात एक ही प्रकार का लिखा है ॥

अथ आगंतुक ज्वर के लक्षण जतन

॥ लिख्यते ॥

॥ वाक्य स्त्रीका दोहा ॥

॥ सात ज्वरों के भेद तो सबकहे समझाय ॥

अब आगंतुकके जतनक हो कंत चितलाय

कड़ा ॥ कहो कंत चितलाय हमारे प्रानपियारे ॥ जो २ इसके भेद कृपाकर भाषी सारे ॥ जिन जतनों से जाय होंय सब रोगी नीके ॥ कहो दयाकर सकल मिटैं सब संसय जीके ॥

अथ आगंतुक ज्वरांतर प्रेतादिकके ज्वरके

॥ लक्षण लिख्यते ॥

दो० छिन रोवै छिन हंसे और होय चित भंग
रहे देह उद्वेगमें थरथर कांपे अंग ॥

कुंडलियां ॥ थर २ कांपे अंग प्रेत बाधा तुम जानों ॥ मंत्र जंत्र अरु तंत्र जतन तिसके पहिचानों ॥ शिवका पूजन करे वेदमाता जपवावे ॥ फिर प्रेतादिक बाधक ढूंढी नहिं पावे ॥

अथ भूत ज्वरका इलास या अंजन लिख्यते

॥ सोरठा ॥

नीका हींग मंगाय ल्हसन जलमें घोलिये
अंजन नैन लगाय वाकि चिनले संूघिये

॥ अथ प्रेतादिक ज्वरको तंत्रभाषा ॥

रबीवारको स्नान कर सहदेई की जड़ लावे व तुलसीप

१८ स्याह मिरच तीनों चीज़ो को तावीज़ में रख गले में बांधे तो प्रेत ज्वर जाय और रोगी आनंद होय॥

अथ चोट लगने से हुवा जो ज्वर तिसके जतन लिख्यते॥

॥ दोहा ॥

शस्त्रों की जो चोट से भरै अंग में वाय ॥
सोइ बिगाड़े खूनको फिर सूजन हो जाय॥

कुंडलियां॥ अंग सूजन जब होय देह में ज्वर चढ आवै लंघन ताको मने दूध अरु मिसरी प्यावै॥ मधुर चीक-ना खाय चोट पै हलदी लावै॥ पट्टी बंधन सेक जतन से धूब करावै॥ ॥ अथ भूत उतारने को मंत्र ॥

ओं नमो ऊं ह्रीं नमो भूतनायक समस्त भूतन भूतानि साधय २ हूं २ इस मंत्र को मोर के पंखसे झाड़ा दीजे तो भूतादिक निकले ॥ ॥ दोहा ॥

नारी पूछे वैद्य से सुनियो वैद्यक राज ॥
विषमःज्वर लक्षण जतन मोहि बतावो आज

॥ दोहा ॥

नारी के सुनकर बचन बोले वैद्य सुजान ॥
विषमःज्वर के भेद बहु तिनमें चार प्रधान॥

प्रथम जो रोज आवै तिसे संतत कहते हैं, दूसरा

जो एक दिन छोड़कर आवे सो एकांतरा है तीसरा जो दो दिन छोड़के आवे सो तिजारी कहाता है चौथा चातुर्थिक जिसे चौथिया बोलते हैं विषमज्वर वाले को मूंगका या मोठ की दाल का पानी पथ्य देना चाहिये

॥ अथ काढा चौपाई ॥

नवल गिलोय नीम की छाल॥ हिड़ पटोल इंद्र जव डाल॥ कूठा जवासा सुंदर लाव॥ सबै बराबर भाग मिलाव॥ टंक प्रात अरु टंक हि शाम॥ कर काढा जो प्यावे बाम॥ सात दिवस बिन नागा प्यावै॥ संतत ज्वर की मूल न पावै॥ ॥ अथ शीत ज्वर वाले को चंदन शुद्धादिक काथ चौपाई॥ नागर मोथा चंदन सोंठी॥ भाडंगी पदमाख अनोठी॥ पोहकर मूल नीम की छाल॥ पीतपापड़ा धनिया डाल॥ दोऊ कटेली इंद्र जौ॥ पत्र पटोल अडू सालौ॥ कुटकी और त्रिफला लाव॥ नीकी हीरन गिलोय मंगाव॥ भाग बराबर सबले आवे॥ जौ कुट करके काथ बनावे॥ दो दो टंक दोऊ रवन प्यावे॥ दश दिन अवधी वैद्य दनावे॥ शीत ज्वर फिर रोगी से जावे॥ जैसे घन दल पवन न सावे॥ अथ विषमज्वर के लिये षोडशांग चूर्ण॥ चौपाला फल प्रथम त्रायमाण पुन नागर मोथा धनि सो॥

सोंठनीमकीछालकटेली कुटकीलेय अमीनया॥ पीपल पीतपापड़ा प्यासलेयपटोल अलवेली॥ स्वच्छकचूर काकड़ासींगी हैड़ गिलोय नवेली॥ तोलबराबरसबये औषधि कूट कपड़छन कीजे॥ आठदिवस लो फंकी इसकी सवाटंक भरलीजे॥ शीतलजलके साथ फंकावि दोनो रवनओपधारी॥ विषमज्वर की जड़को अंगसेनिकलेय उपारी॥ ॥ अर्थ ॥

फूलप्रियंगू बायपाग्रा नागरमोथा धनियां सोंठ नीमकीछाल कुटकी पीपल पित्तपापड़ा पटोल कचूर काकड़ासींगी हैड़ गिलोय दोनोकटेली येसबबराबर लेकूटकपड़छन करचूरणा४माशेताजे पानीकेसाथ ८ दिन खाय तो विषमज्वरजाय॥

॥ औरजतन ॥ दोहा॥

सोंठचिरायता पिप्पली कुटकी हैड़ नवीन ॥
बायबिडंग निसोत पुन छाल नीमकी चीन्ह

चौबोला॥ छालनीम पुन चीन्ह मँगावो नागरमोथा प्यारी भागबराबर कूट पीसकेर छानधरे सुधारी॥ टंक२ भरसात दिवसलौं गरमनीरसे लीजे॥ भूषकरे पित चैनधरे अरु विषमज्वर भव छीजे॥ ॥ अर्थ ॥

सोंठ चिरायता नीमकीछाल पीपल कुटकी हेड़का बक्कल वायविड़ंग निसोत नागरमोथा येसब बराबरले चूर्णकोर चार२ माशे गरमपानीसे ७ दिनतक फांके तो विषम ज्वरजाय भूषलगे चित्तको चैनमालूम हो ॥

पुराने बुखार को मालती बसंत लिख्यते दोहा

वरक कनक इक भागले दूने मोती डार ॥
तीन भागले हींगलू स्या मिर्चों के चार ॥

रोड़ा छंद ॥ स्यामिर्चों के चार बराबर सबके घीपाडारि नींबूरस में घरल करे जबतक चिकनई सिधारि ॥ रत्तीसे थेरत्तीतक अनुमान सुजान बतावे ॥ पीपल शहतमिला जो चाटे जीर्णबुखार नसावे ॥ मूत्रकृच्छ्र संग्रहणी षासी स्वासप्रदर जो होवे ॥ गरमीका दुख धातुविकारी सबको येरसखोवे ॥ ॥ अर्थ ॥

सोनेके वरक माशा १ मोती माशे २ हींगलू माशे ३ स्याह मिरच माशे ४ सबके बराबर घीपाडाल घड़ल में रख नींबूके अरक में घड़ल किये जाय जब चिकनाई जातीरहे तब एक रत्तीसे दो रत्तीतक पीपल शहद मिलाय के चाटे तो पुराना बुखार खांसी स्वास प्रदर

संग्रहणी मूत्रकृच्छ धातुके विकार श्रोरगरमीके सवरोग दूरहोंय॥ ॥श्रथसुदर्शनचूर्णलिख्यते॥ दोहा॥

त्रिकुटा त्रिफला इंद्रजव चंदन वायविडंग
पीतपापड़ा फटकरी चीता श्रौर लवंग॥

कुंडलियां॥ चीता श्रौर लवंग वंसलोचन श्ररु ईंगी॥ त्रायमाण षसमोथा श्रजवायनभाडंगी॥ तज कचूर पदमाष श्रडूसा नेत्रवाला॥ चव्य सहंजना वीज मुलेठी नीमकि छाला॥ कवलगटेकी गिरी मूर्वा पुहकरमूला॥ देवदारु वच दारुहल्द पत्रजमी तूला॥ धनियां श्रौर श्रतीस कटेली दोनों प्यारी॥ नवलपीपलामूल षारहटी चंद उजारी॥ कुटकी श्रौर पटोल दवा सब कूटछनावो ॥सबसे श्राधा गिलोयका चूर्ण बनावो॥ दोहा॥

शीतलजल संग टंकभर फांके प्रातस्काल
नाम सुदर्शन चूर्ण यह विषमःज्वरको काल

श्रर्थ॥ सोंठ मिरच पीपल हैड़ वहेड़ा श्रांवला इंद्रजौ चंदन वायविडंग पीतपापड़ा फटकी चीता लौंग वंसलोचन त्रायमाण षस मोथा श्रजवायन भाडंगी तज कचूर पदमाष श्रडूसा नेत्रवाला चव्य सहंजनेके वीज नीमकी छाल

मुलेठी कंवल गट्टे की गिरी एला पोहकरमूल देव दार बच दारहलद पद्माख धनियां अनीम कटेली दोनो पीपलामूल भारङ्गी कुटकी पटोल ये सब औषधि कूट कपड़ छनकर ४ मासे ताजे जलसे फांके तो विषम ज्वर जाय इस चूरणका मैंने खुद खूब तजरबा कियाहै थोड़े दिनों में ज्वरको निकाल दिया औरोंकोभी दिया सबने तारीफ की यह चूर्ण सब ज्वरों कोफायदे मंद है जैसे सुदर्शनचक्र सब दुष्टोंकोमार जक्त की रक्षा करना है ऐसेही ये चूर्ण सब ज्वरों का नाश कर देहकी रक्षा करना है ॥

अथ मल ज्वरके लक्षण जतन लिख्यते

॥ दोहा ॥

वमन दाह भ्रम मूरछा मुखसूषा अरु सूल
पल पल में हिचकी चले लीजे पीपल मूल

कुंडलियां ॥ लीजे पीपलमूल हैड़ कुटकी अरु मोथा किरमाला की गिरी बराबर सब अवशोधा ॥ टंक टंक भर डाल क्वाथकर देय पिलाई ॥ मलज्वर कीसब व्यथा फेर ढूंढी नहिं पाई ॥ अथ पीपलामूल हैड़ कुटकी नागरमोथा किरमाला

कीगिरी पससबराबर ले कूट ४ माशे का काढ़ा कर पिलावे तो मलज्वर दूर होय ॥

अथ गर्भवती स्त्री के रोग के लक्षण जतन

॥ प्रश्न स्त्री का दोहा ॥

गर्भवती जो नार है ताहि सतावे ताप ॥
तिसके ज्वर को जतन क्या मो है बतावो आप

कुंडलियां ॥ मोहि बतावो आप औषधी क्या दे दीजे ॥ जिन जतनों से बाल बचे अरु व्याधा छीजे ॥ तुम हो चतुर प्रवीन दीन्ह के पालन हारे ॥ गर्भवती का रोग जाय किस विध से प्यारे ॥

॥ उत्तर वैद्य का दोहा ॥

गौरीसर पस दाख अरु महुवा चंदन लाल
नेत्रवाल मिसरी धणा और मुलेठी डाल

कुंडलियां ॥ तोल सबन को लेय बराबर खूब उबाले ॥ जब का ढा पक जाय पीस कर मिसरी डाले ॥ गर्भवती को देय सात दिन तक यह प्यारी ॥ ना जानूं कहां जाय गर्भ ज्वर की बीमारी ॥

॥ अर्थ ॥

गौरीसर पस दाख महुवा लालचंदन धनियां नेत्रबाला मिसरी मुलेठी सबको बराबर ले पीस काढ़ा करै फिर मिसरी डाल गर्भणी को पिलावे

तो ज्वर जाय॥

॥ अथ प्रसूतिका को दश मूल का काढ़ा ॥ दोहा ॥

अरलू बेलोंकीगिरी अरणी पाठ कुंभेर ॥
गोक्षुर पीपल कंटकी शालपरणि पुनगेर ॥

॥ अर्थ ॥ अरलू बेलगिरी अरणी पाठ कुंभेर गोखरू पीपल दोनों कटेली शाल परणी ये सब बराबर ले कूट काढ़ा कर पिलावे तो प्रसूत का रोग जाय प्रसूतिका ज्वर वाली के अंग फूटनी होय शरीर भारी रहै और गरम रहै शरीर कांपे प्यास बहुत लगे सूजन होय और अतिसार ये लक्षण देख प्रसूतिका ज्वर जाने ॥ ॥ अथ प्रसूतिका को और जतन ॥

अजमोद वंसलोचन खैरसार विजयसार सौंफ धनियां मोचरस ये सब कूट चूर्ण कर २ तोले का काढ़ा कर १० दिन दे तो प्रसूतिका को ज्वर जाय ॥

॥ अथ बालकों के इलाज लिख्यते ॥

॥ प्रश्न स्त्री का दोहा ॥

बालक के जो रोग हैं ज्वर आदिक बहु भांत
तिन हु के लक्षण जतन सब हि सुनावो नाथ

कुंडलियां ॥ सखी हि सुनावो नाथ बाल ज्वर पीड़ा भारी ॥

नापीवे ना खाय यतिन्हे फिर क्यों वीमारी ॥ मिथ्या हारविसरन ही कुछ बालक जाने ॥ तिनको केसे रोग दया कर आप वषाने ॥ ॥ उत्तर वैद्य का दोहा ॥

यामाता या धाय जो गरिष्ट भोजन खाय
भांति भांति के रोग तब बालक को है जाय

कुंडलियां ॥ बालक को जो होय रोग नवयह विध कीजै जिसका पीवे दूध तिसे पथ हलका दीजै ॥ वक्कल हैड़ मुलेठी नागर मोथा लावै ॥ डाल पटोल बराबर चारों कुटवावै ॥ ले माशा भर एक क्वाथ दिन सात पिलावै बालक को ज्वर जाय सुजान वषान सुनावै ॥

॥ अर्थ ॥ हैड़ का वक्कल मुलेठी नागरमोथा पटोल इन चारों का काढ़ा कर माशा १ प्रकाय बालक को सीपी से दे तो ज्वर जाय बरस दिन तक के बालक को ६ माशे काढ़ा दे साल भर से ज्यादे अवस्था का हो तो तोला भर इसी अंदाज से ज्यादे देना जाय ॥

॥ और जतन ॥

कूड़ अरु पील मुलेठी मडुवा चारों को बारीक पिसा वा शहद संयुक्त चटावे माशा भर तो बालक का ज्वर जाय ॥ अथ बालक को अतिसार सहित ज्वर होय

॥ तिसकाइलाज दोहा ॥

नेत्रवाला इंद्रजव धायफूल अतिसार ॥
बेलगिरीधनियांनवलसबसमकरिके डार ॥
दोमाशेकाक्काथकर अनसमैनिजदेय ॥
बालककोअतिसारज्वरनिश्चैयेहरलेय ॥

अथबालककोकृमिज्वरकोलक्षणजतन

दो॰ वर्णविवर्णशरीरकाम्शूलपेटमें होय ॥
वमनकरेदुःखेहियादूधनपीवैकोय ॥

कुंडलियां ॥ दूधनपीवैकोयउदरमेकीड़ेजानो ॥ वायविडंग पलास सहंजनेकीजड़आनो ॥ नागरमोथ्या नीवछालकोकूटसवांरो ॥ नवलपटोलमंगाय देवदारूभीडारो ॥ सबाकत्रीमलायकूटदोमासेडारै क्वाथसातदिनदेयउदरकृमिनाशसिधारै ॥

॥ अर्थ ॥ बालककावर्णविवर्णहोजाय यानिऔरसेऔररूपहोजायपेटमेंदर्दहोय हियादुःखे वा द्रूवमनकरैभ्रमहोयभोजनमेंरूचनहीहोयअतिसार होयतो ये औषधदीजे पलासपापड़ा नीमकीछाल सहंजनेकीजड़ नागर मोथा देवदार वायविडंग ये सबकूट दो दो मासेकाकाढ़ाकरदोनोंवख

त ९ दिन देनो क्रमि ज्वर जाय ॥ + ॥ + ॥ + ॥ ॥

॥ अथ ज्वरकाकुटंबलिख्यते ॥

ये उपद्रव ज्वरके साथमें हो जाते हैं पहले ज्वर होय बाद उसके इन उपद्रवोंमेसे हो जातेहैं सो ज्वर का कुटुंब है ॥ ॥ कवित्त ॥

कोटी पत्नी प्यास भूष ताथकी है बडी नारी स्वांस कास पुत्र दोऊ ताके बलवान हैं ॥ हिचकी मवन दोउ पुत्रियां सुघर ताकी जाको लग जाव ताके हरन औसान है ॥ अतीसार भाई और अरुचि बह नराक दोनो ये सटाय देत अन्नजामें प्रान हैं ॥ ससुर अफारा जानो बंद कोष्ट भान जा है मूरका है बांदी ताने भनत सुजान है ॥ ॥ अर्थ ॥

ज्वरके भूष और प्यास दो स्त्री हैं ॥ षांसी और स्वांस दोनो पुत्र हैं ॥ हिचकी और वमन दो पुत्री हैं ॥ और इसका दूसरा भाई अतिसार है ॥ अरुचि ज्वर की बहन है ॥ अफारा ज्वरका सुसरा है ॥ और बंध कोष्ट भानजा है ॥ जब ज्वर और अतिसार दोनो भाई इकट्ठे होंय बहुत उपद्रव करते हैं ॥

॥ तिनका जतन लिख्यते दोहा ॥

नवल अतीसमंगाइये और कुडाकी छाल
सोंठ गिलोय चिरायता नागर मोथा वाल
कुंडलियां ॥ नागरमोथा वाल बराबर सबै मिलावै ॥
माशे चार पकाय क्वाथ दिन सात पिलावै ॥ दोनों खव
ये क्वाथ देय विन नागा धारी ॥ होय प्रसन्न सुजान नाश
अतिसार विसारी ॥ ॥ अर्थ ॥
अतीस कुडेकी छाल सोंठ गिलोय चि
रायता नागर मोथा ये सब बराबर लाय ४ माशे
का काढा कर ७ दिन पिलावै तो अतिसार जाय ॥
॥ औरजनन कुंडलिया ॥
नागरमोथा सोंठ इंद्रजव चित्रक प्यारी ॥ चव्य पीप
लामूल कुडाकी छाल विचारी ॥ छोटी पीपल वेल
गिरीसम औषधि सारी ॥ टंक २ का क्वाथ दीजिये कन
दुलारी ॥ स्वांस कांस अरु प्यास शुष्क मुख हिचकी
जावै ॥ ज्वरपल्ली पित्तुसहित फेर ढूंढा नहिं पावै ॥
॥ अर्थ ॥ नागरमोथा सोंठ इंद्रजव चीता
चव्य पीपल पीपलामूल कुडेकी छाल वेल
गिरी ये सब बराबर ले ४ माशे का काढा करदोनो वक्त दे
७ दिन तक तो षांसी स्वांस तिस मुख की खुश्की हिचकी अफा

दूर होय ॥ अथ ज्वरमें अत्यंत प्यासका जतन

॥ रोड़ा छंद ॥

नागरमोथा पीतपापड़ा धनियां कूट कनावै
टंक २ का काढ़ा करके तीन दिवस लों प्यावै
प्यास दाह अतिसार सीत ज्वर ढूंढ़ा कहीं न पावै
परमानंद सुजान काथ यह लष २ ग्रंथ्य वनावै

॥ और जतन रोला छंद ॥

कमलगटा अरु बड़का अंकुर षील धान ये तीनो ॥ नो
लवण वर पीस शहद में गोली बांधन वीनो ॥ जोयह गोली
मुखमें राखे प्यास दूर होजावै ॥ परमानंद सुजान गोलि
का लष २ ग्रंथ्य वनावै ॥

अथ ज्वरमें खांसीका जतन लिख्यते

॥ चौपाई ॥

पीपल भाड़ंगी अलवेली ॥ सोंठ पीपलामूल कटेली
नयेबहेड़े और अडूसा ॥ सवसम कूट कीजिये भूषा
षैरसार कुलीजन डारै ॥ टंक एक भर काथ उवारै ॥
तीन दिवस लों जो यह पीवै ॥ षांसी ज्वर पुरवी होजीवै

॥ अर्थ ॥ पीपल भाड़ंगी सोंठ पीपलामूल
कटेली बहेड़े का बकल अडूसा खैरसार कुलीजन

येसबबराबर ले कूट काढा ४ माशेका कर ३ दिनपिलावे तो ज्वरकी षांसीजाय ॥

॥ अथ ज्वरमें स्वासकाजतन लि० ॥

रोलाछंद

पीपलमिरच सोंठभाडंगी पोहकरमूलहलीजे ॥
कठी काकड़ासींगीसप्तम मोथा सबसम कीजे ॥
टंक २ भरकाढ़ाकरके सात दिवसलों प्यावै ॥
ज्वरमें स्वास सुजानवषाने तुरत दूर होजावै ॥

॥ अर्थ ॥ पीपल मिरच सोठ भाडंगी पोहकरमूल काकड़ासींगी मोथा येसब बराबर ले ४ माशेका काढ़ाकरके ७ दिन तक दे तो ज्वरको स्वासदूर होय ॥ अथ ज्वरमें हिचकीकाजतन

॥ सोरठा ॥

सेंधानमक मंगाय पीस झलास कराइये
छिनमें हिचकी जाय सूंघे होगक बारजो

अथ ज्वरमेंवमनकाजतन ॥ सोरठा

लेके टंक गिलोय कूट काथ करलीजिये
तामें शहद मिलाय वमनहोय तो दीजिये

॥ और जतन चौपाई ॥

प्रथमहि छोटी पीपल लावै॥धानषील सममाग मिलावै
पीस शहदमें डाल चटावै॥ ज्वरकी छर्दि दूर होजावै
॥अर्थ॥ पीपल धानकी षील दोनोंको पीस शह
दके साथ चटावै तो छर्द्द दूर होय॥

अथ ज्वरमें मूर्छाका जतन॥ चौपाई॥

किरमालाकी मींग सुवाल॥पीतपापड़ा रूंडकी छाल
चौथा दाष सबै सम कीजे॥टंक२काढ़ा कर दीजे
ज्वरकी मूर्छा निश्चय जावै॥वैद्यक देख सुजान बतावै
॥अर्थ॥ किरमालाकी गिरी पित्तपापड़ा रैंड़
का बक्कल दाष येसब बराबर डाल ४ मासेका
काढ़ा करके पिलावै तो मूर्छा जाय॥

अथ ज्वरमें बंधकोष्ट और अफारेका जतन
॥दोहा॥

साबनकी बाती करै धरै गुदाके मांहि॥
बंधकोष्ट ज्वर नारि पितु छिनमें दोनो जांहि

अथ ज्वरमें मुखशोष और जीव रोंठन लगेति
सका जतन लिख्यते॥ सोरठा॥
मिश्री और अनार॥दोनो जलमें घोलके॥
करकुल्ले दोचार॥मुखकी षुरकी दूर हों॥

अथ ज्वरमे नीद न आवे तिसका जतन

आल्वुषारा १ सेकी भांग तिन १ दोनोको पीस शहद मे मिलाय चटावे तो नींद आवे मंग्रहणी जावे भूख लगावे या अरंडीका तेल और अलसीका तेल इन दोनो को कांसीकी प्यालीमें हथेलीसे घिस अंजन करे तो नींद आवे ॥ इति आठों ज्वरके लक्षण जतन संपूर्णम्

अथ अतिसार रोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिख्यते ॥ ॥ प्रश्न स्त्रीका दोहा ॥

तपका भाता जो कहा और एक अतिसार
ताके अब वर्णन करो लक्षण जतन प्रकार

कुंडलियां ॥ लक्षण जतन प्रकार कहो अतिसार पियार ॥ इसके रोगी फिरें जगतो दूषित विचार ॥ जो२ भोजन करें उदरमें पचता नांही ॥ पीर पगोंमे होत रगोंमें रम नहिं जाही ॥

अथ अतिसारकी उत्पत्ति लिख्यते
॥ उत्तर वैद्यका दोहा ॥

गरिष्ट भोजन जो करे ठंडी वस्तु जु षाहि
भोजनपे भोजन करे अतीसार कहनाहि

कुंडलियां ॥ अतीसार कहनाहि होय पुत्र विपक खाये

यारी के मल्नमुत्र चीक वा भोजन पाये ॥ या जो रूखा भषै
प्यवा पतला कर पीवे ॥ बढ़ै उदर जल धातु सुखी होकै मे
जीवे ॥ अग्निमंद होजाय पवन संग विष्टा आवे ॥
मल उतरे अत्यंत रोग अतिसार कहावे ॥

अर्थ

गरिष्ट भोजन के करने से सीतल वस्तु विशेष खाने से भो
जन के बाद तुरतही भोजन करने से विष आदि के खा
ने से मल के रोकने से चिकनाई ज्यादे खाने से रूखा खाने
से भोजन पतला करके पीने से उदर में जल धातु बढ़
ताहै और जठराग्नि को मंद करताहै बाय के साथ वि
ष्टा आजाताहै और मल बहुत उतरताहै उसे अतिसा
र कहतेहैं सो अतिसार छह प्रकार काहै ॥

दोहा

प्रथम बाय पुनि पित्त का तीजा कफ का जान
सन्निपात का सोच का षष्टम आम सुजान

बाय अतिसार १ पित्तातिसार २ कफ अतिसार ३
सन्निपात अतिसार ४ सोच अतिसार ५ आम
अतिसार ६ ॥

अथ पित्तके अतिसारके लक्षण जतनलि०

कुंडलिया॥ लाल हरत औ पीत रंग मल में दरसावै॥
पुनष तन्ना मूर्छा नाथ पसीना पल पल आवै॥ दाह मूर्छा
प्यास गुदा सोप कपक जावै॥ परमानंद सुजान पित्त अति
सार बतावै॥ ॥ अथ पित्तके अतिसारके जतन ॥
कुंडलिया॥ नेत्रवाला बेलगिरि अरु नागरमोथा॥ चौ
थाउ अतीस सबै सम लेअबलोथा॥ दो दो टंक पकाय
काथ दिन आठ जो प्यावै॥ परमानंद सुजान पित्त अ
तिसार नसावै॥ ॥ अर्थ ॥
नेत्रवाला बेलगिरी नागरमोथा अतीस येसब
बराबर लै २ मासे का काढा कर ८ दिन देनो पित्त अति
सार जाय॥ ॥ अथ पित्त अतिसार को औरजतन ॥
कुंडलिया॥ सुभग अतीस मंगाय सोंठ दूं दू जव डारै॥
धावकफूल रसौत सबै सम पल पचारै॥ पीसकपड छनके
चूर्ण दो टंक बनावै॥ नीका शहद मिलाय सबै दिन
चाटनदीखावै॥ ॥ अर्थ ॥
अतीस सोंठ दूंदू जव धायकेफूल रसौत
येसब बराबर ले चूर्ण कर २ मासे शहद के साथ और
खाय सो पित्त अतिसार जाय ॥

और पित्त अतिसारको रक्त अतिसार भी कहते हैं जो बहुत गरम चीजें खाई जावें तो उनके साथ रुधिर आता है ॥ ॥ अथ रक्त अतिसार को जतन ॥

॥ दोहा ॥

॥ छाल कुड़ाकी लाइये अरु अनारकी छाल
एक टकाभर ले दोऊ काढ़ा कीजे बाल
सोरठा ताम डारे लाय पांच टंक पुन शहत हू
रक्त अतिसार नसाय सात दिवस लों लीजिये

अर्थ ॥ कुड़ाकी छाल अनारकी छाल दोनो टकाभर ले काढ़ा कर ५ टंक शहत डाल ७ दिन पीवे तो रक्त अतिसार जाय॥ रक्त अतिसार को और जतन सोरठा ॥ नवल कुड़ाकी छाल छिलका लेय अनारके मोथा चंदन लाल पाठ धायके फूल हू नेत्रवाल अतीस सब औषधि समकर धरो डार षरल में पीस टंक तीन को क्वाथ कर शहत टंक दो डार काथ सात दिन पीजिये जाय रक्त अतिसार अलदाद को साथ ले॥ अर्थ कुड़ाकी छाल अनार का छिलका मोथा लाल चंदन पाठ धाय के फूल अतीस नेत्र वाला येसब दवा बराबर ले कूट कर

१ मासेका काढ़ा कर ७ माशे शहद मिलाय ७ दिन देतो रक्त अतिसार दाह सूल सहि न जाय ॥

रक्तातिसार को और जतन चौपाई

चंदन माशे चार जु लावे॥ तातें दूनो शहद मिलावे ॥
दस मासे भर मिसरी डारे॥ चाटन ही अतिसार सिधारे
आठ दिवस तक कीजिये यह औषधि समभीन॥ परमा नंद सुजान फिर अतिसार ले जीन॥ अन्य ॥
सफेद चंदन माशे ४ शहद माशे ८ मिसरी माशे १० इन तीनों को बारीक पीस ८ दिन चाटे तो रक्त अतिसार दूर होय॥ और जतन दोहा

अजा दूध संग पीजिये मिसरी माषन मीन
रोग रक्त अतिसार को तिस्मै लेवे जीन

अथ गुदा पक गई होय तिसका जतन

॥ दोहा ॥

अजा दूध संग पीजिये मिसरी शहद मिलाय
गुदा पकी के रोग को निश्चै देय नसाय

अथ श्लेष्मातिसार को लक्षण जतन लिख्यते दोहा

मल चिकना गाढ़ा गिरै स्वेत रंग दरसाय ॥
दुर्गंधा अरु सरद हो उनरन उदर पिराय

कुंडलिया ॥ उनरत उदरी पथ्य देह भारी होजावे ॥
भाजन में रुचनादिक दोष फिर कावर खावै ॥ जिसको
होय हरोग चार लंघन करवावे ॥ नवीन स्कोपथ्य
मूंग दालका नीर पिलावे ॥

अथ श्लेष्मातिसार वाले को काढा ॥ सोरठा ॥

सोंठ कुडाकी छाल ॥ कुटकी चव्य अतीस पुनि ॥
वेलगिरि तज जाल ॥ कूट पाठ बाउरिये ॥
ले दो टंक पकाय ॥ इन सबके सम भाग करि ॥
श्लेष्मातिसार नसाय ॥ सात दिवस लों दीजिये ॥

॥ अर्थ ॥ सोंठ कुडाकी छाल कुटकी चव्य
अतीस वेलगिरी तज कूट ये सब औषध बरा
बर ले कूट काढा आधी का करे ७ दिन पिलावे तो
श्लेष्मातिसार जाय ॥ ॥ और जतन ॥

॥ चौपाई ॥

पीपल मिरच स्याह सुन प्यारी ॥ सोंठ अतीस निमक काली
हींग भूनकर तिसमें डारे ॥ सब समान ले चूर्ण संवारे ॥

॥ दोहा ॥

सात दिवस परियंत लों प्रतिदिन माशे चार
जो इसको फांके सुघर हरे श्लेष्म अतिसार ॥

अर्थ ॥ पीपल स्याहमिरच सोंठ अतीस कालानमक धनाहींग ये सब बराबर ले चूर्ण करै ७ दिन तक चार मासे रोज फांके तो बेग अतिसार जाय ॥ ॥ अथ सन्निपात के अतिसार को लक्षण ॥

॥ चौपाई ॥

तीनों मेरे लक्षण जाके ॥ मोह होय पुन चित भ्रम ताके प्यास अधिक सूल सुतांहीं ॥ भांति २ का रूप जु करै ॥ मल सूकर का मांस जु जानें ॥ सन्निपात अतिसार बखानें जो यह रोग बालक के वृद्ध के और स्त्री के होय तो असाध्य जानिये ॥

अथ सन्निपात के अतिसार को जतन

॥ दोहा ॥

पीपल चीता इंद्रजव पाषाणभेद सुवाल ॥
बेलगिरी अरु चव्य पुन सोंठ कुड़ाकी छाल

कुंडलिया ॥ सोंठ कुड़ाकी छाल पीपलामूल विशाल सब सम का दो टंक पकावे काथ सुहाल ॥ दस दिन लौं यह काथ बिना नागा जो पीवे ॥ सन्निपात अतिसार जाय वह रोगी जीवे ॥ ॥ अर्थ ॥

पीपल चीता इंद्रजव पाषा पाट बेलगिरी

चव्य सोंठ कुड़ाकी छाल पीपला मूल त्रिफला ये सब औषधि बराबर ले कूट २ माशे का काढ़ा कर १० दिन दे तो सन्निपात का अतिसार जाय ॥

और जतन चौपाई

मोथा जंगी हरड़ नवीली ॥ सोंठ पीससब रंग रंगीली ॥
नोनपुराणागुड़ सम लीजे ॥ टंक दोयभर गोली कीजे
सोना दिवस जो गोली षावै ॥ तो त्रिदोष अतिसार समावे
अर्थ ॥ मोथा जंगी हड़ सोंठ ये तीनो बराबर पीस पुराणे गुड़ में मिलाय २ माशे की गोली बांधे ७ दिन तक एक गोली खाय तो त्रिदोष अतिसार जाय ॥

अथ शोक के अतिसार के लक्षण

सोरठा ॥

उपजत दिरघ जो सोच पत्नी धन सुत नाश ते
करे अग्नि को पोच और बिगाड़े रक्त को
कड़ा ॥ और बिगाड़े रक्त उदर में तेज जु जावै ॥
मलसंग मिलकर रक्त गुदा के द्वारा आवै ॥ ऐसे
लक्षण देख शोक अतिसार बतावे ॥ अथ आम
अनिलगे भयातिसार कहावे ॥

॥ अथ आमातिसार लक्षण ॥

॥ दोहा ॥

उदर अजीरण अन्नका पुन गरिष्ट जो षाय ॥
वायपित्त कफ के सहित अन्न को षमें जाय
धातुसमूह बिगारके मलको करै विकार ॥
दुरगंधी तिसमें उठे गिरे गुदा के द्वार ॥
एंगसेतस्पुन चीकना आम सहित मल जाय
डूबे आमजु वारि मे मल जल मैं तैराय ॥
लक्षण आमातिसारके कहे सकल समझाय
अब चित दे सुन लीजिये जतन कहूं सन माय

अथ आमातिसार को जतन

कुंडलिया ॥ नागर मोथा बेलगिरि धनिया पुन ली जे ॥ नेत्रबाला सौंठ बराबर सबको कीजे ॥ जौकुट करके टंक दोयभर काथ पकावे ॥ सात दिवस जो देय आम अतिसार नसावे ॥ अर्थ ॥
नागरमोथा बेलगिरी धनिया नेत्रबाला सोंठ ये सब बराबर ले जौकुट करके २ मासे का काढ़ा करके सात दिवस तक देतो आमातिसार जाय तथा रोगको देषके १० दिन या १५ दिन तक देतो अतिसार जाय ॥ यह धान्य पंचक है ॥

अथ आमातिसारका और जतन

चौपाई ॥ जंगी हरड़ अतीस नवीली ॥ मोथा सोंठ सुरंग रंगीली ॥ इन्द्र दारु बराबर लीजे ॥ कूट टंक दो काढा कीजै
सात दिवस जो काथ जु प्यावै ॥ आमातिसार दूर हो जावै

और जतन चौपाई

सैंधा नमक अतीस सुहागना । जंगी हरड़ हींग वड़भागन
सोंचर नौन सगा वषियारी । सबको समकर कूट वछनारी
माशे आठ चूर्ण नित खावै । गरम नीर ऊपर से प्यावै ॥
आमातिसार व्याधि यह नासै । परमानंद सुजान प्रकासै

अर्थ ॥ जंगी हरड़ अतीस मोथा सोंठ दारुहल्द
ये सब बराबर ले जौकुट करके धरे आशे का काढा
करे ७ दिन तक पिलावे तो आमातिसार जाय और जतन
सैंधा नमक अतीस जंगी हरड़ भुनी हींग सोंचर नोन ये
सब बराबर ले कूट छानकर ८ माशे गरम जल
के साथ दे तो आमातिसार जाय ॥

अथ पक्कातिसार को जतन

॥ दोहा ॥

बेल गिरी मोथा नवल और धाय के फूल
इंदर जव पुन आंवकी गुठली सब सम तूल

परमानंद सुजान ग्रंथ अनख यत्नबतावै॥ अर्थ॥
बेलकीगिरी और आंबकी गुठली इन दोनोंकोकु
काढा ८ माशेकाकरे ८ माशे शहत और ८ माशेमिस
री मिलायकर सातदिन पीवैतो छर्दै अतिसार जाय

और जतन

सूंप चावलकी खील दोनोको औटाय शहद मिसरी
मिलाय पीवैतो छर्दै अतिसार जाय॥

अथ बातपित्तकफ रुधिरके अतिसारके लक्षण जतनलि

॥ दोहा॥

मलउतरत पीड़ा बहुत सो बातीतक अतिसार
जामें दाह उठै घनी पित्तऽतिसार विचार
कफमल संग उतरे जिसे सोकफ हीकीजान
रुधिरसहित जो मल गिरे लोहूकीर बखान

अथ चारों अतिसारको जतन दोहा

बेलगिरि काली मिरच तीजो लोध मिलाव
इन तीनोंको पीसकै दो पैसेभर खाव॥
शहद टंकभर डारकै चाटै औषधि जोय
अतीसार मोड़ेसहित नासजु रोग सब होय

अर्थ॥ बेलगिरी काली मिरच लोध ये तीनो बराबर

पीसके टोपैसेभरमें ४ माशे शहद मिलाय चाटै तो अतिसार मोडे निवारिहोजाय तथा धायके फूल पीस कर दही के साथ षायतो मोडे निवारिहोजाय अथवा कैथकारस टंक ५ शहद के साथ पीस ७ दिन पीवे तो मोडा निवारिहोजाय ये सब लक्षण और जतन भावप्रकाश का आशय है॥

अथ आमातिसार को और जतन ॥

हड़ की छाल बघिक पीस कर ८ माशे शहद में मिलाय कर षायतो आमातिसार जाय ॥ अथवा बेल टंक २ मिसरी टंक १० मिलाय ७ दिन षाय तो पुराना अतिसार भी जाता रहे ॥ अथवा बिलगिरी माशे ८ बकरी के दूध के साथ ७ दिन पीवे तो रक्तातिसार जाय यह वैद्यविनोद का आशय है

॥ अथ और जतन लिष्यते ॥

पीपल सेंधा नोन हींग भुनवाकर आरे॥ जीरा अरु अजमोद सोंठ सब सम कर धारे॥ दही मठा में आध टंक दीजिये पीजे॥ भूषकर अतिसार आम नाश अरु शूल दूर कीजे॥ अर्थ॥ पीपल सेंधा नमक भुनी हींग जीरा अजमोद सोंठ ये सब बराबर ले पीस ८ मासे भर

जो यह औषधी भद्र सहित नित दिन खाय सुजान
संग्रहणी मेरे सीह तो दिन दिन घटती जाय
अर्थ ॥ नागरमोथा मोचरस धाय अफीम बेल
कीगिरी इंद्रजव धायके फूल सोधापारा सो
धी गंधक ये सब औषधि बराबर ले प्रथम पारे गंध
क की कजली कर फिर और सब औषधि बारीक
पीस कर मिलावै १ रत्ती छाछ के साथ १० दिन खाय
तो अतिसार मेरे संग्रहणी जाय यह गंभार रस है
अथवा जायफल छुहारे अफीम ये तीनो बराबर
ले पीस कर पान के रस में रत्ती १ प्रमाण की गोली बां
धे १ गोली छाछ के साथ ७ दिन खाय तो भयंकर
अतिसार भी जाय ॥ अतिसार वाले को परहेज

दो० नया अन्न अरु चीकनो भारी वस्तु न खाय
धूप खेद मैथुन गरम भोजन करै न न्हाय

॥ इति अतिसार चिकित्सा ॥

अथ संग्रहणी रोग की उत्पत्ति लक्षण जतन लि०

॥ अथ स्त्री का दोहा ॥

लक्षण जतन अतिसार के लिये सकल उर धार
संग्रहणी के भेद अब कहो सहित विस्तार ॥

चारों कूट बराबर कीजै ॥ टंक दोय भर काढ़ा कीजै ॥
पंद्रह दिवस काय यह दीजै। आम वाय संग्रहणी छीजै
अर्थ ॥ नागरमोथा सोंठ अतीस गिलोय ये चारों
औषधि बराबर ले जौकुट कर ८ माशे का काढ़ा कर १५
दिन देनो आमसहित संग्रहणी वायु की जाय और भूख
बढ़े ॥ वात संग्रहणी का और जतन ॥

॥दोहा॥

चीता पीपल सोंठ अरु चव्य पीपलामूल ॥
पंचों का चूरण करो ले प्यारी सम तूल ॥

काढ़ा ॥ ले प्यारी सम तूल टंक दो चूरण कीजै। तामें
दारु मिलाय दिवस दस लौं यह पीजै॥ सेवन कीजे
दारु जहां तक होवे प्यारी॥ संग्रहणी मिट जाय औ
षधी तीव्र हमारी ॥ ॥ अर्थ ॥
चीता पीपल सोंठ चव्य पीपलामूल ये सब बराबर ले
चूरण करे माशे आठ दारु में डाल पीवे और दारु का
बहुत करके सेवन करे तो वायसंग्रहणी जाय अवश्य
करके ॥ ॥ और जतन दोहा ॥

सो धी गंधक टंक दो पारा टंक प्रमाण ॥
दोनों की कज्जली करी परमानंद सुजान ॥

चौपाई ॥ माशे दसभर सोंठ जु आने ॥ माशे दस पीपल पुन जाने ॥ कालीमिरच टंक दो डार ॥ सेकीभांग जु पैसा चार ॥ पांचौं नौन लवन ल्यावै ॥ दसमाशे सब तोल मिलावै ॥ पंच टंक अजमोद पियारी ॥ तासम जीरा कन दुलारी ॥ पांच टंक पुन हींग जु लावे ॥ इन तीनो को सेक मंगावे ॥ पांचही टंक सुहागा लीजे ॥ सबको पीस चूर्ण कर दीजे ॥ लेपारे गंधक की कजली ॥ तामें डार वस्तु ये सगली ॥ ॥ दोहा ॥

खरल करे दोदिन इसे खूब चूर्ण हो जाय
पुन दो माशे खाइ संग संग्रहणी में पाय
दूर होय मंदाग्नि सब बावासीर नसाय ॥
संग्रहणीपुन बातकी कमी सहित मिटजाय

अर्थ ॥ सोधी गंधक टंक २ पारा टंक १ इन दोनो की कजली करे बाद इसके इसमें ये दवा मिलावे सोंठ माशे १० पीपल माशे १० स्याह मिरच माशे ५ भुनी भांग पैसा ४ भर पांचों नौन माशे १० भुनी अजमोद माशे २० भुना जीरा माशे २० भुना हींग माशे २० सुहागा माशे २० इन सबको पीस कजली में डार २ दिन खरल करे इस

पैसे ३ मासे से ८ मासे तक गऊ की छाछ में डालकर पीवै तो
बातसंग्रहणी मिटजावै अग्नि तेज करै और कृमि ये सब रोग
दूर होय॥ अथ पित्तकी संग्रहणी की उत्पत्ति और लक्षण लि०

दो० मिरचादिक अति चर्परा वस्तु जो खाय
तिगर्इ पित्त तत्काल है देत अग्नि बुझाय
कच्चा मल उतरै तिसे पतला पीला जान
हिये कंठ में दाह हो अरुचि सहित सुजान
प्यास लगै अति शोष जिस खट्टी उठै डकार
पित्त संग्रहणी जानिये ताके सकल विकार

अथ पित्तकी संग्रहणीको जतन

दोहा

इन्द्र जव तज धाय के फूल रसौत अनीस
इन पांचौं को लायके तोल बराबर पीस॥
टंक दोय गौ छाछ वा चावल जल से खाय
पंद्रह दिन सेवन करै संग्रहणी मिटजाय

अर्थ॥ इंद्र जव तज धाय के फूल रसौत अनीस
ये सब बराबर पीस गौ की छाछ या शहद या चावलों के पा
नी में ८ मासे डालकर पीवै तो पित्त की संग्रहणी जाय

पित्तसंग्रहणी को और जतन

दोहा

पत्रजनगर इलायची पीपल बाय विडंग
चंदन सफेद मधु जायफल कालीमिरच लवंग

कड़ा॥ कालीमिरच लवंग सोंठ जीरा प्रिय प्यारी॥
लोचन वंस कपूर भीम सेनी सुखकारी॥ ये सब स
म कर तोल बराबर मिसरी लीजो कूट कपड़ छन करै
चार मासे नित दीजे॥ बारह दिन लों गौ का छ से
दीजे प्यारी॥ ना जानू कहा जाय पित्त संग्रहणी भारी॥

अर्थ

पत्रज नगर इलायची पीपल बाय विडंग सफेद
चंदन जायफल कालीमिरच लौंग सोंठ जीरा
वंसलोचन भीम सेनी कपूर। ये सब बराबर ले
इन सबसे दोगुनी मिसरी मिलाय। महीन पी
स चूर्ण करै या सब औषधिन के बराबर मिसरी
डाल तो इसी के तुल्य धुली हुई भांग पीस के मि
लावे ये चूर्ण ४ मासे से ६ मासे तक गौ की छाछ
से १२ दिन तक खाय तो पित्त की संग्रहणी जाती
रहै॥

इति पित्त संग्रहणी चिकित्सा॥

अथ कफकी संग्रहणी की उत्पत्ती लक्षणलिख्यते

॥ दोहा ॥

अतिचिकना भारीअतिठंडीवस्तुजुषाय
भोजनपाछै रुसहो दूना अनपच जाय

कड़ा॥ दोनो अनपच जायहियादुखना बन लावै॥ अरुचीपीनष छर्द पेट भारीवत लावै॥ मीठी चलैउकार उठेरवांसी अतिभारी॥ आमसहित होदस्त लगैनहि नारीप्यारी॥निरबलरहे शरीर पुष्टसा देन दिखाई॥ संग्रहणी कफ जानदेष वैद्यक वनलाई॥

॥ अथ कफ कीसंग्रहणी केजतन ॥

चोपाई॥ चीतापीपल मिरचैंकारी॥ हडकी छाल सोंठ पिय पियारी॥ संचर नौन मिलाय जुदीजे॥ सबसम तोल चूर्णकर लीजे॥माशे आठ छाछ संग फांकै॥ कफ संग्रहणी फेरनझांकै॥ पंद्रह दिन यह चूर्णषावे॥ अष लषग्रंथ सुजान बतावे॥ अर्थ ॥

चीता पीपल स्याह मिरच हैडकी छाल सोंठ संचर नौन ये सब बराबर ले चूर्ण कर माशे ८ छाछ के साथ १५ दिन पीवे तो कफ संग्रहणी जाय ॥

॥ अथ सन्निपातकी संग्रहणीके लक्षण

दोहा

मिले वात कफ पित्तके लक्षण जामें जान ॥
सन्निपात संग्रहणी का ताहि बखान सुजान

॥ अथ सन्निपातकी संग्रहणीके जतन

दोहा

नागर मोथा इंद्र जव और कुड़ाकी छाल
बेलगिरी अरु मोचरस षष्टन नेत्तर बाल
सबै बराबर तोलके चूरण लेय पिसाय
अजा दूध संग टंक दो पच्चिस दिन लों खाय
सन्निपात संग्रहणि का करै दूरि यह नाश
ज्यों तारा गण छिपे जब दिनकर होय प्रकाश

अर्थ ॥ नागरमोथा इंद्रजव कुड़ाकी छाल बेलगिरी मोचरस नेत्रवाला ये सब औषधी बराबर ले कूट चूर्ण करै ८ मासे चूर्ण बकरीके दूधके साथ २५ दिन तक खाय तो सन्निपातकी संग्रहणी ऐसे जाय जैसे सूर्य्य के उदय होतेही तारागण छिप जाते है ॥

अथ प्रमेह रोग के नाम लक्षण उत्पत्ति और जतन लिख्यते

प्रश्नकर्त्रीका दोहा ॥

लक्षण जतन प्रमेह के मोसे कहो विचार
यह दुख व्यापत जगत में करत सवन को ख्वार

कुं० ॥ करत सवन को ख्वार रोग यह है दुखदाई ॥ देखत ही खन देह काष्ट सम घुन लग जाई ॥ कहीं दर्द नहिं होय देह निर्बल होजावे घटे आयु बल बुद्धि दुजो रोग उपावै ॥

उत्तर वैद्यका दोहा

प्यारी तैंने सांचीकही है यह अद्भुत रोग
लाखों नो जाने नहीं किये जांय सब भोग

कुं० ॥ किये जांय सब भोग रोग अति बढ़ता जावै ॥ व्याध उठे अनेक बात पित कफ अति आवै ॥ बीस भेद जो कहे कहूं सुन तूं सो प्यारी ॥ तिनके लक्षण जतन औषधी सुन सब न्यारी ॥ अथ बीसों प्रमेह के नाम ॥

उदक इक्षु सिकता कहा सांद्र सुरा अरु शीत
पिष्ट शुक्र पुन लाल शन ये दश कफके मीत

कुं० ॥ क्षार हरिद्रा नील काक पुन रक्त बखानो ॥ इवाम जिष्ट प्रमेह पित्त के ये छै जानो ॥ वसा शुद्ध अरु मधु अरु वसा सनावै ॥ चार जाहा प्रमेह वायु के सु

अर्थ

उदकप्रमेह १ इक्षुप्रमेह २ सिकता प्रमेह ३ सान्द्रप्रमेह ४ सुराप्रमेह ५ शीतप्रमेह ६ पिष्टप्रमेह ७ शुक्र प्रमेह ८ लालप्रमेह ९ शनै प्रमेह १० येदसों प्रमेह कफके हैं क्षार प्र० १ हरिद्रा प्र० २ नील प्रमेह ३ काल प्र० ४ रक्त प्र० ५ मंजिष्ठ प्र० ६ ये छह पित्तकेहैं ॥ वसि प्रमेह १ क्षुद्र प्रमेह २ नील प्र० ३ और वसा प्रमेह ४ ॥ येचारों वायुके प्रमेह असाध्य हैं ये बीसों प्रमेह वाग्भट सुश्रुत और भावप्रकाशके मतसेहैं और अत्रेय जीने ६ और वर्णन करे हैं सो येहैं तक्र प्रमेह १ पूय प्र० २ पीड़िका प्र० ३ शर्करा प्र० ४ धूल प्र० ५ आनि मूत्र प्र० ६ अथ कफके दश प्रमेहों के लक्षण क्रमपूर्वक लिख्यते ॥ १ अथ उदक प्रमेह के लक्षण दोहा ॥

मूतनिर्मलबहुतसा श्वेतगंधविन जान
चिकनाई हो मूत्रमें उदक प्रमेह बखान
२ अथ सान्द्र प्रमेह को लक्षण ॥
दोहा बासीपानी जिमभरा वर्तनमें गढ़ जाय ॥
ऐसा मूत पुरुषजो सान्द्र प्रमेह कहाय ॥
३ अथ सुरा प्रमेह को लक्षण लिख्यते ॥
दोहा दारूकीसीबासहो नीचे का गढ़जाय ॥
ऊपरनिर्मल मूत्रहो सुराप्रमेह कहाय ॥
४ अथ पिष्ट प्रमेह को लक्षण लि० ॥
दोहा चावलका साभाड़ हो रोम खड़े होजाय ॥
लघुशंका में पीड़ हो पिष्ट प्रमेह कहाय ॥

५ अथ शुक्रप्रमेहको लक्षण दोहा ॥
वीर्य सरीखा मूत्रहो तथावीर्ययुत होय
शुक्रप्रमेह सुजान यह कहै वैद्य सब कोय
६ अथ सिकताप्रमेहको लक्षण दोहा
वालूकण सम मूत्रमें अथवा कफयुतहोय
सिकताप्रमेह सुजानये वैद्य कहतहै सोय ॥
७ अथ सीतप्रमेहको लक्षण ॥ दोहा ॥
मूते वारंवारजो अतिही शीतल जान
परमानंद सुजान सो शीत प्रमेह बखान
८-१० अथ शनै और लाल और इक्षु प्रमेह के लक्षन
चौपाई ॥ शनै शनै जो मूते कोई शनै प्रमेह कहावै सोई
लाल सरीखा मूत्रजो होय लालप्रमेह कहै सब कोय
इक्षुरससा मूत्रजु आवे सोई इक्षुप्रमेह कहावे ॥ इति
कफके प्रमेहोंके लक्षण समाप्तम् ॥
अथ पित्तके छह प्रमेहोंके लक्षण लिख्यते
१ तिनमें प्रथम क्षार प्रमेह के लक्षण लिखते हैं ॥
चौपाई खारी गंध मूत्रमें आवे क्षार सरीखा मूत्र लखावे
सोई क्षार प्रमेह कहावे पुस्तक देख सुजान बतावे
२ अथ नील प्रमेह के लक्षण लिख्यते
चौपाई ॥ नीला रंग मूत्रमें आवे सोई नील प्रमेह कहावे
३ अथ काल प्रमेह को लक्षण लि०
चौपाई ॥ काला रंग मूत्र या होई काल प्रमेह कहै सब कोई
४ अथ हरिद्रा प्रमेह को लक्षण लि०

चौपाई पीलारंग मूत्र हरसावे तामें कडुवी गंध जु आवे गिरदाहिनी थोरजु जाके मेह हरिद्रा निश्चे ताके ॥

५ अथ मंजिष्ठ प्रमेह के लक्षण

दो॰ रंग मजीठी मूत्र का अरु आवे दुर्गंध
सो मंजिष्ठ प्रमेह तुम जानो परमानंद

६ अथ रक्त प्रमेह के लक्षण लि॰

दो॰ लोहू सा जो मूत्र हो बहुत बुरी हो बास
खारी हो अरु गर्म हो रक्त प्रमेह प्रकास

इति पित्त के प्रमेहों के ६ लक्षण समाप्तम् ॥

अथ वायु के चारों प्रमेहों के लक्षण लिख्यंते

चौपाई ताजा मास रंग जो होई वसा प्रमेह कहै सब कोई ॥ मज्जा मूत्र साथ जो आवे अरु मज्जा सा रंग दसावे ॥ शंका बार बार पुन जावे सोई मज्जा मेह कहावे सहत सरीखा मीठा होई अथवा लख कखायल सोइ जिसको लघुशंका इभ आवे ताको क्षुद्र प्रमेह बतावे

दो॰ बहुत दिनों का मेह हो करे जतन कछु नाह कर तार हेतु पथ्य सब मधु प्रमेह कहाय ॥ यह मधु प्रमेह असाध्य है ॥ अथ कफ के प्रमेह का उपद्रव लिख्यते दोहा

अन्न पचे ना पेट में भोजन में रुचि नाह
पीनस खांसी कर्दि हो नींद सतावे नाहि

इति कफ के प्रमेह के उपद्रव ॥ अथ वायु के प्रमेह के उपद्रव लिख्यंते ॥ दोहा ॥

दोहा आवैनीदनयनमें रहैहियेमेंपीर ॥
उदावर्तरोगपावै कांपै सकलशरीर ॥ कुं०
कांपै सकलशरीर पेटमें रोग बतावै ॥ खांसी सूजन होय सकलरस मन को भावै ॥ वायु मेह के कहे उपद्रव सबये प्यारी ॥ करजतन जो वेग जायनि श्चैमारी ॥ अथप्रमेहको असाध्यलक्षणालि०
जिसमनुष्यकेकफकेउपद्रवहोंय औरतभीवायुके भीहोजावें सो असाध्यहै ॥
अथ आत्रेयजीके मतके ६ प्रमेहोंके नाम लक्षण लिख्यते ॥ पूयप्रमेह १ तक्रप्रमेह २ पिंडिकाप्र० ३ शर्कराप्रमेह ४ घृतप्रमेह ५ अतिमूत्रप्रमेह ६ ॥ चौपाई ॥ पीबसरीखा मूत्रजो आवै ताको पूयप्र मेहबतावै छाछसमान मूत्रजो जानै ताको तक्र प्रमेहबखानै बीजफुटक लंघीसंगवैहै ताको मेह पिंडिकाकेहै । खांडसरीखा मूत्र मिठावे मेहशर्क रानामिबतावे । घीवसरीखावर्णजो होई घिरत प्रमेह कहै सब कोई । रातदिवसबहुमूत्रजो आवै । सर्व अंगनिर्वल होजावे । सो अतिमूत्रप्रमेह क हावे । परमानंद सुजानबतावे ॥
अथ प्रमेहरोग के जतनलिख्यते
प्रथमप्रमेहवालेकोयेनाजखानेकोदेनाचाहिये
दो० चावलगेहूंजोचणासाठीमोठकलत्थ्य
मूंग हरड दादालये होंय पुराने पथ्य ॥

दोहा॥ तेल दही घी दूध गुड़ छाक हिरनका मास
दारू खटी वस्तु सब करे प्रमेह प्रकास ॥
अथ कफ के दसौ प्रमेह वालोंको काथ जुदा जुदा
दोहा- नागरमोथ्या कायफल लोध हरड़ की छाल
तोल बराबर लेय सब जौकूट कीजे बाल
पांच टंक का काथ कर शहत मेल कर देय
परमानंद सुजान यह कफ प्रमेह हर लेय
और जतन ॥ छंद ॥
लोध असन कहवा वकल अरु लाल चंदन डारिये
सब बराबर तोल प्यारी पांच टंक उवारिये ॥
काथ जब पक जाय तामें शहत डार जु पीजिये
पित्तका परमेह परमानंद दिन दिन छीजिये॥
दोहा॰ साल कदम धव वृक्ष की बकली चंदन लाल
चारो जौकूट कीजिये दीजे काथ उवाल ॥
ठंडा करके दीजिये प्यारी काथ बनाय॥
परमानंद सुजान ये उदक प्रमेह नसाय॥
अथ ल्हार प्रमेह को जतन दो॰
मृगनैयनी कटि केहरी सुंदर ताकी खानि
ऐसी नारी सरसे ल्हारमेह की हानि ॥
अर्थ॥ सुंदर स्त्री से भोग करे तो ल्हार प्रमेह जाय ये
अमृतसागर के १९८ सफे में है॥
अथ रक्त प्रमेह को जतन ॥ चौपाई ॥
दाष मुलैठी चंदन लाल पीवे बासी जल में डाल

निम्बरक्त प्रमेह नसावे वैद्यक देख सुजान बनावे

अथ नक्त प्रमेह और पीडिका को जतन

दोहा- चंदन खस अरु आंवला लोधनीबकेपत्र
कहवा बकल दालके कारो सबैइकत्र॥
काढा करकेपीजिये नाभगुड़ ले डाल॥
नक्तमेह अरुपीडिका दोनोनासेवाल॥

अथ भुक्त प्रमेह को जतन दोहा ॥
दाल्योनीमजीवपुन सालवकललेआव
दूब मूर्वा दाभकी कासकीजड़ लाव॥
इनसबको काढाकरे छानेदेयपिलाय॥
भुक्तमेह अरु रुधिरहू दोनोकीजड़जाय॥

अथ घृत प्रमेह को जतन॥

दोहा- नवलबहेड़ा आवला और हैड़ की छाल
किरमालाकी मीगजड़ पत्र महजनाडाल

कड़ा- पत्ते नीव अरु बकल स्वेतकेले कालीजे। दाष
मुनक्का और मूर्वा सब सम कीजे। काढा करकेदेय
मेहघृतका मिटजावे। परमानंद सुजान वैद्य यह ज
तन बनावे॥ अथ इक्षु प्रमेह का जतन ॥
पीतपापड़ा कुट की कूट इनका काढा कर मिसरी
मिलाय पीवेतो इक्षुप्रमेहजाय॥ या अरंड कीज
ड़ धमासो अरलू छाला कीजड़ इनका काढादेतो
इक्षु प्रमेहजाय॥ अथ पित्त के प्रमेह का जतन॥
दोहा इन्द्र जव धवकी बकल मूलकमलकी डाल

कहवा वकल आवला घन इमली की छाल
इन सबका काढा करे मिसरी लेय मिलाय
जो यह पीवे नियम कर पित्तप्रमेह नसाय॥

अथ कफके प्रमेह का जतन॥ दोहा॥

विजयसार कहवा वकल लोध कदम की छाल
वायविडंग अरु कायफल दे कफमेह निकाल

अर्थ विजयसार। कहवा की वकल लोध कदंव का वकल वायविडंग कायफल इनका काढा दे तो कफ प्रमेह जाय॥ अथ सम्पूर्ण प्रमेहों का जतन और यह मूत्रस्थान को भी साफ करै है-

कलहारी हैड़ की छाल हलदी कहवा का वकल ये बारीक पीस सबकी बराबर मिसरी मिलाय टंक ५ शहत के साथ चाटे तो सर्व प्रकार का प्रमेह जाय॥

अथ मधुप्रमेह को जतन दोहा

वड़ किरमाला आमला अरु पीपल चार॥
इन पांचों की मूल का वकल लेय उतार॥
चारोली के वृक्ष की वकल छवी बाल॥
नवल मुलेठी लीजिये और नीम की छाल
पटोल वर्णा की वकल सेढासींगी सौंठ॥
दारुहलदी काली मिरच चीता नवल अनोठ

कड़- चीता नवल अनोठ इंद्रजव पनज प्यारी॥ कमल चकी जड़ वाला निरफला चंद्र उजारी॥ नजड़ आपची सुधा मिलावा सव सम कीजे॥ पीस सहत के साथ आठ

माशेनितलीजे ॥ मधुप्रमेहकीमूल देहसेदेयनसा
ई ॥ परमानंदसुजानयुक्तिमेरेमनभाई ॥ अथ ॥
वड़कीजड़कावकल बिरमालाकीजड़कावकल अरलू
कीजड़कावकल आंवलेकीजड़कावकल पीपलकीज
ड़कावकल चारोलीकेवृक्षकावकल मुलेठी नीमकी
छाल परोलवर्णीकावकल दन्तूनी सेठा सींगीचि
त्रक कसागचकीजड़ इंद्रजव त्रिफला सुधाभिला
वा सोंठ कालीमिरच तजपत्रज इलायची येसब
बराबर ले वारीकपीस कपड़छनकर आठमाशे श
हतमें मिलाय रोजचाटेतो मधुप्रमेहजाय याइन्ही
सबऔषधोंका काढ़ाकर पीवेतो मधुप्रमेहजाय
या इन सबकातेल तथा घृत निकासले औरमर्दन
करेतो मधुप्रमेहजाय ॥ इतिन्यग्रोधाद्यचूर्णम् ॥
औरजतन ॥ सोधीसोनामाखी पाखाणभेद
सेंधा शिलाजीत चंदन कपूर पीपल वंसलोचन
येसबबराबरले पीस कपड़छनकर माशे १०
भर ३। तोलेशहतमें मिलाके गौके दूधकेसाथ
रोजपीवेतो मधु प्रमेह औरमूत्रा
बंध दूर होय ये आत्रेय के
लिखेहुवे इलाजहैं

अथ सर्व प्रमेहों का चंद्रप्रभा गुटिका लिख्यते

छन्द

वचकचूर अतीस हलदी दारु हलदी वचला
देवदारु चिरायता वच मूलपीपल तिरफला
नगर मोथा खारजोका नागपीपल सुन्दरी
नोन संचर नोन सांभर नोन सेंधा गुन भरी
धनिक चीता चव्क सज्जीनोल सब सम लीजिये
तोल चारएक टंक भर पुनि पीस चूर्ण कीजिये
सार माशे बीस मिसरी आठ माशे डारिये
शिला जीत सुधा हुवा भर टका चार पधारिये
ताहि सम गूगल सुधा सब जुदी पीस कनाइये
पुनि सबै एकत्र करके चूर्ण नीके बनाइये
टकाभर पारा सुधी गंधक टका भर लावरी
टकाभर अभ्रक पिसा सब चूर्ण माहिं मिलावरी
चार माशे चूर्ण ये घृत शहत संगनित खावई
बवा सीर प्रमेह सब अरु कास शूल नसावई
वीर्य के सब दोष चक्षु दन्त रोग निवारई
पांडु रोग अपार मूत्रा घात छिन में टारई
उदर के सब रोग फीहा मूत्रकृच्छ बवा नये
कोढ भी जाता रहे जो खाय नित्य सुजान ये

अर्थ॥ वचकचूर अतीस हलदी दारुहलदी देवदारु चिरायता पीपलामूल त्रिफला नागरमोथा जवाखार गजपीपल संचरनोन सेंधानोन सांभर धनियां चीता

मञ्जीठ ये सब चार २ माशे ले तज माशे २ मिसरी माशे ८ सुधा शिलाजीत टके ४ भर सुधा गुगल टके ४ भर इन सब को जुदा २ पीसकर मिलावे पारा टका १ भर सोधी गंधक टका १ भर अभ्रक टका १ भर इनकी कजली कर ऊपर लिखी औषधों के चूर्ण में मिलावे इस में से माशे ४ शहत और घृत मिलाय के नित्य खाय तो सब प्रकार का प्रमेह जाय और बवासीर क्षई वीर्य के दोष नेत्र रोग खासी पांडु रोग शूल उदर रोग फोड़ा मूत्र कृच्छ मूत्राघात और कोढ इन सब रोगों को दूर करै ॥ ॥ इति चन्द्रप्रभा गुटिका ॥ ॥

॥ अथ मधु प्रमेह को और जतन चौपाई

टका चार भर त्रिफला प्यारी ॥ ता सम जीरा चंद्र उजारी
ताही के सम धनिया वाल ॥ टके दोय भर चीनी दाल
गज केसर पैसे भर चार ॥ लौंग बराबर इसके डार
तथा लायची छोटी जान ॥ तुष्मरियां के बीज समान
कौंच बीज पुनि चार टका भर ॥ सब को पीस कपड़छन लेकर
घृत मिसरी में सबै सनावे ॥ ताके मोदक नीके बनावे

दोहा ॥ टका एक भर तोल के प्रात समै जो खाय
परमानंद सुजान कहु सब प्रमेह नसाय

अर्थ ॥ त्रिफला टके ४ भर जीरा टके ४ भर धनिया टके ४ भर दालचीनी टके २ भर लौंग टके २ भर नागकेसर टके २ भर तुष्मरिया के बीज टके २ भर कौंच के बीज टके ४ भर छोटी इलायची टके २ भर इन सब को

बारीक पीस मिसरी घृत मिलाय टका १ भर के लड्डू बना रक्खे नित्य प्रात समय १ लड्डू खाय तो प्रमेह मात्र दूर होय ॥ + ॥ इति प्रमेह हरिण चूर्णम् ॥ * ॥ + ॥ ५॥

अथ मधु प्रमेह को और जतन ॥ चौपाई ॥

सोधी गंधक सोधा पारा ॥ कहुवा की जड़ मिसरी चारा ॥
इन चारन को खड़ल मधारे ॥ सालर की जड़ को रस डारे ॥
पुट दे तीन युक्ति से साधै ॥ मासे भर की गोली बांधै ॥
गोली एक रोज जो खावै ॥ मधु प्रमेह को मूल नसावै ॥
अथवा लोध टंक इक लेई ॥ पीस शहत संग इसको देई ॥
तथा खैरेटी क्काथ बनावै ॥ लोध पीस इसके संग प्यावै ॥

॥ और जतन ॥ सत गिलोय त्रिफला सार ये तीनों माशे ५ शहद के साथ ले तो प्रमेह जाय ॥ अथवा ॥ मिसरी सिंघाड़ा खेत चीनी ये बराबर ले महीन पीस माशे १० भर जल के साथ ले तो पुराना प्रमेह भी जाय॥ अथवा ॥ बंगेश्वर रत्ती १ शहद के साथ चाटे ऊपर से गूलर पैसे २ भर सेंधे नमक और शहद से खाय तो असाध्य प्रमेह भी जाय ॥ या केवल गूलर पक्के सेंधे निमक से रोज खाय तो असाध्य प्रमेह भी जाय ॥ इति ९

अथ बंगेश्वर की बिधि लिख्यते - कवित्त ॥

तोले बीस रांग गाल तासे अर्ध पारा डाल गलने में डाल पुनि कूपका बनायले ॥ केके पुनि कैंची ताके कोटे २ टूक कर गोशत के बीच जार शंकर मनायले ॥ स्वांग शीत हुये पीछे राख सब दूर कर ताकी सब खील बड़ी

युक्ति से चुनायले ॥ तोल में जौ पूरा होय जानो काम सि द्ध भयो काचे टूक रहैं तिने फिर भी भुनायले ॥ इति ॥

अथ सुपारी पाक लिख्यते ॥ अरिल्ल ॥

नवल सुपारी आठ टका भर आनिये ॥ तिनको कूट महीन बसन में छानिये ॥ गो घृत तीन छटांक तिसी में सानिये ॥ तीन सेर गो दूध में डार सुजान ये ॥ खिल वो मावा होय तबहि उतारिये ॥ सरसर टंक जु तोल दवा ये डारिये ॥ नागर मोथा चन्दन सोंठ लवंग लो ॥ पीपल धनियां काली मिर्चें संगलो ॥ तज पत्रज चा- रोल सिंघाड़े लीजिये ॥ केसर नाग आंवला सुकोय ल बीजये ॥ जीरा स्याह सफेद लायची जाय फल ॥ पीस कपड़ छन करो दवा ये सब ॥ नवल मिसरी बीस छटांक तिसी में दीजिये ॥ दो तोले परमाण गोलि का कीजिये ॥ एक सबेरे सांज एक पुन खाइये ॥ बवासीर मंदाग्नि प्रमेह नसाइये ॥ शुक्र दोष अरु प्रदर जीर्ण ज्वर नाशै ॥ अंग होय सब पुष्ट सु परमा नंद कहै ॥

अर्थ ॥ दक्षिणी सुपारी टके भर पीस कर कपड़ छन कर गौ के घी में साने फिर तीन सेर गौ के दूध में मिला के मावा खिलवां करे उसमें सेरसवा १ मिसरी और आगे लिखी दवा और मिलावे नागकेसर टंक ५ नागर मोथा टंक ५ चन्दन टंक ५ सोंठ टंक ५ स्याह मिर्च टंक ५ पीपल टंक ५ इलायची टंक ५ लौंग टंक ५

आंवला टंक ५ कोयल बीज टंक ५ तज टंक ५ पत्रज टंक ५ चारोली टंक ५ धनियां टंक ५ जायफल टंक ५ दोनों जीरे टंक १० सिंघाड़ा टंक ५ बंसलोचन टंक ५ ये सब औषधी मिलाके दो तोले प्रमाण गोली बांधे १ प्रातसमय और १ स्याम को खाय तो प्रमेह मंदाग्नि जीर्णज्वर अस्थित शुक्र के सब दोष और बवासीर प्रदर ये सब रोग दूर होय और देह पुष्ट होय ॥ ॥ इति सुपारीपाक समाप्तम् ॥

अथ गोखरू पाक लिख्यते दोहा ॥

गोक्षुर आधा सेर ले कूट महीन बनाव
एकसेर गो घिरत में ताको खूब सनाव

॥ कुंडलिया ॥ ताको खूब सनाव दूध गो का पुनि डारे ॥ पांचसेर हो दूध आंच पर धरकर जारे ॥ जब मावा पक जाय भूनकर खूब खिलावे ॥ अब जो औषधि लिखूं पीसकर तिन्हें मिलावे ॥ १ ॥ छन्द ॥ १ ॥

बेल गिरि कुट मिरच काली दाख चीनी जायफल
ताल मखाना चिरौंजी अहिफेन इला दोलो नवल
भीमसेनि कपूर पत्रज माशे दस दस लीजिये
इन सबन से तोल आधी भंग शामिल कीजिये
बारसेर समाय मिसरी चाशनी कर सुन्दरी
डाल मावा सहित औषधि बांध गोली गुनभरी
पांचटंक प्रमाण औषधि नित्यप्रति ले खाइये
दूर होय प्रमेह बीसों बीजदोष नसाइये ॥

अर्थ ॥ आधसेर गोखरू महीन पिसाय सेर १ गो घृत में

मानि इसे ५ सेर गौ के दूधमें मिलाकर खिलका मावा करै इस मावे में ये दवा पीस कर और मिलावे ॥ बेलगिरि टंक २॥ मिरच स्याह टंक २॥ दालचीनी टंक २॥ अफीम टंक २॥ जायफल टंक २॥ तालमखाना टंक २॥ हलदी टंक २॥ भीमसेनी कपूर टंक २॥ पत्रज टंक ४॥ इलायची टंक २॥ कूटटंक २॥ समुद्रसोख टंक २॥ इन सबकी तोल से आधी भंग ४ सेर मिसरी की चाशनी कर इन दवाओं सहित मावा मिलाकर ५ टंक प्रमाण गोली बनावे १ गोली रोज खाय तो प्रमेह जाय और बीर्ज स्तम्भ होय ॥ इति गोरख पाक समाप्तम् ॥ १ ॥ ८ ॥

अथ पंचानन गुटिका चौपाई ॥

गंधक सोधी नागर मोथा । सोधा पारा लो अरोथा १
सींगी मोहरा त्रिफला चीता । काली मिर्च सोंठ मेरे मीता
गंधक पारा कजली कीजे । तामें मेल औषधी लीजे १
भंगरे के रस की पुट देई । डाल खरल में पीस जु लेई
गोली टंक प्रमाण बनावै । प्रातसमय नित उठ कर खावै
यह अष्टादश कुष्ट नसावै । औषधि वैद्य रहस्य बतावै

अर्थ ॥ सोधी गंधक सोधा पारा नागरमोथा सींगी मोहरा त्रिफला चीता मिरच स्याह सोंठ ये सब बराबर ले पहिले पारे गंधक की कजली करे फिर ये दवा पीसकर मिलावे भांगरे के रस की पुट देकर खरल करे माशे ५ प्रमाण गोली बांधे १ गोली रोज प्रातसमय खाय तो १८ प्रकार का कुष्ट जाय ॥ ये जतन वैद्यरहस्य में लिखा है ॥

अथ प्रमेह घृत का जतन लिख्य० चौपाई

चीता पाठ कुड़ा की छाल । कुटकी हींग भून कर डाल
कूट गिलोय सबैसम आन । सबसम पीस बसन में छान
ढाई टंक नीर संग खाय १ । घृतपरमेह सुजान नसाय

अर्थ॥ चीता पाठ कुड़ा की छाल कुटकी भुना हींग कूट गिलोय ये सब बराबर ले बारीक पीस १० माशे की फंकी जल से करे तो घृत प्रमेह जाय ॥ इति ॥

अथ मेघनाद रस लि० चौपाई॥

सोधी गंधक मिर्चें काली । त्रिफला सोनामाखी आली
हलदी कैथसार अरु सूंठी । गिरीबेल की लेय अनूठी
पारा गन्धक कजली कीजे । तामें ये औषधि सम दीजे
भंगरा रस की पुट इक्कीस । डाल खरल में पुनि सब पीस
टंक एक रोजीना खाय १ । सब परमेह दूर हो जाय

इति मेघनाद रस समा०

अथ प्रमेह कुठार रस लिख्यते ॥ भाषार्थ ॥ १ ॥

इलायची भीमसेनी कपूर जायफल भाड़ंगी गोखरू सालर का बक्कल मोचरस पारा अभ्रक बंग सार ये सब बराबर ले खरल में बारीक पीस १ रत्ती रोज शहद से खाय तो प्रमेह मात्र जाय॥

इति प्रमेह कुठार रस समाप्त

इति श्री पण्डित सुजान सिंह कृते वैद्यक गुटकायां ॥ प्रमेह प्रकर्णो समाप्तम्

अथ वायु प्रकर्ण लि०

अब बात रोग के लक्षण और जतन लिखते हैं ॥

प्रश्न स्त्री का दोहा

कहो कंथ समझाय के जो तुम पर है प्रीत ॥
बात रोग के रूप सब लक्षण जतन समीत

कुण्डलिया॥ लक्षण जतन समीत बात की घात बतावो ॥ भिन्न भिन्न कर नाम सबन के दोष जतावो॥ तुम हो वैद्य प्रबीन दीन रक्षक हित कारी ॥ कौन कौन सी बस्तु बढ़ावै यह बीमारी ॥ १ ॥ उत्तर वैद्य का दोहा ॥ १ ॥

कड़वी तीखी वस्तु पुनि शीतल भोजन खाय
अति मैथुन औरु खेद से बात रोग हो जाय ॥

कड़ा॥ पवन रोग उपजाय मूत्र मल को जो रोके॥ होय वीर्य्य अतिक्षीण पवन आवै अरु ओके॥ बर्षाऋतु में राज्य करे है वाय बिचारी ॥ पहर रात से उठ कर अंग पर असवारी॥ अंग अंग में होय १ थवा एक अंग सतावै ॥ हैं चौरासी रोग बाय के शास्त्र बतावै ॥

अथ वायु के ८० रोगों के नाम ॥ दोहा ॥

प्रथम शिरोग्रह दूसरा अल्पु केशि है नाम
तीजे जंबाड़ी घनी पुनि जाड़ी मुदबाम॥
पंचम जीभ हिले नहीं खष्टम रुक २ बात ॥
सप्तम बोलत सहज में पुनि गूंगा हो जात
खोटे बोल कहै नवम दसवें करै कुबाद ॥
एका दश में जीभ का जाता रहै सवाद ॥

[illegible] जानिये तेरह कान गुंमाय
चौद[illegible]न स्पर्श को सकल त्वचा से जाय
पंद्रह आर्दित रोग है सोलै मुड़े न कन्ध
सत्रह सूखै सब भुजा पुनि कर मुड़ना बन्द
उन्निस चर्वित रोग है विश्वाची है बीस ॥
इक्किस बहुत डकार हो आफारो बाईस ॥
तेइस है प्रत्यापरुज अष्ठीला चौबीस
प्रत्यष्ठीला रोग पुनि तूनी है छब्बीस
सप्त विंश प्रति तूनिका अग्नि विषम अठबीस
उनतिस है आटोपरुज दुखपस वाड़ा तीस
शूल पेट इकतीसवां बहुत मूत्र बत्तीस
रुके मूत्र तेंतीस में मल गाढ़ा चौंतीस
पैंतिस मल उतरै नहीं गृध्रूरोग छत्तीस
कलापखंजन रोग पुनि खोड़ापन अठतीस
उन्तालिस पगलापना कोष्टुशीर्ष का गोड़
इकतालिस खल्ली कहा बात कंठ का जोड़
पग सूजन ४३ पग वो कै ४५ पुनि अक्षेपक वान ४६
वाताक्षेपक रोग पुनि ४७ पित्ताक्षेपक जान ४८
दंड पतानक ४९ घातक्षय ५० पुनि अंतरायाम ५१
बावनवां तुम जानलो है इक बाह्यो याम
धनुर्वात ५३ कुब्जिक ५४ कहा [illegible]तत्रय अपतान ५६
सत्तावनवां रोग तू पक्षाघातक जान
छन्द ॥ आक्षेपक ५८ कम्प ५९ लोद ६० [illegible] व्यथा जु

अति घणो ॥ ६२ ॥ स्फुरन ६३ लूखो ६४ श्यामपन ६५
अतिक्षीणपण ६६ शीतलपणो ६७ ॥ रोमांच ६८ अं-
गमर्द ६९ अंगबिभ्रम ७० नसांकोसंकोचहै ७१ ॥ अंग
शोषण ७२ डरपणो ७३ अरु मोहपण अति पोचहै ७४ ॥
उन्माद ७५ निद्रानाश ७६ स्वेद बिनाश ७७ बल की हा-
निहै ७८ ॥ बीर्जनाश ७९ अरु नाशतिपरज ८० गर्भ
कीनिरआस है ८१ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ दोहा ॥ १ ॥ १ ॥

बिनापरिश्रमश्रम जुहो ८२ पुनिहो श्रमकानाश ८४
इन सब के लक्षणजतन आगेकरूं प्रकाश ॥

अथ बातव्याधिके सामान्यजतन जिनसे बाय नहो दोहा ॥

चिकना मीठा नोनका गरम जु भोजन खाय
नित्यतेल मर्दन करै बायू ब्याधि नसाय ॥

अथ आदिसे तरतीब वार चौरासी बायु में से प्रथम शिरोग्रह बायु के लक्षण जतनलिख्यते दोहा

बायु रुधिर संगआयके करै रगों में पीर ॥
है यह रोग असाध्यसुन कहै वैद्य मतिधीर

कड़ा ॥ कहै वैद्य मतिधीर मूलदश काढालावै ॥ और
बिजौरालाय काढ़ रस क्वाथ मिलावै ॥ क्वाथ अरक
अरु तेल मिलाकर खूब पकावै ॥ अरकक्वाथजलजा
य तेल को छान रखावै ॥ जहां जहां हो पीर रगों में मरदन
कीजे ॥ जो हो देवसहाय शिरोग्रह पल २ छीजे ॥ और ज
तन ॥ दोहा ॥ पीपल सींगी मोहरा मिरच स्वाह अरु कूट ॥

अंड धतूरा सहजना तीनौं की जड़ सोंठ ॥
कड़ा ॥ तीनौं की जड़ सोंठ भाग सम सब ले आवै ॥ पह
ले क्काथ पकाय छान फिर तेल मिलावै ॥ पुनि चूल्हे
पर राख आँच तर मधुरी दीजै तेल मात्र जब रहै छान
कर मर्दन कीजै ॥ १ ॥
अर्थ ॥ पहला नुसखा जाहिर है ॥ दूसरा ॥ पीपल
सींगीमोहरा मिरचस्याह कूट अंडकी जड़ धतू
रेकी जड़ सोंठ येसब बराबर ले कूट काढ़ा कर ते-
ल में डाल कड़ाही चूल्हे पर रख मीठी आंच से पका
वे जब काढ़ा जल जाय केवल तैल रहै छानकर
रगों में मले तो शिरो ग्रह रोग नाय ॥

अथ दूसरी अल्पकेशी बायुका जतन लि०

दोहा ॥ देसी गोक्षुर पीसलो तिलके फूल मिलाय
सहद घिरत में सानके दीजे शीस मिलाय
अर्थ ॥ देशी गोखरू और तिल के फूल पीस के शहद
और घी मिलाय के सिर में खूब मले तो अल्पकेशी जाय ॥
और जतन ॥ कड़ा ॥ नील कमल कर मूल मुनक्का दा-
ख नवीली ॥ डाल मुलेठी सबै बराबर भाग छबीली ॥
तेल घिरत या दूध मेल के पीसो चारी ॥ करै शीश पर
लेप केश लंबे हों प्यारी ॥
अर्थ ॥ नीले कमल की जड़ मुनक्का दाख मुलेठी ॥
ये सब बराबर लेके घी तेल या दूध में पीस के सिर पै
लेप करै तो बाल लम्बे होंय ॥

अथघनीजंभाईकाजतनलि० दोहा

नवलसोंठ पुनिपिप्पली अरुअजमोदमगाय
गरमनीरसे खाइये सेंधामिरच मिलाय॥

अर्थ॥ सोंठ मिरच पीपल अजमोद सैंधानमक इन सबका चूर्ण गरमजलसे फांके तो जंभाई जाय॥

और जतन॥ दोहा॥

मरदन कड़वे तेलका मीठा भोजन खाय
अथवा चाबे पान इक तुरत जंभाई जाय

अथअनुग्रहरोगकालक्षणजतन लि०

दोहा॥ दांतहिलें जिह्वाफटे सूजमसूढे जांय॥
मुखरदपटफटतेरहैं दुखसे भोजन खाय

अर्थ॥ दांत हिलनें लगें मसूढे सूज जांय जीभ होट फटे रहैं भोजन करते कष्ट होय॥

कड़ा॥ दुखसंग भोजन खाय अनुग्रह वायु बखानें॥ तिसकी औषधि सेक धुवैं या जल से जानें॥ मुंहआया जो होय सर्द औषधि मुख राखै॥ दांत मसूढे दुखें सोंठ पीपल रस चाखै॥ लहसन अदरक डार उड़द के बड़े क रावै॥ सेंधा नमक मिलाय अनुग्रह रोगी खावै॥

अर्थ॥ अनुग्रहरोगकीदवा गरम पानी के कुल्ले याहु क्का पीना है जो मुंह आरहा होयतो ठंडी बस्तु कत्था सेलख ड़ी सीतल चीनी आदि मुंह में रखे दांत और मसूढों में दर्द हो तो लहसन अदरक मिलायके उड़द के बड़े सें धा नमक डलवाके खाय तो अनुग्रहरोग जाय॥ इति॥

अथ जिह्वास्तंभ वायुरोगके लक्षणजतन॰

दोहा॥ नाडी जिह्वामें जुहै तामें रहै जु वाय
तिसी वायके दोषसे जिह्वा दुखे जाय

कड़ा॥ दुखे जिह्वा जात बात मुखसे जो बोले॥ जल पीवत में कष्ट होय जब रद पट खोले॥ येसब लक्षण कहे जीभ थंभन के प्यारी॥ अब सुन तिसके जतन औषधी न्यारीन्यारी॥

अर्थ॥ जिह्वा में रहने वाली नाड़ी में जो वाय रहती है उसके दोष से जिह्वा में दर्द होता है बोलने में जल पीने में जब होठ खोलने पड़ते हैं बहुत कष्ट होता है॥ ॥ अथ जिह्वा स्तंभन रोग की चिकित्सा॥ दोहा॥

मीठा खट्टा नौन रस घृत संग गरम कराय
जिह्वा पर मरदन करै निश्चै रोग नसाय॥

या सुहाते२गरम जल से कुल्ले करावै तो जिह्वास्तंभ जाय॥

अथ गूंगा पण गिण गिणापण औरहकलाते का जतन लिख्यते॥

सोरठा

कफके सहित जु वाय धमनी नाड़ी में बसे
गिणगिण करै गुंगाय गदगद पण निश्चै करै

चौपाई

सुरभी घिरत सेर इक आनै॥ बकरी दूध चतुरगुण जानै
मूल सहजना धावड़ फूला॥ लैंगरका भार सब सम तूला
सबको पीस दूध में डाले॥ घिरत डाल पुनि ताहि उवाले

दूधदवा जब सब जल जाई॥ घिरत मात्र को लेय छनाई
दोहा॥ प्रति दिन इस गोघिरतको इकीस दिन लौं खाय
गूंगेपण अरु गिणगिणा सकल रोग मिट जाय
अर्थ॥ जो पवन कफ के साथ धमनी नाड़ी बसती है गूंगा पणा गिण गिणा पणा और गद्गद पणा करदेती है तिस का जतन॥ गौका घिरत सेर १ बकरीका दूध सेर ४ सहजनेकी जड़ टका १ भर लौंग टका १ भर धाय के फूल टका १ भर इन तीनों को पीस दूध में डाले इस के बाद गौ का घी सेर १ उसी में मिलाके खूब उबाले जब दवा और दूध सब जल जावे घृत मात्र रहे तब उतारके छान रखे इस घी को २१ दिन तक खाय तो गूंगा गिण गिणा और गद्गद पणा निश्चय जाय॥ और जतन॥ मालकंगनी के तेल का सेवन करे तो गूंगा पण गिण गिणा पण और गद्गद पणा जाय॥ और जतन॥ कुंडलिया॥
पीपल जीरा कूट मुलेठी महुवा लावो॥ निमक लहौरी सौंठ और अजमोद मगावो॥ भाग बराबर लेय सकल ये औषधि प्यारी॥ कूट कपड़ छन करे पुनि सेधरे सँवारी॥ दस दस माशे लेय बराबर माखन चाषे॥ गिण गिणपण सब जाय शब्द अति नीके भाषे॥
अर्थ॥ पीपल जीरा कूट मुलेठी महुवा सेंधा नमक सौंठ अजमोद ये सब औषधि बराबर लाय कूट कपड़ छन करे दस माशे मक्खन में मिलाय चाटै तो गिण गिणा पणा जाय॥ ९॥ इति॥ १॥ १॥ १॥

अथ प्रलाप और बाचाल रोग का लक्षण लि०

दोहा

कुपथ करे तै बायु जो भरे अंग मे आय
बोले बचन कु बचन नर अर्थ ज्ञान सब जाय

कुडा॥ अर्थ ज्ञान सब जाय तिसे परलाप बखानो॥ बच न न कहै संभाल तिसे बाचालु हि जानो॥१॥ इति॥

॥ अथ प्रलाप बाचालु को जतन लिख्यते॥

कुडा॥ अगर तगर असगंध मूल दस कुटकी लावो॥ ब्रह्मी मोथा पीत पापडा दाख मगावो॥ शंखा हुली नवीन बराबर सब को लीजे॥ जौ कुट कर के धरे क्वाथ कर इनका दीजे॥ हरै प्रलाप अपार खोज तिसका नहि पावे॥ दूर होय बाचाल पनो फिर निकट न आवे॥

अर्थ॥ अगर, तगर, असगंध, दसमूल, कुटकी, ब्रह्मी, मोथा, पीतपापडा, दाख, शंखाहुली, ये सब औषधि बराबर लाय जौ कुट कर काढा कर पिलावे तो प्रलाप ओर अति बाचालुपणा दूर होय॥१॥१॥ इति॥१॥

अथ जीभ का रस ज्ञान तथा स्वाद जाता रहै तिसका लक्षण॥ दोहा॥

लवण खटाई चरपरा तथा मिठाइ आद
जिसकी कोमल जीभ से नासै सकल सवाद

कुडलिया॥ नासै सकल सवाद रसा अज्ञान कहावे॥ तिसके जतन बिचार कहूं जो शास्त्र बतावै॥ पीपल काली मिरच सोंठ अरु चूक नवीली॥ अमल बेद पुनि

नमक लहौरी रंग रंगीली ॥ पीस जीभ से मले कहां
फिररोग सतावै ॥ तिसके जतन बिचार कहूं जो शास्त्र बतावै
अर्थ ॥ खटाई मिठाई चरपरा आदि का स्वाद जाता रहै
तिसे रसाज्ञान कहते हैं तिसका इलाज ॥ पीपल ॥
काली मिर्च, सौंठ, चूक, अमलबेद, नमक सैंधा, इन
सब को पीस जीभसे मले तो जिह्वा रसाज्ञान रोग
जाय और जाय का ठीक होय ॥ और जतन लि० ॥
कुंडलिया ॥ चीता राई प्लास पापड़ा पीपल धीरा ॥
ब्रह्मी पीपल मूल सूंठ पुनि काला जीरा ॥ पीस कप
ड़ छन करै जीभ के ऊपर लावै ॥ अथवा क्वाथ पकाय
खूब कुल्ले करवावै ॥ रसाज्ञान को रोग नहीं फिर
रहने पावै ॥ तिसको जतन बिचार करूं जो शास्त्र बतावै ॥
अर्थ ॥ चीता, राई, पलास, पापड़ा, पीपल, ब्रह्मी, पीप
लामूल, सौंठ, कालाजीरा, ये सब दवा बराबर ले कूट
कपड़ छन कर जीभ पर मले या काढ़ा पकाके कुल्ले
करावै तो रसाज्ञान जाय और इस रोग के लिये अद
रक भी बहुत गुणदायक है ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥

अथ शरीर की त्वचा सून्य होगई होय ताको लक्षण जतन लि० ॥ दोहा ॥

गरम सरद कोमल कठिन जिसके अंग न ज्ञान
देह फटा सा रहै सब त्वचा सून्य पहिचान ॥

कड़ा ॥ त्वचासून्य पहिचान फस्द तिसके खुलवावै ॥
अथवा सैंधा नमक धूम सा तेल मिलावै ॥ हाथ सुलायम

ग्वाल रोग कबहू न सतावे लखर ग्रन्थ अनेक वैद्य यह यत्न बतावे॥ इति॥ अथ वायु पित्त कफ के आर्दित रोग के लक्षण जतन लिख्यते॥

प्रथम वायू के आर्दित रोग के ल०

दोहा॥ बहुत राल मुखसे गिरे कांपैसकल शरीर
होंगे पै सूजन चढै व्यापै अंग मे पीर॥

अथ पित्त के आर्दित रोग के लक्षण दोहा

पीला मुख अरु प्यास अति तपै देह ज्वर होइ
पित्त आर्दित रोग यह कहै वैद्य सब कोइ

अथ कफ के आर्दित रोग के ल० सोरठा॥

सूजन अधिक दिखाय कंधे सिर अरु कंठ में
लक्षण देहु सिखाय कफ के आर्दित रोग के

अथ कफ के आर्दित रोग के असाध्य ल० दोहा

नैनन से निद्रा नसै बोलत मैं हो पीर
तीन वर्ष पर्यंत लौं कांपैसकल शरीर

अथ आर्दित रोग के सामान्य जतन लिख्यते

॥ छन्द॥

तेल नित मर्दन करै विषगर्भ या नारायणी
देह में सुख होय व्यापै पीड़ना तिसको घणी
तेल घृत भोजन करै अति गर्म औषधि सेवई
पवन से बचता रहै नित नित पसीना लेवई
वायु को जो तेल ताको शीश मे मर्दन करै
भाषै सुजान सुजान के यह रोग आर्दित को हरै

अथ ऊर्द्धबात का जतन॥दोहा॥

दस दस हिस्से डारिये सुंठी औरबिधार ॥
हिस्से पांचनिसोतके इहसम हैड़हु डार॥

कड़ा॥इह सम हैड़हु डार हींग इक भाग मिलावै॥ एक भाग असगंध नमक सेंधा पुनि लावै॥ चीता सब के तुल्य पीस कर कपड़ छनावै॥ दस दस माशे देय गरम जल ऊपर प्यावै॥ ऊर्द्ध बात का रोग सकल छिन में मिट जावै॥ ज्यों पछवा के चलत घटा कहुँ देख न पावै॥

अर्थ॥॥ सोंठ भाग १० विधारी भाग १० हड़ की छाल भाग ५ निसोत भाग ५ इन सब को पीस कपड़ छन कर १० माशे की फंकी गरम जल से ले तो ऊर्द्धबात रोग जाय॥

अथ आध्मान रोग को लक्षण इस रोग को प्रत्याध्मान भी कहते हैं

दोहा॥ पेट अफारो होघना अधोबायु रुक जाय
अतिही पीड़ा होय जो रुज अध्मान कहाय॥

अर्थ॥ पेट पै अफारा बहुत हो अधो बायु बन्द होजावे पीड़ा अत्यंत होतो आध्मान रोग जानो॥॥ अथ जतन॥॥

कड़ा॥ पीपल ढाई टंक टंक दस मिसरी लीजे॥ ले निसोत दस टंक कूट कर चूरण कीजे॥ ढाई टंक प्रमाण औषधी नित जो फांके॥ तिसके तन में कभी नहीं फिर रुज यह झांके॥

अर्थ॥ छोटी पीपल १० माशे मिसरी ३। तोले निसोत ३। तोले इन सब को कूट चूर्ण कर १० माशे की फंकी नित्य प्रात समय ले तो प्रत्याध्मान रोग जाय॥

अथ प्रत्याध्मान को दूसरो जतन ॥ छन्द ॥

कूटवच अरु नमक सेंधा हींग सेक जु लीजिये
सौंफ हू मंगवाय सब को तोल सम कर दीजिये
लेप कांजी नीर सों कुछ गरम करके कीजिये
रोग यह अध्मान फेर सुजान दिनदिन छीजिये

अर्थ ॥ कूट, बच, सेंधा नमक, भुना हींग, सौंफ, ये सब दवा बराबर लेकर कांजी के पानी में पीस गरम कर सुहाता २ लेप करे तो प्रत्याध्मा रोग जाय ॥

और जतन ॥ महानारायण रस ॥ चौपाई ॥

दात्यूनी अरु कूट की प्यारी ॥ किरमाला कोगिरी सुधारी
हेड़ आंवला और निसोत ॥ नवल लाव पुनि नागर मोथ
टका टका भर औषधि प्यारी ॥ थूहर दूध टका दो प्यारी ॥
आध सेर जल माहिं उबारे ॥ अष्टम भाग रहै तब तारे ॥
छन्द ॥ पीस बकल्ल जमालगोटा पोटली कर लीजिये ॥
डार तिसको क्काथ में तर मंद अग्नी दीजिये ॥ क्काथ सब जल जाय तब यह औषधी ठंडी करो ॥ युक्ति से पुनि खोल पोटली आठ भाग जु सम धरो ॥ पारा औ गन्धक की करो कजली मिरच काली परे ॥ भाग दोइ सके जु ले पुनि सोंठ या सम कर धरे ॥ एक भाग सु शोधि गंधक तोल तामें डारिये ॥ एक भाग सुजान पारा सब हि खड़ल पधारिये ॥ पहर भर कर खड़ल सबको गोलिका बांधो भली ॥ एक रत्ती सेन कम जादभी ना दो लाडली ॥ सरद पानी सा थ गोली नित्य प्राति इक खाइये ॥ शूल प्रत्यध्मान गोला उदावर्त नसाइये ॥ ७ ॥ ८ ॥

अथ बाहुक रोग को लक्षण लिख्यते

कंधे में रहने वाली वायु जो कोप करके बांह के कफ को सुखाय देती है इस सबब से नस खिंच जाती हैं और कुहनी नहीं मुड़ती तिसे बाहुक रोग कहते हैं और अप बाहुक भी बोलते हैं ॥

अथ बाहुक रोग का जतन ॥ सोरठा

केवल जलहि सुंघाय अथवा पानी उड़द का
बाहुक रोग नसाय और जतन सुन लीजिये

छन्द ॥ कूट यव अलसी उड़द अरलू कुलथ मंगवाइये ॥ कौंच जड़ कप्पास सन का बीज कुटकी लाइये ॥ जड़ खरेटी वेर की जड़ खीय की जड़ डारिये ॥ गोखरू सेला कटेली रास्ना उर धारिये ॥ लो गिलोय नवीन औषधि तेल में सब सम करो ॥ तेल में डारो सकल पुनि आग के ऊपर धरो ॥ औषधी जल जांय सब तब तेल मात्र छनावई ॥ हाथ पै मरदन करे अप बाहु रोग नसावई ॥

अर्थ ॥ केवल जल सूंघने से या उड़द का पानी सूंघने से बाहुक रोग रोग जाता है या ॥ कूट ॥ यव ॥ अलसी ॥ उड़द ॥ अरलू ॥ कुलथ ॥ कौंच की जड़ ॥ कपास सन का बीज ॥ वेर की जड़ ॥ खीय की जड़ ॥ रास्ना ॥ खरेटी की जड़ ॥ गिलोय ॥ कुटकी ॥ इन्हें तेल में पकावे बाद छानने के इस तेल को मले तो अप बाहुक रोग जाय ॥ इति माष तैलम् ॥

अथ विश्वाची रोग का लक्षण

हाथ की उंगली न मुड़ें और भुजा के पीछे खाज ऐसी हो

कि हाथ निकम्मा होजाय उसे विश्वाची कहते हैं ॥

अथ विश्वाची का जतन लि०

कड़ा॥ उड़द खरैटी डाल मूल दश काय पकावै॥ पीवै तेल मिलाय रोग विश्वाची जावै॥ ॥औरजतन॥ दोहा॥ ॥

उड़द खरैटी रास्ना सोठ हींग दश मूल १॥
डारै या में सुघर वच सेंधा नमक न भूल

कड़ा॥ सेंधा नमक न भूल पीस सब जल में लावै॥ तेल मेल कर मंद मंद तर आग जलावै॥ सब पानी जल जाय तेल कपड़े में छानै॥ करपै मरदन करै चतुर जो इसको जानै॥ विश्वाची अरु बाहु शोष अपबाहुक रोगा ॥ पक्षाघात समीत फेर तिसको नहिं होगा ॥

अर्थ॥ उड़द, खरहटी, दशमूल, और तेल, इन सब का काढ़ा पका के पीवे तो विश्वाची जाय॥ तथा॥ उड़द, खरहटी, रास्ना, सोंठ, हींग, दशमूल, वच, सेंधा नमक॥ इन सब को जल में पकावे जब काढ़ा पक जाय कपड़े में छान कर फिर कड़ाही में उसी के बराबर मीठा तेल डाल के दोनों को पकावे जब काढ़ा जल जाय और तेल मात्र रह जाय तब उतार कर छान ले और हाथ पर मले तो विश्वाची पक्षाघात बाहुशोष और अपबाहुक रोग जाय॥

अथ ऊर्द्ध वात रोग का लक्षण

कुपथ्य के सेवन से अधो वायु कोप करके मुख के कफ से मिल जाती है तब बारबार डकार बहुत आवें उसे ऊर्द्ध बात कहते हैं ॥

अब जतन सब वायु पित्त कफ के जुदे सुन लिजिये
एक मन होकर सुनों कहु और चित्त न दीजिये ॥

अथ वायु के आर्दित रोग का जतन ॥ दोहा ॥

काढे से दस जड़न के वायु आर्दित जाय ॥
अरक बिजोरा एक का निश्चय वायु नसाय ॥
कड़ा ॥ निश्चय पवन नसाय दवा यह अजब अनूठी ॥
भाग बराबर लेय खरैटी चित्रक सूंठी ॥ चव्य पीपला मूल
नवल पीपल पुनि डारो ॥ वायु आर्दित जाय तिया निश्चय
उर धारो ॥ ॥ अर्थ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥
वायु के आर्दित रोग वाले को दस मूल का काढा या बिजो
रे का रस बहुत गुण दायक है या खरहटी चीता सोंठ
चव्य पीपल पीपला मूल ये सब बराबर ले कर काढ़ा
पका के दे तो वायु आर्दित रोग जाय ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

अथ पित्त के आर्दित रोग का जतन लि०

दोहा ॥ गरम दूध नित पीजिये पित्त को आर्दित जाय
अति उत्तम यह जतन है कहै वैद्य समझाय ॥

अथ कफ के आर्दित रोग का जतन लि०

दोहा ॥ तेल तिलों का लाय के लहसन लेय मिलाय
नित उठ प्रात सने भषे कफ को आर्दित जाय ॥

अथ मन्या स्तंभ का लक्षण लि० ॥ दोहा ॥

बैठक जो जादे करे या दिन में सो जाय ॥
कफ में आवे वायु तहां कांधो मुड़त पिराय ॥
अर्थ ॥ बहुत बैठ से या दिन में सोने से वायु कफ में

जाकर कन्धे मोड़ने से पीड़ा पैदा करती है तिसे मन्यास्तंभ कहते हैं ॥ १ ॥ अथ मन्यास्तंभ को जतन लि० दोहा ॥ १ ॥

काढ़ा करदश मूल का गरम गरम दे प्याय
पंच मूलका क्वाथ वा मन्यस्तंभन जाय ॥

कड़ा ॥ मन्यस्तंभी जाय तेल का मर्दन कीजे ॥ तापर पात अरंड सेक कर के धर दीजे ॥ पुनि तहं पट्टी बांध यत्न से पवन बचावै ॥ मन्यस्तंभन रोग फेर कूढा नहिं पावै ॥ और यत्न ॥ कुक्कुट अंडा फोड़ नोन सेंधा घृत डारै ॥ कांधे मर्दन करै रोग तत्काल सिधारै ॥

अर्थ ॥ दश मूल का काढ़ा या पांच मूल का काढ़ा गरम२ पिलावे तो मन्यस्तंभ जाय ॥ तथा ॥ मीठा तेल कंधोंपर मलवाकर अरंड के पत्ते सेक कर बांधे परंतु हवासे बहुत बचाय के खोले तो मन्यस्तंभ जाय ॥ ॥ और जतन ॥ ॥ मुरगी के अंडे में घृत और नमक सेंधा मिला कर कंधोंपै मले तो मन्यस्तंभ जाय ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

अथ बाहुशोषको लक्षण जतन लिख्य०

कंधे में जो वायु रहती है सो कोप कर के हाथ को सुखाय देती है तिसे शोष कहते हैं ॥ ॥ जतन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥

क्वाथ खरटी काकरो मोथा नमक मिलाय
मन्यस्तंभ रु शोषरुज पीवत ही मिट जाय

अर्थ ॥ बेल खरहटी नागरमोथा सेंधा नमक ये तीनों औषधी पका के पिलावे तो मन्यस्तम्भ अरु शोष रोग जाते रहैं ॥

अर्थ॥ दात्यूनी टका १॥ भर कुटकीटका १॥ भर किरमाला की गिरीटका १॥ भर बेड़ का बक्कुल टका १॥ भर आंवला टका १॥ भर निसोत टका १॥ भर नागरमोथा टका १॥ भर थूहर का दूध टका २॥ भर ये सब दवा जौ कुट कर सेर १ पानी में काढ़ा करे जब आठवां भाग पानी रहै तब उतार कर छान लीजे इसमें जमाल गोटे के कोतरे के बारीक चूर्ण की पोटली बांध कर डाले पोटली महीन कपड़े में बांधे कि काढ़ा उसमें मंद २ आंच से पकते २ सूख जाय तब ठंडा होने के बाद पोटली खोल के ८ हिस्से बराबर के करे तिसमें २ हिस्से सोंठ डाले फिर पारा गंधक की कजली करे ॥ सोधा पारा १ हिस्सा सोधी गंधक १ हिस्सा और स्याह मिर्च २ हिस्से ये सब मिलाय उसमें डाल एक पहर खरल करे बाद रती एक की गोली बांधे एक गोली रोजीना सरद जल से खाय तो अफरा सूल प्रत्याध्मान अनाह और उदावर्त ये सब रोग दूर होंय॥ इति महानारायणरस

अथ बातष्ठीला का लक्षण लि० दोहा

नाभी नीचे पवन की पथरी सी बन जाय ॥
रोके मल और मूत्र को बातष्ठील कहाय ॥

अथ प्रत्यष्ठीला को लक्षण० दोहा

नाभी नीचे पवन की पथरी सी पड़ जाय ॥
सो अति ही पीड़ा करै मल अरु मूत्र न साय

अथ वातष्ठीला और प्रत्यष्ठीला को जतन०

दोहा॥ चीता सेंधा नमक अरु बनी का होंग भुनाव ॥ १ ॥

जीरा संचर नौन पुनि काली मिरचहु लाव ॥

कहा ॥ काली मिरचहु लाव पाठ पीपल अरु संठी ॥ धनियां चव्य कपूर पीपला मूल अनूठी ॥ सज्जी पुहकर मूल हैड़ की छाल नवीली ॥ अमलवेत अरु जवाखार ले रंग रंगीली ॥ सांभर बीज अनार मूल झाऊ की लीजे ॥ सब औषधि सम पीस कपड़ छन विधि से कीजे ॥

दोहा ॥ अदरक रस की तीन पुट मेले छांह सुकाय
तोल अढाइ टंक भर उष्णोदक से खाय ॥

सोरठा ॥ उष्णोदक से खाय प्रात समय इस चूर्ण को
वातष्ठीला जाय प्रत्यष्ठीला के सहित ॥

अर्थ ॥ चीता१ सेंधानमक२ बच३ भुना हींग४ जीरा५ संचर नौन६ कालीमिरच७ पाठ८ पीपल९ सोंठ१० धनियां११ चव्य१२ कचूर१३ पीपलामूल१४ सज्जी१५ पोहकरमूल १६ हड़ का बक्कल१७ अमलबेत१८ जवाखार१९ सांभर २० अनारदाना२१ डासरिया२२ झाऊ की जड़२३ ये सब तोल में बराबर ले पीस कपड़ छन कर अदरक के रस की तीन पुट देकर छांह में सुकावे चूर्ण बना रक्खे ढाइ टंक प्रमाण गरम पानी के साथ में खाय तो वातष्ठीला और प्रत्यष्ठीला जाय परंतु प्रातःकाल के समय खाय ॥

अथ तूनी प्रतितूनी का लक्षण जतन लि०

॥ दोहा ॥

लिंग गुदा की वायु जो पेड़ु माहं पिड़ाय ॥
तूनी प्रतितूनी कहैं तिसे वैद्य समझाय ॥

अथ तूनी प्रतितूनी का जतन लि॰ छन्द

मिरच काली सोंठ पीपल हींग भूना लाइये
नमक सेंधा डार प्यारी जवाखार मिलाइये
औषधी सब ले बराबर पीस कर चूरण करै
टंक ढाई गरम जल से खाय प्रति तूनी हरै

अर्थ॥ लिंग और गुदा में रहने वाली वायु जो पेडू में आकर पीड़ा करती है उसे तूनी प्रतितूनी कहते हैं॥

जतन॥ काली मिरच १ सोंठ २ पीपल ३ भुना हींग ४ सेंधा नमक ५ जवाखार ६ ये सब बराबर ले पीस चूर्ण कर कपड़े में छाने ढाई टंक प्रातसमय गरम जल के साथ खाय तो तूनी जाय॥ ॥ अथ त्रिशूल रोग का लक्षण॥ ॥
पीठ की हड्डी में दर्द होता है उसे त्रिशूल रोग कहते हैं॥

अथ त्रिशूल को जतन लि॰

दोहा॥ गुल्लीवाली मूलका बकुल झाऊ छाल
अजवायन असगंध अरु सोंठ सौंफ पुनि डाल

कड़ा॥ डारो हींग मिलाय गमना गोखरू प्यारी॥ नवल निसोत सनाय सकल सम चूर्ण उजागी॥ उत्तम गूगल सोधि मधु के तुल्य मिलावै॥ तिनसे चौथा भाग घिरत पुनि ताय मिलावै॥ ॥ दोहा॥ ॥१॥

दारू पानी गरम वा साथ शराब खाय॥
प्रति दिन माशे पांच ये रुज त्रिकशूल नसाय

अर्थ॥ गुल्ली वाली की जड़ की छाल १ झाऊ की छाल २ अजवायन ३ असगंध ४ सौंफ ५ सोंठ ६ सनाय ७ गोखरू ८

गिलोय ६ निसोत १० रासना ११ ये सब औषधि बराबर ले
के सबकी बराबर सोधी गूगल मिलावे और गूगल से चौ
थाइ घी मिलावे पांच पांच माशे की गोली बनाय रखे १ गोली
रोज गरम पानी या शराब या शोरवे से खाय तो विकशूल
को भुजास्तंभ को संधिगतवायु को टूट हाड को खोड़ापन
को गृध्रसी को पक्षाघात को सबको फायदे मंद है ॥
और इस औषधि को त्रियो दशांग गूगल कहते हैं ॥ इति ॥

अथ वास्ति वात का लक्षण ०

सोरठा ॥ पडू की जो वायु रोके उतरत मूत्र को
आन पीडा हो जाय और रोग पैदा करे

अथ वास्ति वात का जतन लि०

दोहा ॥ छाल खैर टी मूलकी मिसरी तुल्य मिलाय
दो माशे नित तोलके गौ दुग्ध से खाय ॥

और जतन दोहा,

हैड बहेडा आंवला सम ले चूर्ण कराय
सार बराबर डार के माशे चार जु खाय ॥

अथ मूत्र बंद हो जाय ताको जतन ॥ चौपाई ॥

माशे पांच जवा को खार ॥ ता मे सम तुल मिसरी डार ॥
जो नर इस चूरण को खाय ॥ छिन में मूत्र बंद छुट जाय ॥
और चीनियां कपूर की बत्ती बनाय भगवा लिंग में रक्खे तो मूत्र
आवै ॥ **अथ गृध्रसी रोग के लक्षण ० दोहा ॥**
पीडा होवे अंग मे पैर थकित हो जाय
चलते में भारी पडे गृध्रसी रोग कहाय

साऊजरहै दो भांतिको वायु १ वायु कफ जान
इन दोनों के जतन अब बिधिसे कहूं बखान

अथ वायु की गृध्रसी रोग के लक्षण लि०

सिर टेढा होजावे जंघा गोडे और संधी फड़कने लगे और स्तंभित होजावे ॥ अथ वायु कफ की गृध्रसी के लक्षण ॥ शरीर भारी हो अग्नि मंद हो तंद्रा हो राल मुंहसे बहुत गिरे ॥

अथ जतन ॥ दोहा ॥

बमन करावै आदिमें जुलाब हल्का देय
ता पाछे ये औषधी गृध्रसीवाला लेय ॥

चौ० ॥ प्रथम दिन तेल्ल अरंडी लावे ॥ फिर तामें गोमूत्र मिलावे एक महीना तक ये पीवे ॥ सुखी होय बहु रोगी जीवे ॥ ॥

और जतन ॥ दोहा ॥

घृत अदरक रसतेल पुनि अरक बिजौरा लाय
गुड़ अरु चूक मिलायके एक महीना खाय ॥

कड़ा ॥ एक महीना खाय गृध्रसी रोग नसावे ॥ कटि पेडू अरु जांघ पदोंकी पीड़ा जावे ॥ उदावर्त त्रिक शूल रोग सब नासै प्यारी ॥ गोला सा मिट जाय उदर का कंथ दुलारी ॥ और० दोहा ॥

मींग अरंडी काढके करै दूध में खीर
एक महीना खाय जो हरै गृध्रसी पीर

अथवा १० तोले रास्ना और १० तोले गूगल घृत में मिलाय ४ माशे प्रमाण गोली बांधे १ गोली रोज खाय तो रोग जाय ॥

और जतन ॥ रास्नादि काथ ॥ ॥ चौबोला ॥

तोल चलती ॥ किरमाला की गिरी रास्ना सोंठ मिलाय नवीलो

साठी की जड़ जड़ अरंड की गोक्षुर रंभ गीली ॥ देवदारु पुनि डार पियारी सब का काढ़ा कीजे ॥ पसवाड़ा को शूल गृ-ध्रसी पीवत छिन छिन छीजे ॥ ॥ इति ॥ ॥

अर्थ ॥ रास्ना १ किरमाला की गिरी २ सोंठ ३ गिलोय ४ साठी की जड़ ५ अरंड की जड़ ६ गोखरू ७ देवदार ८ इन सब को बराबर ले काढ़ा कर पीवे तो पसवाड़ा का शूल और गृध्रसी रोग जाय ॥ ॥ इति रास्नादि क्वाथ स० ॥ ॥

अथ षोड़ा पांगुली रोग के लक्षण जतन

कटि में रहन वाली वायु जो जांघ की नसों को खेंचती है उसे षोड़ा कहते हैं ॥ और वही वायु जो दोनों जांघों की नसों को खेंचे तो उसे तो पांगुली कहते हैं ये बीमारी जुलाब लेने से और तैलादिक के मर्दन से जाती हैं ॥

अथ कलाप खंज रोग के लक्षण जतन लिख्यते

दोहा ॥ चलते कांपे देह सब लंगड़ा सा हो जाय ॥
छोड़े नस निज थान को कलापखंज कहलाय

ये रोग विषगर्भादि तैल के मर्दन से जाता है ॥ ॥ अथ विषगर्भ तैल की विधि ॥ ॥ धतूरे की जड़ १ निर्गुंडी २ कड़वी तूंबी की जड़ ३ अरंड की जड़ ४ असगंध ५ पवाड़ ६ चित्रक ७ सहजने की जड़ ८ कागलहरी ९ कलिहारी की जड़ १० नीम की छाल ११ बकायन की छाल १२ दशमूल १३ शतावरी १४ चिरपोटन १५ गोरीशर १६ विदारी कंद १७ थूहर के पत्ते १८ आक के पत्ते १९ सनाय २० दोनों कनेर की छा० २१ आधी आधी रखी य ये सब

औषधी टके तीन भर ले इन सब की बराबर काले तिलों का तेल डाले और इसी की बराबर अरंड का तेल डाले और इनसे चौगना पानी डाले औषधी सब कूट कर डाल चूल्हे पर रख नीचे मंद मंद अग्नि जलावे जब औषधि और पानी सब जल जाय और तेल मात्र रहे तब उतार कर ये औषधि और डाले सोंठ १ मिरच २ पीपल ३ असगंध ४ रासना ५ कूट ६ नागरमोथा ७ वच ८ देवदार ९ इंद्रजव १० जवाखार ११ पांचोनोन १२ नीलाथोता १३ कायफल १४ पाट १५ भाडंगी १६ नौसादर १७ गंधक १८ पोहकरमूल १९ शिलाजीत २० हरताल २१ ये सब औषधि छः छः माशे ले सींगी मोहरा टका १ भर ले पीछे ये सब पीस तेल में मिलावे इस तेल का मर्दन करै तो वायु के सब रोग जांय ॥ इति ॥

अथ शीर्ष कोष्टु को लक्षण लि० दोहा

रुधिर पवन के कोप से गाडे मूज जु जाय ॥
होवे पीड़ा अति घनी कोष्टु शीर्ष कहलाय ॥

अथ शीर्ष कोष्टु को जतन लि० दोहा

ढाई टंक गिलाय ले त्रिफला ले दस टक ॥ १ ॥
इन चारों को कूट कर काढा करै निशंक ॥ १ ॥

चौबोला ॥ काढा निःशंक करे गूगल डारै ॥ ढाई पै टंक काथ बीच पधारै ॥ पीवे यह क्काथ तीस दिन जो प्यारी ॥ करै जे सब रोग दूर होय सुखारी ॥

अथ ॥ हड बहेडा, आवला, तीनों १० टंक मिलाय, गूगल २॥ टंक पांचो का काढा कर पीवे ३० दिन तक तो शीर्ष कोष्टु रोग जाय ॥ इति ॥

अथ गोंड़ दुखने को जतन लिख्यते॥ दोहा॥

मर्दन मीठे तेल का तापर सोंठ मिलाव
तापर पात अरंड के तेल चुपड़कर लाव

अर्थ॥ मीठा तेल मलवा के ऊपर से सोंठ बारीक पिसवा के मलवावे बाद उसके अरंड के पत्ते सेककर बांधे तो गोंड़ दुखने अच्छे होजावें॥ ॥ और जतन॥ ॥ कौंच के बीज टंक २ दही के साथ ७ दिनतक खाय तो गोंड़े का दुख बन्द हो॥

अथ खल्ली के जतन॥ ॥ कूट सेंधानमक दोनों का काढ़ा कर इसमें तेल अमलवेत का रस डाल मंदर आंच से पकावे जब सब जल जाय तेल मात्र आयरहे तब उतार कर छानले इस तेल का मर्दन करे तो खल्ली रोगजाय॥ १॥

अथ वात कंठ के लक्षण

दोहा॥ ऊंची नीची जगह में धरत पांव दुख होय
पुनि टकनों में पीड़ हो वातकंठ है सोय॥

अथ वात कंठ के जतन॥ रोड़ा छन्द॥

गूगल मल्ली गर्म औषधी खाय पसीना लीजे॥ अथवा तेल अंड को लेकर पांच टका भर पीजे॥ पीवे तेल महीना भर जो वातकंठ गा खो॥ पछवा पवन बल तकी नभमें घनदल नाशै जैसे॥

अथ पाददाह के लक्षण॥ ॥ वायु पित्त और रक्त मिलके पांव के तलवों में दाह पैदा करते हैं तिसे पाद दाह कहते हैं॥

अथ पाददाह को जतन दोहा

पीसे दाल मसूर की पतली करे पकाय
लेप पांव पर कीजिये जब ठंडी हो जाय॥

अर्थ॥ मसूरकी दाल महीन पीस जलमें औटावे जब ठंडी होजाय आठया सात लेप करै तो पाद दाह जाय वा मक्खन का लेप कर मर्दन करे और सेके वा अरंडी के दूधमें पकाकर तलवों पर लेप करै तो पाद दाह जाय॥१॥१॥१॥१॥१॥

अथ पाद हर्ष को लक्षण॥॥ दोनों पैरों में झुनझनाहट हो और पैर सो जावें दवाये से न जागें तो पाद हर्ष जानो॥१॥१॥१॥

पाद हर्ष को जतन सोरठा

कफ अरु पवन नसाय ऐसा जतन जु कीजिये
तातें यह रुज जाय परमानंद सुजान कहै॥

अथ पग फूटनी को जतन लि० दोहा

सांभर हलदी तिल नवल तीनों सम करल्याय॥ बीज धतूरे अरक में सब को लेय पिसाय॥१॥ तीनों को सम तोल के । गो का माखन डाल॥ धर चूल्हे पर सब न को मंद अग्नि तर बाल२ चारगुना गोमूत्र पुनि डारै बारंबार॥ घिरत मात्र रह जाय जब ठंडा करै उतार॥३॥ पग तलवों पर लेप के खूब मलो चित लाय॥ परमानंद सुजान कह पग फूटन मिट जाय॥४॥

अथ वाताक्षेपक पित्ताक्षेपक को लक्षण०

पित्त में मिली हुई वायु पित्त के स्थानों में जाकर स्तंभित कर दे दंड की तरह करदे या वही वायु कफ में मिलके धमनी नाड़ी में जाकर देह को स्तंभित करदे और अंगों में पीड़ा करे तो असाध्य है वा चोट लगने से जो वायु पैदा होती है तिसके अक्षेप को भी असाध्य जानौ॥

इति वाताक्षेप पित्ताक्षेप को लक्षण समाप्त

अथ आक्षेपका जतन ॥ महावल्लातेल्लि

दोहा ॥ वेरी की जड़ उड़द अरु मूल खरहटीवाल ॥ कुलत्थ मूल दशमूलीजिये सबको क्वाथ उबाल ॥ १ ॥ रहै आठवों भाग जब तामें तेल मिलाव ॥ आगे जो औषधि लिखूं तेहू सम करलाव ॥ २ ॥ छन्द ॥ नमक सेंधा सोंठ गोरीसर मजीठ सतावरी ॥ अगरपत्रज राल साठी जड़ इलायची लावरी ॥ कूट छड़ पदमाष अरु असगंध तामें डारिये ॥ देवदारु डार सबये तेल मांह उवारिये ॥ क्वाथ औषधि सब पचे तब तेल मात्र रुनाइये ॥ अंगमें मर्दन करे आक्षेप व्याधि नसाइये ॥ सांस हिचकी अंत्रवृद्धी क्षीणता सब खोवई ॥ खेदवृद्धा हाड दुखता रोग अच्छा होवई ॥

अर्थ ॥ वेरी की जड़। उड़द। खरहटी की जड़। कुलत्थ। दशमूल ॥ इन सब का काढ़ा पकावे जब आठवां हिस्सा रहे तब उसमें ये औषधि और तेल मिलावे सेंधानमक सोंठ, गोरीशर, मजीठ, सतावरी, अगरपत्रज, राल, साठी की जड़, इलायची, कूट, छड़, पदमाष, असगंध, देवदारु, ये सब औषधि मिलाय खूब पकावे जब काढ़ा और ये औषधि जल जाय तेलमात्र रहे तब उतार के इस तेल का मर्दन करे तो सब तरह का आक्षेपक सांस हिचकी अंत्रवृद्धि क्षीणता खेद वृद्धि हाड का दर्द ये सब रोग जांय ॥ इ॰ म॰ व॰ ते॰ ॥

अथ अंतर्याम रोग को लक्षण दोहा

पगउंगली पद हिया टकनों में की वायु

पकडै मुख नाड़ीनके नेत्र खुले रह जाय

सोरठा॥ सकल अंग तन जाय मुड़ कर होय कमानसा
अंतरयाम बताय मुड़े जवाड़ा भी नहीं ॥१॥

अर्थ॥ वायु उत्पन्न करने वाली वस्तु खाये से वायु कोप कर के देह की नसों को कंधों को पीठ को सुखाय देती है मनुष्य के शरीर को कमान की सदृश कर देती है तिसे अंतरायाम कहते हैं जो पीछे आर्दित रोग के जतन लिखे हैं वेही इस के हैं॥

अथ धनुस्तंभ का लक्षण॥ ॥ कमान की समान अंग हो जाय शरीर का वर्ण विवर्ण होजाय मुख बन्द होजाय देह शिथिल होजाय अचेत होजाय पसीना आवे तिसे धनुस्तंभ कहते हैं इस रोग वाले की १० दिन की अवधी है॥

अथ कुब्ज रोग के लक्षण॥ ॥ वायु कोप करके हिये को ऊंचा करदेती है हिये में पीड़ा बहुत होय तिसे कुब्ज रोग कहते हैं इन तीनों रोगों के वास्ते प्रसारणी तैल गुणदायक है॥ ॥ अथ अपतंत्र रोग के लक्षण॥ दोहा॥ १॥ १॥

बायु हिये में जायके सिर कनपटी पिराय
मोह बढावे अति घना देय शरीर नवाय॥
सांस लेय अति कष्ट सों कंठ कबूतर बोल
संज्ञा सब जाती रहे नेत्र फाड़ ले खोल
अथवा नैन मिच रहे जो ये लक्षण जान
यही रोग अपतंत्र है परमानंद सुजान

अथ अपतन्त्र का जतन लिख्यते दोहा

मिरच सहजना बीज पुन तीजा बाय विड़ंग
पुनि अफीम सब सम धरा पीस करो इक अंग

चौ०॥ जोयह चूरणलेय फुलाल॥ निश्चय करो अपतंत्र विनास
अमल बेल अरु हड़ की छाल॥ बच अरु सेंधानमक तुवाल
डाल रासना सब सम कीजे॥ पीसमहीन छान पुनि लीजे
टंक दोय घृत अदरक साथ॥ जो अपतंत्र प्रात जो खात
हैड़ की छाल बच सेंधानमक॥ अमलबेत रासना येबराबर
लेपीस टंक २ घृत शहद के साथ खाय तो अपतंत्र जाय॥

अथ पक्षाघात के साध्य असाध्य लक्षण लि० सोरठा॥

केवल कोपे बायु पक्षाघात जु प्रकट हो
लक्षण साध्य कष्ट यप रमानंद सुजान वद

दोहा॥ गर्भवती परसूति का बालक वृद्ध अरु क्षीण
इनको पक्षाघात हो सो असाध्य परबीण

अथ पक्षाघात का जतन लिख्यते॥ कुंडलिया॥

उड़द खरैटी मूल अरु कौंच बीज पुनि डाल
मूल अरंड की डार के काढा लेय उबाल॥
काढा लेय उबाल भूनकर हींग मिलावे॥ नमक लहौरी डार
छान कर बेग पिलावे॥ पवन लगन नहिं देय रैन में ओस
बचावे॥ पक्षाघात सुजान फेर ढूंढा नहिं पावे॥

अर्थ॥ उड़द खरहटी की जड़ कौंच के बीज अरंड की जड़
इन सबका काढा कर भुनी हींग और सेंधानमक डाल
कर पिलावे तो पक्षाघात जाय॥

अथ पक्षाघात को ग्रंथिकादि तैल लि० चौपाई

चीता पीपल उड़द अनूठी॥ सैंधानोन रास्ना सोंठी ॥१॥
मूल पीपला सब सम लावे॥ इन सातों का क्वाथ पकावे

तामें तेल डारसम जारे ॥ तेलमात्र जब रहै उतारे ॥ १॥
तिसी तेल का मर्दन कीजे ॥ दिनदिन पक्षाघात गुडीजे
अर्थ ॥ चीता, पीपल, पीपलामूल, उड़द, सेंधानमक, रास्ना,
सोंठ, इनका काढा कर तेल मिलाय पकावे जब काढ़ा ज-
ल जाय तेलमात्र रहे उतार कर मर्दन करै तो पक्षाघात जा०

अथ पक्षाघात कोमाषादि तेल चौपा०

उड़द रास्ना सोंफ अतीस ॥ सेंधानमकल्लाडली पीस ॥
कौंचबीज पुनिमूलअरंड ॥ करै क्वाथ दे अग्नि प्रचंड ॥
काढा छान तेलसम डारै ॥ तेलमात्र रहजाय उतारै ॥ १
तिसी तेलकामर्दन करै ॥ पक्षा घात रोग यह हरै ॥
अर्थ॥ उड़द रास्ना सोंफ अतीस सेंधानमक कौंच के
बीज अरंडकीजड़ इनसबका काढा पकाय छान के
बराबर तेल मिलायफिर पकावे जब तेलमात्र रहै उतार
करमर्दन करै तो पक्षाघात जाय॥ येभावप्रकाशमें है ॥

और जतन ॥ दोहा ॥

उड़द सोंठ जड़ अरंडकी मूल खरेटी आन
कौंचबीज सेंधानमक काढा करै सुजान
छानक्वाथको पीजिये पक्षाघात नसाय
यह है वैद्यविनोदका आशय सुन सत्भाय

अर्थ

उड़द सोंठ अरंडकी जड़ खरेटी की जड़ कौंचके बीज
सेंधानमक इनका काढाकर छान पीवे तो पक्षाघात
जाय ये वैद्यविनोद में है ॥

अथनिद्रानाशरोगकोजतन॥ ॥भांगसेकीहुई महीन पीस अनुमान मोंफिक शहत में मिलायचाटै तोनींद आवै अतिसार और संग्रहणी जाय और भूखलगै यापीपलामूल का चूर्ण गुड़के साथ खाय तो नष्ट भई नींद आवै या अरंड का तेल और अलसीका तेल कांसी के पात्र में घिसके आंजे तो नींद बहुत आवै या मुश्क स्त्री के दूधमें घिसकर आंजे तो नींद आवै या सौंफ और भांग महीन पीस कर बकरी के दूध में घिसकर लेप करै तो नींद आवै॥ ये सब जतन वैद्य रहस्य में लिखे है॥ इति निद्रानाश केजतन सं०॥

अथ वात व्याधी का सामान्य जतन लि०

अथ नारायण तेल विधि ॥ छन्द॥ दोनो कटेली गोखरू असगंध अरलू लाइये॥ पाढ़ल गंगेरण छाल प्यारी नीम छाल मंगाइये॥ बेल मींगी जड़खरैटीमूल साठीसांवरी सांप अरणी दश टका भर सबै औषधि लावरी॥ सेरषोडष नीर तामें डार क्वाथ उतारिये॥ भाग चौथा बच रहै तब तेल तिल सम डारिये॥ गाय दूध मंगाय प्यारी चौगना इसमें करो॥ आंच मधुरी बाल नीचे औषधी पुनि ये भरो॥ लायची चंदन खरैटी रास्ना सेंधा नमक॥ थाल पर्णी प्रष्टपर्णी माषपर्णी लाय रख॥ मुदगपर्णी सौंफ बच कूड़ इंद्रायण साफकर॥ शिलाजीत सुगंध प्यारी तोल दो दो टकभर॥ पुनि टका भर कूट सबसंग पीस तामें डारिये॥ मधुरी आंच जराय नीचे मंद २ उबारिये॥ औषधी और दूध जब जल जाय तेल उतारिये

होय शीतल छानकर तब पात्र मांहिं ये धारिये

अर्थ ॥ दोनों कटेली गोखरू असगंध अरलू पाटल गं गेरण की छाल नीमकी छाल बेलगिरी खरैटीकी जड़ साठी की जड़ सीप अरणी ये सब औषधी १० टके भर ले कर १६ सेर पानी में काढ़ा करै जब ४ सेर रह जाय तब इसमें ४ सेर तिल का तेल डाले और १६ सेर गौ का दूध डालकर मंद २ अग्नि से पकावे पकते में नीचे लि खी औषधी और डाले कूट टका १ भर इलायची टका २ भर लाल चंदन टका २ खरैटी टका २ बच टका २ छड़ ट का २ शिलाजीत टका २ सैंधा नमक टका २ रास्ना टका २ सौंफ टका २ इंद्रायण टका २ शालपर्णी टका २ पृष्टपर्णी टका २ माषपर्णी टका २ मुद्गपर्णी टका २ जब ये औषधी और दूध जल जाय और तेल मात्र रहै तब उतार तेल को छानकर कंच के पात्र में रखे जो मर्दन करै तो ये रोग जांय ॥ पक्षाघात हनुस्तंभ बहरापणा गतिभंग कटि ग्रह गात्रशोषन विषमज्वर अंत्रवृद्धि शिरोग्रह पार्श्वशूल गृध्रसी और संपूर्ण वायु के रोग दूर होंय ॥

इति नारायण तैलम् ॥

अथ जोगराज गूगल की विधि

चौपाई ॥ चीता सोंठ पीपलामूल ॥ पीपल कुटकी चव्यन भू ल ॥ दोनों जीरे हींग अतीस ॥ भाड़ंगी बच मूर्वा पीस ॥ इंदरजव संभाल आन ॥ गजपीपल ह डार सुजान अजमोदा अरु बाय विडंग ॥ सरसों पाट सभी इक संग

मासे चारचार ले आव ॥ सबसे दूना त्रिफला लाव ॥
दोहा॥ गोली माशे चारकी विधिसों लेय बनाय
रायसनादिक क्वाथसे नेम पूर्वक खाय॥

अथ रासनादि क्वाथ लि॰॥

रायसना साठी की जड़ गिलोय अरंडकी जड़ इन के काढ़े के साथ खाय तो वायु के सब रोग जांय॥ और गोमूत्र से खाय तो पांडु रोग जांय और किरमाला पंचक के काढ़े से ले तो कफ के सब रोग जांय शहद से खाय तो वातरक्त रोग जाय॥ इति जोगराज गू॰॥

अथ लहसनकल्प॥ चौपाई॥ टका एक भर लहसन लावे। ताही के सम तेल मिलावे॥ सेंधा नमक डारु जो पीवे॥ वायु नसाय सुखी हो जीवे॥ दूध घिरत संग लहसन खावे॥ सब प्रकार की वायु नसावे॥ मंदाग्नी पीड़ा अरु शूल॥ विषम ज्वर की रहै न मूल॥ शिर के रोग पेट का गोला॥ वीर्य्य रोग यह हरै अमोला॥ चौदह दिन लों विधि से लीजे॥ पुष्ट होय अरु रुज सब छीजे॥

इति लहसनकल्प

अथ महारास्नादि क्वाथ लिख्यते॥ दोहा॥

रास्ना बक्कल सहजना पीपल सौंफ अतीस
मोथा हड़ की छाल पुनि साठी की जड़ पीस॥
मूल खरैटी गोखरू देवदारु असगन्ध ॥
किरमाला की गूंग अरु शतावरी मुख चन्द
धनियां छाल अरंड की दोउ कटै की मूर

चव्यधमास अडूसपुन बीधारो कचूर ॥
हरित गिलोय समान सब काढ़ालेय बनाय
जोगराज सेखायतो वातव्याधि नसाय ॥

अर्थ ॥ रास्ना १ सहजने का बक्कल २ पीपल ३ सौंफ ४ अतीस ५ मोथा ६ हड़ की छाल ७ साठी की जड़ ८ खरैटी की जड़ ९ गोखरू १० देवदारु ११ असगंध १२ किरमाला की गिरी १३ शतावरी १४ धनियाँ १५ अरंड की छाल १६ दोनों कटेली १८ अडूसा १९ कचूर २० चव्य २१ धमासा २२ बिधारो २३ गिलोय २४ इन सबके काढ़े के साथ गूगल जोगराज खायतो सर्वव्याधि जाय ॥ इति म॰ रा॰ क्वा॰ ॥ ये भाव प्रकाश में है ॥

अथ अष्टांग तैल विधि लि॰

अरंड संभालू सहजना थूहर और कनेर ॥
कुटी बकायन जानिये सबके पात सकेर ॥

चौबो॰ चल्ला ॥ इन सबका रस चार भाग इक भाग तेल का डारे ॥ सोंठ डार पुनि धर चूल्हे पर नीचे अग्नी वारे ॥ तेल मात्र जब रहै पंजर के छान वस्त्र में लीजे ॥ मर्दन करै सुजान बात की व्याधी छिन छिन छीजे ॥

अर्थ ॥ अरंड के पत्ते संभालू के पत्ते सहजने के पत्ते ॥ थूहर के पत्ते कनेर के पत्ते बकायन के पत्ते मंगाय सबको बराबर ले कूटरस निचोड़ और इससे चौथाई तेल डालकर पकावे पकते में सोंठ डारे जब रस और सोंठ जल जाय तब तेल को उतार कर छान ले ॥ इस तेल का मर्दन करने से सब प्रकार की वायु जाय ॥ इति अष्टांग तैल बिधि ॥

अथविषगर्भ तेलबिधिः लिख्यते

मूल धतूरा निर्गुंडी पुनि कडवी तूंवी मूला ॥ मूल अरंड सहजन की जड छाल बकायन तूला ॥ कारे हारी की मूल नीव की छाल बिधारा कंध ॥ चिरपोटन गौरी सर थूहरके पत्ते असगंध ॥ पवाड़ चीता कौवालहरी सतावरी प्रिय प्यारी ॥ सनाय दोनौं कनेर बकली आधीझारो खारी ॥ दशौं मूल अरु आक पात सब कहर तोले लावे ॥ इन सबही की तुल्य तेल पुनि तिलका तेल मिलावे ॥ पुनि अरंड का तेल तिलों के तेल बराबर डालो ॥ इससे चारगुना पुनि पानी सब एकत्र उबालो ॥ जल औषधि जल जांय सकल तब तेल हिमाब हिलाल छान वस्त्र में कूट पीसके और दवाये डालो ॥ सोंठ मिरच पीपल इंदरजव जुवाखार मृगनैनी ॥ पांचो नोंन रास्ना नीला थोता कोकलवैनी ॥ पोहकर मूल कायफल गंधक भाड़ंगी नौसादर ॥ देवदारु असगंध कूट अरु शिला जीत हूलाधर ॥ वच हरताल औ नागरमोथा पाट सबै सम लीजे ॥ कहर माशे सब ये औषधि पीस कपड़छन कीजे ॥ ले दो तोले सींगी मोहरा पीस तिसी में डारे ॥ मर्दन करे तेल यह प्रति दिन वायु सुजान सिधारे ॥ ॥ इति ॥ ॥

अर्थ ॥ धतूरे की जड़ १ निर्गुंडी २ कड़वी तूंबी की जड़ ३ अरंड की जड़ ४ सहजने की जड़ ५ बकायन की जड़ ६ कारे हारी की जड़ ७ नीम की छाल ८ बिधारी कंद ९ चिरपोटन १० गौरीसर ११ थूहर के पत्ते १२ असगंध १३ पवाड़ १४ चीता १५ कागलहर १६ सतावरी १७ सनाय १८ दोनों कटेली १९ कनेर का बकाल २०

आधी झारोखीय २१ दशमूल २२ आक के पत्ते २३ ये सब छह २ तोले लेके इन सब की बराबर तिल का तेल और इसी की तुल्य अरंड का तेल और इसमें चौगना पानी डाले सब एक कर मंद आंच से पकावे जब जल और औषधि जल जाय और तेल मात्र रहे तब उतारकर ये दवा और मिलावे सोंठ मिरच पीपल इंद्र जव जवाखार पाँचों नोन रास्ना नीला थोथा पोहकरमूल कायफल गंधक भाड़ंगी नौसादर देवदारु असगंध कूट शिलाजीत वच हरताल नागरमोथा पाट ये सब दवा छह छह माशे और सींगी मोहरा २ तोले बारीक पीसकर उसी तेल में मिला दे रोज इस तेल को मले तो सब प्रकार की वायु दूर होय॥ पीठ जांघ संधिगत का सोजा उतरे गृध्रसी रोग सिर का रोग हड़फूटनी कान का दर्द गंडमाला ये सब रोग दूर होंय ॥ इति विषगर्भ तेल॥ अथ लक्ष्मीविलासमःतु तै॥ दोहा॥ हैड़ बहेड़ा आंवला नागरमोथा वाल

तजपत्र जगंधक सुधी चीढ़ कटेली डाल

कड़ा॥ चीढ़ कटेली डाल और मंजिष्ट सुहागन॥ देवदारु कचूर और बच लोबड़ भागन॥ दोदो तोल तोल औषधि सब ये लीजे॥ कूट क्वाथ कर तेल सेर उसमें पुनि कीजे॥ जब सब रस जल जाय तेल तब लेय छनाई॥ पुनि ये औषधि कूट छान कर देय मिलाई॥ मेडल चंपा मूल पीपला मूल सुवाला॥ मर्वा संचर नोन बेरजा नेत्र वाला॥ नप छड़ अरु असगंध अल लोबान पियारी॥ दोदो तोले कूट छान कर

गरो तैयारी ॥ चन्दन केसर नागलायचीलौंगनवीली ॥ जायकली कंकोल मिरच सुन रंगरंगीली ॥ एक एक तोला ले मर्दनकर इसमें डारै ॥ मृगमद माशे चारतिसी में और पधारै ॥ जब औषधिजलजांकपूरनौ मासेली जे ॥ डाल तेल के बीच देह में मर्दन कीजे ॥ सूजनगोला मेह बात की व्याधि नसावे ॥ परमानंद सुजान ग्रंथ लख युक्ति बतावै ॥

अर्थ ॥ हड़की छाल १ बहेड़ा २ आंवला ३ नागरमोथा ४ बज ५ पवज ६ सोधीगंधक ७ चीता ८ कटेली ९ मजीठ १० देवदारु ११ कचूर १२ वच १३ येसबदवा दोदो तोले कूट काढ़ा करे काढ़े में १ सेर तेल डाले जब काढ़ा जलने लगे ये दवा पीसकर और मिलावे मेडल चम्पाकी जड़ पीपलामूल मूर्वा संचरनौन नेत्रवाला बेरजा नषछड़ असगंध लोबान येसब दोदो तोले और चंदन नागकेसर लायची लौंग जायकली कंकोल येसब तोला २ भर कस्तूरी ४ माशे जबयेसब रससहित जल जावें तब तेल छानकर उसमें ८ माशे कपूर मिलाके मर्दन करै तो प्रमेह सूजन गोला और सब बात की व्याधि दूर हो ॥ इ० ल० तै० ॥

अथ विजयभैरव तैलबिधिः

पारा गंधक हरताल येतीनों बराबर ले कांजीके पानी में ३ दिन खरल कर कपड़े पर लेप करै फिर उसकी बत्ती बनाकर चौगुने मीठे तेल में भिगोवे जो तेल बचे जलती बत्ती पर डालता जाय लोहे का पात्र नीचे रखे जो तेल बत्ती के फूल से

टपके निकाल कर शीशी आदि मेंभरे जो इस तेलका मर्दन
करे सब प्रकार की वायु दूर हो॥ इति विजयभैरव तैल ॥

अथ बिजयभैरव रस लिख्यते

सवैया॥ ॥ चित्रक तीन टका भरलै पुन हैड़ की छाल तिही सम
जानो॥ पत्रज नागरमोथ इला तज ये सब द्वादशमाष बखानो॥
पारद गंधक होय सुधी पुन पीपल पीपलामूल हु आनो॥
सींगीमोहरमोथ भया अरु सोंठ सियाह मरीच प्रमानो ॥
येसब माष सुजान हरेक संभालुक पांचहि माष विसावो॥
केसरनाग अढाइहि माष सबै मिलवाय मर्हीन पिसावो॥
गंधक पारदकी कजली कर तामहि औषधि पीस कुनावो
सेर सवा गुड़ लाय पुरातन मेल इसे गुटिका जु बनावो ॥
दोहा॥ गोली मींगी बेरसी एक तथा दो खाय॥ युग्ममास
सेवन करै कफ पित्तकी रुजजाय॥ बारमहीना खायजो हरै
वायुकी पीर॥ एक वर्ष जो लेइसे बलयुत होय शरीर ॥
अर्थ॥ चीता टंके ३ हैड़का बक्कल टंके ३ पत्रज तोला १
नागरमोथा तो॰ १ इलायची तो॰ १ तज तो॰ १ पारा टंक १० सोधी
गंधक टं॰ १० पीपल टं॰ १० पीपलामूल टं॰ १० सींगीमोहरा सोधा
हुवा टं॰ १० सोंठ टं॰ १० कालीमिर्च टं॰ १० संभालू टं॰ ५ नागकेसर
टं॰ २॥ सबको मिलाय पीसे पहले पारे गंधक की कजली
करे तिसमें ये सब दवा डाले सबको सेर १। गुड़ में मिलाय
कोटे बेरकी गुठली समान गोली बनावे १ या २ गोली रोज
२ महीने तक खाय तो कफ पित्त के सब रोग दूर हों ४ मास लेतो
वायुके सब रोग जांय १ वर्ष लेतो आयु बल बढ़े ॥ इ॰ वि॰ भै॰ र॰॥

अथवातारिरसलि० चौपाई

पाराभाग एकही जानो ॥ गंधक के दो भाग बखानो ॥
त्रिफला तीन भाग करलीजे॥ चारभाग चीते के कीजे ॥
पाचभाग पुनि सोधीगूगल ॥ अरंड तेलमें करे जुखरल ॥
खरल एकदिन कीजेताही ॥ पुनिहिंगवाष्टक डारेमाही
दाहा॥ एकदिवसपुनिखरलकर छाई टंकप्रमान
गोलीताकीकीजिये परमानंद सुजान
सोंठ अरंड जडलौंगके काथसाथ जो खाय
एकमासके बीतते वात व्याधि नसाय

अर्थ॥ पारा भाग १ गंधक भा० २ त्रिफला भा० ३ चीता भा० ४ सोधी गूगल भा० ५ अरंडके तेलमें १ दिन खरल करो फिरतिस मे हिंगवाष्टक चूर्ण मिलावे यानि सोंठ मिरच पीपल अजमोद सैंधानमक दोनोंजीरे हींग ये सब मिलाय १ दिन और खरल करै फिर २॥ टंक प्रमाण गोली बनावे १ गोलीनित्य सोंठ अरंडकी जड और लौंग के काढे के साथ १ महीने तक खाय और जितेंद्री रहै तो सब वायु के रोग जांय और सामान्य वायु तो ७ दिनमें ही जाती रहै॥ इ० वा० ॥

अथसमीररस लि० चौपाई ॥

काली मिरच अफीम नवीन ॥ तीजा कुचला लावप्रवीन
पानअरकमेंखरलजुकीजे॥ गोलीरत्तीभरकरलीजे॥
गोलीएकप्रातनितखाय ॥ पुनिऊपरसे पानचवाय्
सजनअरुचीमिरगी जावे॥ सबप्रकारकी वायुनसावे
॥ इतिसमीरराजकेसरीरससमाप्तं॥ येवैद्यरहस्यमें है ॥

अथलहसनपाकविधि लि०॥ दोहा॥

लहसनपेसा एक भर ताकेजव कराय॥ पुनिधेला भरनी रमें जलपैसा भरपाय॥१॥ तीनोंकोएकत्रकरनीचे आग जलादि॥ जलपयसबजलजायतबखरलकरै पुनिताहि ॥२॥ लुगदीलेयबनायपुनि धेलाभरघृतडार॥ नलेआंच पुनिदीजियेलालहोयतबतार॥३॥ दोतोले अंदाज कर नीकीमिसरीलाव॥ करैचाशनीयुक्तिसे येसबदवामिलाव ॥कवित्त॥ आधीरत्तीकस्तूरीमें रत्तीचारलौंगडारजाय फलोदारचीनीमाशामाशाचीजिये॥ सोंना केवरक एक माशायेसबऔषधीलेखूबपीसछानकर चाशनीमें दीजिये॥ पुनिलहसनडारगोलीबांधेजोसवारपरगिन्ती मेंचारकमोवेशमतकीजिये॥ एकगोलीखायप्रातवायुमिटजायरोगहोयजोसिवायसांझएक औरलीजिये॥ दोहा॥ इक्कीसदिनतकलेइसे अथवालेउंचास

बायुरोगका अंगमें रहै सुजान न वास ॥

अर्थ॥ लहसन पैसाएकभरकेबारीकजवेतराशकर पैसा भर दूध और धेलाभरपानी मिलाके पकावो जब दूधपानी जलजाय तब उतारके खरल करके लुगदी बनालो इसे ६ माशेघीमें भूनो जबसुरखीपर आवेतब उतारलो अगरघीबचे तो अलहिदाकरलो बादइसके दोतोले मिसरीकी चाशनीकर येदवा औरपीसकर मिलावो॥ कस्तूरी आधी रत्ती लौंग ४रत्ती जायफल १मा· दारचीनी१ माशा सोनेकेवर्क १माशा फिर लहसन डार

गोली ४ बनाओ १ गोली सुबे को खाओ बीमारी सख्त होतो १ शाम को खावो २१ या ४१ दिन खाने से वायु की कुल बीमारी जाय बदन पुष्ट होय भूख लगे ॥ इतिलहसनपाक ॥

इति वायुरोग की उत्पत्ती लक्षण जतन सम्पूर्णम् ॥१॥

इन रोगो से जो अपर रोग हैं उनके लक्षण जतन इस पुस्तक के दूसरे भाग मे लिखे जावेंगे ॥ ॥ इतिश्री वैद्यक गुटका छंद भाषा पण्डित सुजान सिंह हेड मास्टर कृत समाप्तम् सम्वत १९४५ फाल्गुण कृष्णा १४ भृगुवासर शुभमस्तु श्रीरस्तु मंगल ददातु ॥

छन्द

नगर मेरठ वैश्य पाडो ज्ञान सागर मत्तवा
मुलतानि मन हरदेव सिंह पंडित जहां पर येछपा
ईसवी सन अष्ट दिग्गज वसु निशाकर जानये
विक्रमादित अंक नर्य पुनंक वेद सुजान ये

समाप्तम्

श्री

यह पुस्तक पंडित सुजानसिंह हेडमा-
स्टरने वैद्यक के ग्रंथोंसे दोहे चौपाई
छन्द और कई चौबाले आदि में उल्था
किया और पंडित हरदेवसहायजू कूं छाप
ने की इजाजत दी बगैर इजाजत मा-
स्टर साहब की कोई साहब न छापै ॥

"The Baidiyak Gutka

"Not to be printed without permission of Pundit Hurdeo Sahay

Printed at the Gyan Sagur press Meerut city

वैद्यरत्न
रोगी
दर शहर आगरा मोहल्ला पुराना काजीपा

श्रीगणेशाय नमः

अथ वैद्यरत्न

दोहा

नारदादि सेवत जिन्हें पारद विमद प्रकाश ॥ नारद
विधि बन्दन करहिं हिये शारदा पास ॥ १ ॥ वैद
आलस लखुत बडो ग्रंथ अभिराम ॥ तिनको यह
छोटो करत वैद्यरत्न इति नाम ॥ २ ॥ अथ नारीप
रीक्षा ॥ भूखो प्यासो सयन युत तेल लगावे कोय
जैवो न्हायो तुरतही नाड़ी ज्ञान न होय ॥ ३ ॥ हाथ
अंगूठा निकट की नाड़ी जीवनि मूल ॥ तासो पं
डित देह को जाने सुख दुख मूल ॥ ४ ॥ नरको कर प
ग दाहिनो तिय को कर पग बाम ॥ तहां वैद्य जाने
निरखि नाड़ी को परिमान ॥ ५ ॥ सम्प्रदाय पोथीन सो अ
रु अनभव सो जान ॥ नाड़ी लक्षण वैद्य फिरि औषधि
कहैं बखान ॥ ६ ॥ जैसें परखै पारखो रतन जतन
कर एन ॥ नाड़ी निरखत वैद्य इमि भली भांति सुख
चैन ॥ आदि मध्य अरु अन्त मे बात पित्त कफ जान

क्रमतें नाड़ी विधि यह नाड़ी को ज्ञान ॥८॥ मोर कवूतर पांडुराज हंस तमचूर ॥ इनकी गति नाड़ी निरखि कफ जानै यह मूर ॥९॥ बार बार इन की गति बार बार अहि गौन ॥ बात पित्त की नाडिका पंडित जानै एन ॥१०॥ सर्प हंस गति सम चलै नाड़ी तव कफ बात ॥ सिंह हंस गति पित्त कफ नाड़ी तब यह घात ॥११॥ रहि रहि काठन काठ ज्यों कठ परा करि सोर ॥ यों नाड़ी तब जानियो सन्निपात नहि जोर ॥१२॥ तीस बेर लौं फरकि फिर नाड़ी रहि २ जाय ॥ तव यह निश्चय जानिये नाहि रोगी ठहराय ॥१३॥ रहि रहि रहि कर फिर चलै नाड़ी बार बार ॥ तव रोगी के प्राण वह लेय रही निरधार ॥१४॥ **छप्पय** ॥ जिमि जिमि ग्रुरु कुटिल कुटिल व्याकुल फिरि ॥ रहि रहि नाड़ी चलै राजाय सूक्ष्म है फिरि गिरि ॥ फरकै कंठ मझार नित्य नाड़ी पुनि तबहूं ॥ चलि चलि अंगुरी छुवहरि नाड़ी वह कबहूं ॥ इमि होय भाव बहुतहिं जबहिं नाड़ी कैते निरखि नित ॥ जानै असाध्य नाड़ी तबहिं सन्निपात बुध जानि चित ॥१४॥ पहले पित्त गति होय वात गति होय बहुरि बहु ॥ कफ गति नाड़ी होय भेद कहि दियो बहुरि यहु ॥ चक्र चढ़ी सी फिरै थान अपनो नाड़ी तजि ॥ बहुत भयानक होय मोर गति चलै बहुरि भजि ॥ पुनि होय जाय सूक्ष्म बहुरि जान किराच्य रस ॥ यह भांति होय जवहि तव असाध्य कहि धमरस १५ ॥ **दोहा** ॥ नाड़ी करकै मास मधिव इगभीर वर बानु ॥ नाड़ी ज्वर के जोर से कुपित उष्ण अति

जानु ॥१७॥ चौपाई ॥ काम कोप ते चंचल नाड़ी ॥ चिं ता रोग क्षीन निरधारी ॥ क्षीन धातु मंदाग्नि भारी ॥ ता की नाड़ी मंद बिचारी ॥ दोहा ॥ लोहू आम विकार ते गरुई नाड़ी होई ॥ उदर अगिन अति तब चपल हलुके लक्षण होय ॥ सोरठा ॥ लक्षण जानो एक भूखे की ना ड़ी चपल मुनि जन करो विवेक अफरे की थिर जानिये ॥२० दो० ॥ दुपहर अग्नि समान चर मल गिरि चंचल नारि ॥ वह नर जीवे एक दिन मुनिन कही निरधारि ॥२२॥ जैसे ड मरू चलत है यों नाड़ी चलि जात ॥ जो नर जीवे एक दिन नीठ नीठ ठहरात ॥ इति नारी परीक्षा ॥ अथ जिव्हा परीक्षा ॥ दरकी पीरी खरखरी जीव पवन कह देत ॥ लाल श्याम बहु पित्त से पिकले होवे स्वेत ॥२३॥ सूखी कारी कंठ युत सन्निपात कह दीन ॥ मिलवा लक्षण होय के अशुभ सुलक्षण हीन ॥२४॥ इति जिव्हा परीक्षा ॥ अ थ नेत्र परीक्षा ॥ सूखे चंचल धूमरे भीम जरत से नैन निहचे उपजे ॥ जानिये वात रोग तब रैन ॥२५॥ दीप सुहाइन सेत पित्त पित्त नैन तव पीत ॥ गीले चिकने तेज घट मंद जातु कफ मीत ॥२६॥ वात पित्त कफ वात के के कफ पित्त मिलंत ॥ तव मिलवा लक्षण कहे नैन वान लखि संत ॥२७॥ कारे टेढे अरु अरुन तेतन्द्रा जुत तव देष ॥ लाल भयानक नैन लखि कहत त्रिदोष विवेक ॥२८॥ आंख भयानक एक लखि वह दूजी मुंद जाय ॥ तव रोगी दिन तीन में यम के घर ठहराय ॥२९॥ चौपाई ॥ जाकी आं ख अलज सम बारी ॥ लाल कि होइ रकत अनुहारी ॥ चित वन लगी भयानक भारी ॥ तव रोगी की मीच्यु बिचारी ॥

दोहा ॥ भ्रमते दृग तारे फिरैं एक ठौर नहिं चेतु ॥ एकरा
ति में यम नगर रोगी मारग लेत ॥ ३१ ॥ इति नैत्र परीक्षा

॥ अथ असाध्य व्याधि निरूपनम् ॥ छप्पय ॥
नींद नास निशि होय कंठ कफ़ भरि आवत होत देह
मधि दाह चैन फल एक न पावत ॥ वात कहत तुत-
रात होय लघु इन्द्रियमून वल्ल बदन सकत लैय जी-
व बिचारी ॥ होइ जाइ रोग जुइमि तुरत रोग आधा
न जब ॥ ताकहं बिचारि ओषधि कहत राम नाम
तजि काम सब ॥ ३२ ॥ अथ ज्वराधिकार ॥ जा
ने सगरे रोग को ज्वर राजा सिरदार ॥ ताते पहले कह
तहों अब ख़रको अधिकार ॥ दो० ॥ अथ वात ज्व
र ॥ धनासरी ॥ कंप वेग कंठ मुख होठ सूखे निंद्रा
नाश छीक हू न आवे होइ देह में रुखाई ॥ जास अंग
हिय मूड पीर वदन निरस होय गांठ वाढि बात बदन
उरू सो विषले पहाई ॥ जानो संधि को सम भय दंत
लोम हरष सुख काम वमन जो होइ बात ज्वर इमि जा
नतो ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ पीठ मूल नैन अरून प्यास प्रलाप
जंभाइ ॥ सूल अफर वो बात ज्वर लक्षन विधि यह आ
इ ॥ ३५ ॥ इति अथ पित्त ज्वर ॥ चौपाई ॥ तीक्षन वे
ग जोर अति सार ॥ आलस नींद उकलेद अपार ॥ कंठ हो
ठ मुख नाक बखानो ॥ तिन का पकिबो वह मन आनो ॥
स्वेद प्रलाप बदन कटुताई ॥ दाह मूर्छा तृषा वताई
॥ भ्रम मल पीतम घन मल आदि ॥ पित्त ज्वर लक्षण अ-
रू आदि ॥ ३७ ॥ अथ कफ़ ज्वर लक्षण ॥ चौपाई
॥ दिन चल अंग वेग पतराइ ॥ मधुर मदन आलस ठहराे

ई ॥ मल अरु मूत स्वेत रंग होइ ॥ तमः तृतिय जानो ये दोई ॥ ३८ ॥ गुरुता सीत अरु उकलेद ॥ रोम हर्ष निद्रा द्रि भेद ॥ फरिया अंग सीत पर सेंक ॥ कंड तन्द्रा छर्दि विवेक ॥ ३९ ॥ तात बस्तु बहुत मन माने ॥ मंद पेट की अगिन बखाने ॥ पीनस अरुचि सेत दृग कांस ॥ कफ़ ज्वर कोय ह कहो प्रकास ॥ ५० ॥ इति ॥ **अथ वात पित्त ज्वर** ॥ चौपाइ ॥ तृष्णा दाह मूर्छा आई ॥ नींद न आवे मूड पिराई ॥ भ्रम मुख कंठ शोष अधिकारी ॥ रोम हर्ष वमिअ रुचि बताई ॥ ५१ ॥ गांठि गांठि उपजे अति पीर ॥ मानो लागे निसरे तीर ॥ मोह होइ अरु होइ जमाई ॥ बात पित्त जवर रीत बनाई ॥ ५२ ॥ **अथ वात कफ़ ज्वर** ॥ चौ० निश्चल अंग नीद अति आवे ॥ गांठनि गांठनि पीर बढ़ावे ॥ पीनस रोग होय अरु कांस ॥ मूड पिराइ पसीना नास ॥ ५३ ॥ वेग होइ मध्यम नहि जोर ॥ देह सांस संताप कठोर ॥ ऐसे लक्षण जब अनुमाने ॥ बात कफ़ ज्वर तबही जाने ॥ ५४ ॥ **अथ पित्त कफ़ ज्वर** ॥ चौपाइ ॥ लिवर अरु मूह करोई ॥ तंद्रा मोह प्रगट ये होइ ॥ कांस अरुचि अरु लागे प्यास ॥ फिर फिर होइ दाह परकास ॥ अरु फिरि फिरि जाड़ो लगि आवे ॥ रोगी पाल पल चैन न पावे ॥ प्रगट होइ जब लक्षन राह ॥ पित्त कफ़ ज्वर तब बुध कहेह ॥ ६५ ॥ इति पित्त कफ़ ज्वर लक्षण ॥ **अथ सन्निपात ज्वर लक्षण** ॥ चौ० ॥ छिन में जाड़ो छिन में दाह ॥ मूड पिराइ न होइ निवाह ॥ संधि हाड़ में होवे पीर ॥ नैननि में भरि आवे नीर ॥ कसन नादय नैन हमिलाल ॥ भरि रात्रे है मनो गुलाल ॥ कसन ना

द अरु कौन पिराई ॥ कंटक होइ कंठ भरि आई ॥ ५८ ॥ तहां मोह प्रलाप प्रकाश ॥ स्वास अरुचि चित अरु भ्रम उपजे कांस ॥ जीभ खुरखुरी जैरे समान ॥ सिथल अंग सब होइ निदान ॥ कफ लोहू उगले मुख पित्त ॥ धुनै सीस दुख पावै चित्त ॥ नींद नास तृष्णा अधिकारी ॥ हिये होय तृष्णा अति भारी ॥ आवे अल्प पसीना अंग ॥ थोरी नींद मूत संग ॥ देह दुखरई अधिक न आई ॥ घन सम कंठ बनो घहराई ॥ देह ददोरा कारे लाल ॥ पंडुल होंहि कि बहुत विसाल ॥ पकै कान मुख बोलन आवै ॥ अधिक उदर मधि खोन बनावै ॥ जाड़ो लगै सवै दिन सोवै ॥ और जागन सवरी निशि खोवै ॥ रैन दिना के सव जागत जाई ॥ बहुत पसीना कै नहि आई ॥ हंस हंस नाचे गावै गीत ॥ लीला निरखि होय मन भीत ॥ बहुत दिना रोग पचि जाई ॥ सन्निपात ज्वर लक्षण आई ॥ इति ॥ अपथ्य ज्वर लंघन करण ॥ दोहा ॥ ज्वर में लंघन में लंघन प्रथमही मुनिजन दियो बताय ॥ कांस स्वांस भय कोप क्षय वात जुरहिं कहाय ॥ चौ० ॥ वातज्वर अरु छुई ज्वर वारो ॥ भूखो होइ कि वहुत बिचारो ॥ गर्भिन नारी वालक प्यासो । बूढो अरु डरपोकर प्यासो ॥ अरु दुरवल इन मधिगति ताई ॥ इतने रोग वृद्धि मन लेइ ॥ लंघन करन इनकह नहिं देइ ॥ दोहा ॥ लंघन मानुष करत है दोष सकल वह आइ ॥ दोष गये फिर कै सेइ लंघन कह्यो न जाइ ॥ ६० ॥ सात राति में वात ज्वर पित्त ज्वर दस राति ॥ कफ ज्वर वारह राति में पचत कहत मुनि जात ॥ ६१ ॥ सात रात में तरुन ज्वर वारह मध्यम जान ॥ आगे वारह

रात में शीतल ज्वर मन आनि॥ प्यास भयानक वृद्ध त जो प्यास हरत है प्रान॥ प्यासे कहं जल ही जियत है निदान॥ ६३॥ मोह प्यास ते होत है प्यासहि लेत है प्रान॥ ताते रोगी को न बुध बरजे जाको पान ६४॥ दोहा॥ नैन रोग ज्वर मंडल अंग॥ उदर रोग को लगि परसंग॥ मंद अगिन अब अरुचि विचारो॥ मुख रूखो पीनस निरधारो॥ मग अरु सोथ रोग फिर वैसे॥ कोप अरु मध मद जो तैसे॥ इतने रोग जाहि लखि पावे॥ ताहि कुनकुनो नीर पियावे॥ ६६॥ सवैया॥ मूर्छा दाह महा गरमी अरु पित्त घनो जिन से दुख पावे॥ राह चले अति हाथ परि भ्रम छांह लगे कछु जासो न भावे॥ पित्त करत को दाह को जोर कियो एतो मादक जोर जतावे॥ होत है रोग इते नर जो कह ताकहं शीतल नीर पिवावे॥ ६७॥ चौपाई॥४ पीनस अरु नूतन ज्वर जानि॥ और गल यह रोग वखानि॥ पीर पसुरिया की कह देइ॥ संग्रहनी पुनि मन धरि लेइ॥ आध मान अरु अरुचि बताई॥ बात विथा अरु कफ पित लाई॥ गुल्म रोग कास अरु स्वांस॥ विद्रधि रोग सो होइ प्रकास॥ वार बार हिक्का जो होइ॥ स्नेह पान न करे जो कोइ॥ इतने रोग जाहि लखि आवे॥ ताकहं ताते नीर पिवावे॥ चौपाई॥ औटते निरवेग जल निर्मल फेन विहीन॥ आधो वाको जब रहे उष्ण उदक कह दीन॥ स्वांस कास ज्वर मेद कफ बात अरुचि मिटि जाय॥ सोधे वपुरे अगिन र उष्ण उदक गुन गाय॥ चौथो आधो आठवो

हंस घटावे नीर ॥ ७३ ॥ चौपाई ॥ चरन हीन जल
वात नसावे ॥ आधो हीन पित्त विनसावे ॥ कफ हर
तीन अंस जल हीने ॥ लघु पाचन दीपन कह दीने ॥ ७४
दो० सन्निपात ज्वर जुगल ज्वर ताकी वेदन जाइ ॥ उ
ष्म उदक ही जान अति वैद्य पिवावै ताहि ॥ ७५ ॥ चौ
पाई ॥ आधपाव जल सरस घटावे ॥ चरन हीन हेमंत ब
नावे ॥ ग्रीष्म ऋतु अरु शिशिर वसंत ॥ अरध घटावे य
ह सुनि मंत ऋतु विपरीत सुवर्षा भाषे ॥ तब जल अंस
आठवा राखे ॥ उष्म उदक कहि सरस विधान ॥ सुनि
जल सव मह कहे निदान ॥ इति उष्णोदक विधि ॥ दोह
॥ लंघन ज्वर की आदि करु पाचन दे ज्वर बीच ॥ क्षार लेप
ज्वर अंत में जात रहे ज्वर नीच ॥ अथ ज्वरो पचार
सोंठ धना सुरदारु अरु दोइ कटाई लेइ ॥ ज्वर आवे ता-
को पहल यह पाचन करदेइ ॥ फिर वासो मोथा मिले
काढो देइ बनाइ ॥ ताके पीवत तुरतही वात ज्वर मिट
जाय ॥ कुटकी मोथा जाय फर नीम छालि करि क्काथ ॥
पित्त ज्वर को दुन्द्र जो सहित सबै दिन खाय ॥ नीव छाल
गुड़ वे धना अरु चौथे पदमाख ॥ एतो चदन सकल ज्वर हरे
क्काथ मुनि भाख ॥ मठा पानी अरुचि पुनि दारु छर्दि अरु
स्वांस ॥ इन को याही क्काथ सों जानो तुरत निकास ॥ ८ ॥
पित्त ज्वर हरन को पित्त पापड़ा मीर ॥ चन्दन मोथा क
हो अरु मिल जाइ उसीर ॥ चन्दन धनिया पापरा
सोंठि उसीर समान ॥ तृषा दाह ज्वर वमि हरे
सीतल क्काथ निदान ॥ मोथा गुड में पापरा किर
वारा खउसीर ॥ पंच भद्र काढ़ा करे वात पित्त ज्वर पीर

८५॥ चौपाई ॥ त्रिफला अरु सैमल की छाल ॥ इन मधि
फिरि यासन कहि घाल ॥ फिर बारी और बासा मेलै ॥
बात पित्त ज्वर काथ ढकेले ॥ दोहा ॥ दाष सोंठि गुरु में
मिलाय मे ले पुहकर मूल ॥ क्काथ बात कफ ज्वर हरे का
त्रिदोष निर्मूल ॥ फिर बारो मोथा हरर कुटकी पीपरामू
ल ॥ क्काथ महा कफ बात ज्वर तुरत करे निर मूल ॥ चौ
पाई ॥ गुर वै कुटकी मोथा लावै ॥ उदा निंबु की छाल
मिलावै ॥ सोंठि इंद्र जव पर वर पान ॥ चदन डारै वैद
सुजान ॥ ९९ ॥ विधि सौ काढो ओटि उतारै ॥ पीरि चूर
न नामहि डारै ॥ अम्रताए यह काढो आई ॥ पित्त
कफ ज्वर कढो जाई ॥ १०० ॥ दोहा ॥ पर वर चन्दन
मुरहटी कुटकी पाढ़ गिलोय ॥ पित्त कफ ज्वर दाह
बमि कंडू डारै खोइ ॥ १०१ सामस जाडो तीन फल निं
व सुपर वर पात ॥ इन के काढ़े सो तुरत पित्त कफ ज्व
र जात ॥ १०२ ॥ लंका उत्तर कोन में कुमुद नाम कपि
रइ ताके सुमिरन करत ही तुरत इकतरा जाइ ॥ १०३
॥ चौपाई ॥ पर वर पात निंव की छाल ॥ दाख और
फिर बारो घाल ॥ त्रिफला और अडसो डारै ॥ क्काथ करै
इकतरा विडारै ॥ १०४ ॥ दोहा ॥ सेहत खांड यह क्काथ
में आन डारै बैद्य सुजान ॥ क्काथ देहित व पान को यह
वैदक को त्रिफला पर वर इन्द्रजव मोथा निंव सुदाख ॥
हरै इकतरा क्काथ ज्वर कही बार दस लाख ॥ १०६ ॥ हर्र
जवासा इन्द्र जव पर वर गुरुवे नीव ॥ जात रहै यह का
सों संतत ज्वर अति भीम ॥ १०७ ॥ सोंठि धना गुरुवै सरस
चन्दन मोथा लेव ॥ यह उसीर इन नप्र बहुरि चतुर

जान कहदेउ ॥ क्राथ को इन को जहां डारै मधु अरु-
खांड ॥ या काढ़े से वेदाह ठिकरे तिजारी भांड ॥१०९
छप्पय ॥ लंका पति मद हरन जानुकी सोच विदारन ल
छमन छत्रिय तिलक पान रक्षा के कारन ॥ इंद्रिय
जीतन हार सुभट राक्षस कुल गारन ॥ पवन तनय ब
ल वंत नगर लंका पति जारन ॥ हनुमान के नाम जो
नित उठि प्रातहि नर पढ़हि ॥ ताके न फेरि दुख कर-
न वह ज्वर तृतिये कबहूं चढ़हि ॥ ११० ॥ सोंठि हर्र
कटसेरुआ आग कला सो नोन ॥ डारि अरु सा दूभि
करे जिम काढ़े की होन ॥ १११ ॥ दोहा नामहि मिश्री
डारि कै सहत सहित ले खाय ॥ मंदाग्नि या सों मिटै चा-
तुर्थिक ज्वर जाय ॥ ११२ ॥ देव दारु हरर: बहुरि सोंठि
अरु सो होइ ॥ इन ही में सालोनि फिरि आम कलारी-
होइ ॥ ११३ ॥ काढ़ै में मिश्री सहित डारि भली बिधि
खाइ ॥ स्वांस कांस घटि अगिन अरु चातुर्थिक ज्वर
जाय ॥ ११४ ॥ रस अगस्त के पान को काढ़ै पाथर कूटि
॥ नास लेइ नर जाय तो चातुर्थिक ज्वर छूटि ॥ ११५ ॥ चौ
पाई ॥ मोथा और कराई छोटी ॥ सोंठि आंवरे गुर से
मोटी पीपरि सहित डार के प्यावै ॥ काढ़ो विषम ज्वर
हि नसावै ॥ ११६ ॥ दोहा ॥ गुरु अरु जीर मिलाय के
पैसा भरि नित खाय ॥ बात वेदना लघु अगिनि और वि
षम ज्वर जाय ॥ ११७ ॥ चूरन करके हरर को मधु सों लेइ
चढाय ॥ विषम ज्वर के हरन को औषधि दई बताय ॥
११८ ॥ पीपरि पांच दूध में प्यावै ॥ पांच पांच वे रोज ब
ढावे ॥ ४ ॥ ५ ॥ सो पीपरि लौ बढती करै ते सेहि

फिर घटती उर जुर चैं ॥ स्वांस वात और रुधिर विकार ॥ पांडु अरस और सोथ अपार ॥ गुल्म उदर विषम ज्वर आई ॥ १२० ॥ दोहा ॥ वर्द्धवान पीपरि भवै जो नर यह सुख पाय ॥ और भख सव छोड़ि कर दूध भात वह खाय ॥ १२१ ॥ भगरा की जड़ कान में बांधे डोरा डारि ज्वर आवत है रात को ताको देइ बिडारि ॥ १२२ ॥ ऐसे हिं बाधे कान में स्वेत आक को भूल ॥ तासों सवरे और ज्वर तुरत करे निर्मूल ॥ १२३ ॥ बांधे सेत कनेर की जड़ कर में नर लाय ॥ तासों निहिच्चि जानिये संतत ज्वर मिटजाय ॥ १२४ ॥ सोरठा सहदेई की मूल ल्यावे वसन उतार सव ॥ चातुर्थिक ज्वर जाय कान बांधहिं जवहिं १२५ ॥ दोहा ॥ को बाधेटी पात को रस काढो कुद वाय ॥ तासों अंजन करत हीं चातुर्थिक ज्वर जाय ॥ १२६ ॥ पीपरा मूल हरीत की मोथा मोकर काथ ॥ ताके खाये मिटत है आमाशय ज्वर साथ ॥ १२७ ॥ इति क्वाथः ॥ अथ अधूरो ॥ दोहा ॥ कूटि सोंठि असगंध वड़ारि सरसों ले समजानि ॥ करि अधूरो अंग में पित्त ज्वर कर हानि ॥ १२८ ॥ अथ अवलेह ॥ चौपाई ॥ पोहकर मूल कायफर लेइ ॥ काकरा भृंगी पीपरि देइ सहत डारि के वैद्य चटावे ॥ स्वांस कांस ज्वर कफ़ हि न सावै ॥ १३० ॥ दोहा ॥ स्वांस कांस ज्वर कफहिं न सावे ॥ १३१ ॥ दोहा ॥ औटि पीसि मथि मेनहर वैद्य लगावे अंग ॥ हाथ पांय को ज्वर जनित हरे दाह पर संग ॥ १३२ ॥ चौपाई ॥ दाह देह जाकी नित जारै ॥ ताको पहले उतानो पारै ॥ फिर कांसे को वासन आने

जामें अधिक गहराई जाने ॥ बासन ल्याय ढूंढी पर भौ शीतलाता यह व्यापै ज्यों ज्यों ॥ दाह मिटै तन की वह त्यै त्यों ॥ १३३ ॥ दोहा ॥ पात नीम के वेर मथि करि उपजा वे फन ॥ फैन लगावे देह में दाह मिटै यह अैन ॥ १३४
अथ चूरण ॥ हरड आमरे पीपरें चित्रक सेंधा नोन चूरन मंदा गिनि अरुचि ज्वर मल धन को पौन ॥ १३५
॥ धनाक्षरी ॥ छप्पय ॥ कर्ष एक तालीस कर्ष कर्ष दे मिरचे लीजै ॥ कर्ष तीनि ले सोंठि चारि पीपरिये दी-जै ॥ पांच कर्ष भरि तहां बंश लोचन वधु आनै ॥ आध कर्ष तज आन आध एला लघु जानो ॥ मिश्री मिला थ बत्तीस फिरि करष चूरण करई ॥ ज्वर छाड सो ष अफरा अरुचि स्वांस छर्द्द पिलहा हरई ॥ १३६
॥ इति चूरण ॥ अथ तेलम ॥ हरदी लाष मजी ठ को कलक करइ बुध बीर ॥ लेइ तेल छः गुनो वहुरि दही की नीर ॥ १३७ ॥ छाडि कलक वह ते ल में डारे वेद पचाय ॥ तेल लगावे अंग में शीतल ज्वरये जाय ॥ १३८ ॥ चौपाई ॥ ले मजीठ अरु बडी कटाई ॥ सेंधो कूट शतावरि भाई ॥ जाय मासिका रासना आनो ॥ एक प्रस्त भरि तेल बखानो ॥ चा रि प्रस्थ ले दधि का पानी खरल करे लै औषधि आ नी ॥ १३९ ॥ कलक दही को पानी डारि ॥ तेल बढा वै वेद बिचारि ॥ सिद्धि होइ तब तेल उतारै ॥ ते-ल लगावे सब ज्वर जारै ॥ इति अंगार तेलम ॥ अ-थ रस ॥ सोधि लेइ विष गंधक पारो ॥ कनक बी ज तीन उसम भारो ॥ इन तें दूनी त्रिकुटी दीजे ॥

चोषा लाइ काढो करि लीजे ॥ १४०॥ चूरन करे भावना चारि ॥ काढे की मन वुद्धि बिचारि ॥ सुख द पां मधि वरिन लेई ॥ दो रत्ती पीवे कह देई ॥ १४१॥ अनो पान आदो रस लेइ ॥ कीतो जे भारी गूदा देइ ॥ याको गुन अब देई बताइ ॥ नित ज्वर और इक तरा भारी ॥ या के खाये जाय तिजारी ॥ बिषम ज्वर चातुर्थिकू जाय ॥ सव ज्वर की यंह औषधि आइ ॥ अथ सन्निपात चिकित्सा ॥ दोहा ॥ तीन दिना के पांच दिन दश दिन करे उपास ॥ सन्निपात ज्वर जानि के करि जीवे की आस ॥ १४२॥ काढो करि दश मूल को पीपरि रि डारि पियाउ ॥ सन्निपात जोर अति ताको वेगि नसाउ ॥ १४३॥ कुटकी सोंठि चिराय तो दारु हरद दश मूल ॥ धना इन्द्र जव लीजिये सम पीपरि सम तूल १४४॥ ये औषधि सव जोरि कर पीवे काथ वनाय ॥ स्वास कांस तंद्रा अरुचि दाह मोह ज्वर जाय ॥ १४५ धना हरी ॥ भारंगी चिरायतो इन्द्रोरन की जारि छाल नीव की ले मोथा वच कुटकी हरद दे ॥ पीपरि मरिच वाय सुरही आदि सों निसोत देव दारु जवासो पटोल इक पात दे ॥ पुहकर मूल त्रायमाण ब्रह्म नोनिया गुरुची दारु हरद निसोत सो अतीस सउ मिलाय के ॥ सोनो इन्द्र जव पाडवर कटाय और त्रिफला कचूर सव औषधि जमाय के ॥ १४६ ॥ स्वांस कांस मूल और हिचकी पवन विथा गुह जाको जो होत अधमान है ॥ पींच को पिर वो और पिंडरी के पिराइ वो और आन की वदन की विथा जो निदान है ॥ संधि संधि विथा को विनास करे पलक यह वुध

जन को परम बखान ॥ सन्निपात ते रहै मतंग ताके मरि
वेको यह क्वाथ ॥ यह सांचु कहि सिंह समान है ॥ १५७
दोहा ॥ दै हरदी त्रिफला बहुरि कुटकी मोथा लेउ ॥ नीव
छाल सुपटोल रस अलप खवाई देउ ॥ अथ सन्नि
पात अवलेह ॥ चौपाई ॥ पुहकर मूल काय फरली
ज्यौं ॥ काकरा भृंगी त्रिकुटा दीजियो ॥ डार कलोंजी
और जवासो ॥ चूरन करै मिहीं अति वासो ॥ सहत
डार चूरन यह चाटै ॥ हिचकी कांस स्वांस कफ काटै
॥ कंठ रोग यासों मिट जाई ॥ सन्निपात को ओषधि गा
ई ॥ दोहा गुरु वे मोथा सोंठि ले और चिरायतो डारि ॥
चूरन आदे रंग सो चाटै कफहिं बिडारि ॥ १४८ ॥ अथ
अधूरा ॥ दोहा ॥ वच चिरायतो काय फर कुटकी ले
उ सभारि ॥ करो अधूरो कूटि के और कलोंजी डार ॥
१४९ ॥ ज्वर त्रिदोष को जाय अरु मिटै अंग पर सेद ॥
या विधि मुनिजन कहत हैं या ओषधि को भेद ॥ १५०
सोंठि मिरच पीपरि हरर लोध सु पोहकर मूल ॥ कुटक
लौंजी इन्द्रजव कुटकी और कचूर ॥ इन मांधि डारि चि
राय तो चूरन करै बनाय ॥ सन्निपात ज्वर हरन काम-
लो अधूरा आइ ॥ १५१ ॥ कुलथी भूनि पिसाय के करै
अधूरो अंग ॥ सन्निपात अरु ज्वर मिटै सकल पसीना
भंग ॥ १५२ ॥ इति अधूरो ॥ अथ नास ॥ दोहा वच
पीपरि सेंधा बहुरि अरु महुआ को सार ॥ नास देइ
नि हचै सु नर भयेउ अचेत अपार ॥ १५३ ॥ अथ
कर्णिक सन्निपात ॥ दोहा ॥ आदि मध्य अरु अंत
मे करन मूल अधिकाय ॥ वह असाध्य दुखसाध्य सुख

साध्य सुक्रमतें आइ ॥ सोंठि कलौंजी कायफर कुल
थी ये सम आनि ॥ करन मूल कहं कुनकुनो लेपन कर कर
जान १५४॥ अरनी सोंठि सितावरि आनो ॥ देवदारु रा
सन फिरि जानो ॥ और बिजौरे की जड डारे ॥ करनमू-
ल यह लेप विडारे ॥ अथ सन्निपात रसः ॥ त्रिकु-
टा नोन पांचहू लेऊ ॥ सोंठ बकुरि दोउ जीरे देऊ ॥ तीन
न खार तेहू ले धरे ॥ औषधि ले चूरन करे ॥ सेंधो पारो गं
ध कलीजे ॥ मारो अभ्रक तामहि दीजे ॥ ये औषधि ये
औषधि सब लेय समान ॥ आदे को रस काढ सुजान ॥
१५५॥ ता रस में ये औषधि साने ॥ सुरस खरल अरु
सोटा आने ॥ डारि खरल में औषधि लेऊ ॥ एक दिना
लगि रगरे देऊ ॥ वीर भद्र नाम रस आइ ॥ मासे भरि य
ह देहु खवाइ ॥ आदो सेंधो चित्रक लीजे ॥ अनो पान ज
ल में घिस दीजे ॥ १५६॥ वीर भद्र यह रस कहेउ मुनिज
न चतुर सुजान ॥ सन्निपात गज हरन को यह है सिंह स-
मान ॥ १५७॥ प्रात गरु रस दीजिये यह पोषन की बा
त ॥ रस खवाय पुनि दीजिये मध्य दूध अरु भात १५८
इति सन्निपात ॥ अथ ज्वर दश उपद्रव ॥ दोहा
॥ स्वास मूर्छा अरुचि अरु छेर्दि तृषा अतिसार ॥ मल
वध हिचकी कास अरु अंग पीर सरदार ॥ १५९ ये ज्वर
के दश जानिये कहेउ उपद्रव ऐन क्रमतें औषधि कहति
हौं ज्यों पावे नर चैन ॥ चौपाई ॥ त्रिकुटा मोथा
और कचूर ॥ पथर सगा और पुहकरमूल
॥ पांच मूल और लेहु कटाई ॥ तिन मधि
गुरु वै और बताई ॥ ये औषधि सब लेहु समान

यह काढो करि वैद्य पिवावै ॥ स्वांस उपद्रव तुरत नसावे ॥ १६० ॥ दोहा ॥ फिर वारो दाखै बडी कुटकी हरर उसीर ॥ क्वाथ पापरा सहित यह हरै मूर्छा धीर ॥ १६१ ॥ कोनि सोत मिश्री हरर चूरन सहत मिलाय ॥ चाटै तासो तुरतही विकट मूर्छा जाय ॥ १६२ ॥ बार बार मुख में धरै सोंठि मिरच यह नीर ॥ अरुचि हरन को मुख धरहि निंबु वारस सुनि धीर ॥ १६३ ॥ काढ बिजौरे को सुरस केसर नोन मिलाय ॥ मधु जुत राखे वदन में तासों अरुचि नसाय ॥ कुटकी पीपरि सहत जुत मोर पंख की राखा कै गुरु में करि क्वाथ मधु छर्दि हरै मुनि भाष ॥ आंमरे बिजौरे चूक निंबु वारस जंभीर ॥ जाभले आमले इते हरै तृषा गंभीर ॥ रूपे की गोली करै वह राखे मुख माहि ॥ ताही सों वह जोर अति नर की तृषा बुझाय ॥ तज पत्रज और इलायची चन्दन दाख उसीर ॥ चूरण मिश्री सहत जुत यह याको गुन धीर ॥ ले चिरायतो पापरा गुरु वै मोथा पाढ सोंठि अरु इन्द्र जव कुटकी तहां बिचारि ॥ यह औषधि सब जोरि के काढो यह तार ॥ या काढे के पीयत ही ज्वर अतिसार भगि जाय ॥ अनुलोमनु विधि जानरह करे जाते मल बंध ॥ तीक्ष्ण फल बतीन सों के काढ मल बंध ॥ थोडा निर्मल नीर ले सेंधो नोन घिसाय ॥ नास दइ याको जनहि तव हिचकी मिट जाय ॥ पीपरि पीपरा मूल ले सोंठि दंद्र जो चूर ॥ चूरण चढावे सहत सों करे काम को दूर ॥ काढि अरू से को सुरस मधु सों चाटि मिलाय ॥ जाको चाटे से तुरत कांस दूरि हो जाय ॥ ज्वर विरोध निज दारू को सीतल करै निदान ॥ मिटै उपद्रव ज्वर मिटै

यही वेद को ज्ञान ॥ सहस सीस हरि जगत पति न के
वो महाराज ॥ तिन सौं हरि अस्तुति करैं सब ज्वर जाइ अ
पार ॥ इति श्री स्वामी जनार्द भट्ट विरचिते भाषा वैद्य रत्ने
प्रथम प्रकाश: १ ॥ अथ अतीसार चिकित्सा ॥
अगिन बुझावन उदर की जब बाढ़ी जल धात ॥ होइ पवन
आधीन मल सहज तरे बह जात ॥ श्रवण लगे मल जल स
रस जब ही बार बार ॥ अतीसार यह जानियो विविध वदे
निरधार ॥ वात पित्त कफ सोष अरु आम त्रिदोष जु और ॥
या विधि ऐसे जानियो अतीसार छ: ठौर ॥ ३ ॥ धना सोंठि
मोथा वल्हरि वेल उसीर सुहाय ॥ आम मूल और वंध हर पा
चन क्वाथ पकाय ॥ ४ ॥ धना आदि दै पांच है तिन मैं सोंठि
चाढ़ ॥ क्वाथ करै यह पित्त को छिन मैं देय बहाय ॥ मोथा
वेल उसीर और धनिया सोंठि अतीस ॥ क्वाथ करे इन को
हरे तो विवंध जगदीस ॥ ६ ॥ आँव मूल और ज्वर हरै औ
र सर कन अतिसार ॥ यह जानो यह क्वाथ को कह्यो
जो गुन विस्तार ॥ ७ ॥ चूरण चित्रक कूट को चाटै सहत
मिलाय ॥ रक्त पित्त बहु दिने को अति कष्टित पुनि जा
य ॥ ८ ॥ अरिल्ल ॥ मोथा और उसीर को चारो पुनि लीजि
ये ॥ पाढ़ पीय के फूल सुन्दर वादी जिये ॥ चन्दन लाल
अतीस क्वाथ इन को करै ॥ परि हां हो जी कूट जो धूक
अतिसार नीके हरै ॥ ९ ॥ दास रक्त और मूल आँव के रो
ग जे ॥ अतीसार के भेद और सब जान ते ॥ तिन को से
वन हार क्वाथ यह जानियो ॥ परि हां जी याके गुन ये
सांच चित्त मन आनियो ॥ धनाक्षरी छन्द ॥ आढ़ी
मोकी वकुल्ला कुर को लाइची काके धोवन पांव माही रो

लाके कारन कौ ॥ जामन केई आछे नीके पान न कौ ॥ दैना कौ मोती जो बनावै महताही के धर्म कौ ॥ वांध कस सेभ पेट माटी पुट पाक करि काढ़ि सब प्यावै मेल मधु के चाट न कौ ॥ कृष्ण अत्रि सुत ताको कह्यो सबै औषधि ते जो- गराज अति सार के घटन कौ ॥१२॥ दो० ॥ पानी वूंडु वा डारके जो जो मोटे आत ॥ त्यों त्यों वुध वा जानियो अती सार धन कात ॥१३॥ अथ संग्रहनी अती सार जव हीं मिट जाय ॥ मंद अग्नि तव रहे वो खाय ॥ तासों अग्नि उदर यह सोखै ॥ उदर अग्नि तव ग्रहणी दूखै ॥ गृहणी दूर ना अन्न पचावै ॥ जो कछु खाय काचो निक सावै ॥ पचै न पीर बहुत दुरगंधी ॥ फिरि २ ह्वै और फिरि वंधी ॥१५॥ दोहा ॥ संग्रहणी को यह कह्यो लक्षमन विवि ध विचार ॥ इमि संग्रहणी जानि तव करिये उपचार ॥१६॥ सोंठि वेल सम धना और सेंधो नोन मिलाय ॥ वा त संग्रहणी वंधको काढ़ो करि के खाय ॥ चौ० ॥ मोथा लोध कुंर की छाल ॥ सोना सोंठि खटाई घाल ॥ वेल न जाल मादा उसीर ॥ और मोचरस डारो धीर ॥ आंव छाल इन्द्र जो आनै ॥ और बत्तीस तै दून मधि छानै ॥ सोरह मासे चूरण खाय ॥ चावर धोवन महत मिलाय ॥ १८ ॥ संग्र हणी करि डारै छार ॥ अती सार रुज और अपार तिन कौ कर कह्यो विवेक ॥ गंगा धर यह चूरण एक ॥२० इति गंगा धर चूरणम ॥ दोहा ॥ सोंठि धाय के फूल अरु मोथा वेल मिलाय ॥ छाल कुरे की इन्द्र जो कुटकी पाठ सुखाय ॥ मिलै रसौत अतीस अरु चूरन कौर बनाय ॥ चावल जल सो घोरि घोरिकै

सहत डारि के प्याया ॥ २२ ॥ पित्त संग्रहणी अरस अरु गुद पीड़ा अति सार ॥ नागरादि चूरण हरे रते दोषनि धारि ॥ २३ ॥ इति नागरादि चूरण ॥ धनाक्षरी छन्द ॥ गंधक १ अफीम २ पारा २ कौड़िन की राख ७ विष १ पीपरें ८ धतूरे के बीज २० सोधि लीजिये ॥ दश चार दोइ सात एक आठ बीस फरी गंधक से क्रम ही सोंअंस इमि कीजिये ॥ ग्रहणी कपाट रस तीन रत्ती भरि यह जीरो अरु सहत सब सो खैबे को जबरी जिये ॥ उदर बंध अफरा हरे संग्रहणी अती सार आमाशय रोगनि को केसेहू न छीजिये ॥ २४ ॥ इति संग्रहणी कपाटरस ॥ दोहा ॥ एक और सब और सब अवधे संग्रहणी को जानिये ॥ एक और जानो मठा यह मुनि कह्यो बखानि ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ वैद तहां लैं मठा वढावे ॥ वंध्यो जहां लो मल पुनि आवे ॥ क्रम ही क्रम पुनि मठा छुटावे ॥ तब रोगी को नाज खवावे ॥ इति सग्रहणी ॥ अथ अरस ॥ दोहा ॥ वात पित्त कफ सहज ते लोहू और त्रिदोष ॥ छः प्रकार गुद मवल में होत अरस को दोष इकस बहु भांति के भेष भाष और ख्याल ॥ गुद मधि अंकुर मास के करें अरस वहु ख्याल ॥ २० ॥ चौपाई ॥ एक टका भरि मिर्च लेहु ॥ सोंठि दोइ टका भरि देहु ॥ चित्रक चारि टका भरि लीजे ॥ आठ टका भरि चूरन माने ॥ सब चूरण गुर फिरि डारि ॥ बांधो गोली युक्त सभारि ॥ यह प्रसिद्ध पाक मोदक जानो ॥ ताको फल इमि सांच प्रमानो ॥ ३० ॥ औ यद रोगन

पावै चैन ॥ अरस रोग को औषधि अैना ॥ ३१ ॥ पैसा भ-
रि इलाइची लेउ ॥ द्वै पैसा भरि तज पुनि देऊ ॥ पत्रज
पैसा तीनि समान ॥ चार भाग गजकेसरि जाना ॥ मि-
रच पांच पैसा भरि त्योंही ॥ द्वै पैसा भरि पीपरि योंही
॥ सोंठि सात पैसा भरि धरै ॥ सब औषधि ले चूरण
करै ॥ ३३ ॥ सब चूरण सम मिसरी डारि ॥ रोगी चूरन खा
य विचारि ॥ औषधि अरुचि हिय रोग बिडारि ॥ गुल्म
हरै उदर व्याधि निकारै ॥ चूरण सूरण सोरह भाग ॥
चार भाग सोंठि पुनि देइ ॥ एक भाग मिरचै पुनि च
लेइ ॥ ३५ ॥ सब औषधि चूरन कर आनि ॥ चूरन सम गु
र लेकर सानै ॥ गोली बांध प्रात उठि खाई ॥ अरस जाइ
नहि होइ लखाई ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ पीपरि पीरी डारि कै
मठा मधुर अभिराम ॥ तो तिइ हां सुनि हो नही फेरि
अरस का नाम ॥ ३७ ॥ सोरठा ॥ कोढ हरन को होइ बैद
बिजौरे लै धरौ ॥ अरस हरन को होइ तैसो मिलवो अरु
करै ॥ दोहा ॥ सोरे हरदी जोग सों ज्यों परमेह बिलात
॥ साजी चित्रक जोग सों त्यों गुड अंकुर जान ॥ ३९ ॥
भुरता सूरन कंद को कीच लपेट पकाय ॥ देइ तेल अरु
नोन सों अरस रोग मिट जाय ॥ ४० ॥ कै नैनू मल वाय
कै कैसर नै नूखांड ॥ दही सिखरन को मठा कारि करै
अरस को भांड ॥ ४१ ॥ देवदारु की क्वाथ करि गुद धोवै
नित नित ॥ धूप देइ कै तो मिटै अरसरै मिता ॥ ४२ ॥
देव दारिन को सोधि दीध को नीर ॥ गुद अंकु गुद अं
कुरया लेप ते मिटै अरस की पीर ॥ ५१ ॥ ५ ॥

अथ अजीरण रोग

सहज वात कफ पित्त सो और रसा रसा से पांच ॥ विष-
म असन ते कृमि सुछै कहै अजीरण सांच ॥ ४४ ॥ गंध
क ३ सेंधो ३ सोंठि कै १ तीन दोष अरु एक ॥ क्रम सों ली
जौ असरा करि करि पित्त विवेक ॥ ४५ ॥ चूरण करै मही
न कर निंबुवा को रस डारि ॥ क्षुधा बोध कृमि नाम है ली
जौ रसहि बिचारि ॥ संखा करहि सो संयम सो नित-
खाय ॥ भख बहुत वासों बढहि सरस अजीरण जा
य ॥ ४७ ॥ चौपाई ॥ हरडैं पीपरि सोंचर लेउ ॥ चूरण
घोरि छाछ में देऊ ॥ कै ताते पानी सों धारो ॥ जानि
दोष नित दीजो मारो ॥ ४८ ॥ मिटै अजीरण अरु वि
रसाई ॥ उदर अग्नि बढै अधिकाई ॥ आधमान औ
र गुल्म नरहै ॥ वात मूल सोऊ पुनि कहै ॥ ४९ ॥
छन्द भेद ॥ सोंठि मिरच पीपरि अजमोदा सेंधो जी
रो दोऊ ॥ चूरण तोलि आठ वांसा भरि हींग भूजिये
सोऊ ॥ मात घीव सों भोजन पहिले चूरन बेद खवा
वै ॥ बात रोग सब तुरत नसावै ॥ ५० ॥ चौपाई ॥
पका जंभीरी ल्यावै तोरि ॥ पांच सेर रस लेय निचोरि
॥ तीन टांक हींग पुनि लेइ ॥ हींग भूंजि बुकनी कर
देई ॥ ५२ ॥ पीपरि मिरच सोंठि अरु राई ॥ अंज वाइ
न कृमि माझ बताई ॥ सेंधो लौंग बाइ विडंगी ॥ दश
ही टंक लेइ सब संगी ॥ पद्मावती छन्द ॥ अज मोदा
कटुत्रिय हिंगु सेंधव हि सुरतरु ग्रंथ कचीता ॥ सोअ
विडंग बिडंग विदित नव नागर वृद्ध दारु दश कीता ॥
अभया पचांनन नम सो जल पिउ मृद्ध पंगु परस ती ॥
जंघ संधि भुज बात विदारन गुड गोली अनु भूती सोंच

र नोन टंक चालीसा ॥ रस मधि डारै वेद को ईसा ॥ फिरि बह रस सीसा में भरै ॥ भूमि में खोदि गाड़ि पुनि धरै ॥ एक मुद गाड़ि के राखहि सीसी ॥ बीते दिना एक और बीसी ॥ सीसी काढहि वैद सुजाना ॥ सिद्धि होय जबही संधाना ॥ ५५॥ एक अंजला भरि रस खाइ ॥ सकल अजीरण देह भगाइ ॥ बिथा शूल की तनक न रहै ॥ बाढ़हि भूख खाउ यह रसहि ॥ ५६ ॥ इति जंभीरी संधानं ॥ दोहा ॥ सोंठि हरड़ और पीपरैं चित्रक वाय विडंग ॥ भिलवां बच गुरु वेसु बिष करै बहेड़े संग ॥ ५७॥ पीस गाय के मूत में औषधि सबै समान ॥ चतुर वैद्य गोली करै गुंजा के परिमान ॥ ५८॥ एक अजीरन कौ कही है बिसूका धारि ॥ तीन सांप काटे तबै सन्निपात को चार ॥ ५९ ॥ आदे को रस ल्याइये ताके संगहि खाइ ॥ यह गुटि का संजीवनी नर जीवनि चितलाइ ॥ ६०॥ इति संजीवनी गुटिका ॥ दोहा ॥ पीपरि कंजा सोंठि अरु हरड वेल अरु खांड ॥ वड़वानलचूरण करै सकल अजीरण भांड ॥ ६१॥ इति वड़वानल चूरण ॥ चौपाई ॥ एक भाग हींग ले आउ ॥ दोय भाग बच्च तहां मिलउ ॥ तीन भाग पीपरि पुनि डारौ ॥ अदरक चार भाग निरधारौ ॥ भाग पांच अजवायन आनै ॥ हरर भाग छह तहां बखानै ॥ सात भाग चित्रक फिरि लेय ॥ आठ भाग कूट फिरि देइ ॥ चूरण औषधि जोरि बनावै ॥ दही छाछ सों घोरि पियावै ॥

खातो जल के मंदिरा संग ॥ चूरण खाय होय नवरंग ॥ पीड़ा उदर अजीरण आवा ॥ उदा वर्त्त को रहै न नाव ॥ वात सांस वेदन विष जाइ ॥ चूरण नाम अगिन मुख आइ ॥ इति अगिनि मुष चूरण ॥ दोहा ॥ कै गुरु संग कै सोंठि संग कै सेंधो संग खाय ॥ हरड़ रोज नर तौ बढ़त उदर अगनि अधिकाय ॥ ६७ ॥ जवाखार सम सोंठि लै प्रातहि घीसों खाइ ॥ भूख बढ़ै अरु रुचि बढ़ै अन्न तुरत पचि जाइ ॥ ६८ ॥ हरड पीपरहि सोंठि जो ये तीनो लै खाइ ॥ उदर अगिन बाढ़ै अरु रोग त्रिदोष नसाय ॥ ६९ ॥ सेंधो पीपरा मूल अरु पीपरि चाव मंगाइ ॥ चित्रक सोंठि हरड़ ये इनमें देइ मिलाय एक एक एकत्र करि सब को भाग बढ़ावई ॥ अगिन बढ़ावन को यही पुरुष बड़वानल भाइ ॥ ७० ॥ इति बड़वानल चूरणम ॥ छप्पय ॥ पीपरि सोंठि चित्रक हरर सो चर्ले आवे ॥ ये सब लेइ समान कूट चूरण करवावे ॥ चूरण खाइ प्रभातई रुचि अग्नि बढ़ै पुनि ॥ प्लीहा गुल्म न रहै होय वल यद पुनि ॥ उदर आव विष नास चूरण मुनीश्वर कियौ सरस ॥ इति पंचम चूरणम ॥ चौपाई ॥ सोधि टका भरि पारो देइ ॥ दोइ टका भरि हरड़ मिलावे ॥ तीनि टका भरि सोंठि रलावै ॥ सेंधो मिरच पीपरि लीजे ॥ छह छह पैसा भरि यह दीजे ॥ फेर फेर पुट तिनहि दिवावे ॥ निंबुवा रस के घाम सुखावे ॥ खरल मध्य घिस रत्त समान ॥ गोली बांधहि वैठ सुजान ॥ होत अजीरण अरु इमि जान ॥ रस ताको इमि गुन परमान ॥ दीपन पाचन मरे चत आगी ॥ दूना

वढा खाय भूख अधिकारी ॥ इति अजीरण रस: ॥ अथ विसूचिका उपचार ॥ दोहा ॥ सूची सम वेदन करे पाय अजीरण बात ॥ वैद्य विचित्र विसूचिका ताही सों कहि जात ॥ ७६ ॥ नर ऊपर निकसे नहीं अन्न वात कफ दुष्ट ॥ ताको कहत विलंबिका कहै वैद्य गुण पुष्ट ॥ ७७ ॥ चूक कूट सैंधो कलक करि के चुरवै तेल ॥ ७८ ॥ पल्ली मूल विसूचि मिटे लगावै तैल ॥ ७९ ॥ सोंठि मिरच पीपरि हरद करज बिजौरे मूल ॥ अंजन करिये छाछ सों मिटे विसूचिका सूल ॥ ८० ॥ अथ अतीस भंगरा हरद हींग इंद्र जौ आनि ॥ सोंचर नोन मिलाय के चूरण करियो छान ॥ ८१ ॥ चूरण तुष के नीर में घोरि जबहिं वह खाय ॥ सूल विसूची आरू ढो रक्त अजीरण जाय ॥ ८२ ॥ अथ कृम ॥ दोहा ॥ हृदय रोग ज्वर कांस भ्रम वात रोग अतिसार ॥ होवें किचुआ उदर में यह लक्षण निरधारि ॥ ८३ ॥ करि दरि वाकी छाल को क्काथ मेलि तिर तेल ॥ खाय तीनि दिन गिर पड़े तो किचुवा यह खेल ॥ ८४ ॥ वासी जल सों वांटि के खाइ सांझ की प्रात ॥ अजवायन गुड़ धीव के तुरत करै कृमि पात ॥ ८५ ॥ राई सैन के बीज कों ले मधु के संग खाय ॥ की विडंग चूरण करै कृमि की ओषधि थाइ ॥ ८६ ॥ अथ पांडु रोग दोहा ॥ स्वांस काम पीरे नयन पीरे नख अरु खाले स्वास कास पोरी अगनि पांडु रोग को ख्याल ॥ क्काथ पिये दश मूल को सोंठि कपर छन डारि ॥ अतीसार ज्वर सोथ कफ पांडु रोग निरधारि ॥ ८७ ॥ लै त्रिफला

कै नीम रस कै गिलोय मधु मेलि ॥ दारु हरद मधु प्रात हीं खाइ काम ले ठेलि ॥ ८८ ॥ अथ रक्त पित्त उपचार । तीक्षण कटु खारो अमल रस जाते रहि पित्त ज्वर को रुधिर को यह मेरे है मित्र ॥ गुद मुख नासा मांहि दे लोहू बार बार ॥ निकसे तासों कहत हैं बुध जन पित्त विकार ॥ ९० ॥ फल कुम्हेरे के दरद अरु कमर पकी खजूर ॥ दाख खाइये सहद संग रकत पित्त कर दूर ॥ ९१ ॥ खाइ अरूसे को जुस्स सहित बराबर डारि ॥ ज्यों सलिल बुझावन अगिन ज्यों रक्त पित्त को मारि ॥ ९२ ॥

घनाक्षरी छन्द ॥ चन्दन उसीर लोद कमल केसरि उसीर फिर बेल मोथा खाइ हू मिलाइये ॥ पाटनाग केसरी गुणेन चारो कुरो धाय आधो ले अतीस गदाइन में पिसाइये ॥ दवा को बकुल मजीठ छोटी लाइची रसोत पोही आम को सुमोचं रस आइले ॥ जामुन को सारनी क कमल समान भाग औषधि पिसइ सब चूरन कराइले ॥ ९६ ॥ दोहा ॥ चामर को धोवन सहित तामहि सानि ॥ खाइ प्रात हीं कहत सो ताके गुणनि बखानि ॥ रक्त पित्त ज्वर भेद अरु तृषा मूर्छा जाइ ॥ अती सार अरु छर्दि पुनि या सों तुरत नसाइ ९७ ॥ गर्भ गिरत यासों रहै मुलताने कूं देहु तातें चरन तियन की याही ते दियो बताइ ॥ ९६ ॥ अथ कास ॥ प्राण वायु ऊपर जवै मिलि ब्रह्मांड सो जाय ॥ कमल नाभि पै चल हृदय तवै कास अधिकाइ ॥ पंच मूल को काथ करि पीपरि चूरन नाइ ॥ खात प्रात उठते तुरत बात कास मिट जाय ९८ ॥

हरड़ सोंठि पीपरि मिरच गुरु ते षांड मिलाय दीप
न पांचन काम हर गोली है दर्द बनाई ॥ ९९ ॥
सो मोथा दाडिम कायफल हरर भरंगी लाइ ॥ का
करा भृंगी सोंठि बच देवदारु सुमिलाय ॥ १०० ॥
कंठ रोग मुख रोग अरु मूल रोग अधिकाय ॥ हिका
ज्वर अरु कास को मारन को सिरदार ॥ १०२ ॥ धेना
पापरा डारि के कर काढो हित जानि ॥ पित्त वा-
त कफ़ कास को होग सहित सो जाने ॥ १०१ ॥
एक करषले पीपरें मिरचे करष प्रमान ॥ दरवार्क
वकुला कहे दोष कर्ष मनिदान ॥ १०३ ॥ जवाखार पा
चो करष आधो करष गुड डारि ॥ गोली मासे चारि
करि मुख में लीजे धारि ॥ १०४ ॥ गोली के परिभाव
से जितने हैं सब कास ॥ यह तुम निहचे जानियो
तिन में होय निवास ॥ १०५ ॥ सोरह मासे जायफल
सोरह वाके फूल ॥ सोरह मासे लौंग ले यहै वात
को मूल ॥ १०६ ॥ चारि टका भरि सोंठि ले मिरचे पैसा
एक ॥ मिश्री चूरण सम कहीं या विधि क ह्यो विवे
क ॥ १०७ ॥ स्वास कास पर मूल ज्वर अरु चि अगि
नि अति मंद ॥ और अनेक न रोग पर या चूरण
को फन्द ॥ १०८ ॥ खील कुहारे दाख घृत मिश्री
पीपरि डारि ॥ मधु सो गोली बांधिये पित्त कास दे
टारि ॥ १०९ ॥ अथ स्वास ॥ अधिक कास जब
बढ़त है तब उपजत है स्वास ॥ हिचकी यादी ह
त है ता मधि ताको वास ॥ ११० ॥ सोंठि मिरच
पीपरि हरड़ गोली करि गुड मेलि ॥ उदर अगिन

अरु कास दूर स्वास रोग देठेलि ॥ ११२ ॥ क्वाथ करो द-
श मूल को मेलो पुहकर मूल ॥ स्वास कास पथरी बि
था सूल करै निर्मूल ॥ २१३ ॥ मोथा सूठी हरड पुनि गो
ली कर मुख नाउ ॥ एक बदे डो पाखि मुख कास स्वास-
बिन साउ ॥ १३ ॥ कुहडा की जड पीसि के ताते जल सों
खाय ॥ स्वास कास दारुन महा बनर तुरत मिटाय ॥
१४ ॥ आदे को रस काढ़ के तामहि सहत मिलाय ॥
स्वास कास कफ हरन कू यह औषधि नर खाय ॥
चौपाई ॥ सोंठि मिरच अरु पीपरि लीजै ॥ काक
रा शृंगी दून मदि दीजै ॥ जटा मासिका त्रिफला आ
नै ॥ पांचो नोन भारंगी साने ॥ पुहकर मूल कटाई
धरे ॥ ऐसे बढ़का चूरन करै ॥ ताते पानी सों यह
खाय ॥ स्वास कास कफ बाय नसाय ॥ गुड़ अरु
घी तेल संग एक बीस दिन खाय ॥ यह तुम निश्चय
जानिबो स्वास न फिरी निज काय ॥ १८ ॥ धना छरी छ
न्द ॥ पारो और गंधक सुहागा बिष मैनसिल टंक भरि
सोधि औषधि यह लीजिये ॥ आठ टंक मिरचै एक
एक मिरच देख रत्त माधि डार सब चूरण ये कीजि
ये ॥ फिर कै त्रिकुटा को मिलाय चूरण सीसी माफ
धरिये और पान संग दीजिये ॥ रत्ती एक स्वास का
स को कुठोर स्वास कास कै सन्निपात बाय माहि जु
डीये सोच कीजिये ॥ ११९ ॥ इति स्वास कुठार रस:
अथ हिक्का ॥ दोहा ॥ प्रारक बाधक उष्ण गु
ड शीतल रूखो खाय ॥ सीरो पानी पोरि अरु
धूमा घास बचाय ॥ २० ॥ सीस बोझले बहुत

राह चल दौर ॥ और स्वास कास हिचुकीन की यह भ
नो है ठौर ॥ २१ ॥ सोरठा ॥ मधु सोंचर के संग पिये
बिजोरे को जुरस ॥ हिचुकी जाय सुरंग औषधि कह
दीनी सुरस ॥ २२ ॥ दोहा ॥ सोंठि पीपरे आमरे खांड
वा मधु सों सानि ॥ हिचुकी को यह दूसरी औषधि ली
जो जान ॥ २३ ॥ सोंठि भरंगी दीजिये ताते जल सों घो
रि ॥ औषधि कह दीनी सुरस हिचुकी डारे तोरि ॥ २४
इति काष ॥ अथ क्षय रोग प्रतीकारः ॥ दोहा
अति कफ अति संभोग ते दुखी जो दुख लगात ॥
स्वास कास पीड़ित महा लोहू अंग ग्लिनि जात ॥ २५
मंद अगिन अरु स्वास तृष मास पीत सित नैन ॥ वी
न छर्दि बिस्वास सब मास पीत सित नैन ॥ ज्वर को
चूरण में कह्यो पहले जे तालीसादि ॥ ताके पाछे छ
य रोग में नीके करियो यादि ॥ २७ ॥ खाड सहित नै
नू मिले नर चाटे जो रोज ॥ रजे निहिचित छय रोग
को सहज मिटावे खोज ॥ २८ ॥ जरगंगे रूवा की ले
आवे ॥ मासे तीनि रोज पिसवावो ॥ बढ़ती सौंथ
ह औषधि आदू ॥ याते दूध नाज घरि जाय ॥ हो
य पुष्ट बल और निरोग ॥ छई रोग को यह है जोग
॥ अरिल्ल ॥ केवल कलास कढ़ि करै छके बीज है ॥
जरगं गेरूबा ल्याय ताहि पुनि पीस ले ॥ खांड स
हित घृत संग रोज उठि खाय जो ॥ परि हां हांजी
स्वास कास सम जाय छय रोग तो ॥ ३१ ॥ दोहा
॥ चूरण असगंध गोखरू सहत दूध के संग ॥ खाय
प्रात उठि तौ करै स्वास कास छय भंग ॥ ३२ ॥ छप्पय ॥

लौंग अगर कपूर कमल गटा और चन्दन जारो ॥ और उसीर इलायची मोथा रेमन ॥ जटा मासिका तगर बंश लोचन और डारो ॥ पीपरि कंकाल जाय फल तज निरधारो ॥ नेउ नाग केसरि सरस मिश्री चूरण आध सम ॥ गुन निधान चूरन कह्यो लंवंगादि चूरण परम ॥ ३३ ॥ रुचि उपजावै बहुत तृप्ति बल करै अधिक पुनि ॥ वात पित्त कहं हरै पीनस यह पुनि पुनि ॥ कंठ रोग हिय रोग कास हिचुकी बिन सावै ॥ अतीसार और स्वास रोग छ लोह भगावै ॥ संग्रहनी परमेह अरु गुलम रोग छय रोग धर ॥ यह खाय रोग सब हरन को लंवागादि चूरण सुधर ॥ ३४ ॥ इति लवंगादि चूरण ॥ छप्पै ॥ गंधक तोला एक सोधि तोरे लै पारो ॥ अभ्रक तोले एक तीत्ति यह सम निर धारो ॥ मैनसिल तोले इंढ तोरा दरा रुधरु ॥ छय तोले ले सार खरल मधि सब एकत्र करि ॥ काढि शतावरि को सुरस देइ भावना चारि दश ॥ यह भांति सिद्ध यह होत है कुंभ ईश्वर वृभिनाम रस ॥ रत्ती दोय के तीनि मिरच मिश्री संग खावै ॥ रस के सरस सकल गुननि बनि वताइ ये तवै ॥ पित्त कफ वाय छर्दि रोग विकट टारि ॥ ज्वर आदिक कब मिटै न मिटै वात दान नर हरि ॥ सदा यह सेव नर अनुपान संग प्रात नित्त ॥ तन मधि न होय जुकते वार होय सुनि लाय चित ॥ ३४ ॥ छन्द सार ॥ रसत सुसांधु सीलती है गथषम में धरिये सतवत्ति

नि सु स्वामी हू दे विचारियों ॥ है सुन्दर भाग एक है
भाग मुक्ता डारि के ॥ दुगुण सुहागो भाग तीन के मि
स्वभाग सुधारि के ।४०॥ घनाक्षरी छन्द ॥ सोने के तव
क अरू पारो ये समान लै दोऊ के समान डारि फिरि मो
ती आन के ॥ पारे की बराबर ले गंधक चौथे हिस्से साजीना
मधि मिलाइ दे जान कें ॥ एक दिन बल्ल मधि डार मर्दन क
री गोली बांधो धान तुस सखिल सानि के ॥ हंडिया में नो
नी भरि तामें एक गोली धरि एक दिन आंच देइ हितु पहि
चान के ।४१॥ दोहा ॥ यह मृगांगारस पीपरें सहित संग स
ब लेइ ॥ तीन रत्ती भरि देत वै छर्दि रोग दूरि करि देइ ॥ सं
गृहणी याते मिटै मंदाग्नि मिटिजाय ॥ सीतल पित्ते
हित हूर दियो पथ्य बताय ॥४२॥ इति मृगांगरस ॥
इति गोस्वामी जनार्दन भट्ट विरचिते भाषा वैद्यर
त्ने द्वितीय प्रकाशः ॥ अथ अरूचि ॥ दोहा ॥ सं
न्निपात अरू दोय सो अरूचि दोष कहि देइ ॥ मिर
च इलायची डारि गुड जल इमिली को लेइ ॥ जीभ
दोष हिय दोष तें अरूचि दोष संताप ॥ या औषधि
सों तुरतही अरूचि हू दूरि करि दाप ॥२॥ छन्द
सिंह मिश्री औषधि जब आठ भाग सों लीजिये ॥
तिहि डारि खरल सुमध्य बांटे एक दिन कहदीजि
ये ॥ चौपाई ॥ मिरच कलौजी जीरा दाख ॥ तंतरीक
कहि कहि अभिलाख ॥ गुरच सोंचर चावउ डारि ॥
गोली करो तनक निरधारि ॥ दोहा ॥ गोली मुख में
राखियो यदि तु जान अपार ॥ अरूचि रोग या सों मि
टै यह कीयो निरधार ॥ ५॥ बार बार पानी पिये

तृप्त न क्योहूं होय ॥ फिरि फिरि चाहे सलिल को तृष्णा कहिये सोय ॥ मिश्री घोलि दाख मधु इनमीडार यह ॥ तृण करदे दूर इन के पानी को दिये ॥ ६ ॥ मठा कूट मधु पील वर पारा लाल पिसाउ ॥ गोली करके राख मुख तिरषणरोग नसाउ ॥ ७ ॥ इति तृष्णा ॥ अथ छर्दि ॥ दोहा ॥ बात पित्त कफ ते बहुरि और त्रिदोष बलवाय ॥ लटी वस्तु देखे बढ़े छर्दि पंच विधि आय ॥ ८ ॥ कोमल कै जाघात ले लोन कटाई डारि ॥ घंड प्रात ही खाइ कै दीजो छर्दि विडारि ॥ ९ ॥ छप्पै ॥ प्रथम लाइची लोग नाग केसरि ले आवहु ॥ मीगी वेर की वह्नि त्याइ इन मांझ मिलावहु ॥ मोथा और प्रियंगु सेते चन्दन इन मधि धरू ॥ पीपरि पील मिलाइ कै सूक्ष्म चूरण करू ॥ मधुर डारि मिश्री सहत चतुर चाट चूरन सरिस ॥ कफ वात पित्त उपजी प्रबल छर्दि फेरि ना कर परस ॥ १० ॥ दोहा ॥ लै जामुन और आंवरा क्वाथ पात कर बाइ ॥ सहत पील चूरन मिलै खाय छर्दि मिट जाय ॥ इति छर्दि ॥ अथ मूर्छा ॥ दोहा ॥ जाने परे सुख दुख नहीं गिरे काठ सम देह ॥ जासों कहिये मूर्छा छह विधि निःसंदेह ॥ १२ ॥ पंखा जल को सींच वो सीतल मणि गण हार ॥ फूल सुगंध अनेक ये मूर्छा अरु उपचार ॥ चौपाई ॥ सिगी वेर की और उसी गज केसरि लै मिलवे धीर ॥ पीपरि सीतल जल सों प्याउ ॥ विकट मूर्छा तुरत नसायु ॥ १४ ॥ दोहा ॥ पीपरि की बुकनी करे चाटै सहत मिलाय याऔषधि सों मूर्छा नर की तुरत नसाउ ॥ १५ ॥ ५ ॥

मिरच आदि को नास दे मूंदि नाक मुख ओर ॥ मूर्छित रहे जगाइयो परो होय जा ठौर ॥ इति मूर्छा ॥ अथ दाह ॥ पित्त करत को मूर्छित तृषा न उठ माह्दा द ॥ त्वचा मांझ वह करत है तहां पित्त सो राह ॥ २७ ॥ देह चुप सिव होठ घृत मिश्री सहत मिलाय ॥ घीव डारि के तुरत ही दाह देह की जाइ ॥ १८ ॥ वासपात को काथ करि सीतल भे मधु डारि ॥ नल वह बच्चा वाइ का कमल सिसर जल धारि ॥ दाह हरत चंदन सहित सुन्दर तरु निर धार ।२०। इति दाह । अथ मृगी-रोग चिकित्सा ॥ वंक नाल सीसी को ल्यावे ॥ कपरोटी इक ईस दिवावे ॥ ल्याइ करूखा मडुवा गोली जवखार सिंगरफ़ लै भली ॥ २१ ॥ जल गुलाव सब खरल करावे ॥ सो यह सीसी मांझ धरावे ॥ सीसी वे जल ऊपर धरे ॥ २२ ॥ यह चूवे जो ले धरि आछे । लेइ काढि ताही के पाछे ॥ सीसी भाग तेल वह नाखि मुंह को मूंदि जतन सों राखि ॥ २३ ॥ यह मल-सोव दाल विसावे ॥ ताको पहले नास दिखावे ॥ फिरि वे सीसी सों वह तेल ॥ अंगुरी मांझ लगावे खेल ॥ लेप करै सोई कनपटी नरूवा ॥ काढे नादि नहरवा ॥ दिन इकीस लौं यह विधि सही ॥ सो धनवन्तर निज मुख कही ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ अस गंध कूट लोन दिजीरा ॥ सोंठि मिरच पीपर लै वीरा ॥ अजमोद भूरु पांखा हूली ॥ पाट ल्यादि जव चूरन को करै बनाइ ॥ चूरन सव सम चूरन आइ ॥ ब्रह्मा नोनिया को रस लेऊ ॥ ताकी बहुत

भावन्त देऊ ॥ चूरण मधि घृत देइ मिलाइ ॥ साठि
दिना नरचूरण खाई ॥ मोसे सोरह कही प्रमान ॥ ३१ ॥
खावे की यह कहत सुजान ॥ बढ़ौ बुद्धि मन धीरज
रखौ ॥ खार खते मिना मैं लख्यौ ॥ लटी बुद्धि उनमाद
नसाई ॥ अपसमार यासों कहि जाई ॥ ३२ ॥ छंद भे
द ॥ तेल लगाइ सरस सरसों को बांधि उतानो पारे ॥
घाम माझ पुनि चाबुक वोदरी लै लहर फिर कारै ॥
भांति भांति डरपावो बंदति आनो सूने राखै ॥ उन्मा
दिक कौ भले करन कौ बचन भयानक भाषै ॥ ३३ ॥
तानो करै लोह वाले लै वाके अंग लगावै ॥ तातो क
रै तेल अरु पानी ताती तन छिरकावै ॥ ऐसे जतन क
रै बहु भांतिन तव दृमि बंदन पावे उनमादी नर कोत
वै चितने चित्त ठिकानो आवै ॥ ३४ ॥ इति उन्माद

अथ अपस्मारः ॥ चौपाई ॥ मोह न मन सुदि ना
रहै ॥ भूलि जाइ बातें जो कहै ॥ दोष को पका बदती
कही ॥ अपस्मार की लीला कही ॥ पीता ल्यावै पुष्य
को कुत्ता को उर फारि ॥ ताको घिस अंजन करै तौ
अपस्मार दे टारि ॥ ३५ ॥ कुत्त को पित्ता मिलै चित
सों धूनी देय ॥ अपस्मार के हरन को यह औषधि
करलेइ ॥ ३६ ॥ चूरन बचकौ सहत संग नाहि प्रात
उठि खात ॥ अपस्मार मिटि जाय तौ पथ्य दूध अरु
भात ॥ ३७ ॥ जाडो जल मैं पीसि के मीन लौ प्याउ अ
पस्मार कर दूरि नर बहुत दिने लगि जीउ ॥ इति
अपस्मार ॥ अथ बात व्याधि ॥ दोहा ॥
होत पाप के आपनो कुपित गहत जब अंग ॥

नव पीड़ा इमि होत है असंसी बात परसंग ॥ उदर परहटी अंड जड़ असंग ध राहिम और ॥ रस्ना बीज करेंठ के तेजा नौं या ठौर ॥ ४० ॥ इनको क्वाथ बनाय के डारि हिंग और नोन ॥ पीवे ताको त न रहै बात व्याधि कहि कौन ॥ ४१ ॥ करा नाद अठ रक वक्रारि तीजो पक्षा घात ॥ मन्यास्तंभ हरै हरीस स्वाए दिना जो सात ॥ ४२ ॥ देवदारू कसेरु वासो ठि डारि करि क्वाथ ॥ तेल डारि पीवे तुरत लगे बात को हाथ ॥ ४३ ॥ हींग त्रिकुट कटुलै तुरत अमलवे त के धरि बिचारि ॥ पाढ़ धना और वावर्द भार्ई इ न मधि डारि ॥ ४४ ॥ जवाखार साजी सरस वच अजमोदा लाइ ॥ तितरा काजी रोबकुरि पीपरा मूल मिलाउ ॥ ४५ ॥ सार हरड़ के डारि के चोखो- वा करो बनाय ॥ स्वास कांस सौंही अरुचि मूल वा न मिट जाइ ॥ ४६ ॥ हृदय रोग गल रोग लरोग मल रोग अरु पांड हूं खा तो जाय ॥ उदर वंद अफ़ रा मिटै हिंगुलादि जो खाय ॥ ४७ ॥ गाद मूत्र में मेलि के तेल अंड को खाइ ॥ उर दरद अरु ग्रहन सो रोग तुरत मिट जाइ ॥ ४८ ॥ आदे का रस तेल घृत बीज पूर रस चूक ॥ ये पीये गुड डारि के यह वेदनकी कूक ॥ ४९ ॥ गुल्म मूल कटि विकव्यथा अरु विथानुवी र उदावर्त और प्रधसी औषधि है बहतीर ॥ ५० ॥ पी ये पीपरी डारि के दश मूल को क्वाथ ॥ वात विथा बहु भांति की मर्दित छोड़े साथ ॥ ५१ ॥ चौ० ॥ पास पह ले टका भरि लेइ ॥ पैसा २ भरि यह देइ ॥ सामस अंडे

जवासो आनै ॥ देव दारू लै इन मधि सानै ॥ बच कन्र सोंठि अरु वासा ॥ हरर आंवरे करै तमासा ॥ पुनर्नवा मोथा सो मिलाय ॥ सोंफ विधारो ये ले दोउ ॥ असगंध और गोखरू आनै ॥ ले अतीस किरवारो सानै ॥ पीपरि पीपरि वासो धन्म ॥ दोइ कटाई मेले मना ॥ सरस सतावरि इन मधि डारै ॥ वैद्य बनावै काथ बिचारै ॥ सोंठि संग कै पीपरि संगी ॥ काढ़ा खाइ होय तब चंगी ॥ ५२ ॥ जोगराज गुग्गुल संग खाइ ॥ अज मोदादि तेल कहलाई ॥ कै अरंड जर तेल मिलाई ॥ अनूपान याको यह आइ ॥ ५३ ॥ सकल अंग को कंपन साइ ॥ पक्षा घात कुवज ता जाइ ॥ आमबात अरु बहुत ग्रधसी ॥ श्लीपद अपतानक जानसी ॥ अंड बृद्ध अपरासु कठोरा ॥ जाय जानु मर्रिनन जोरा ॥ शुक्रलिंग वंध्या भग रोग ॥ रास नादि का करिये जोग ॥ ५३ ॥ इति रास्नादि काथः ॥ अथ गुग्गल ॥ दोहा ॥ देव दारु रासन हरर सोंठि गिलोइ पिसाउ ॥ सबसम गुग्गल लाइकर वह इन माझ मिलाउ ॥ ५४ ॥ वात बिथा मस्तक बिथा दाह भगंदर रोग ॥ यह गुग्गुल खाये मिटे इन रोगन को जोग ॥ ५५ ॥ अथ तैल ॥ दोहा ले जड़ कनक कनेर अरु आक पात को रंग ॥ धातु तमी जल तेल सम और तेल के संग ॥ ५६ ॥ करै अंग यह तेल को मर्दन बारंबार ॥ बात बिथा बहु बिधि मिटे यहै किये निरधार ॥ ५७ ॥ छंद भेद ॥ तेलयका योजक भार लेइ का पहले ही शुद्ध करावे ॥ काटका भरि योगाधिलैके किमि इन

तेल सेर चार का लै माटी टिकिया डार सुधावहु ॥ नेग
ह आक धतूरो भंगरा सेंहुड़ पाव तब काढ़न लावौ ॥ ७०
अरंड कनेर पात को रस लै सेर भर तेल पकावहु ॥ अ
ठरमा यह तेल वान करि अगना बेद लगावो ॥ ७१ ॥
इति अथ रस ॥ छप्पय ॥ गंधक और हरताल सोधि
पारो लै तीन्नो ॥ मोनारि लो हर जलेउ और ते सो कर सो
नो ॥ अरनी नेगड़ हरड़ सुहागा और त्रिकुट कह दीजो ॥
नेगड़ को रस काढ़ एक दिन ताको मर्दन कीजो ॥ मुंडी रस
सो एक दिन मर्दन गोली करहु ॥ गुंजा समान है बात कहं
दस मुकुंद भैरव धरहु ॥ दोहा ॥ रासन गुरु वै देव तरु
सोंठि अरंड मिलाय ॥ अनूपान गुग्गल मिलइ दीजे
काथ पिवाइ ॥ इति भैरव रस ॥ अथ वात रक्त ॥ दोहा
पवन रुधिर असवार कह घूमि करि डारन दुष्ट ॥ अंग
छूवत जानत नहीं व्रन उपजाति पुष्ट ॥ ७२ ॥ मंडल
होइ विसूचिका विकल अंगुरिया और ॥ वात रक्त ल
च्छन कविन वैद्यक कहत कुठोर ॥ ७३ ॥ वात रक्त ज
ब अंग में रहत बहुत दिन छाइ ॥ तब बह नर की देह
में देत कोढ़ उपजाय ॥ ७४ ॥ चौपाई ॥ दारु हरद बच
और गिलोई ॥ कुटकी त्रिफला नीम गुडोई ॥ अरु म
जीठ में काथ पिवावे ॥ वात रक्त और कोढ़ नसावे ॥ ७५
धनाक्षरी ॥ त्रिफला मजीठ छाल नीब की चितावरि
मरु सो दोऊ हरद मिलाइ कै ॥ फेर लाल चन्दन चिराय
तो बकुचीं और किर वारो कुटकी मुरहटी सो लाइ कै ॥
रासन इन्द्रजौ विडंग जटामासी पाढ़ दातन पीपरि नि
सोत मो लाइ कै ॥ मिरच जवासो काकमाची सोना

परबर पात कूट क्वाथ के विधि बनाय यह पाइ कै ॥७६॥
दोहा ॥ वात रक्त कंडू षता रुधिर बिकार अनेक ॥ सिडू
बा धामा कोढ़ को क्वाथ कहेउ यह एक ॥७७॥ नाग
वेल अरु मालती कनक पात रस लेहु ॥ और मुरह टीकू
ट और मेन सिल तामधि देहु ॥७८॥ इन मधि पारो
मेलि कर घोटहु तेल मिलाइ ॥ खाज विवाई कोढ़ अ
रु रोग बिसर्प जो जाइ ॥७९॥ मिटै देह की स्याम ता
बात रक्त मिटि जाइ ॥ तेल लगावै अंग में यह गुन दयो
बताइ ॥८०॥ इति वात रक्त ॥ अथ आम वात ॥
दोहा ॥ अधिक पवन प्रेरित जबहिं आवुक कास थे जा
य ॥ यह नारी सों पाइया आम वात यह जाय ॥८१॥
जानु जाघ कटि मुर मधि मूल होइ जब जोर ॥ आम-
वात लक्षन कहेउ यह वेदन सुक ठोर ॥८३॥ रासन
गुरु वे अंड जर देव दारु संग खाय ॥ आम बात सब
अंग को पीवै सोंठि मिलाय ॥८४॥ त्वम्वा हाड गति
संधि गति मज्जागति है रुन ॥ यह औषधि सों वह मि
टै नर पावै सुख चैन ॥८५॥ दूध साजी पाइ कै मिगी
अंडी की खाय ॥ आम वात कटि मूल अरु रोग ग्रध
सी जाय ॥ मिगी अंड की सोंठि सम खाय खांड के
संग ॥ तौ न रहै नर देह में आम वात पर संग ॥ छप्प
य आठ टका भरि सोंठि दूध बत्तीस टका भरि ॥ बी-
स टका भरि चाव डारि तहे ले कसार करि ॥ खांड अ
ढाई सेर घोर करि पाक बनावहु ॥ टका टका भरि सों
ठि मिरच पीपरि ये लावहु ॥ तज पत्रज एला बहुरि पी-
स डारि कतरा करहु ॥ चूरन पुष्ट बल आयुष्य की आमवात

औषधि धरइ ॥ ९७ ॥ इति आम बात ॥ अथ मूल बात १ पित्त २ कफ ३ बात पित्त ४ पित्त कफ ५ कफ बात ६ ॥ आमाष्य ॥ ७ त्रिदोष जे आठ ८ मूल कहि जात ॥ ९९ ॥ अथ परिश्रम मूलम् ॥ करू जाकी भूजी भिगी कोरि आगु में आपु ॥ ताके खाये पेट के मिटे मूल संताप ॥ १०० ॥ काढो तिल गुर सोंठि को दूध मा भ करि खाय ॥ विथा मूल परिमान को सात दिना में जाय ॥ १०१ ॥ अरंड सितावरि गोखरू पुनर्नवा फिरि लेउ ॥ सोंठि मिरच सम औषधि यह चूरन करि देउ ॥ १०२ ॥ ताते पानी से पिये चूरन सरस बनाय ॥ बिकट मूल परवान कहि यह चूरन सों जाय ॥ १०३ अरिल्ल ॥ सेंधो सुपी परी मिरच सोंठि बिष दीजियो ॥ गंधक कोडी राख पापरो लीजियो ॥ नाग बेलि रस डारि पीसि करि योवरी ॥ परि हां हां जी छदर त्री भरि खाउ मूल गज केसरी ॥ १०४ ॥ अथ गुल्म ॥ दोहा ॥ हृदय नाभ बीच जो चपल गांठि अति होय ॥ रुधिर दोष ते पांच विधि गुल्म कहावत सोइ ॥ १०५ ॥ छप्पय ॥ घी कुमारि को लेइ सेर छह आठ टका भरि ॥ नामधि गुरु प्राचीन सेर पांच के लेकर ॥ धरि धरि पांच पसेरि और टका भरि बाहर पानी ॥ त्रिकुटा त्रिफल और सार मारो अजवायनी ॥ या मधि मिलय मिलावे बहुरि जे औषधि नेलेउ सुनि ॥ त्रिकुटा त्रिफला और सार मारो अजवायन ॥ मोथा वाइ विडंग सितावरि और बताइन ॥ टका चार भरि और एक एक ये औषधि ये तीखाई ॥ यह सब लेकरि एक भरि धरि राषई ॥

गुल्म पांडु जठर स्वास को सब सोरस ॥ ७ ॥ चौपाई ॥
दोइ टका भरि वच लै आवउ ॥ तीन टका भरि हरड मि
लावहु ॥ टका छह भरि वाइ विडंग ॥ चारि टका भरि
सोठि दे संग ॥ ८ ॥ हींगि टका भरि डारै तामहि ॥ आठ
टका भरि पीपरि या महि ॥ पांच टका भरि चित्रक स
रवहि ॥ सात टका अजवायन भाषहि ॥ १० ॥ कूट छा
न चूरन कर वावहु ॥ ताते जल संग मधु संग प्यावहु ॥
गुल्म शूल स्वास और कास ॥ और संग्रहनी रहै न पा
स ॥ ११ ॥ हिंगु सोंठि राई सरस तिंतरीक और नौन
॥ यह चूरन भख गुल्म नर दूरि करै तौ क्यो न ॥ पारो
गंधक पापरो हूरर बरावर लेउ ॥ किरवारे के काथ
सम यह फिरि घोटन देउ ॥ १२ ॥ फिरि थूहर के दूध
संग मर्दन करै बनाय ॥ सहत संग मासे भरि फिर नर
यह रस खाय ॥ १३ ॥ गुल्म जलंधर तियन को मिटै ॰
पथ्य दूध और भात ॥ अनुपान ई मिलाइनो यह पं
डित की बात ॥ इति गुल्म ॥ अथ हृदय रोग ॥ दो
हा ॥ रस सुस्वादु के दोष जब तिगुनहि मधि यह जा
त ॥ परि कर्दन वृद्धि ही हृदय रोग कहि जात ॥ १५
के घत से कै पग्व से कै जल गुरु सों खाय ॥ को हात
रू की छाल वौ हृदय रोग मिट जाय ॥ ४६ ॥ चूरन पुह
कर मूल को सहत संग नर चाट ॥ स्वास कास दारू ग्या
महा हृदय रोग वड कद ॥ १७ ॥ इति हृदय रोग अ
थ उदर रोग ॥ दोहा ॥ छेद पनीमा करके रोग दोष
बढ़ि आउ ॥ प्रान पान दुष करन रग्रं मन दुमि पाउ
१८ ॥ आध मान दुख वल भगिन ॥ ५ ॥ ५ ॥

दुर्बल तन अति दाह ॥ तन्द्रा चूले टल जाय यह उ
दर रोगी की राह ॥१८॥ अथ सीह्रा ॥ उदर जठ
र कृत रोग लक्षणम ॥ दोहा ॥ परी बस्तु सो दुष्ट
कफ अरु लोहू ये दोइ ॥ ल्पीह बढावै उदर कहं सो
निश्चय करि जोय ॥ ल्पीहा वाई और बहुज कृत दा
हिनी और यह विधि ल्पीहा जकृत कहं लक्षन कहे
कुठौर ॥२१॥ जवाषार और कूट बच जीरे चित्रक ला
इ ॥ अजमोदा दातौन अरु हींग चाउ पुनि दाइ ॥
२२ ॥ तीन नोन साजी बहुरि चाव सोठि पिस-
वाय ॥ ताते जल सौं खाय तो वाय उदर मिट जाय
॥२३॥ त्रिकुटा कुट सौंधो जवाषार हिंगु पिसवा
य ॥ बीज पूर रस सौं सरस सीहा मूल को खाय
॥२४ ॥ सरफोंका की पीस जड़ पीजो मठा मिला
इ ॥ सीह्रा बहुत दिनान को सोउ यह सों खाय॥
२५ ॥ चौपाई ॥ जवाखार सोंचर और वारी ॥ कच
लोना साजी निरधारी ॥ सैंधा नोन सुहागो दोऊ
॥ ये सब लै चूरन करि लेऊ ॥ दूध आक सेंहुड
को लावहु ॥ दूध डारि दिनतीन सुखावहु ॥ ती-
भावना यह विधि धरि कै ॥ सब चूरन इकठौ
रे करके ॥ ल्यावहु तोर आक के पाति ॥ तर ऊ
पर राखहु यह घात ॥ सब लै यह हंडिया में
धरहि ॥ हंडिया की कपरौटी करहि ॥ ता दि
आंच गज पुट की देइ ॥ सीतल भये काढि तब
लेइ ॥ फेर पीस चूरन करवावहु ॥ ये औषधि इन मा
हि मिलावहु ॥ सोंठि मिरच पीपरि अरु राई ॥ वायवि

विडंग वाव मिल बाई ॥ मेल मठा मथि चूरण खाइ ॥ २८ ॥ सोथ गुल्म मंदागिनि जाइ ॥ सीहा गुल्म जकृत कहं आइ ॥ उदर रोग कहं पावहि चैन ॥ व्रज खार च-नायो ऐन ॥ ३० ॥ इति रोगा ॥ दोहा ॥ बात १ पित्त २ त्रिदोष ३ कफ़ ४ मूत्र वेग कफ़ घात ६ ॥ षुक रोग ७ अरु असमरी ८ मूत्र कृच्छ ९ कहि घात १० ॥ ३१ ॥ दोहा तनक २ भरि आइ के मूते वार वार ॥ निकसे पीड़ा सहित यह मूत्र कृच्छ नर धार ॥ ३२ ॥ क्राथ गोखरू बीज को जवा खार जुत लेइ ॥ मूत्र कृच्छ अति जोर युत ताहि विदा कर देइ ॥ ३३ ॥ चौपाई ॥ पीपरि और सिला जित दीनो ॥ अरु पाषान भेद पुनि कीजे ॥ मेलि लायची चूरन करै ॥ चावर धोय नीर लै धरै ॥ ३४ ॥ ता पानी में गुर लै घोरै ॥ वाही में यह चूरन बोरै ॥ यह यह विधि सो यह चूरन खाय ॥ मूत्र कृच्छ से कहु नइ राय ॥ जवाखार मिश्री रस दोऊ दोऊ लेय समान मूत्र कृच्छ कह यह कही औषधि पाय सुजान ॥ तनक कुन कुनो दूध करि तामहि देइ गुर मेल ॥ मूत्र कृच्छ अरु असमरी वात रोग दे ठेल ॥ ३७ ॥ कण्य डारि मूल फल पात जुत पांच सेर सब ल्याइ ॥ गोखरू औटे डारि जल पांच सेर कहि जाइ ॥ सवा सेर जल राखि खांड है सेर आध धरू ॥ धीर मंद करि आंच औटि वह नरम पाक करि ॥ जवाखार संठी मिरच पीपरि नाग केसरि सुफल ॥ कहां लायची जाय फरष रुष बीज है सुफल ॥ ३० ॥ टका आठ भरि सास वंश लोचन ले आवइ । यह औषधि सब डारि फेरि अवलेह बनावो ॥

चिकनी हंडिया लादू पर अचलेय छिन ॥ टका टका भ
रि प्रात उठि करन सुभस्नान ॥ मूत्र दाह अरु अस्मरी
रुधिर मेह मधु मेह ॥ मूत्र कृच्छ अरु मूत्र को रोध ता
हि नर दूरि करेह ॥ दोहा ॥ सरकंडा कुस अरु उषदा
भये पांच ॥ पित्त मूत्र के कृच्छ कंह यह पीजो नर सां
च ॥ ४० ॥ सूनही को करि कलक बड़ पच दू दूध सो ऊ
रि लोह गिरत जो लिंग ते सोऊ दे किन टारि ॥ इति मू
त्र कृच्छ ॥ अथ अस्मरी ॥ पथरी ॥ दोहा ॥ वाह
रोके के मूत की कटि और वस्ति मंझार ॥ करे बेद न
अस्मरी यह जाने निरधार ॥ भेद अंत या वान को
जवाखार गुड़ डारि ॥ मूत्र वंध अरु शर्करा देइ अस्म
री टारि ॥ ४३ ॥ अरिल्ल भेद ॥ अत या वान अरंड जर
लाइयो ॥ ताल बुखारे की मूल सुवरन मिला
इयो ॥ औटि कटाई देह गोखरू संग दही ॥
परि हांहां जी लेइ अस्मरी मूत्र बंध औषधि क
ही ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ धना तुषा के नीर में घोरि दरर गु
रू खाइ ॥ विकट अस्मरी लिंग की तुरत बिदा हो जा
य ॥ ४६ ॥ पथरी ऐसे जतन सौं जब नहि हटै सुजान ॥
तब काटौ यह जतन सौं पथरी चतुर सुजान ॥ ४७ ॥
इति अस्मरी ॥ अथ प्रमेह ॥ दोहा ॥ जथा कहै छह
पित्त ते दश कफ तैसे साध्य ॥ चार बात ते होत है ते प्र
मेह असाध्य ॥ ४८ ॥ त्रिफला चूरन कर सरस सहत संग
नर चाट ॥ उपजे बहुत दिनान कर तुरत प्रमेह सुकात ४९
॥ छप्पै वर ऊमरि और आम कैथ पीकर फिर वारा ॥ जामु
नि सोना सारिन चारि को हां निर धारो ॥ महुवा आदौ नी

बरनौ त्रिफला पुनि॥ धीकं जाकी मिगी इन्द्र जौ मिलवं सुनि पुनि॥ चूरन करि यह सहत संग खाइ पिये त्रिफला सरस॥ परमेह बीस फुरिया मिटइ मूत्र कृच्छ न करइ परस॥ ५०॥ दोहा॥ कूट आमरे काढ़ि रस मधु और अरदे मिलाइ॥ मिटै सकल परमेह गृह जैगप्यारे दिन खाइ॥ ५१॥ नर गुर मैं कोरस पिये डारि सहित सिरताज॥ हनै बीस प्रमेह यह ज्यौ मारत मृग राज॥ रस सेमर की छाल लै खाय हरद मधु साथ॥ तौ नर बीस प्रमेह करै तुरत लगावै हाथ॥ ५३॥ रस सेमर की छाल को हरद सहत अरु संग॥ खाय बीस परमेह को तुरत मिटै यह संग॥ ५४॥ हरद शतावरि लीजियो अभ्रक चन्द्रक हीन॥ मधु संग खाइ प्रमेह को यह उपाय कह दीन॥ ५५॥ छप्पय॥ आठ टका भरि लाइ कपर छन करै सुपारी॥ दूध अढ़ाई सेर तामधि पावहि तारी॥ मंद आंच सौं औटि चतुर नर करइ कसारी॥ खांड अढ़ाई सेर शुभ घोरि बनावै पाक जब॥ तामधि कसार डारै बहुरि जे औषधि सो कहत अब॥ मोथा चन्दन त्रिकुटा नाग केसर आमरा अरु॥ चारि बेर की मिगी दोय जीरे की सुधि करु॥ तज पत्रज अरु लेइ लाइची धना जायफल॥ बंशलोचन चूरन सिंगार कर नर॥ लेसहीं है कर षदि डारि आवरे को जुरसा॥ रस डारि सतावरि अंजली रस पुनि कर गोली सरस॥ ५७॥ षाइ पाक परिमान जाइ जीरन ज्वर तजि तनु॥ लमस पित्त यह जाय जाय मंदाग्नि यह मनु॥ आय वाक मुखक छत रुधिर मिटि जाय तज छिन॥ पुष्ट गर्भ यह विधि कहत पाग पाक गुन वैद्य जन॥ इति॥

सुपारी पाक ॥ छप्पय ॥ पारो अभ्रक गंधक सारी मारी एक
सबलेह ॥ मिश्री सेमर छाल लायची आवरा ये हैं ॥
ताल मारवानो अरु वा पूरन सारु मिलावहु ॥ और जाय
फल पीस डारि इन मधि सबावहु ॥ रस परमेह कुठार य
ह है मासे भरि खाइ सहत सों ॥ वाके प्रमेह जो होइ तु
रतु जाइ मुनि कहत अस ॥ ५९ ॥ इति प्रमेह ॥ अथ
मेद ॥ दोहा ॥ दिन सवैरे नि चलौ फिरौ मधु अन्न न
खाइ ॥ और कफ़ कारक खाइ तौ मेद रोग अधिका
य ॥ ६० ॥ उदर पेट कुच मधि बढ़ै मास बढ़त यह भेद
बल उतसाह घटै बढ़त ताहि कहत है मेद ॥ ६१ ॥ प्रा
त बराबर सहत जल पिये मुटाई जाय ॥ माड़ पिये के
मात को औषधि आइ ॥ ६२ ॥ सुत वारिधि के नीर सों पि
ये घोर नर रोज ॥ तौ यह निहचित जानिये मिटै मेद क
र खोज ॥ ६३ ॥ बेल पत्र कर रस पिये कूट वस्त्र में छानि
मेद रोग दुख सिना मिटइ लेउ यह जानि ॥ ६३ ॥ खरि
ल दारु हरद तिल कूट कचूर पिसाइ ले ॥ सरसौं हरद
मजीठ सुमोथा मिलाइले ॥ आंव छालि पिस वाय उ
बटना कीजिये ॥ परि हां हां जी मेद रोग घर बोई
चिरजी जिये ॥ ६६ ॥ इति मेद ॥ अथ सोथ ॥ दोहा
वात बाहरी न सब सै त्याइर क्त कफ पित्त ॥ दोष मुन्चि
घ और चोट तें करत सोथ निह चित्त ॥ ६७ ॥ गुरु पीप
रि और सोंठि कर चूरण करके खाय ॥ मिटै अजीरण
आम अरु मूल सोथ मिटि जाय ॥ ६८ ॥ छप्पै ॥ गुरु
आदी गुरु सोंठि के हरड़ वाय बढ़ती ॥ सोरह मासे अौध
टका तीन लौ बढ़ती ॥ पैठे के तीस भरि सेवन कारयो ॥ सोथ

कंठ मुख नेकन डारियो ॥ स्वांस कास पीनस अरस ज्वर संग्रहनी बात गद ॥ कफ के विकार जितने कहे तितने यह सब करत रद ॥ ६८ ॥ सवैया ॥ पीपरि सोंठि के ढाइ सिता वरि मोपा मंगाइ कै जीरक आवै ॥ पाढ जड़ा हरदी गज पीपरि कूटि २ कपरा मधि छानै ॥ चूरन लेय ह तातै पानी करवावै कै ताहू कै बैरक खानै ॥ सोथ विकार के टारन कौं यह तीन उपारि वैषधि जानै ॥ ६९ ॥ इति सोथ ॥ अथ अंड वृद्धि ॥ दोहा ॥ बात १ पित्त २ कफ ३ मेद ४ अरुचि ५ मूत्र रुधिर बढ आन ॥ मूत्र कृच्छ कहं सात विधि पवन करि कहि जात ॥ ७० चौपाई ॥ चंदन जड़ यौ पद माप ॥ नील कमल उर ईं जर भाव ॥ पीसि दूध सौं लेपहि करहि ॥ अंड वृद्धि व्रण दाहहि हरहि ॥ ७१ ॥ दोसा मस गुरवै गोखरू जा डो रासन अंड ॥ अंड तेल जुत क्वाथ करि अंड वृद्धि कर खंड ॥ ७२ ॥ इति अंड वृद्धि ॥ अथ बिद्रधि रोग ॥ दोहा ॥ ऊरू संधि मधि दोष से जे तेहि सोथ कछु होत ॥ विद्रधि मता सोथ सों कहत मुनी सुर गोत ॥ ७३ ॥ पीपरि सेंधा डारि के हरर पीर करवाय ॥ भूनि अंड के तेल में संधौ बिद्रधि कढि जाइ ॥ ७४ ॥ तुरत मार कौवा उदर फार पीठ कट बाइ ॥ ले निकोरिया जतन सों विद्रधि रोग तब जाय ॥ दैव जोग से बिद्रधि जोप के बैर सिर दार ॥ तौ बह चीरे पुनि करै जन को सो उपचार ॥ इति बिद्रधि ॥ अथ गलगंड भाषा साथ ह्वै कंठ मधि लय के अंड समान ॥ कै छोटे के अति बडो वह गलगंड समान ॥ ७७ ॥ अथ ग्रंथि ॥ दो० नाव आदि जब दुख दुष्ट मानस सम छेद ॥ गंठ गोल

र्वी करै ग्रन्थ बिथा बिन भेद ॥ ७८ ॥ अथ गंडमाला
॥ दोहा ॥ बेर आमरे सम बड्डरि गांठ होइ निरधारि ॥ का
य कटि करि आदि मैं गंडमाला सुविचार ॥ ७९ ॥ सनमूरी
और सहजनो तीनहू के ले बीज ॥ सरसों जो अरसी बहु
रि पीस चूर गहि कीज ॥ ८० ॥ पीस सठा को लेप करि ग्र
न्थ मिटै सुविवेक ॥ गंडमाला गल गंड कहं यह औ
षधि है एक ॥ ८१ ॥ इति गल गंड ग्रंथ गंडमाला ॥ अथ
श्लीपद ॥ दोहा ॥ सोथ होइ कफ भेद कर खाइ कान
कर नैन ॥ चतुर बैद्य कह देत हैं श्लीपद लक्षन रैन ॥
८२ ॥ सरसो नेगड़ सहजनौं पुनर्नवा अरु अंड ॥ पी-
स धतूरे लेप कर श्लीपद करि खंड ॥ ८३ ॥ इति श्ली
पद ॥ अथ विद्रधी ॥ दोहा ॥ बात १ पित्त २ कफ ३
रुधिर ४ असु व्रन निरदोष समूल ॥ ला बिद्रधि तिय कु
चनि गुल आति सुविद्रधि सूल ॥ ८४ ॥ जो गेहूं अरु मूंग
यह पीसे मधमउ देइ ॥ लेप करहि विद्रधि उपर चतुर
दूरि करि देइ ॥ ८५ ॥ इति बिद्रधि ॥ दोहा ॥ एक ठौर तन
मैं कहूं सोथ होइ सिरदार ॥ पूरब लच्छन जानियै
व्रनको यह निरधार ॥ ८६ ॥ बात पित्त त्रिदोष ते ६ का
आगंतुक पांच ॥ और होय रुधिर ते व्रण छह विधि य
ह सांचा ॥ ८७ ॥ बरड़ा मिरच कु पीपरैं अरु यह कमल
बैन ॥ पीउ सहत व्रण सोथ का यह औषधि है दैन ॥
८८ ॥ तेल पीव सों सेरनि को सत बत घन कर वाइ ॥
बांधै पकै अवता और सोथ मिटि जाइ ॥ ८९ ॥
चौपाई ॥ पारा गंधक ये सम टंकू ॥ मुरदा संख द
ह सम सेऊं ॥ लेइ कबीला सबहि समान ॥ ९॥

हरिया घृता तनक प्रमान ॥ ९० ॥ पीब चौगुनो चरनम नो ॥ व्रन सोधे कछु और न पावे ॥ जेन मिटे सो औषधि लाये ॥ व्रन मिटे मलहम के लगाये ॥ ९१ ॥ इति व्रण

अथ सघन व्रण ॥ दोहा ॥ भांति भांति की घार के भांति २ होथयार ॥ भांति भांति के होत हैं तिन के घाउ अपार ॥ ९२ ॥ सद्यौ व्रण लक्षण कहेउ यह विधि किया विचार ॥ अब तिन के में कहत हौं भांति भांति उपचार ९३ ॥ छप्पय ॥ पहले घायल घाउ पाट होरा सो सीजो भैदा लावहु सानि वह्वरि लोई करि लीजे ॥ लेई ताती करहु सेकता सों कर वावहि ॥ अजमोदा नोन पुटलिया करि सिक वावहि ॥ करई सेंक यह विधि चतुर ज्यों घायल पावहि न दुख ॥ है एक हि भांतिक किये मिटहु पीर पुरुष पावहि सो सुख ॥ ९४ चौ० ॥ दारू हर्द अरु तेल पचावै ॥ तेल कबीला दोउ मिलावै ॥ तेल दूवरस एकौ जानो व्रण रोपन औषधि यह बखानो ॥ ९५ ॥ दोहा ॥ जातौ कुटकी और हरद कंजा के फल पात ॥ जाती परवर नीव के पात मैन कहि जात ॥ ९६ ॥ घृत में औषधि मेलि के मल्हम नीक बनाव ॥ पीर मिटै यह सो तुरत और पुरवाहि घाव ॥ ९७ ॥ पीर मिटै यह सो तुरत और पुरवावहि घाउ ॥ इति सद्योव्रण ॥ अथ विदीरण सद्योव्रण ईंट काठ पाथर भरि लगे फटै मास खाल ॥ सद्यो विदीरण नाम व्रण लक्षण कहत त्काल ॥ ९८ ॥ फटेउ घाव लखि तुरतही सींचे सीतल नीर ॥ बांधे कोम्बल पेट कर मिटै अवल तब पीर ॥ चावर घृत सन पीवासो पीसि लेप करवाय ॥ जाठ्या सोंठि मजीस घाव लेप करि ल्याव ॥ १००

इति बिदीरण संद्यो व्रण ॥ दोहा ॥ धाइ फूल चूरन करेकरि और सरस मिलाइ ॥ बार बार लेपन करइ अग्नि दग्ध मिटजाइ ॥ १ ॥ बिषला लेप कराय के अरु अल सी को तेल ॥ यह को लेप करै मिटे आगदग्ध व्रन खेल ॥ २ ॥ इति अग्नि दग्ध व्रन ॥ अथ भगंदर ॥ दोहा ॥ गुदा अंड के बीच ही पकि फोरा परि जाय ॥ पीर करै अति पांच बिधि वहै भगंदर आय ॥ ३ ॥ पुनर्नवा रषे वद्धरि साठि वर पात ॥ पीस लगावे तव हि यह भगंदर मिटजात ॥ ४ ॥ तिल मजीठ सैंधो सहत गज केसरि अरु निसोत ॥ करिहारी दातोन अरु करो हरर और आक ॥ वीज पूरकर वीर अरु नोनते ल अरु पाक ॥ ६ ॥ इनकर कलक बनाय के तेल बनावै ऐन ॥ तेल लगाये से मिटे रोग भगंदर चैन ॥ ७ ॥ इति भगंदर ॥ अथ उपदंश - फिरंग ॥ दोहा - हाथी दांत नख के लगे जौन दोष ते सांच ॥ यह बिधि करि उपदंश यह होत लिंग निध पांच ॥ धोवे त्रिफला क्वाथ सौं भगरा को रस डारि ॥ खता लिंग के दूरि करि और फिरंग दे टारि ॥ ८ ॥ त्रिफला डारि कराह में सहत संग कीराख करै लेप उपदंश यह मुनि संगन ते भाष ॥ ९ ॥ कोहा कजा नाम वर जामुन सोलय पात ॥ तेल पचावे कलक कर जाको गुन कहि जात ॥ १० ॥ दाह पाक अरु पीव जुत है उपदंश ये दोष ॥ तुरत मिटै यह लेप सो यह याको गुन दोष ॥ ११ ॥ पारो मिरचै लोंग मस्तंगी अकरकरा है पुनि ॥ छब्बू वाइ विडंग पुनि तें निती सुनि ॥ लै मिलवा चालीस होई आंवरे वे डारइ ॥ वारडे लव अजमोद कूं

में पुनि में गुरु भारहु ॥ करि गोली है करष भरि इक इस दिन खावे सुपारि ॥ दूध भात बीरा बहुरि नर मिटा उपदंश जानि ॥ १३ ॥ इति उपदंश ॥ गजकेसरी रस ॥ अथ विसर्प ॥ दोहा ॥ फुरिया सबरे देह में निकसे धातु समान ॥ फिरन लगै पीडा करे वह विसर्प सु प्रमान ॥ १४ ॥ आग जरे कैसी परइ फोडा अरु ज्वर होइ ॥ कबहूं कि सबरी देह में रक्त पित्त ते सोइ ॥ १५ ॥ करे लेप घृत डार के खता दाह ज्वर जाय ॥ औषधि एक विसर्प की यह मुनि दई बताइ ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ गुरुबे मोथा परवर पान । खेर अरूसा लेइ सुजान ॥ लै सतौनि अरु कारी बेत ॥ नीब पात अरु हरदी लेत ॥ इनको काढ़ो खाइ बनाय ॥ फोडा कोढ तुरत मिट जाइ ॥ औषधि एकि विसर्प की यह मुनि दई बताइ ॥ १६ ॥ चौपाई जाइ सीतला रोग विसर्प ॥ सीत पित्त अरु ज्वर को सर्प दोह ॥ त्रिफला नीम चिरायतो चन्दन कुटकी लाय ॥ और परवर के पात ले वासा आनि मिलाय ॥ २० ॥ ये औषधि सब लाय कर इन को खाइ ये काथ ॥ कंडु दाह विसर्प ज्वर तृषा को कष काथ ॥ इति विसर्प ॥ अथ स्नेह रोग ॥ दोहा ॥ दोष कोप करि मेंन न मीघ पहिल सा थ उपजाय ॥ डोरा सम इकर इ स्नायु रोग वह आइ ॥ २१ ॥ गाय मूत सम पीस कर बीज बबूरन गाउ ॥ रोग नहरुवा सोय अरु पीर सो तुरत न साउ ॥ २३ ॥ घीव गाय को पउ के तीन दिना लगवाय ॥ नेगड़ को रस तीन दिन रोग नहरुवा जाय । २४ । चौ० बीट कबूतर की ले आउ ॥ तामहि थोरो सहत मिलाउ । गोली बाधलीजिये ताहि

रोगन हरयारे इनवाहि ॥ २५ ॥ अथ मसूरिका-सीतला ॥ दोहा ॥ फुरिया होय मसूर सम बहुर समसूरिका नाम ॥ संग भंग कंद् अरस्त भ्रम ज्वर पहिल बखान ॥ २६ ॥ वंल वैत को क्वाथ करिवा साधै नमभ्कार ॥ पावै ताहि मसूरिका होय यही निरधार ॥ सीतल जल अमली हरद् पीवे पहले तानि ॥ ताके तन में सीतला कढ़े जो पहले आनि ॥ २७ ॥ स्तोत्र पाठ ग्रह मंत्र जप दान यज्ञ सु विचार ॥ एक सीत को कहेउ यही बडो उपचार ॥ जेमसूरिका रोग को कहेउ बहुत उपचार ॥ २८ ॥ जेम मरिका रोग को कहेउ बहुत उपचार ॥ सकल सीतला भेद को यह जानो निरधारा ॥ ३० ॥ छप्पै तेल लगावे नाह मूंड पैडा हीन मुडावे ॥ छोडे मंगल गीत और वाजे न बजावे ॥ धोये कपरा होइ और भूतन नाजडावे ॥ जा घर में बालक परता घर में यह वात सवना कारे ॥ परमेश्वर मंगल करे ध्यान उसी मब करे ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ धनापारा चंना गला मोथा दारु कचूर ॥ सिधारे कोरू मिलात अरू बिचरनात व होइ निरोग जब ॥ इति मसूरिका ॥ अथ अमलपित्त अरिल्ल ॥ वर्ष नयो अम होइ न पाय बचावही ॥ षटिकाइ और उसे उपकार सुहावही ॥ उदर कंठ और उदरद ह सुबहुत पर्यानियो ॥ परिहांहां जी अमलपित्त इमि रोग सुलक्षण जानियो ॥ छप्पै ॥ लैकु हरापर पक क्वाल बत्तीस टका भरि ॥ डारै सेर छह जीर चुरे लेप मंद आंच करि ॥ वाको करै कसार गाय को डार घृत तव ॥ ल्या वैनारि पर गली बहुरि सारे सुटका स्याव गाय के दूध पुनि ॥ करियो कसार इमि जोम न वह जौ लेउ यह सास्त्र सुनि

चार सेर गौ दूध सोंठि चौसठ भरि॥ डारि देहि केसरि पाग पहिलो यों करि॥ तज पत्रज और उसीर चूरन पैसा २ भरि॥ सकल यह बांधि डारि गोली करष भरि सीतल सों एक फेरि पल॥ ३४॥ दोहा॥ अमल पित्त का हू नहीं मिटै कहेउ असाध्य॥ सेवन ते वह पाक के होइ जाइ वह साध्य॥ ३५॥ इति कूष्मांड पाक॥ धानज वासा पीपरे दाख हरर और षांड॥ मधु सों चूरन खाइये अमल पित्त कर भांड़॥ ३६॥ गुरु पीपरि और दूध सों खोया चीव पत्राय॥ कै गुरु बहेड़ा खाके खांड़ आमरे खाय॥ इति अथ उदर्द रोग॥ दोहा॥ सीत पीतते देह में परै ददोरो जोर॥ कहूं जिमि काढ़े परइ रोग उदर्द कठोर॥ ३९ अजवायन मेथी मगा हरद कलोजी देइ॥ और मिरचै यह औषधें टका २ भरि लेइ॥ गंध कदोइ टका भरि लीजो शुद्ध कराइ॥ चूरण करइ गोली करइ आदे को रस नाइ॥ ४०॥ रोज अधेला एक भरि गोली खाइ अति प्रात॥ जानोगे नरकेसरी रोग उदर्द न जात॥ सेंधा घृत न चुपरि करि बोरै कमलाल॥ सोवो रोग उदर्द करि मिटै ददोरा ख्याल॥ सेंधो घृत गेरू सरस और कसुम को फूल॥ करइ उबट नो तब मिटै ददोरा ख्याल॥ सेंधो घृत गेरू सरस और कसुम को फूल॥ गुरु अजमोदा कूटि तनक डारि कटु तेल॥ खाइ तुरतता की मिटै करत पित्त यह खेल॥ ४४॥ सेंधो घृत तनक चुपरि करि बोरे कपरालल॥ सोदा रोग स उदर्द करि मिटै ददोरा ख्याल इति उदर्द॥ अथ कष्ठ॥ दोहा॥ परव षाइ अहार अम धाम बिरक बखान॥ कोढ़ अठारह भांति के दूरि

होय जान ॥ ४५ ॥ अरिल्ल ॥ सबसी कंजा हर देइ कबीज कही ॥ सैंधो बाइ बिडंग सुओ षधि है सही ॥ नाग्य म त्र सों पीसि लेप करियो तहां ॥ ४६ ॥ चौपाई ० ॥ १ कूट लाइची बाइ बिडंग ॥ समान सोंफ सिताविरसं ग ॥ और दातनि रसौत पिसावे ॥ कर लेपन यह कोढ़ नसावे ॥ ४७ ॥ द्रोन २५६ एक त्रिफला जल धरे दस सो १००० ॥ मिलवो तामधि धरै ॥ वह जल औटे तव लगि ऐसे ॥ चौथे हिस्सा रहि सब जैसे ॥ ४८ ॥ ताम हि दस पल गूगल डारे ॥ पल दस षांड तहीं निरधा रे ॥ ४८ ॥ एक टका भरि बकुची डारे ॥ और औषधि य ह निर धारे ॥ ४९ ॥ नीवरू खे रुद्र दोरत बीजे ॥ दू हर दी त्रिकले दीजो ॥ हरद सज्जी और सुरदारु ॥ और भरंगी यह निरधारु ॥ ५० ॥ गोली करइ मटर पर मान ॥ वैदवे कोई यह निदान ॥ गोली एक प्रात उठि खाइ बहुत भांति के कोढ़ नसाइ ॥ यह सर्वांग सुन्दरी करी कोढ़ काज ये मुनि की करी ॥ ५१ जम ससी के पात पान मगावै ॥ तिनति चौरता जल अन्हवावे ॥ दिन इक इस न्हाय सुखावे ॥ ताही की फिर दातौन करावे ॥ ऐसा म रि यह सब लेऊ ॥ चूरन करि ताते जल देऊ ॥ यह सब औटे वैद सुजान ॥ गोली बांधे मटर प्रमाण पैसा पै सा भरि निरधार ॥ चूरन कर यह में सब डार ॥ पह ले यह आठ गोल बंध बावे ॥ निहचै करके वैद खवावे ॥ गोली एक प्रात उठि खाय ॥ भांति २ को कोढ़ नसाय ॥ यह सर्वांग सुन्दरी वरी ॥ कोढ़ काज मुनि वर यह करी ॥ इति सर्वांग सुन्दरी गुटिका ॥ दोहा ॥ नेमहु आक मको

सर फों का अरु खंड ॥ आरनी औव कर हारी ये स्वाद्द धत
रो खंड ॥ इन कर वकला ल्याइ कर छांह माहि सुखवाय
तेल जंत्र वा ताल को लेइ फेर निकसाइ ॥ ५४ ॥ मासे भ
रि यह तेल नर दिन उनचास जो खाय ॥ मिटै कोढ इह
सो तुरत दिव्य देह व्है जाय ॥ ५५ ॥ परवर गंधक १ पल
पारो मासो सार पल ॥ एक बिधारो चौसठ पल घृत ता
सों लेउ ॥ पल भरि गुगल लाल सदेउ ॥ ५६ ॥ त्रिफला
लीजो अरु फल तीन ॥ लेउ वकायव पल भर बीन ॥ ५
पल भरि तहां सितावरि आनि ॥ पल भरि शुद्ध शिला
जित जानि ॥ चौसठ पलकं जाके बीज ॥ कूटि कपर छ
न चूरन कीजे ॥ सब चूरन घृत मधु सों साने ॥ चिकने
वासन में धरि जाने ॥ मासे आठ प्रात उठि खाय ॥ या-
को गुन अब देत बताय ॥ गलित आदि कोढ़ सब जांई ॥
कोढ कुमार नाम रस खाई ॥ २८ इति कुष्ठ म ॥ अथ
कछु सेहु वा या पाढ दगज चर्म चिकित्सा ॥ पन्द्र वैय
ह सब तेल में हरद आक दल रंग ॥ मिटै लगाये तेल
सों तन से कछु पर संग ॥ ६० ॥ किरवारो दोऊ हरद का
कमाछि का पात ॥ कर वो तेल पमार के बीज मठा कहि
जात ॥ ६१ ॥ ये औषधि सब पीसि के पिठी समान बता
इ ॥ करे उवटनो देह में पानादिक मिट जाय ॥ ६२
त्रिकुटक बीज पमार के और मूरा के बीज ॥ मठा मे-
लि सब कीजिये पीठी समगहि कीज ॥ ६३ ॥ य ह औ
षधि को उवटनो करे अंग ये ख्याल ॥ सेहु म एक दाद की
दूरि कर इत त्काल ॥ छप्पै ॥ गुंजा चित्रक मूल प्रोष की राख
निब पुनि ॥ सेहुड बीज कंज अरु दबरो हि सलेहु सुनि ॥

मोथा चीव कुमार आक का दूध मिलावहु ॥ सैंधो वाय
विडंग मिरच अरु सहत मिलावहु ॥ और पमार केबी
ज पीस कर करहु उवटनो अंग सब ॥ ६५ ॥ छूथे लेक
र पहले सुजन पत्र तावे करवावहु ॥ तेल मठा गो मूत
छाछ तामाहि वुझावहु ॥ पात्र चौगुनो ल्या नोन सें
धों सुलगावहु ॥ तर ऊपर ये पत्र एक दिन रात धराव
हु ॥ हरताल पत्र से दुगुनो फिर निवुवा रस डारि स
ठ ॥ कर चन्द्र हीन घट वाय तब अति पलटावहु पत्र
सब ॥ ६६ ॥ कपरा में धरि पत्र गेंद सी वहुरि बनावहु ॥
कपरौटी दुर्ग सात गेंद ऊपर करवावहु ॥ सुखई गेंद
कर वाउ आंच दे वहुरि पचावहु ॥ स्वात सीतल निकस
ई पीस कर रख करावहु ॥ दोइ रत्ती चूरन वहुरि मिश्री
मासे चारि भरि ॥ यह खाइ प्रात उठि पथ्य चारि पी परैं डा
रि नर ॥ ६७ ॥ इति श्री गोस्वामी जनार्दन भट्ट कृते बैद्य
रत्ने तृतीये प्रकाश ॥ ॥ अथ सिरोरोग ॥ सूर्यावर्त अ
धासीसी बेग होइ सित वार ॥ सहज पीर आदिक कहे
सिर के रोग अपार ॥ १ ॥ पीस गाय की छाछ सों पीसक
र मूल ॥ पहुप कि तरु मुच कन्द को मिटइ मूड को मूल
॥ २ ॥ केसरि घृत में भूजिये तामहि मिश्री डारि घोर दू
ध सों नास दे रोगन पहले बिचार ॥ ३ ॥ नास देइ मुख म
दिकरि मूड मूल सुकठोर ॥ सूर्य वर्त आधा सिसी मिटै प
वन को जोर ॥ ४ ॥ जाढ्यो मोथा पीपरें सोंठि सोंफ सुउ
सीर ॥ जटा पीस जल लेप करि तुरत मिटै सिर पीर ॥
५ ॥ जाढ्यो महुआ सोरि अरु भंगरा वाय विडंग इन
को घृत सों नास दे मूड पीर हरु रंग ॥ ६ ॥ चौपाई ॥

बड़ी कटाई के फल लावहू ॥ तिन को कूटि सुरस कढ़वाव
हु ॥ तासों गुंजा पीसि लगावहु ॥ इन्द्र प्रकार धुजहि मि
टावहु ॥ दोहा ॥ आधासीसी की पीरसों दुख पावत है
जीउ ॥ मिश्री सीतल नीरसों क्यों न पीसि के पीउ ॥
८ ॥ इति शिर ॥ अथ नेत्र रोग ॥ दोहा ॥ बात पित्त
कफ व्याधि तें गिरत नयन से नीर ॥ नयन रोग बहु कह
त हैं प्रबल करत है पीर ॥ ९ ॥ अरिल्ल ॥ लोध पीउ
सै भूमि पर भूंजि पीसि जल सों धरहि ॥ वह कपरा
मधि डारि बांधि पुटरी करहि ॥ दारुहरद के क्वाथ
में बहु बार लगा बही ॥ परिहां जो अंखियन को इ
मि कोय बिन साबही ॥ १० ॥ चौपाई ॥ जायफरो गेरू सें-
धौं नून ॥ दारुहरद सर्वत्र वह तौन ॥ जल सों पीसि पल
कुल पराबै ॥ सबल वाय सों रोग मिटावहि ॥ ११ ॥ दोहा ॥
और रोग उपजै नहीं अरु उपजे मिट जात ॥ जो त्रिफला
के क्वाथ सों लोचन धोवे प्रात ॥ १२ ॥ खाइ अचइ कर धो
य के जल कन नैना डारि ॥ चल जल सों तू तुरत नरति मिर
नयन को टारि ॥ १३ ॥ पिये प्रात उठि नाक सों विमल स
लिल नर कोय ॥ मति पूरन अरु गरुड़ दृग अजर रोग वि
न होइ ॥ १४ ॥ सहत पीउ संग साझ के त्रिफला चूरन
खाइ ॥ चाकर छोड़न छीन धुज नैन रोग तिमि जाय
आजे घर के दूध सों घिस कपूर रज नैन ॥ फूली मिटै छो
टी बड़ी और पावै नर चैन ॥ पीपरि त्रिफला लोध अरु
लाख सु सेंधा नोन ॥ घिस २ एक सम सों करे इहि गोली न
र तौन ॥ १८ ॥ घिस गोली अंजन करहु पै गुन सरस तिच ति-
मिर कांच कंडू फूली नैन रोग दे टारि ॥ १९ ॥ इति नैन ॥

अथ कर्णरोग ॥ दोहा ॥ मुरु पवन कफ साहनु कर कान भेद कह दोष ॥ पाकि श्रवन अरु बधिरता शूल करत यह दोष ॥ २० ॥ दुमिला छन्द ॥ पकपके अच्छे सुबरन से आक पात दस बारह लावहु ॥ घीउ चुपरि निन अंगारन पर धरि पान मंद करि के सिकवावहु ॥ मीजके पात काढ़ रस कान मांझ में फिर निचरावहु ॥ कानशूल यह औषधि करि कर प्रबल बेदना सहत मिटावहु ॥ तुंवर सोंठि हींग सों सिद्धि सुसरसों तेल ॥ शूल बिधिरता नाद यह हरै कान कर मेल ॥ २२ ॥ सोरठा ॥ समुद्र फेन पिसवाय डारि बुकनी कान महं ॥ पीर तुरत छमि जाय अंधियारी ज्यों भान तें ॥ २३ ॥ दोहा ॥ सूरज मुखी १ सिर्दुरिया २ मूल लागनी नीर ॥ बिकटा कान को कृमि हरैयै औषधि और पीर ॥ इति करण ॥ अथ नासिका ॥ झिरवो लोहू पीव को पीनस अर्स बिकार ॥ रोग होत इमि नाक में सुनि यह जतन बिकार ॥ २५ ॥ छन्द ॥ त्रिभंगी ॥ धरि उन में ल्यावे मिरच मिलावे गुरु संग प्यावो रुचि भरि के ॥ तव पीनस वैसो कहिये जैसो जीयत तैसो जरि भरि के ॥ नवगेरू लावे चूरन चबावे पीपरि जाको पात अद्रम मधि दानो नि पुनि सब मुनि जन कहि जतन २६ ॥ दोहा ॥ इन को कलक पचाइ के लीजो तेल बनाय ॥ पीनस यह कैकासते तुरत बिदा होइ जाय ॥ २७ ॥ नास सक चौबहु करइ तो यह यतन कराय ॥ गाढ़ी मिमी में लिके गाढ़ो दूध पिवाय ॥ २८ ॥ कोर कलोंजी पीसके बच सारी मिसना ॥ उटरी सु पेलवरा तैं पीनस थे मिट जाय ॥ इति नासिका रोग प्रथम्

ख: रोग ॥ रुधिर सहित कफ कोप करि करत बदन के रोग। जी
भ दोष दुर्वासना। कुरिया फोरा जोग ॥ कारि और बाब यारि की कु
ल्ली करिये मात। फोरा कुरिया जीव फदि याही सौं मिटजाय॥३२॥
एला मैने गुरु डारि के तेल बनाय॥ ओठ दरकिबो कठिनता आ
दि लगाइ मिटजाइ॥३३॥ अरिल्ल॥ त्रिकुटक वाय विडंग हरद मो
था मनो॥ सुखर नीम के पात सरस इन में सनो॥ गाय मूत्र सों सानि
सुखबौ फिरी॥ परि दांहा जी ये मुख में डारि दंत डिढ यह
करी॥ छप्पय ॥ गज पीपरि और हारद कूट अजमोदा लैके
॥ सौंठ चवेली पात पीय बांसा को दैके ॥ पुन नेवाये॰
कूट क्वान चूरन मुख राखहु ॥ या के गुन गन कहें मुनि॰
नने यह विधि भाखहु ॥ दंत मूल कफ वात हर सिथल दं
त दृढ करन अति ॥ दुर्गंध दोष नासक परम ज्या त्यादि
जानो सुमति ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ कारो नीरो इन्द्र जो कूट घसो
दिन तीन ॥ बदन पाक दुर्गन्ध व्रन दूरि करे यह बीन
॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ पाठक पूरनि पीपरि आने ॥ जवाख
र रस बत ये जाने ॥ दारु हरद लै आवहि ज्योंही ॥ ५
कूट क्वान चूरन करहि वोही ॥ ३७ ॥ सहत डारि चूरण
संग खावहि ॥ तनक २ गोली बन वावहि ॥ गोली मु
ख में राखहि नाइ ॥ कंठ रोग सब देहन साइ ॥ ३८ ॥ दो
हा ॥ पान खान में बहुत सो चूना खायो जाय ॥ फिरि २
काली तेल सों कुल्ला ताहि कराइ ॥ ४० ॥ इति मुख रोग
॥ अथ स्त्री रोग ॥ तना दी कुसुम जन विधि ॥ कारे तिल
को क्वाथ करि सीतल गुरु करि डारि ॥ तिय पावे रज मिगवे
फेरि निर धारि ॥ इति कुस ॰ ॥ अथ गर्भ स्थित ॥ ४ ॥

दोहा ॥ बीज तितौरा एक के पीस दूध सौं प्याय ॥ स्नानकरै जादिन त्रिया पुत्र होइ अधिकाय ॥ ५२ ॥ सोरठा ॥ दूध साथ पिय पाय नाग केसरि सरस ॥ चौथे दिन जब न्हाय पुत्र होइ ताकी सरस ॥ ५३ ॥ लाइ पुष्प को लक्षमना फूलदूध घृत दोय ॥ घृत अस गंध के क्वाथ सौं सिद्धि दूध तिय खाय ॥ मात न्हाइ इकही मनो गर्भ रहै सुख पाइ ॥ ५४ ॥ शिव लिंगी को एक फल तिय न्हाय गलि जाय ॥ चौथे दिन ते बांझ ऊ सुत पावै यह आय ॥ ५६ ॥ इति गर्भ स्थित ॥ अथ गर्भ रक्षा ॥ दोहा गिरन लगे तिय गर्भ ज्यों तौ यह जतन कराइ ॥ ले कुम्हार की मृति का जल में घोरि पियाय ॥ ५७ ॥ कन्या काते सूत सो सइ कटद्दी को मूल ॥ बांधे तिय के तौर दै गर्भ मिटै अरु मूल ॥ ५८ ॥ अंड कांस कुस गोखरू जरि सो दूध पकाय मिश्री सौं तिय गर्भ के मूल हरन कौ प्याय ॥ ५८ ॥ दुर्मिला छन्द ॥ सोना धना लाल चन्दन और समस्त मोथा गुरुवै ल्यावहु ॥ सरसज वासो डारि क्वाथ करि नारि गर्भिनी को यह प्यावहु ॥ व्याधि अनेक रुधिर ज्वर पीरा गर्भ मूल निर्मूल कराव ॥ इति गर्भ रक्षा ॥ अथ सुख प्रसा औषधि ॥ दोहा ॥ बीज बिजौरा के सहत जाठेया घिस के प्याउ ॥ सुख सौं नारि गर्भिनी ताको नज नाउ ॥ ५१ ॥ सापात और सांतरा गुंजा जड के खंड ॥ कटि मधि बाधे तियजने सुख सो होइ घमंड ॥ सरफोंका की लाइ जड तिय कटि माहि बंधाउ ॥ यह औषधि परिभाव सौं सुख सो तियहि जनाउ ॥ सोरह १६ है बारह १२ बहुरि छः ६ दस १० चौदह १४ और ॥ आठ ८ अठारह १८ चारिये ४ ॥ ४

१६	२	१२
६	१०	१४
८	१८	४

लिखि कोठे नौ ठौर ॥ सोलह दो क्रम तें किम
तें लिखे कपरे पै यह अंक। जंत्र देख मिसास्यय
इ नारि खाय निरसंक। ५५ ॥ अथ अपराध पा
तन विधि ॥ दोहा। अंगुरी वारल पट के धसै कंठ में कोय ॥ अप
राध पातन उदर तें इह इलाज तें होय ॥ ५६। पीस लगावे पग
करन किर किच हाद्दू मूल के याही उपचार सौं करि अपराध नि
रमूल ॥ ५७। इति अपराध पातन विधि। अथ सूतिका रो
ग। अंग मर्दज्वर कफ अरुचि प्यास सोथ गुरु गात। मूल वेगि
इमि सूतिका रोग वैद्य कहि जात ॥ पीवे पीपरि डारि के दशमूल
न को क्वाथ ॥ सकल सूतिका रोग कों तुरत लगावे हाथ। ५८। चौ
पाई ॥ आठ टका भरि सोंठि पिसावे बीस टका भरि घीउ मिलावे
॥ दूध टका चौसठि भरि डारि षांड पचास टका भरि लावे ॥ घोरि
छानि ये पाक बनावहि ॥ डारि सोंठि त्रिकुटी त्रिंग धं ॥ अरु अ-
जवायन करके करबंध ॥ ६१ ॥ मिश्री नाव चित्रक मोथा पुनि
ओर कलौंजी इन में ले सुनि ॥ टका टका भरि ये सब
लेउ ॥ तीन टका भरि अभ्रक देउ ॥ तीन टका भरि मा
रेउ सार। रूपो सोनो त्यों निरधार ॥ करू अवलेय ही
सब डारि घृत वासन में धरि सुबिचार ॥ ६३ ॥ यह
सवलेह सूति का खाय ॥ ताको गुन अब देइ बताइ ॥ आ
यु बढाय वरन बल करै ॥ गुजल कसी इन कबहु न परै
॥ ६४ ॥ रहै ज्वान से मतिय निरधार ॥ कबहूं होइ सेत नहिं बा
र ष्याम मूल मंदा गिन जाइ ॥ मस्तक शूल रहै को आय ॥
६५ ॥ देखि अग्नि बल ताहि खवाय ॥ दिन २ यह सों रुचि
रुचि उपजावै ॥ यह सौवेठि सुकृत पाको ॥ कह दीनो

सब गुन है ताको ॥ अरिल ॥ आक कनक के पात ल्याइ सु पहिल पिसावही ॥ तिस में सरसों तेल चौगुनो लावही ॥ यह पचाय के तेल हेम सुन्दरि करहि ॥ परिहां हांजी सकल सूति का रोग चुपरि तासों हरहि ॥ ६७ ॥ इति सूति का रोग ॥ अथ क्षीर विवर्धनम् ॥ दोहा ॥ काढ सतावरि रंग तिय दूध संग जो खाय ॥ तो वाके कुच कलस में दूध बढ़त अधिकाय ॥ ६८ ॥ दूधकुनकुनो करि तिया पीवे पीपरि डारि ॥ दूध होय तब बढ़त ही कही बात निरधारि ॥ ६९ ॥ बांटि बिलाई कंद को तिया सहत रस खाय ॥ दूध होय ताके बढ़त गाय भैंस को आइ ॥ ७० ॥ घृत कओर काजर हरज जल सूं पीसि लगाउ ॥ ७१ इति ॥ क्षीर विवर्धनम् ॥ अथ प्रदर ॥ दोहा ॥ अति स्वासबारी तुरंग की अति मै पुनअति दाह ॥ तातें तिय भग- तें गिरत रुधिर प्रदर निरबाह ॥ छप्पय ॥ लाल सुपारी लाय फेरि माजूफल आनहि ॥ फेरि धाय के फूल मोच रस इन मधि जानहि ॥ गेरू और रसौत और चौ- राई जर डारहि ॥ कूट कपर छन करहि औषधें यह निरधारे ॥ पैसा भरि चूरन सरस चावर जल सो घोरि करि ॥ पीवे प्रात नित नैम करि तौ जीवे तिय प्रदर हरि ॥ ७३ दोहा ॥ चावर जल सौ पीसि के सहत चौर इ मूल ॥ अ डार रसौत तिय तुरत प्रदर करत निरमूल ॥ ७४ ॥ चावर जल सौं पीसि के कुस जरि सहित मिलाइ और रसौत पीवे तिया प्रदर तुरत ही जाइ ॥ ७५ ॥ चौपाई ॥ जैसे सोरह टका प्रमान ॥ दूध सेर छः लेइ सुजान ॥ आध

टका भरि घृत ले आउ ॥ ७६ ॥ खोवा द्द सब मेलि बनावै ॥ गोढ़ा गाढ़ी होन न पावै ॥ सोरह टका भरि पिस वावहि ॥ मिश्री खोवा मांझ मिलावे ॥ ७७ ॥ सोंठि षीपरि चातुरजात ॥ मोथा जीरो यों कहि जात ॥ धनाउसीर रसौत जुलावै ॥ वरि वांब कला हरद मिलावै ॥ ७८ बंश लोचन और पद माष ॥ त्यौं षरली जौ कहत सुजान ॥ पैसा २ भरि ये लेउ ॥ चूरन करि खोवा मधि देउ ॥ ७९ ॥ यह जीरक अब लेह बतावौ ॥ यह को गुन मुनि जन मन भावो ॥ प्रदर अरूचि ज्वर तृषा स्वांस ॥ कांस छर्दि अरू दाह निरास ॥ ८० ॥ दोहा ॥ सियचाउर कीनी सो मूसा वल की मूल ॥ पीस पियो दिन तीन में प्रदर करै निर मूल ॥ इति प्रदर ॥ अथ रंडा गर्भ निवारण विधि ॥ अरिल ॥ गेरू तालीस कर्ष भरि ल्यावहि ॥ सीतल जल सौं वहुरि पिस वावही ॥ चौथे दिन अन्हाय तहां औषधि ये षाये ॥ परिहां जी गर्भ निती संग रहे तिय जब लौं जियहि ॥ दोहा ॥ मधु घृत वीज पलास के पीस जोनि मधि लाउ ॥ चौथे दिन गर्भ नारहरा तुरत करवाउ ॥ ८३ ॥ चौपाई ॥ पुष्य नक्षत्र जाही दिन आवे ॥ षोद धतूरे की जड़ लावे ॥ कटि हां बांध करे संभोग ॥ रंडा के गर्भ न रहे यह जोग ॥ ८४ ॥ तिल गाजर के वीज सौं अवर कलोंजी खाय ॥ रांडी तया को तुरत ही रहा गर्भ गिरि जाय ॥ इति गर्भ निवारन ॥ गर्भ पतन विधि ॥ अथ कुच दृढ करन ॥ दोहा ॥ रस कुम्हेंडी अरू सकल तिल को तेल पकाउ ॥ भिजइ रुई यह तेल

तेल में कुच ऊपर लपटाउ ॥८६॥ सिथल भये ज्यो होंय कुच लगि पिय के अंग ॥ तेऊ कुच यह तेल सों गिरिस म होंय तुरंग ॥८७॥ इति कुच दृढ करन ॥ अथ योनि संकोचन ॥ बांध पुटरिया भांग की तिय राखहि भग माहि ॥ ब्यानी कैयो बार की योनि होय जिमि बांझ ॥८८॥ वुकनी करै मोचरस तिय राखहि भग माहि ॥ ब्याई-कैयो बार की छोटी भग व्है जाय ॥ इति भग संकोचन ॥ अथ योनि रोम दूरि करन ॥ कुंड लिया आवै रोमन तेहि करहि ऐसो उपचार ॥ अजवायन अजवायन अज-मोदाही मरू ल्यावै हरताल ॥ ल्यावै हरताल पांख चूरन मिलवावहि ॥ पुनि इन सौ तेल बनाय ताहि सिद्ध कर राखहि ॥ यह मुनियन को तेल बनाय ये ही भग मांझ लगावे ॥ तुरत बार गिरि जाय बार तहां फेरि न आवे ॥ ९० ॥ इति रोम दूरि करन ॥

अथ बालक रोग ॥ दूध पिये के नाज खाय के नाज खाय कै नाज दूध पुनि बालक ॥ तीन प्रकार पहले निश्चय करिके सुनि दूध अन नहि खाय जभी बालक सुख पावै ॥ दूध अन्न नहि दुष्ट तबहिं बुध रोग बतावे ॥ बडे नर को यही औष धि रोग पर ते देह बाल के औषधि हि मात्रा लघु कर वैद्य वर ॥ ९१ ॥ बाइ बिडंग समान तुरत उपजे के दीजे ॥ मास उपरांत एक से बढ़ती कीजे ॥ बीस दिना के बाल के बेर गुठली समता को ॥ औषधि देइ प्रवीन रोग उप-जै जो जाको ॥ औषधि दूध पिये जो शिशु दूध ता-की माता खाय औषधि वही ॥ तब धाय जो खाय

दोहा ॥ बालक को कछु रोग जो तौ बरजे सब बात॥ दुग्ध पान वरजे तरुण यह पंडित कहि जात ॥ ९३॥ अरिल ॥ जाढ्यो हरद प्रियंगु लोध पिसवाइयो॥ इन को कलक बनाय तेल सुबनायो॥ बालक नाभि ये केत व तेल लगायो॥ परि हां हो जी त्रिसवाय के चूरन डारि यो॥ ९४॥ दोहा॥ तुरत भयो शिशु सो जनो चूची पीई न जाय॥ सेंधो मधु घृत आंवरे हरद जीभ लगवाय॥ दुगये उंगली जो शिशु तो घृत सनवाय॥ दोइ कदाई बच सर स पंच कोल को चटाइ॥ ९९॥ जो बालक को होइ ज्वर तौ यह यतन कराइ॥ कुटकी खांड मिलाइ के सहत संग चटवाय॥ ९७॥ चौपाई॥ काकरा शृंगी मोथा आनु॥ और अतीसार पीपरि ये जानु॥ बाल के मधु डारि चब वे॥ काम छर्दि ज्वर रोग नसावे॥ ९८॥ मोथा सोंठि अती स अरु हर जवा उरई मूल॥ क्वाथ खाइ शिशु को करइ अति सार निर्मूल॥ ९९॥ चौपाई॥ काकरा शृंगी पीपरि डारि॥ अ रु अतीस इनमें निरधारि॥ सहत संग शिशु चूरन खाय ॥ अतीसार ज्वर खासी जाय॥ १०७॥ अरिल॥ पुहकर मूल अतीस पीपरें लीजिये॥ काकरा शृंगी पी सि कपरछन कीजिये॥ वालक को यह सहत संग द नदे॥ परि हांहा जी कास स्वास पांच बिधि जानदे ॥ दोहा वंस लोचन सहत संग चाटे जोइ प्रकास ॥ तो बालक की वेगिही दूरि करै यह स्वास॥ अरू सा कुटकी को चूरन करे सहत खांड के संग॥ बाल क की रुच की मिटे अरु पुनि बमन प्रसंग॥ ३॥ ५

मिश्री सेंधो पीपरें मिरचै ये पिसवाइ ॥ जो बालक को मुष पके तो पीपरि की छाल ॥ तासों मुख लेपन करो वासी पानी घालि ॥ सारा आम को लाइकर चूरन सरस कराउ ५॥ लरिका के मुख पाक को दीजे यही लगाय ॥ वेल पत्र गूगल हरद उरद छंद दरिया पीठि ॥ अरिवो धूपव नाइये जोर औषधि नीठि ॥ लरिका रोवै रात को लेत न पल भर चैन ॥ ताको याकी धूप दे यह उपाय है ७॥ इति बालक रोग ॥ अथ गृह ग्रहस्ता उपचार ॥ छंद ॥ पलक करै उदवेग पलक में बालक रोवै ॥ दांत का टै देह अपनी देह बिदारे ॥ धाई माइ कै काढि नोचि बित्या पारे ॥ साबन के जुध इमि होइ जो बालक तब हिं ॥ चेष्टा बिलोकिय विधि सकल जतन करइ बुध बर तबहिं ॥ दो० ॥ दुर्बल लागै रैनि सब छिन छिन बौर मल और ॥ मन्य अंग जिव्हा बढ़त ये लच्छमन या ठौर ॥ ८ ॥ चौ० ॥ नदीन के संगम जहां ॥ वाक कूल वि लोकि तहां ॥ दोऊ कूल की माटी ल्यावे ॥ ताकी पुतली एक बनावै ॥ पुतली ऊंची हाथ प्रमान ॥ तीन नैनन कर चतुर सुजान ॥ दोऊ हाथ पुतली के करदी ॥ मूल कपाल हाथ में धरदी ॥ जटा बनावे सरस अनूप ॥ वाको करई रुद्र की रूप ॥ करे सर्व भूषन तेहि संग ॥ भस्म लगावे सबरे अंग ॥ सर्व स्त्री पति रुद्र कहावै ॥ उह मूरत में ताहि बु लावै ॥ मंद आदि पूतना और ॥ सद्र आदि सुहृते ठौर ॥ चावर पीस चूरण कर वावरि ॥ चौरस ठौ तव चौक पुराव हि पूरब मुख प्रतिमा बह रावै ॥ सोतो मित्र कहुं भावै ॥ दीप धूप चंदन अरु भोग ॥ फूलन करकीये संजोग ॥ एक

त जा होय जो गोबर सैं लीपै फिर हाथ भर चांवर के चून सौं
चौखूटो चौक पुरावै तिहि यही बास कै जलवा सखा के ध
रहि ता माटी की मूरति धरहि महीना तिथि वार छत्र चूर्ण
मुक बालक यस्यु पर्व ग्रहस्य त्यर्थः समेण हवल कारि
छाया भांति सकल करै फिर वो प्रतिमा सूर्य आवाहना
ति सर्व ग्रहन को आवाहन करै ओं सर्व गृहा दि पतिन्ये
ह्र फटि स्वाहा ॥ या मंत्र सूं स्नान धूप दीप नैवेद्य करके
सात वेर सात ठौर चून के दिया गुरु को पानी पकरी मा-
स बुरा गेहूं की ककही बराबर हसव साज प्रतिमा के आ
गे परसे ओं नमो भगवते च्यवके सत्य सुवाह सत्या प्रवा
ह्र हूं हूं ह्र फट स्वाहा - यह मंत्र पढ़ के यह मूठि को हैल ल-
ड़ के हाथ में देह जो न साज रोवे अग पहे यह से होइ सह
मग डरावा है फिर दूसरी मूठि को हैल एक को हाथ दू-
ह्र क्रीं ह्रीं स्फुरु । फुर वैनयाय: नमः यह मंत्र पढ के पी
से अन्न में डरावे लड़का की बराबर फूलन की माला ब
नावे लड़का के उपर तीन वेर फेरे ॐ करनी सुस्या पय
या पढि माल प्रतिमानु साधरा फिर पाछे को न देखे या
भांति चलदास करि धर बावे फिर लड़को धूप देय या-
विधि यो परि मिरच जटा मासी मनुष्य के बार बिलावी
की बीट कचूर ऊन नयवा बिसार ये हाथी दांत गाय
भैस की सींग अहार सब मले कु धौरे यह भूत प्रेत कृ
त्या उन्माद नुसरा वस गृह राक्षस पिशाच हो तिरियो
॥ इति श्री स्वामी जनार्दन सुत मई विरचिते वैद्य र-
त्ने चतुर्थ प्रकाश: ॥ अथ बाजी करनम ॥ छंद
॥ मोसरु तालवो पारा सतावर बीज करिछु केली मगावो ॥

सामस अरु गंगेरू की जर खोदि सु पा दिल मंगावो ॥ औ
षधि सब कूटि कपर छन राखो दूध मह धोरि पीवै ॥ ६
सो भेहराधर जो वरु जाके ताही को चूरन वैद सवावे
॥ १ ॥ चौ० ॥ वीज गोखरू को पल एक ॥ दो पल वीज
करे छके देय ॥ वीज गंगेरू बीजो लीजे ॥ द्वै पल कं
द बिदारी लावे ॥ द्वै पल खीरा जर मंग वावे असगं
ध अच्छो लीजे बीन ॥ ताको डारे ले पल तीन ताहू
अरु सो तोल वोस्वादु ॥ चन्दन लाल गिलोय किवा
रि ॥ तज पत्रज एलाले घु दोऊ ॥ लोंग आंव रेड न
मधि देऊ ॥ पीपर और गज केसर सोउ ॥ सोरह
सोरह मासे दोऊ ॥ इतनी एसब औषध लावे कू
ट छान बुकनी कर वावे ॥ ताकी द्रव्य भावना पोत ॥
एक अधिक ते मानो भोत ॥ ल्यावे खैर कुस कांस ज-
रै ॥ सात भावना ताकी पैरै ॥ चूरन बराबर खांड मिला
इ दुष्ट अरु बीरज को हान ॥ मूत्र कृच्छ ये सब जान
॥ सगरे मूल धात के दोष ॥ तेहनि करे धात की पोस
॥ सोनासे सौ गुन करे ॥ तो कैसे सो मनुष वल धरे वा
रु खाय चूरन सुत जावे ॥ कामदेव चूरण ये कहावे
दो० ॥ चूरन मधु घृत संग सो करई सकल संजोग ॥
बढे धातु यासो तुरत करई दस त्रिय सो संभोग ॥ १ ॥
कुंडलिया ॥ ज्वान होय चाहे फेरि तो राइज का करा
य ॥ आंवरा को रस काढ़ि के आंवरा चूरन खाय ॥
आंवरा चूरन खाय भावना दे बहु तेरी ॥ सुस्वादु घा
म मह सोख सुनिये तेरो ॥ चूरण को सुखवादु अरु मधु
सेवनो ॥ दोहा ॥ सोरह मासे बीज करे छके खादु मधु घृत

खाय जो पिये फिर दूध सौं करदस त्रियसों रसरंग ॥ छप्पय॥ एक प्रगोखरू १६ टका दूध ९४ मधु डारे ॥ औ र गोखरू चूरण यह दूध धरहि कसारे ॥ षपूर मिरच पीपरि और लौंग सारजाजी पकर ॥ समुद्र सोष अज मोद आवरे अकरकरा भल जाती ॥ पुह करके सरिसु परिये सम चूरण करउ ॥ हे जीरा हरदी बहुरि सोंठि बहेरा पास धरेउ ॥ चूरन और कसार मिलाय के स-व तोलौ ॥ चूरन आधभाग खांड तोले यह ओले ॥ ये सब तितने भाग औट के पाक बनावे देखि अग्नि बल सनपृ और धातु कर ॥ ८ ॥ लाडू पकोरा निरधारो ॥ छोलि के कलरा करथ बनारो ॥ पांच सेर जल हांडी डारो ॥ चूरन तेथ्रांच मंद तब वारो ॥ चुरो जानो कुह-डा उतराखो ॥ मिही पीस कर घोट बनावे ॥ घीव टका सोरह भरि डारि ॥ कुहड़ा करि सरस कसार॥ पांच सेर मिस्री को पाक कसा एसो करहु जो छूटे ता-रु त्रिकला धना सवहि बिचारो ॥ तज पत्रज एलाल घुडा रो ॥ नाग केसर जीरा अरु लेहु ॥ फिर तालीस निसोत से देहु ॥ गज पीपरि मोथा दातौनि ॥ ताल बुखारो तिल कै होत दाख गोखरू मोथा बेसो ॥ चाकट असगध ले ते-सो ॥ खैर करेळः के वीज अजारो ॥ जाहो अरु कचूर नि रधारो ॥ बंशी लोचन पीपरा मूर ॥ कमल गट्टा लखि सूर ॥ जाती फल कंकोला ॥ कंद बिदारी ल्यावे मोल ॥ सेमर छाल सुसेंधो नोन ॥ मूसलि कंद कहो ले तो-न ॥ भांग सिंगारा लाजो सब से ॥ सोरह मासे तबरो ॥ इनको चूरन करहु बिचार ॥ अभ्रक देउ टका भरि डा-

रि ॥ सबै बनाइ पाग मधि डारै ॥ सिद्ध होइ जब दे-
खिय सार ॥ ताकी गोली धरहि बनाइ ॥ गोली प्रमा
न टका भरि खाई ॥ धातु पुष्ट करै अगिन बढावै ॥
बमन अमल पित्त छुटि जाइ ॥ पांडु न सावन रक्त पि
त्त अरु सूपान सावै ॥ रोग प्रमेह नजदीक न आवै ॥
असीवर्ष को मानुष खाइ ॥ सोऊ तो बह ज्वान कहा
इ ॥ उज्जल कपडे तक बहु अंग ॥ दिन दूना बढहि अ
नंग ॥ सुक सुद्ध याते अति होय ॥ बाढै कांति कुवारी
होइ ॥ कुहड़ा पाक मसगहि जानो ॥ ताके यह गुन कह
त बखानो ॥ २० ॥ छन्द ॥ नोन सात टका भरि तोल तवै
॥ बीज करेळ के चूरन करै ॥ छः सेर मंगाइ के दूध सुनी
॥ वह चूरन डारि बढाउ गुनी ॥ जब औटि के खोवा होइ
सबै ॥ घृत आठ टका भरि डारि तवै ॥ अषाढ टका इकती
स भरो ॥ मिलवाय टका भरि बांधबरो ॥ अरु पाय मि-
ल बै तवही बंधवाय सब कै वरी ॥ जब हीं गज केसर जा
नो सुजाय फरी ॥ अज मोद लौंग अकरकरा मिरचै अ
ति सोंठि सुपी परिदे ॥ औरि सारुक को पुनि लेउ ॥ तज
पत्रज औरे ।लायची जहां ॥ तजि पीपरि लेउ प्रियां शुरू
हा ॥ औरबीज धतूरे के उग्र है ॥ सोरह २ मासे कहि इन
में सो सिद्ध के सोषक हाऊ ॥ बनाय द्व्य बाको जास्क
॥ पर मेह सुखी बना कृच्छ मिटै ॥ पथरी मूल और गुल्म
घटै ॥ सब बात के रोग बियोग लहौं ॥ त्रिय के पनि घाय
तें गर्भ रहे हहि संकट कहि फारि कूप मर्द करै ॥ अरु धा
तु भाइ अरु वृद्धि करै ॥ त्रियन के लोह बिकार हरै ॥
नरके मनबे मनोज टरै यह खाय ॥ बिचार यामें ॥ त्रिय

को गुरु रहै रितिमें ॥ यह पाक कौरहु के भोजन के ॥ हित आवन बालक के मन भर्षे ॥ २९ पीपरि पहले टका से भर पीसि के ॥ सो औटै दूध टका चौसठ भरि सोक के ॥ आठ टका भरि घी उडरि कै कुसार पुनि ॥ चौसठि टका भरि खांडु को पाग करै सुनि औषधि डारै ॥ बहुरि पूरण करिये पाग मनाते ॥ औषधि बनाय कहत सुधिआन तज पत्रज और लौंग लायची डार दूस कोतर मोथा पीपरि तगर चन्दन बान धनूर तोल सकपूर असजवौ के सार अरु ॥ अभ्रक लोहा सिंगरफ एक २ पल सब धरु। चार टका भरि सहत सुडारि पुनि गोली करहु बल अगिन समान निरखि खाय गोली तिन्ह यह धरहु ॥ पुष्ट करै बल करै नेत्र की जोत करै ॥ यह धातु करइ बल करइ छर्दि भ्रम मोह हरै ॥ कोढ त्षण दाह हरहि बीस परमेह नसावे ॥ कोढ अठारह आठ ज्वर बात रोग सकल कल बिष गर्भ होय बांझ अरु कस्रीप्यली कहै खांड मल ॥ ३० ॥ सूखी कली आंव रे ल्यावै ॥ सोरट के भरि सोतो लेबे गाबे दूध सोति समधि डारि चौसठ टका भरि दे निर धारि ॥ एक राति फिर दूध टरकावै ॥ नयो दूध आनी भरि वावै ॥ तीन राति इमि कर सुनि षाय ॥ पीसे लोम लोद कद लेई ॥ और पीठी सी करइ ॥ चौसठ टका भरि दूध पुनि धरहू ॥ आंबरा घोरि दूध में आनै ॥ कपरा राधी रे पुनि छानै ॥ भट्टी की साई ले आवै ॥ तिह में आबरा डारि चुरावे ॥ आग बार चूल्हे में सुनी ॥ नावा करिये बात यह मुनी ॥ मिश्री चौसठ टंक प्रमान ॥ घोरि बनावे पाक सुजान ॥ तज पत्रज एला सम डारै

और नाग केसरि निरधारे ॥ जायल पत्रज्ज फरमावै ॥ मथ धना लयरह ठौर ॥ चंदन तगर सुनीरा दोउ ॥ कम ल पट्ट लजा टिउ सोऊ ॥ मोथा अरु केसरि जे सई ॥ अ कबाव चीनी कह दई ॥ एक एक मासे भरि बत्तीस ॥ ली जौ कहत वैद्य कोइ स ॥ चूरन कराय औषधि ले ल्या वै ॥ पाक मोगई में मिलावै ॥ खोवा डार बनावे गोली टका एक भरि बढ़ निर्मोली ॥ सोरह मासे अभ्रक बंग र मिल वे खोवा के संग ॥ औषधि सरस हकीम कीक ही ॥ नाम नो सदारू कह दई ॥ याके गुन अब कहत बखान ॥ लीजौ सकल वैद्य अब जान ॥ बलु और बीज को बहुत बढ़ावे ॥ पित्त रोग चालीस मिटावे ॥ उदर रोग आठ भजावे ॥ तनक जो यह औषधि को खावे अथ लक्ष्मी बिलास रस ॥ छप्पय ॥ एक टका प दस मासे गंधक भाग धतूरा बहुरि यारीति पारो इन को बीज फेरि बिदारी कंद जाय फर लीजो बीज ॥ गुर सक्कर निर सोरह मासे सास पीस के चूरन सरस ॥ ध रहु सोरह मासे बहुरि जापिची बुध आनो ॥ दे दसमा से कपूर मिलाय सब जल सों सानो ॥ पल मधि डार घो टि कि नीकर चावे ॥ सुवहरे गोली बहुरि खाय प्रात उ ठि नित पुनि ॥ याके विचार पुनि कहत अब सरस ले उ कवि सो सुनि ॥ सन्निपात और वाय पित्त के रोग जायं सब ॥ कोढ अठारह जायं बीस परमेह हरे कब ॥ नारि बन और गुदा तेरो गम मंदर अति वृद्धि पीनस छर्द अर सस्वांस और मेद गद ॥ आमबात कसता उदर कान ॥ नाक मुख रोग पद ॥ उदर मूल सिर मूल जीभ के भर

ग्रह त्रिय जनके जे मूल तुरत डारै तेरा हू आनौ पान नि
पान मास दधि मूल मठा जल सरा संग जो खाय वृद्धि
पावै सो तरुन ॥ नवला सौं त्रिय सों संभोग ॥ करै घटइ
ना घट्टु तनक ॥ बुढो नरकै बार सिथल नहि होइय
यह मुनि भनक गज के सो बल होइ बात सुनि यह द
मन नारद सों यह मैं उचित विचारि कृष्ण सों देइ तरा
रस में यह नाम लक्ष्मी विलास निधान रस सरस देइ
मभ्भानी ॥ ये छय उत्तव जाई कृष्ण तिहु लोक पति
लखना री बस भयौ ॥ इति लक्ष्मी विलास रस ॥ अथ
चन्द्रोदय रस ॥ छप्पय ॥ टका भरि लेइ सोन बहु सु-
न्दरा ॥ आठ टका भरि लेय तथा पारा ते बुधवर ॥ लावे
गंधक सो धटका सोरह भर सोऊ ॥ घोटै लाल कपास
के फूल के रस में सोऊ ॥ वृत कुमारी को काढ़ रस तासें
सव ये घोटि करि सीसी में कपरोटी करि तामें सब ये
रखि भरि ॥ ६ ॥ सीसी को मुंह मूदि हंडिया में धरिये
॥ तीन दिना लगि आंच तेरे हंडिया के करिये नय थान
समलाल जब टका एक लेइ बहक पूर लौंग अरु जायफ़र
पीपरि पल १ लेइ सब मृग मद मासे चार डार सब की बुक-
नी कर मासे २ तोल के पुड़िया सब की करि धरि ॥ पान
साथ ये खाइ विषा सव गर्भनि सावे ॥ थावर जंगम गरल
दरद कछहू नहिं पावे ॥ वर्ष दिना लगि खाय यह चन्द्रोदय
जन मति न मृत्यु जब सुमर नर ॥ अजर अमर बहु होइ
इति चन्द्रोदय ॥ अथ सर्प विष को उपचार ॥ दो॰
दैव योग ते सांप हू काटै वाये मंत्र ॥ और औषधि कारण
छूट है ताते अरु ये जंत्र ॥ १२ ॥ भानु भानु वृष राशि के सिरक

बीजतव एक पसोवाके निकटही अहि २ आवै विष रख
वा जल सौं पीवही वारह वासो मूल॥ पीर जुते ही सांपके
तुरत करै निर्मल॥१५॥ घृत मधु तीनो पीपरै मिरचैं आ
आदै नौन॥ याको खाये रहत सकल तक्षक को विष कौन
छप्पय॥ अजै पाल की मींगी लाई दुगनी करवावो॥ निबु
वा को रस काढि एक वीस भावना दिवावो॥ ताकी बांध
वरी फेरि छोटी छोटी॥ सुखाइ घाम मधि धरै नहीं पतरी
नह मोटी॥ विस सानु के थूक मैं गोली तनक करै॥ पुनक
रहि जो नर जिय सुख पाय के सकल सांप के विष हरै॥
१६॥ अथ बिच्छू का उपचार॥ लाल धा पी हा-
रो निरखि ताके पात खवाय॥ बिच्छू काटो होय तौ
ताको विष मिट जाय॥१७॥ अजै पाल लै पीस कै
पानी सौ लगवाउ॥ बिच्छू विष सब तुरत ही बिदा
करै यह भाउ॥१८॥ अथ बर्र विष उपचार॥
सैंधो सोचर मिरच ही सोंठि पान कोरंग॥ लेप करै तो
मिटै चढाउ विष तन संग॥१९॥ अथ षन खजूरे
विष उपचार॥ मनसिल गेरू हरद के दै लेपन आय
कै दीया के तेल सौं खन खजूरो विष जाय॥ अथ कू
कर के विष का उपचार॥॥ पात मूल जर वेत के कूट
काथ कर बाय॥ करि सीतल तौ वेगही कूकर को विष
जाय॥ सालै नर कै रज बीज धुरा पिसवाय के॥ विष
कूकर को मिटै यही औषधि खाय॥२२॥ अथ मक
री के बिष को उपचार॥ दोहा॥ हरदी दोउ मजीठ पु-
नि गज केसरि सुपतंग॥ सीतल जल सौं लेप करू-

मकरि विषभंग ॥ २३ ॥ अथ माहुर वाय ताको उप
चार ॥ सीतल थल सीतल सलिल अरु सीतल उपचा
र ॥ हरत काज विष विषम कर सीतल सब सार ॥ २४ ॥
चौ० ॥ मोर पख को तामें ल्यावै ॥ तामधि कि चूवा मा
रि बनावै ॥ लेइ जहर मुहरा को नीको ॥ करै बीज
की आदिमन दै को ॥ ये सब पानी डारि धुवावै ॥ धोवै
एक बिजोई यामैं ॥ ताके पानी देह पिवावै ॥ विष के भां
ति के जंगम जाई ॥ २५ ॥ हरिया थूथा मिरच सुहागा ॥
ये तीनों लीजे सम भागा ॥ भाग लीजिये पिव के दाई ॥ विष
गिरि बुज्रपात रस होई ॥ देव आदि दाली रस ल्यावै ॥ गोली
तीन पीस बनवावै ॥ गोली मासे चार प्रमाना ॥ कै गाय मूत
वह अनूपान ॥ खाय होइ जटा विष जोई ॥ उतर जाइ जासों
विष सोई ॥ सब विष जाइ जहां लगि वाको ॥ कौन आई विष
एते रहस कै ॥ २७ ॥ अथ क्षुद्र रोग तत्रा दौ योवन पीडि
का ॥ ज्यों सेर के पेट में काढा बहुत विथाई ॥ मुख में
फोडा होत है जोवन पीठि को थाई ॥ २८ ॥ बरने को काढ़ि
क्वाथ मुख वासी घायल गाय ॥ जाती फल काचं न्हृ
मिरच जीवने फोरा जाइ ॥ २९ ॥ कुष्ठ रोग ॥ दोहा चांदव
गल और कंध पर जब स्याम पित्त को कोप ते पीर जुत र
फोरा कच्छा नाम कट सिला जीत देवतरू औटि ब
नावै नित्त ॥ वात पित्त कफ ते मिटै फोरा कच्छा मित्त ॥ ३०
अथ बाइ के उपचार ॥ नवन दूध वृत्त सों लगाइ
जो मगन लगाऊं ॥ फूटे पायन के करत चलत महा
सुख पाऊं ॥ सैंधो मधु घृत एलवा डार कटु तेल

॥ ताके बेंपन ते· मिटै चरन बिवाई मूल ॥ अथ गुरु-मथा: अथ अट्ठाईस नक्षत्रों की रेखावली का दान

अ·	२	१७	१०	१९	भोजन	स्वा	१७	३	२०	२५	महिषी
भ·	०	३१	२०	२९	घृतसं	वि	०	१	६१	२१	गोदान
कृ·	१	८	१२	१९	दधिघं	अनु	८	१९	४	५	वस्त्र सोना
रो·	१०	११	१४	१७	घृतपात्र	ज्ये	११	४	३	१७	तेल लोहा
मृ·	१	२	११	२९	तंदुलर	मू·	०	३१	१८	२१	कृष्ण गौ
आ·	०	२१	२२	१०	श्वेतगौ	पू·	०	११	१२	२२	गुड़ तिल
पु·	७	१२	११	१७	गुड़ ति	उ·	६	१०	२१	१७	भोजनदान
पु·	०	३०	६	१०	गोकृ	श्र	१५	२८	७	११	गुदलदान
श्लेषा	६	३०	७	१४	वस्त्र	ध	६	२०	२५	१७	यह जप
म·	६	५	११	१२	गोसोना	श	८	३०	१५	२६	वस्त्र श्वेत
पू·	१४	३०	७	२७	गोपृथ्वी	पू	१०	२०	३०	२२	लो रूपा
उ·	१४	३०	३०	७	गोभूमि	उ·	०	२	१९	२९	वस्त्र श्वेत
ह·	०	१०	८	७	गो ति	उ	१४	२	२८	१६	हिरण्य
चि·	१०	३०	२०	२५	गोमुक्ता	रे·	१०	६	६	२६	सुवर्ण
०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	० ० ०

अट्ठाईस नक्षत्रों का दान ॥
कहा है यथा शक्ति देय मिटै

दो० ॥ दगत निकरि भावन गुदा वै पिन भीतर जाइ ॥ मी लि गाय के दूध मीं देत ठिकाने लाइ ॥ काटि मसरिकी व स गुद्द नाम बतलाउ ॥ मिटै गुदा को निकसबो नर भाव रस पाउ ॥ ३५ ॥ भाजी कौठि द्रही बेन दही पिस खाय ॥

अलपानी निचोडारि के दून की कलक कराइ ॥३६॥ घृ
त पचइ देन को करइ सिधारी दान नवार ॥ गुदा भंग पीड़ा
सहित सो यासों मिट जाय ॥ ३७ ॥ अथ त्रिफला विधि ॥
दोहा ॥ हर्र बहेरा आंवला भाग एक दुइ चार ॥ या क्रम
ते लीजै सदा याको यही विचार ॥३८॥ दूनी मिस्री डारि
के करि घृत मधु संयोग ॥ खाय जाय परमेह अरु सोथ को
ढ के रोग ॥ ३९ ॥ अथ हरीत की जरगा ॥ चौ० ॥ बाय बिडंग
उदर अग्नि बाढै ॥ पीसि खाय तौ मल को काढै ॥ खाद उ
से ई बंध तब करै ॥ भूंजी हर्र त्रिदोष यह हरै ॥४०॥ ग्रीष्म
काल गुरसंग में सेंधो बरषा में ॥ खांड संग ऋतु सरद सों
ठि हिमवंत महा में ॥ पीपरि संग हररितु शिशिर जबहि त
हिं नृपराज बीरसित ताज हूमि तुवरि युत आसि संग थंग ॥४२
अथ त्रिकुट दोहा ॥ सोंठि मिरच पीपरि मिलै सवनि कुट
है जान ॥ दीपन ज्वर को टाहर पीस हरपै ध्यान ॥ पंच कोल व
ट कड़ु ॥ दो० ॥ चावर चितावर पीपरैं सोंठि पीपरा मूल ॥ पंच
कोल अफरा मिटै गुल्म पीर अरु सूल ॥ ४३ पंचकोल लै एक
रि मिरच मिलै तब एक ॥ पंच कोल अधिक गुन अग्नि बढै सुबि
बेक ॥ ४४ सोंठि जोग ॥ चौं० सोंठि भूंजि के सैंधो खाय ॥ तौ पूर
दोष आम मिट जाय ॥ खादू सोंठि जो गुड के संग ॥ मिटै
नौ त्रिविध बात पर संग ॥ सोंठि खाइ दूध में मेल ॥ देइ
उदर ते आउ ढकेल ॥ मठा संग सोंठिये खाय ॥ जारै आ
उ रहै सुख पाय ॥ अथ चातुरजात ॥ त्रिसुगंधु तज
पत्रज लाइची त्रिसुगंध सो जान ॥ मिलै नाग केसरि
जबै चातुर जाति सो जान ॥ ७६ ॥ लघु रोयो अरु ८

पित कफ़ उष्ण करै रस रंग ॥ वीरजन हरक्रम द्विमिक स्रौ चा
तुरजात प्रसंग ॥ ४७ ॥ पंच क्षीर वृद्धि ॥ धर उमरी पीपरि र
बदरि पारा सुपारी ओर ॥ पाक सुआकर क्षीर चय सीतल
बनहर आइ ॥ ४९ ॥ और बंधक वा सौंब सील दोष मिट
जाय ॥ बिर सुख कोउ कहि परा शाशा पर और ॥ पारास
पीपरि केठौ रही बैद्य कहै है और ॥ त्वचा क्षीर तरू पाव
रा मूल बन हर आइ ॥ और बंधक यामें बहुरि और दोष
मिट जाइ ॥ ५१ ॥ अथ दश मूल की विधि ॥ दोहा ॥ कटाई
दोऊ गोखरू अरू नीअरू सालौन ॥ पाउर बेर कुहेर अरु
सोनो षाटा रोन ५२ ॥ यह दश मूल कहा बई याको क्वाथ
बनाय ॥ रोग मसूता सब मिटै बात प्रसूता जाय ॥ ५३ ॥ पं
च कोल की विधि ॥ सांभर षारी चुर मरो सेंधो सोंचर कांच
नोन एक है तीन अरू चार कहे पुनि पांच ॥ ५४ ॥ ५
क्षुद्र क्षारक विधि ॥ दोहा ॥ जवा षार साजी बहुरि
देइ बात पर क्षार ॥ क्षार जहां औषधि कहें इहां सा
निरधारि ॥ ५५ ॥ अथ युक्ता युक्त कथनं ॥ पीपरि वाय
बिडंग पुनि धना सहत पक्ष डार ॥ नई नई औषधि
अवे लीजे सकल बिचार ॥ ५६ ॥ पीवने की विधि ॥
गुरू अरू करो सता बरी बासा कुहड़ा जानि ॥ अंस
गंध सोफ पसारि नी पिया याही सों मानि ॥ ५७ ॥
अरिल ॥ अंग कहे नाहि होय तो मूल लगायो भागा क
हेउ नहीं तहां होय तहां सम जानियो ॥ परि हांहां जे
पाव कहा नहीं तो भारी को आनियो ॥ ५८ ॥ दोहा ॥
एक पाठ में बारहे आवे औषधि मान ॥ दुइ मात्रा ली

जिये तहां यही परमान ॥ दोहा ॥ चरिसा दिन जाइ को औषधि कहिये स्वादु ॥ दीजो जाको मास दुइ औषधि गुनि नहि जाइ ॥ ६१॥ चौपाई ॥ बरस दिना बीता जो वाही ॥ गुटका होय हीन गुन ताही ॥ चार महीना पाछे ॥ घृत मा तेल हीन गुन आछे ॥ बरस दिना पीछे निकसाव ॥ गुन ते हीन औषधि भा पाव ॥ ज्यों ज्यों होय पुरानि संत ॥ सीसा धातु रस त्यों गुनवंत ॥ दोहा कही जो औषधि पाठ महं अनहित रोग दिखाय ॥ तेही को हेत बिचार के दीजै और मिलाइ ॥ ६२ ॥ मिलवा नाहि स है जो तो डारैं चन्दन लाल ॥ बंसलोचन पूरै तोनों सुर लै वह ख्याल ॥ ६४॥ खावै को औषधि करै तौ अजवायन डारै चतुर डारै कछुन और ॥ ६५॥ खैवे को मत दीजियो कारी जीरी जान ॥ कारी जीरी डारो ॰ ज्ञान ॥ ६६ ॥ खैवे को औषधि कहुं बच तहां मत डारू ॥ बच की ठौर कुली जनहि लीजै यह निरधार ॥ ६७॥ नीम आदि को लीजिये खपरं आदि को सार ॥ पहिले पर वस आदि दे दरिया आदि फल डारू ॥ ६८। मुक्ता फल की क्षार ले मुक्ता फल की सीप। सहित सुर्ख प्राचीन गुर सुन कार सुसमीप ॥ ६९। मिस्री शामितो षाडु ले खीले साठी धान ॥ दाख न मिल कुहेडु फल तकले यही प्रमान। तितरीक कफ़ मिलै न तहां डारत रूसी बीज़ ॥ अमलुवेत ना मिलै तो चना खार कह दीज ॥ चंदन सहित मिलै न तहां पत्री चंदन डारि ॥ या बिधि कहदी जै ॥ सकल युक्ता युक्त विचार ॥ अथ विरुधाहार

कुपथनै ॥ गुर विरुद्ध अहार है सोई गरल समान ग्रो
पावे ज्ञान को नृप वर वैद्य सुजान ॥७३॥ कछु दिन वी
ते कीन तुरत करत विरुद्धाहार ॥ छोड़ विरुद्ध हार त
ब कर भोजन सुविचार ॥७४॥ व्याधा दूभई मरणम
र सब इन्द्री बल हीन ॥ करत विरुद्धा हार जब ते नर जेव
ननि दीन ॥७५॥ छप्पय ॥ कुरथी मदिरा संगले । बनफ
ल बेल खवाइ ॥ पार मीन दधि मास सहित जानु नी ब
ढ़ाई ॥ दुग्ध दुष्ट कहि जातु इन्द्र के संग परहि जब हिं
वाव हुए सक्त बहुरि फेरि मठा दूगा संग जब हीं ॥७
॥ दोहा ॥ बीते ते दस घरी मूर दूध हो सुविकार
॥ बीस घरी बीते परे विष सम यह निरधार ॥७६॥
बिन औटे पंच दस घरी औटे बीस प्रमान अपथ
जल लगे मधुर वह तब लगि पथ्य प्रमान ॥ मीन
करै जो कोउ प्रसग ॥७८॥ साग जाके पुवे मधु के
संग दूध जो खाय ॥ वह जैसे सांप कहि दीजै दूध पि
वाय तीतर लवा बटेर मृग मोर सकल बन खान ॥ मास
सकल मे संग कर भली भांति निदान ॥८०॥ छप्पै ॥ स
कल खटाई मांझ धाकरो भलो बनावो ॥ सकल नोन
तिन्ह माह नोन सेंधो मन भावो ॥ जैसे जो खाइ सकल
ताहि गुन दायक ॥ सकल मोद कटु वर्ग सोंठ है मधि
तेलायक ॥ तिक्त मांझ पटवरस रस मधु मांझ खाउ व
रसन साथ दूध उत्तम है और साथ विकार ॥ दोहा
मूर मधुरता वो सलिल मोह मास खाए ॥ मठा उष्ण दून
सम घी घृत खांड नोन नाह ॥ दस दिन घृत सों डारि के

न्निय वेल ॥ वमन करावै तो एक दिन न लगावै तैल ॥
विरेचन विधि ॥ तेल लगा से काढ़ के पेट वचन
करवाई ॥ विरेचन फेरि देइ विधि यह विधि देइ
बताई ॥ मृदु कहियत बहु पित्त नर मध्यम कफ तब
होइ ॥ करि लातो या बात तुत कहत वैद्य सब को
य ॥ अथ जिन को विरेचन देउ तिन के नाम
कहत हो ॥ धनाक्षरी छंद ॥ जीरन ज्वर वारो विष
म ज्वर वारो वात रक्त भगंदर अरषा पांडु उदर अ
रोचक हियरोग ॥ गुल्म प्रमेह ग्रंथी सीहा व्रण विद्र
धि छर्दि कोढ विस्फूचिका है निवाह कान नाक मुख
मुंड गुदा लिंग ॥ और निरोग सोष कृम वात मूलम
च घात नो यहि ॥ ऐसे रोग विचारि जाके अंग चतुर
सुजान वैद्य विरेचन में देउ ताहि ॥ अथ अभि
मत चूरण हर का ॥ मिरचे पीपर सोंठ हर्र हैहरी
॥ आंबरा बहेरा लेउ लायची वाय विडंग अरु मोथ
के करो प्रसंग ॥ पत्रज कूट ताहि में डारि ॥ टंक २ ये
सब निरधार ॥ लेउ टंक चालीस निसोत ॥ अरु ह
स टक मिश्री तब नावै ॥ सौरह मासे चूरण
खाइ ॥ दिये रेचन सकल बताई ॥ अथ अभ
यादि मोदक भार ॥ छप्पै ॥ हर्र मिरच
अरु सोंठि आंवरा लीजिये ॥ पीपरि
और विडंग तज पत्रज दीजिये ॥ १ ॥ १
ये सब लेइ समान तिगुन दीजै निसा
ते ॥ १ ॥ अठ गुन लेइ निसोत षट् गुण
मिश्री याते ॥ सब ले चूरन मधु में गो

ली वांधि वह ॥ लेइ प्रात उठ वर्ष भरि चारि । पीपरै डारि तव ॥ दो० ॥ ज्यों । ज्यों जल शीत ल पिये त्यों त्यों लागि भार ॥ जव जल ताता पिये तव विभार निरधार ॥ विषम ज्वर मंदाग्नि ता पांडु रोग अरु कास नसाइ ॥ अर्श भगंदर कोढ नाश ह्वै गुल्म और गलगंड सोहा उदर दाह भ्रम जोई ॥ छर्दि रोग अरु सीह विलाई ॥ दृग के रोग कान के रोग । आदि मान के सद्ध न जोग ॥ मूत्र कृच्छ्र अरु पथरी टरै ॥ पीर पेट की ताकी हरै । पेट पसुरिया की जो पीर ॥ ताहू के यह टरै न धीर । यह मोदक जो सदा नर खाय ॥ वेग न वृद्धो होइ न जाय ॥ याते गुन पावै यह ताने ॥ यह मोदक चरमाई भाने ॥ अथ इच्छाभेदीरस ॥ छप्पै ॥ पारो मिरच सुहागा लावो ॥ सोंठी अरु गंधक मिलवावो ॥ चित्रक अरु जैपाल सों घोटि मुनो यह वंक । यह चूर्ण करि खाइ दोइ गुंजा भरि अद्भुत ॥ वढै योग सो असु रसीम पानी के संग युत ॥ २ ॥ इच्छाभेदीरस सरस हरत सकल मल सम गुन ॥ हरत रोग अनेक यह सकलकहत गुन वैद्य जन ॥ अथ नाराचरस ॥ दोहा त्रिकुट सुहागा सोंठ ले गंधक अरु जैपाल ॥ पारो सवै मिलाय के करि एकत्र विशाल ॥ घृत मिश्री के संग नर मासे भर यह खाइ ॥ शीतल जल ऊपर पिये जितना पिया जाय ॥ उदर शुद्ध नीके करै यह कोई गुन आइ ॥ आव मूल अनाह ज्वर वल पुनि जाइ ॥ इति विरेचन ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

पीवै मेथी का अजीरन होय तो नोन खाय नोन का अ
जीरन होय तो चावल का धोवन पीवै के वासी मह्देरी
खाय पापर के अजीरन में मीठा खाय सहुन नेके कुआ
मादा लड़ुआ सहारी गो खाड़ पचवे को पीपरामूर
को अवलेह नरियर तारफ़ पचवे को चांवल धोवन है
दो०॥ होय अजीरन आंव की करिये दूध को पान ॥
पचे चिरोंजी हर्र सब यह है बात प्रमान ॥ महुवा
वेल खजूर अरु वेल फल चार ॥ नीम बीज सों यह पचै
के घृत सों यह विचार ॥ पीपर बर ऊमर वड़रि जो
या के फल खाय ॥ और सिंघाड़ा आदि कों सीतल-
सलिल पियाय ॥ ३ ॥ चौ० ॥ जबहिं अजीरन बहुभ
च बाई ॥ अजमोदा पीपर जब खाई ॥ साठी काज दही
को पानी ॥ मांस पचै तुस जल सों जानी ॥ दोहा ॥ ४
गोहू ककरा सों पचे उर्द मठा के संग ॥ चना पचे मूरा
न सों यह देखे यह रंग ॥ मूंग आंवरे सों अजमोदा सु
नु वारि ॥ उरद घांइ सो पचत है कुलथी तेल विचारि
॥ सेवै नूत बदाम ही पिस्ता दाख विचारि ॥ इन को होय
अजीरनौ लौंग करौ उर धार ॥ ६ ॥ सामा पस चाई का कु
नी को दूर मेथि बनाउ ॥ इन को होय अजीरनौ तीनी दह
ही को प्याउ ॥ बहुत खाइ हररे कोई तो होय अजीर
न और ॥ ताहि वेल के पात सों रस पियाउ निचोर ॥ ७ ॥
सीतल जर नीर मिठाई काजे ॥ खिचरी को घी पी सिर
ताजे ॥ नीम मूल सोइ उर हर मड़ा ॥ पैसा कर सो मूंग
के मंगा ॥ दो० ॥ रहन अचंभव खाइ के पिये मास स-
ज जाइ ॥ भूंजी मछरी मास को पचै पचै अचंभो भाइ ८

वेलकोतेरू बावरिके पात कायफको उतारि ॥ ताके खाये कहत हैं सख साल नख वष जाइ ॥ सरसौ वथुआ चिंच को होइ अजीरन जाइ ॥ जर औषधि विष खपरकी वैद पिवावै ताहि ॥११ ॥ परवा अंकुर बांस के बहुत करेला खाय ॥ सोऊ सोहाकाथ सौ तुरत विदा ह्वै जाइ ॥ चौपाई ॥ मछुरी पचै आम फल खाय ॥ कछुवा जवाषार सेभइ ॥ नील कपी खग खाइ कपोतु ॥ कुस की डारसौं इन की भौत ॥ सूरन पचै जबै गुरु खाइ और चांवल धोवन को प्याइ ॥ पचै बिडारू को दो खाये ॥ पचै कसेरू सोंठि चवाये ॥ दूध गाय या भैंस को मठा पिये पचि जाय ॥ भैंस दूध सौं धोवई अरु चूरन दधि खाय ॥१५॥ खिरन पचै त्रिकुट के खाये ॥ जवाखार तेहि बताये ॥ ताही सों सिग वान्है जाय ॥ नोन पढाई दाईया पचै ॥ पचै खटाई नोन हरर चौरूप सों ॥ चिकनाई रूष सों खाइ ॥ औषधि यही परसपर जानों ॥ मुनियन कहौ बाचन पर मानों ॥ दोहा ॥ सत बेर ताको करइ नोन नीर बुझाइ ॥ यह पानी पीवै तबै नीर अजीरना जाइ ॥ सोने के नीर को होइ अजीरन केरि ॥ चाटै मोथा सहत यत मुन जन बरनी हेरि ॥ गुन जो अरगा कोह कै पुनि सुनि ये सब कोइ ॥ भली भांत जाने जु यह वह नर दुखी न होइ ॥ १६ ॥ बीस प्रमेह क्यों न कहते हैं अथ बीस प्रमेह ॥ एक प्रमेह वह मूत्र-

प्रमेह २ चिनिया प्रमेह ३ पित्त प्रमेह ४ पाठा प्रमेह पित्त प्रमेह ६ सवज प्रमेह ७ तिलकूट प्रमेह ८। लासा प्रमेह ९ फीच प्रमेह १० सवज प्रमेह ११ बहु क्षुधा प्रमेह १२ स्त्री प्रमेह १३ अग्नि प्रमेह १४ रेत प्रमेह १५ सुर्ख प्रमेह १६ सात सात के असाध्य हैं॥ इति प्रमेह वर्णनम॥

इति श्री गोस्वामी जनार्दन भट्ट विरचिते भाषा वैद्य रत्ने सप्तमो प्रकाशः॥७॥

अथ स्वयंवर चूरणम॥ दारिवां का वक्कल १२ तिं तरीक १२ तज १२ इलायची १२ लोंग १२ कपूर १२ वंश लोचन १२ सोंठ १२ पीपर १२ मिरच १२ कं कोल १२ सहदेई अरई की जर १२ नाग केसर १२ विधारा १२ तालीस पत्र १२ काला जीरा १२ सुफ़ेद जीरा १२ जायफल १२ जावित्री १२ कस्तूरी रत्ती १२ वारडा १२ आंवला १२ अजमोद १२ गुल शकरी १२ गुरुच १२ तगर १२ धनिया १२ चंदन १२ पीपरा मूल १२ पुहकर मूल १२ अजवाइन १२ मिश्री धेला भर॥ इति चूरणम्॥

अथ अंजन॥

फुली इसका बंद करने का॥

गेहूं लोंग कपूर बेहड़ा हाद स्त्री के दूध सें रगड़े तो जाय जब चाहो तो लगावे नीकी होय॥

अथ तेल प्रसूति

तेल अरंड टका ४ काकड़ा सिंगी टका ४ अफ़ीम टका ४ शिगरफ़ टका ४ करिहारी टका ४ गोरोचन

टका ५ संभालू टका ५ तेल विधान से बनावै प्रसू-
ति रोग जाय ॥ इति तैल विधानम्

इन्द्री जुलाब

रेवत चीनी १२ जवाखार १२ चूरन करि पुरियाती
न करे और गाय के मठा संग पिये तो इन्द्री झार
होय ॥

इति श्री गोस्वामी ज-
नार्दन भट्ट बिरचि
ते भाषा बैद्यरत्ने
अष्टम प्रकाश
सम्बत्
१९४५
शु
भ
म

सूचीपत्र

ज्ञानसूर्य्योदय

जिसमें बडे २ प्रमाणों और सुबूतों और दलीलों
भली प्रकार सिद्ध किया है कि इस दुनियाँ को ब
नाने वाला कोई ईश्वर नहीं है
बल्कि अनादि से ऐसी ही
चली आती है
संसार का कर्ता कोई भी नही है इसका
हैडिंग (शीर्षक या उनवान) देखतेही
आप को इससे
नफरत
होगी
लेकिन इसके सुबूत देखने पर आप की नफरत
हुम दबा जायगी इस लिये एक दफे शुरू से आखीर
तक पढलो अवश्यलो मानना चाहे नमानना

मुअल्लिफ़ (कर्ता) ज्वालाप्रसाद एल·
पी· जे· बुंदेले तत्पुत्र परमेश्वरीलाल
निवासी कायम गंज

प्रथमबार २५· जि·) (मूल्यप्रतिपु· ।) आ

लालमन ग्रंथालय
फर्रुखाबाद में

क्षमा १

सब पाठक जनों से निवेदन है कि यदि इस पुस्तक में किसी स्थान पर
प्रकार की त्रुटि- भूल - गलती - लौहीन आदि होगई हो तो सेवक को सू
करें ताकि तबआ सानी (द्वितीय बार छपने में) में उसकी दुरुस्ती करा
जावे - बल्कि स्वयं सम्भाल लें तो मैं निहायत ही मशकूर और ममनून
होऊंगा - लालता प्रसाद बुंदेला जैन कायम गंज -

प्रार्थना २

छपने में समय अधिक लग जाने के कारण हमारे पाठक महाशयों को
कुलता के साथ बाट देखना पड़ी उसकी क्षमा मांगता हूं -
लालता प्रसाद बुंदेला -

निवेदन ३

छपने ही की देरी के कारण इसकी कापी को शोध नहीं पाया जिससे
गलतियां हो गई हैं हमारे अज़ीज़ पाठक वृन्द उन को भी सम्भाल
तो मैं निहायतही धन्य वादित होऊंगा - लालता प्रसाद बुंदे

अर्ज़ ४

भूल में कानूनन कोई ना जायज़ बात छप गई हो तो दास को उस से
इत्तिलाअ दें - ताकि उसकी भी दुरुस्ती करदी जावे -
लालता प्रसाद बुंदेला -

गुज़ारिश ५

इस पुस्तक को शुरू से अखीर तक (अच्छी भांति) एक दफ़े पढ़ जा
और जहां तक हो सके इस के सुबूत और दलीलें ज़बानी याद
करलें ॥

लालता प्रसाद बुंदेला

दीबाचा

मुझे इस बात का बड़ा भय है कि लोग इस पुस्तक के शीर्षक (हेडिंग) को देखते ही इससे घृणा करने लग जावें गे क्योंकि इस पुस्तक में ईश्वर का न होना सिद्ध किया गया है और सर्व पुरुषों के मन में ईश्वर मजबूती के साथ जमा हुआ है - और अधिक तर डर इस कारण से है कि कि इस पुस्तक के पढ़ने वाले हिन्दुस्तानी ही होंगे - और यह लोग लकीर के फकीर प्रसिद्ध ही हैं - परंतु हे पाठक गणों ! मेरा यह लेख आप के सन्मुख ऐसा है - जैसा कि भारत में रेल जारी होने के प्रथम ही यह सुनाना कि एक ऐसी सवारी है जो हजारों मन बोझ और हजारों आदमियों को एक घंटे में सौमील ले जाती है और उसको कोई जानवर नहीं खींचता है आप से चलती है - या तार (टेलीग्राफ) प्रचलित होने के पहिले यह खबर सुनाना कि एक पल के बहुत छोटे भाग एक लाख कोस खबर पहुंचाने वाला एक चिट्ठी रसां है तो आप को कैसा आश्चर्य होवेगा और उसको झूठा ठहिराबो गे - लेकिन यह सब बातें आप को मालूम होगई हैं इससे आप का आश्चर्य जाता रहा - जिसबात को आप किसी समय में झूठ मानते और जिसका सुनना भी आप पसंद नहीं करते उसी से कितने बड़े लाभ आप उठा रहे हैं - इस जिन्दगी में आप ने इन से (रेल व तार व खुर्दबीन व बहिरा मेटर थरमा मेटर आदि) बड़े २ लाभ उठाये होंगे - अंगरेज़ों ने जो सैकड़ों कलें बनाई हैं - और इस समय सब से अधिक बुद्धिमान गिने जाते हैं इसका कारण यह है कि वे नई बातों की खोज में रहिते हैं - और नई बातों के तलाश करने

का शौक़ है और नई बात को सुनकर हिन्दुस्तानियों की तरह नहीं उछल पड़ते हैं बल्कि उसपर बहुत कुछ बिचार करते हैं - यदि वह बात ठीक मालूम होती है तो उसको मान लेने में किसी तरह उज्र नहीं करते - चाहे पहिले उसबात को वह न मानते हो - और चाहे उनके धर्म के भी वह बात बिरुद्ध हो लेकिन उनको ठीक मालूम हो तो वह फ़ौरन ग्रहण कर लेते हैं - सो ऐ मेरे बुद्धिमानो भारत वासियो इस पुस्तक को पढ़तो अवश्य लो मानना न मानना आप को इख़्तियार है यह बात ठीक है कि आप को ईश्वर का कर्ता मानना बाल्य अवस्था ही से सिखाया गया है = और ईश्वर का कर्ता न होना अभी सुनोगे - मगर यह क्या ज़रूर है कि जो बात पहिले सुनी हो वह सत्य हो और पीछे सुनी हो वह असत्य हो - नहीं बल्कि बुद्धिमानों का यह काम है कि दोनों को परखें जो सच हो वह ग्रहण करें चाहे वह बात पहिले की हो चाहे अभी सुनी हो इसमें आप का कुछ बिगड़ता नहीं यदि ऐसा मानोगे तो बड़े लाभ की प्राप्ति होगी ।

हां इतना अवश्य आप को भय लगेगा कि ऐसा मानेंगे तो धर्म कर्म हमारा सर्व नष्ट होजावे गा - और कोई मत भी नहीं रहना ला मज़हबी आती है - मगर साहिबों मैं आप को यक़ीन दिलाता हूं कि इसको मानने से धर्म कर्म और मज़बूत होता है और नेक कर्म और धर्मात्मा बनना होता है और परमेश्वर को मानने की हालत में धर्म और नेक कर्मों में बड़ी ख़राबी आती है - और आ रही है - आमतौर पर इसबात का आश्चर्य होगा कि ईश्वर को न मानते हुए धर्म कर्म क्या हो सक्ता है परंतु यह बात ऐसी ही आश्चर्यान्वित है जैसी इस पुस्तक को पढ़ने से पहिले ईश्वर का नहोना आश्चर्यान्वित है जैसे छोटा बालक जब कुछ

बिगाड़ का काम करता है और कुछ दंगा फिसाद करता है तो उसके माता पिता उस बिगाड़ के काम से उसको हटाने के लिये उसको डराते हैं कि तू ऐसा काम करेगा तो लुल्लू या हौआ आकर तेरे नाक कान काट लेगा ऐसे ही बुरे कर्मों से बचाने के लिये यह परमेश्वर का भय दिलाना लुल्लू या हौए की तरह से झूठा है परंतु जैसा कि लुल्लू के झूठ होने और बुरे काम से जानकार होने पर वह बुरा काम छोड़ दिया जाता है इसी तरह ईश्वर के न होने से जानकार होकर शुभ और अशुभ कर्म की असलियत को जानकर और गुमराही (भटकने) और धोके से छुटकर आदमी धर्म की तरफ पहिले से अधिक तरक्की करेगा और यह तरक्की सच्ची होगी इस पुस्तक के दो हिस्से हैं - प्रथम हिस्से में यह सिद्ध किया है कि ईश्वर ने दुनिया नहीं बनाई और कहां से आई - और इसका काम किसतरह पर हो रहा है और दूसरे में यह सिद्ध किया है कि ईश्वर के मानने में क्या दोष है - और क्या २ मुश्किलें पेश आतीं हैं और आवागमन क्या है - मरने के बाद आत्मा फिर शरीर पाती है :-

पाठकगणों ! से निवेदन है कि मुमकिन है कि किसी बात के प्रमाण और खंडन के विषय कुल दलीलें एकही स्थान पर न दी गई हों इस वास्ते इस पुस्तक को शुरू से अखीर तक अवश्य पढ़लें किसी एकही प्रमाण या दलील को पढ़कर अपनी सम्मति न स्थायें और कुल पुस्तक को पढ़ने के बाद निर्पक्षी हो कर कुछ इसपर विचार करें फिर जो राय हो उसको क़ायम करें अगर किसी साहब को यह प्रमाण मिथ्या सिद्धि हों तो मुझ को सूचित करें मैं उनका धन्यवादित हाेऊंगा - क्योंकि मुझ को पक्ष से रहित होकर सत्य की खोज करना है ॥

लालता प्रसाद एल· पी· जे· स्थान

कायम गंज ज़िला फ़र्रुखाबाद

पश्चिमोत्तर देश

छोटी पुस्तक क्यों रची - इसलिये कि दोनों तरफ़ लोग लाभ उठावें - छपाई कम लगे - छपाई में वक्त कम लगे - कागज़ कम - पढ़ने में समय कम लगे - मूल्य कम - डाक महसूल कम पोस्ट मेन को बोझ न उठाना पड़े - पाठकों को घंटों सिर दर्दी न करना पड़े - मुखालिफों का दो २ ही बातों में मुंह बंद होगा वे - ज़ियादा न बकना पड़े - पुस्तक भर में एक दलील भी अच्छी हाथ लग जावे तो दाम वसूल समझो सो इसमें तो एक २ दलील और सबूत पुस्तक के मूल्य के बराबर है - दाम वसूल समझना चाहिये - पुस्तक का मूल्य और आकार देख घबड़ाना न चाहिये - इसके सबूतों और दलीलों की प्रशंसा करनी चाहिये यदि बड़ी पुस्तक से रुचि होतो चार आने के कोरे कागज़ इसकी पुश्त पर और अधिक लगाकर सीलो आपका मतलब भी निकल जावे - पुस्तक की मोटाई नहीं देखना चाहिये उसके मज़मून पर गौर करना चाहिये ऐसी उतम पुस्तक यदि आप इसको हस्त लिखत खरीदते तो आप के पांच सात रुपये से कम नहीं व्यय होते - रुपयों का काम आने देरहे हैं - हर जैनी को यह पुस्तक मगाना चाहिये - इस पवित्र पुस्तक से किसी भाई का भी घर खाली न रहना चाहिये - हाथों हाथ बिक रही है शीघ्रताई से मगाओ नहीं तो द्वितीय बार छपने [illegible] पड़ेगी - मूल्य भी कुछ अधिक नहीं है मगाओ [illegible] देरी मत करो - आठ आने की कोई बड़ी बात नहीं है

पुस्तक इस पते से मंगाओ

लालताप्रसाद एल. पी. जे
(तत्पुत्र परमेश्वरी लाल (बुदेले) जैन)
स्थान कायम गंज
ज़िला फ़र्रुखाबाद
(पश्चिमोत्तर देश)

पहिला परिच्छेद

१ अध्याय

यह दुनियां कबसे है और किसतरह चलरही है

प्रकृति

मैंने संसार में मनुष्यों के मुख से चार चीज़ें अर्थात् आग[१] वायु[२] खाक[३] पानी[४] सुनी हैं और इन्हीं चारों से पृथ्वी गरी ऊई है परंतु बिचार करने पर इसके बिरुद्ध पाया -
देखिये ! पानी जमकर बर्फ़ एक ठोस चीज़ बन जाती है वृक्ष पानी पीते हैं और उनकी लकड़ी बन जाती है पानी आग की गर्मी पाकर हवा होकर उड़जाता है दो प्रकार की हवा आक्स जन और हेड्रोजन के मिलाने से पानी बन जाता है और रांग चांदी सोना आदि आग की गर्मी से पिघल कर पानी बन जाते हैं पत्थर से पत्थर और लकड़ी से लकड़ी रगड़ने पर आग पैदा हो जाती है जहां तक खोज लगाते हैं इन चारों चीजों को एक दूसरे से हालत बदलते ऊए देखते हैं इससे यह बात सिद्ध ऊई कि चारों चीजें एक दूसरे से प्रथक •

हैं बल्कि एकही वस्तु की चार हालतें हैं कि कभी एक हालत हो जा
ती है कभी दूसरी हालत कभी तीसरी इत्यादि जैसे एक सोने के चार
आभूषण आरसी · कंगन · हार · लटकन हैं और इनमें से चाहें कि
सी को गलाकर एक से दूसरा भूषण बना सक्ते हैं जैसे आरसी गला
कर कंगन और कंगन गलाकर हार और हार गलाकर लटकन
इत्यादि किन्तु वास्तव्य में वस्तु एकही है एकही वस्तु की चार
हालतें होसक्ती हैं और उस वस्तु का नाम लोगों ने प्रकृति रक्खा
है इसलिये हम भी इसी नाम को पुकारेंगे इस प्रकृति को अजी
ब २ शक्लों और सूरतों में हम बदलते हुए देखते हैं परंतु इसमें
दो बातें अवश्य पाते हैं (१) यह कि यह प्रकृति जब बदलती है
तो उसकी शक्ल अवश्य होती है यानी असलीक नहीं होती (२)
यह कि प्रकृति न कभी नई पैदा होती है और न कभी मिटती है
बल्कि इस दुनियां में जितनी नई चीजें पैदा होती हैं वह नवी
न नहीं पैदा होती हैं बल्कि प्रकृति की एक हालत से दूसरी हा
लत होजाती है और वह ही नई चीज मालूम होने लगती है
दुनियां की जिस वस्तु को दृष्टि फैला कर देखो हर जगह यही बा
त पाई जावेगी जैसे कि वृक्ष कहां से आये मिट्टी पानी हवा
बीज आदि से बनता है इनके बिना नहीं बन सक्ता है वही पे
ड़ आग धुआं राख आदि की शक्ल में हो जाता है या गलकर मि
ट्टी बन जाता है गरज़ कि बिना वस्तु के कोई नई वस्तु नहीं
बन सक्ती अंगरेजों ने लकड़ी को तौल कर और उस स्थान की
हवा को भी तौल कर जलाया है फिर जब लकड़ी जलगई तो
फिर उसकी राख को तोला और जहां जलाई थी उस जगह की
हवा को भी तोला तो कुछ भी न कम बढ़ न हुई बराबर ही
पाया यानी जब राख तोली गई तो लकड़ी से कम हुई परंतु

जब हवा को तोला तो जियादा होगई उतनी ही ज़ियादा होगई जितनी लकड़ी की राख में कमी आई पस कम बढ़ कुछ नहीं हुआ बल्कि हालत बदल कर हवा की शक्ल में आगई एक ज़रा भी कोई चीज़ घटी बढ़ी नहीं दूसरी बात यह देखने में आती है प्रकृति को कोई ही चीज़ क्यों न बने कोई न कोई शक्ल उस वस्तु की अवश्य होगी यानी प्रकृति बिना शक्ल के नहीं रह सक्ती है और जब उसकी शक्ल है तो उसमें रंग भी अवश्य होगा और जब रंग शरीर आदि उसमें है तो उसका नाम भी अवश्य होगा ऐसे ही और अन्य गुण हैं कि उस में सदा होते हैं इससे यह सिद्ध हुआ कि प्रकृति न कभी पैदा होता है और न कभी मिटती है शक्ल (शरीर) रंग (वर्ण) नाम आदि उसकी असली गुण हैं जो सदा उसके सथ रहिते हैं और कभी अलग नहीं होते- यानी प्रकृति अनादि है इसको किसी ने पैदा नहीं किया और न कोई मेट सक्ता है ॥

२ अध्याय

अजीव वस्तुओं (बे आत्मा) के गुण

दिया सलाई के रगड़ने से क्यों आग पैदा होती है यदि रगड़ने वाले ही में आग पैदा करने की शक्ति होती तो और चीज़ों में भी उत्पन्न कर सक्ता था या जेब में पड़ी हुई दिया सलाई अजान में रगड़ पाकर जल उठती है इससे यह सिद्ध हुआ कि रगड़ने से दिया सलाई जलउठती है और मिट्टी में यह गुण है कि आग में पक कर बहुत कड़ी (सख़्त) होजाती है और लाल होकर फिर काली होजाती है- कागज़ को आग पर जला कर कोई सख़्त नहीं

कर सक्ता है एक लकड़ी को दूसरी लकड़ी पर रखकर ठोकें तो दोनों जुड़कर एक हो जावेंगी - परंतु रितिया को रितिया में ठोकर नहीं जोड़ सक्ते हैं इसी प्रकार परीक्षा करने पर दुनियाँ की वस्तुओं में यह मालूम होता है कि इन वस्तुओं में यह गुण है कि इनमें खास कार्य्यवाई करने से खास हालत हो जाती है यानी खास वस्तु बनजाती है जैसा कि नीला और पीला रंग मिलाने से हरा रंग बन जाता है दुनियाँ में जितनी चीज़ें दिखाई देती हैं वह इसी तरह पर बनी हैं कि एक चीज़ में सदा उलटन पुलटन रहिता है और एक दूसरे से मिलती बिछुड़ती रहती है और इसमें यह गुण है कि इस तरह मिलने बिछुड़ने और उलटन पुलटन से एक नई और बिलकुल निराली तीसरी चीज़ बन जाती है मिश्री के कूज़े को देखो कि उसके पाहिलू कैसे इकसां और दर्पण वत चमकीले होते हैं मगर उनके पाहिलुओं को कोई नहीं बनाता और न उनको चमकीला बनाता है चाशनी करके प्याले में ठंढा कर के रख देने पर कुछ शीरा उसका टपक जाता है और बाकी वही प्याले में जमकर ऐसे पाहिलू और तरफें उसमें बन जाती हैं जिनको होशियार से होशयार से कारीगर हाथ से नहीं बना सक्ता यानी इन चीज़ों में अजीब २ कारीगरी की हालत में होजाने के गुण हैं मिश्री के कूज़े पर तो आश्चर्य्य होता ही है लेकिन जब वृक्षोंपर दृष्ट दौड़ाई और उनके उत्पन्न होने की तर्कीब बिचारी तो सर्व आश्चर्य्य जाता रहिता है और यह समझा कि जैसे दो हवाओं के मिलने से पानी बनता है वैसे ही और भी अजीब २ हालतों में पैदा होने की तर्कीब को देखा तो मालूम हुआ कि उनमें यह गुण स्वयं ही मौजूद है ॥

पेड़ किसतरह उत्पन्न होता है किसी खास वृक्ष के बीज को उसकी खासियत के मूजिब हवा पानी मिट्टी धूप मिलें तो पेड़ बनजाता

है उसमें डालियों से फल फूल पत्ते आदि अजीब कारी गरीयां हो जाती हैं और यह कारीगरियां उससे भी अधिक तर हैं जै सी कि मिश्री के कूज़े के टुकड़े में थीं - और जैसे कि वह टुकड़ हलवाई ने नहीं बनाया चाशनी को एक खास हालत में रखने से बनाये गये थे इसी तरह पेड़ के फल फूल पत्ते डाली भी कोई न हीं बनाता है बल्कि बीज को हवा पानी मिट्टी धूप उसकी खा सियत के माफ़िक़ मिलने से बन जाते हैं इन चीज़ों की खासिय त ही के वजह से ऐसी बारीक कारी गरी की चीज़ें बन जाती हैं जिसको होशियार से होशियार कारीगर नहीं बना सक्ता है पुरुष के शरीर में पेंड़ों से भी अधिक कारीगरी पाई जाती है एक आंखही की कारीगरी को देख बुद्धि चकराती है और है रान होती है और कुल शरीर को देखकर तो अक़्ल और भी चकराती है परंतु जब मनुष्य के शरीर की पैदायश को देखते हैं तो वह भी मिश्री के कूज़े और पेड़ की मानिंद मालूम होती है जैसा कि हर प्रकार के पेंड़ को एक खास प्रकार की ज़मीन चाहि ये - जैसे बाज़े वृक्ष खाद से बढ़ते फूलते हैं बाज़े रेत में इसी तरह हर जानदार के बीज के वास्ते भी एक खास प्रकार का पेट चाहिये जिस में वह परवरिश अर्थात् पल कर तैयार होकर पैदा हो - और जैसे कि गले हुए या सड़े बीज या और प्रकार के खराब बीज से दरख़्त पैदा नहीं होता - इसी तरह पुरुष के भी खराब वीर्य्य से गर्भ स्थिति नहीं रहता फिर जैसा कि खांड़ की चाशनी को एक खास तरह पर रखने से ही मिश्री का कूज़ा बन गया इसी तरह पुरुष का वीर्य्य भी पेट में (गर्भाशय में) एक खास तौर पर रक्खे जाने से बालक बनता है इन बातों के विचार करने से साफ़ मालूम हो गया कि दुनियां की चीज़ों में

यह खासियत है कि किसी खास शकील में होने से या किसी खास चीज़ के मिलने से ऐसी चीज़ें पैदा होती हैं जिनके देखने से अति आश्चर्य होता है कि यह किसतरह से अई इससे यह सिद्ध हुआ कि सब कुछ आपही आप मौजूद हो जाता है आदमी की करतूत से ईश्वर कुछ नहीं करने आता है

३ अध्याय

प्रकृतिका मिलना बिछुड़ना

जब वर्षा होती है तो भूमि की सारी धूल जोकि उसपर होती है जाती रहती है और रेत (रेग) दीख पड़ता है इसका क्या कारण है ? धूलमें रेत और चिकनी मिट्टी मिली रहती है चिकनी मिट्टी में यह खासियत (स्वभाव) है कि पानी में घुल जाती है और रेग अर्थात् रेत नहीं घुलता इसलिये धूल में मिलना रेत होता है वह तो भूल पर पड़ा रहता है और चिकनी मिट्टी पानी के साथ बहि जाती है ॥

पानी का यह स्वभाव है कि वह नीची तरफ़ को बहता है इसलिये उसे जिसतरफ़ नीची जगह मिलती है बहता चला जाता है आख़िर एक स्थान जहां नीचा होता है और जहां से बहने को पानी निकलने को रस्ता नहीं मिलता है वहां ठहर जाता है और वहां पर धूप की गर्मी से धीरे २ पानी सूख कर ऊपर चला जाता है यानी धुएं की शकल में होकर उड़ जाता है और चिकनी मिट्टी वहीं रह जाती है ऐसी जगह को तालाब या पोखरा कहते हैं

वहीं । पानी की इस कार्य्यवाही पर गौर करने से तो एक नई बात

मालूम हुई यानी पानी बेजान (निर्जीव) ने अपने ही गुण और स्वभाव से रेत और चिकनी मिट्टी को अलग २ कर दिया और अपने साथ चिकनी मिट्टी को घोल लिया - अपने आपही रस्ता ढूंढता हुआ बहिता चला गया और मार्ग को नीचा बना दिया और तालाब में आकर चिकनी मिट्टी जमा करदी और धूप एक बेजान वस्तु की खासियत से हवा होकर उड़गया इसी तरह बाज़ी वर्फ़ धूप की गर्मी से छत ऊपर की तरफ से फटजाती है और उसमें दरारें होजाती हैं - पानी जो बरसता है और चूंकि उसकी खासियत (स्वभाव) यह है कि ढाल की तरफ़ को जाता है इस वास्ते उन दरारों में भर आता है और फिर वहां से ढाल (नीची) की तरफ को बहिता हुआ और कुछ रुकता हुआ कड़ियों में (धन्नों) पहुंचता नीचे जा गिरता है और कड़ियों को गलाकर बोदी अर्थात् खराब कर देता है और नीचे गिरा देता है इसी तरह नदियों का पानी बीच की मिट्टी को तोड़ता और हटाता हुआ निकलता चला जाता है और उस मिट्टी को समुंदर तक पहुंचा देता है दूसरे अध्याय में सिद्ध होचुका है कि दुनियां की चीज़ों में ऐसी खासियत है कि वह एक खास तर्कीब में होने से या खास तौर पर हुगनी वस्तु दूसरी वस्तु में मिलने से एक नई वस्तु पैदा कर देती है अब हम को यह भी साबित (सिद्ध) होगया कि पानी में ऐसी खासियत है कि वह खास वस्तुओं को किसी खास विधि में करदे या कुछ चीज़ों को खास तौर पर मिलादे या अलग करदे जिससे बिलकुल नई हालत पैदा होजावे इसी तरह जब हवा पर दृष्टि डालते हैं तो उसकी भी वही कैफ़ियत पाते हैं हवा कभी किसी वस्तु को उठाकर कहीं डाल देती है और फिर उसी जड़ चीज़ दूसरी वस्तु से मिलाकर नई हालत पैदा करती है जैसा कि हवा ने किसी वृक्ष का बीज उड़कर नमी के स्थान पर डाल दे और वहां पर एक

वृक्ष निराला बिना बोये फल फूल पत्तों दार पैदा हो जावे या कहीं से आग की चिनगारी उड़ा कर लेजावे और किसी ग्राम में डालदे और वह ग्राम बजाय मकानों के खाक का एक ढेर होजावे - यानी सब को जलाकर खाक में मिलादे - यह हवा मकानों और वृक्षों को गिरादेती है बादलों को उड़ाकर कहीं का कहीं लेजाती है गरज़ कि हवा भी पानी की तरह चीज़ों को मिलाने छुटाने का काम करती है और उनकी हालतों के बदलने और नई वस्तुओं के पैदा करने का कारण होती है इसी प्रकार आग भी सहस्त्रों प्रकार के काम आती है धूपही को देखिये जिसका वर्णन प्रथम हो चुका है कि तालाब में जब गदला पानी जमा हो जाता है तो धूप उस गदले पानी में से साफ़ २ पानी को हवा बनाकर उड़ा ले जाकर ऊपर जमा (इकट्ठा) कर देती है और जब आकाश में वे परमाणु एक दूसरे से मिल कर भारी हो जाते हों तो पानी बरस पड़ता है और कभी २ उसके ज़र्रे (परमाणु) बहुत से इकट्ठे हो जाते हैं तो वह ओले कहिलाते हैं और चिकनी मिट्टी को तालाब में छोड़ देती है इसी तरह यह धूप समुन्दर और अन्य २ स्थानों के पानी को भाप बनाकर ऊपर उड़ादेती है - जिसके बादल बनते हैं और नगरों में बसकर अजीब २ वृक्ष पौधे - फल - फूल आदि उत्पन्न करते हैं धूप की गर्मी से हवा फैल जाती है और वेग (आंधी) चलने का कारण होती है इसी लिये आंधी और बरसात गर्मी में बहुत होती है धूप बहुत से वृक्षों को पालती है और बहुतों को सुखा डालती है - इसी तरह मिट्टी भी बहुत से काम आती है हवा जिस बीज को कहीं से उड़ाकर मिट्टी में डाल देती है तो मिट्टी अगर उसको पानी मिलता है तो खुद उस बीज की खुराक बनकर वृक्ष बन जाता है - और यदि पानी नहीं मिलता और बीज खराब

है या मिट्टी खारी आदि होजाती है तो उस बीज को भी मिट्टी बना कर मिट्टी में मिलादेती है किसी स्थान की मिट्टी अगर ऊंची होती है तो पानी के चलने से रोक देती है ऐसे अवसर पर पानी और टीले का युद्ध होता है - पानी उस टीले में बैल के सींग की तरह टक्कर मार कर आगे जाना चाहता है और टीला उसको जाने से रोकता है और जैसे बैल का सींग लगने से घाव होजाता है ऐसा ही पानी की टक्कर से यह टीला कटकर बहि जाता है यदि यह टीला मज़बूत होता है तो पानी को रोक देता है और अगर कोई मनुष्य जंगल में मुंह खोले पड़ा होता है और कोई ज़हरीली मिट्टी उड़कर उसके मुंह में गिर पड़े तो वह मिट्टी पेट के अंदर जाकर तमाम पेट के कारखाने में गड़बड़ मचादेती है और तब हालत बदलने के कारण होती है - कि आत्मा शरीर से जुदी होकर उड़ जाती है तब मृत्यु कहलाती है ग़रज कि पानी हवा मिट्टी आग चारों चीज़ों पर ग़ौर करने से यह भले प्रकार सिद्ध होता है कि दुनियां की चीज़ों को मिलाने बिछुड़ाने और एक नई चीज़ पैदा करने की ताक़त इन चारों चीज़ों में है और दूसरे अध्याय में सिद्ध हो चुका है कि चीज़ों में खास तरकीब होने से या ख़ास तौर पर मिलने से बिलकुल नई चीज़ें होजाया करती हैं इससे साफ़ तौर पर यह नतीजा निकल आया कि यही चारों चीज़ें दुनियां की सब चीज़ें आप से आप पैदा करदेती हैं । कोई ईश्वर बनाने को नहीं आता है और यह चारों चीज़ें अनादि हैं । साइन्सदां (पदार्थ विद्या के जानने वाले) अच्छी तरह से जानते हैं कि पानी का बरसना · आंधी का चलना बादलों का गरजना · बिजली का तड़पना · कौंदे का लपकना · सर्दी गर्मी का होना · हवा का चलना · वृक्षों का उत्पन्न होना · चीज़ों का बनना और बिगड़ना · सूरज चांद सितारों का आकाश में एक दूसरे की

कशिश (आकर्षण) से हिलना रहिना · ग्रहण का पड़ना · तारों का निकलना · सूरज का प्रकाश होना दिन और रात का होना अन्धकार और प्रकाश का होना आदि यह सब बातें आप से आप होती हैं इनको कोई ईश्वर या खुदा बनाने बिगाड़ ने नहीं आता या अपना दखल करने नहीं आता और जो साहब साइन्स को नहीं जानते वह यही कहिते हैं कि मेह ईश्वर बरसाता है · आँधी ईश्वर च लाता है गर्मी ईश्वर कर देता है सर्दी ईश्वर करदेता है आदि तरह २ के सकल्प बिकल्प पैदा करते हैं साइन्स को जानने वाले खुद मान लेते हैं कि इसमें परमेश्वर की कोई करतूत नहीं है साइन्स का हाल मैं अपने मासिक पत्र में खूब अच्छी तरह से करूं गा जो अब क़रीब ही (शीघ्र) प्रकाश करने वाला हूं और अन्य मतों की पुस्तकों की भी खूब उधेड़ें और परतालें और ग़लतियां उक्त मासिक पत्र में की जावें गी जिन साहिबों को इस पत्र का ग्राहक बनना स्वीकार हो वो कार्ड द्वारा मुझे सूचित करें उनकी सेवा में नमूना भेजा जावेगा ॥ लालता प्रसाद एल पी · जे · स्थान क़ायम गंज ज़िला फ़र्रुखाबाद

४ अध्याय

जानदारों के नाम ॥

यहतो बार बार सिद्ध होचुका है कि किसी वस्तु की खास तरकीब होने एक नई तासीर पैदा हुआ करती है आदमियों के काम क्या हैं बोलना हंसना · रोना · उठना · बैठना · चलना · फिरना · कूदना · भागना · आदि इनकी भी खास २ तरकीब है इस वास्ते कामों में भी नई २ तासीर पैदा होती है मसलन सुस्त पड़ा रहिने से आदमी कम ज़ोर होजाता है व्यायम (वरज़िश) करने ताक़त आती है इसीतरह सच्चे पुरुष पर सब भरोसा करने लगते हैं कपटी से दूर

भागते हैं सत्यवादी का एतबार (विश्वास) होता है झूंठे का इत
बार कोई नहीं करता इसी तरह हर प्रकार के काम अपनी २ खा
सियत (स्वभाव व गुण) के बमूजिब असर पैदा करते हैं - अच्छी
सुहबत (सत्संग) में रहिने से नेकी आती है बुरी संगति से बदी
आती है पढ़ने से बुद्धि चैतन्य होती है बैल बकरी चराने या
अकेला बैठे रहिने से बुद्धि जाती रहिती है अधिक अर्बी पढ़ने
की खासियत है कि लोग मौलवी कहैं संसकृत पढ़ने से लोग
पंडित जी कहिने लगें हजामत का काम सीख लेने की यह खा
सियत है कि अच्छे २ लोग सिर खोल कर आगे बैठें अगर कोई
अमीर (धनवान) ही क्योंव हो लेकिन नादिहंद (उधार लेकर
किसी के निबटा देना) हो तो उसका यह फल है कि उसकी बात का
कोई विश्वास नहीं करता उसको कोई एक पैसे की भी चीज़ उधार
नहीं देता - और ब्योहार के सच्चे को गरीब से गरीब को आधी रात क
र्ज़ मिल जाता है ग़रज़ कि हर एक काम में अथक २ अजीब २
प्रकार के फल उत्पन्न करने की शक्ति है अलावह इसके पहि
ले अध्याय में ब्यान (वर्णन) हो चुका है कि जानदारों (जिसमें
आत्मा हो) में सिवाय प्रकृति के आत्मा एक अलग चीज़ है चुना
चि हर काम जैसे शरीर के ऊपर की हालतों को तबदील बदल कर
ता है और हर हालत की तबदीली से एक नया असर पैदा हुआ
करता है इसवास्ते आत्मा की हालत में भी तबदीली होने से आ-
त्मा को उसका असर भी उठाना पड़ता है बाज़े आदमी पैदायश
ही से मक्कार (धूर्त) दगाबाज़ फरेबी - जाली - होते हैं और बाज़े
इसके विरुद्ध होते हैं इसका कारण है कि पूर्व जन्मों का असर
उनकी आत्मा पर पड़ता है - किसी वस्तु को खाओ उसका असर
अवश्य पड़ेगा अच्छी वस्तु खाओगे ते अच्छा असर होगा बुरा

खाओगे बुरा असर होगा - इसी तरह आत्मा के कर्म आत्मापर अ-
सर डालते हैं और भला बुरा नतीजा (फल) दिखाते हैं जैसा
कि पहिले हाजमा की चीज़ खाई उई के बाद कोई सक़ील वस्तु
(जोजल्द हज़्म न हो) खाओ तो कुछ नुक़सान नहीं करती इसी
तरह से पहिले के नेक कर्म आने वाले बुरे कर्मों के बुरे असर को
ढांक सके हैं और पहिले के बुरे कर्म आने वाले अच्छे कर्मों को
ढांक लेते हैं जैसे कि जिस औषधि में जो असर है खाने पर वही
असर शरीर के अन्दर उत्पन्न करती है अपनी खासियत के बिरु
द्ध नहीं करती इसी तरह आत्मा के कर्म भी अपनी २ खासियत के
मुआफ़िक़ असर पैदा करते हैं देखिये गेहूं से गेहूं पैदा होते हैं
चने नहीं हो सके बाज़ बीज में यह खासियत है कि जल्दी उगता
है बाज़ देर में इसी तरह किसी वृक्षमें छे महीने में फल आताहै
किसी में साल भर में किसी में पचास बर्ष में यही हालत कर्मों
की है कि कोई आत्मा पर शीघ्र असर करता है कोई देरमें इस
लिये एक जन्म के कर्म उस जन्म में भी असर पैदा कर सके हैं
और अगले दूसरे तीसरे चौथे आदि जन्मों तक असर देते रहते
हैं और फल दिखाते रहते हैं ईश्वर कुछ नहीं करने आता आपही
करना आपही भरना होता है ईश्वर का कुछ दखल नहीं

५ अध्याय

दुनियां की कार्य्यवाई

जब मुझे यह बात सिद्ध होगई कि दुनियां की चीज़ें अपनी २
खासियत के बमूजिब दुनियां का काम करती हैं और नई नई
हालतें पैदा करती हैं तब मुझे ख्याल उपजा कि तमाम दुनियां का
काम इसीतरह होता होगा इसवास्ते मैंने दुनियां के कामों पर भी

दृष्ट डाली –

यह बात सब जानते हैं गर्मी से पानी की भाफ बनकर ऊपर जाती है इसलिये धूप की गर्मी जो समुन्दर और नमी (गीली) की जगहों में पडती है उससे भाप उत्पन्न होती है और हलकी होने की वजह से ऊपर उड़ती है फिर चूंकि हवा हमेशा चलती रहिती है इस वास्ते हवा की वजह से भाप इधर उधर भी उड़जाती है और २ मुल्कों में पहुंच जाती है चुनान्चि बादल (पयोधर) होता है और किसी तरफ की तेज़ हवा चलती है तो जिस तरफ़ हवा उड़कर जाती है बादल भी उसही तरफ़ उड़जाया करते हैं इस भाफ से जब इधर उधर उड़ने से किसी क़दर गर्मी कम हो जाती है तो मुश्किल से बादल दिखाई देते हैं और फिर ज़ियादा ठंडी होकर पानी बन जाती हैं और भारी होने के कारण हवा पर ठहिर नहीं सक्ती तो पृथ्वी पर गिर पड़ती है जिसको मेह बोलते हैं जल थल ऊंचे नीचे पहाड़ आदि जहां जहां यह बादल पहुंच जाते हैं वहां वहां पानी बरस पड़ता है पहाड़ों पर बरसा हुआ पानी खोलों और गारों में घुस जाता है और बाकी बहिजाता है जिससे सैकड़ों छोटे २ ग्रामों के घर बहिजाते हैं और गारों में भरा हुआ पानी हर वक़्त निकलने की तदबीर करता है क्योंकि ढाल की तरफ़ बहिने की उसकी खासियत है इसी तरह पत्थर के जोड़ों को जिससे वह रुका हुआ हो ढीला करता रहिता है और निकलता रहिता है जिनको झरना कहते हैं इसी लिये दरिया हमेशा बहिते हैं जो कोई पहाड़ छोटा होता है या जिसकी खोल में पानी ज़ियादा नहीं भरता या निकल नहीं सक्ता है इस पहाड़ के दरिया किसी ऋतु में सूख भी जाते हैं और वर्षा ऋतु में फिर बहिने लग जाते हैं खोलों मेंसे जो पानी निकलता है वह अपने साथ वह पत्थर वगैरः पहाड़ की चीजें भी बहालाता है ज़मीन पर आकर

ढाल की तरफ़ बहिता है अगर राह में कोई रुकावट मिलती और थोड़ी होती है तो साथही में बहा लेजाता है या अलग कर देता है और अगर रुकावट मज़बूत होती है तो दूसरा रास्ता करलेता है इसी सबब से दरिया टेढ़े तिरछे बहिते हैं इसी तरह ढाल को ढूंढता हुआ घूमता घामता अगर राह ही में सूख न जावे तो समुन्दर तक पहुंच जाता है और उसमें आ मिलता है जो पानी वर्षा का ज़मीन पर पड़ता है वह कुछतो ज़मीन में घुस जाता है कहीं ज्यादा नीचे कहीं कम जैसी ज़मीन हो खूस पानी के कुएं बनते हैं और इसही वजह से कोई कुआं ज्यादा गहिरा और कोई कम गहिरा होता है बाक़ी पानी बहिजाता है यह बात हर कोई जानता है किपत्थर से पत्थर टक्कर खाने से आग निकलती है इसी तरह पदार्थ विज्ञान से यह बात सिद्ध होती है कि बादल से बादल टक्कर खाने से बिजली उत्पन्न होजाती है और ज़्यादा होने पर दरख़्तों वग़ैरः को फूंक देती है बिजली की यह खासियत है कि नोकदार चीज़ पर या काली चीज़ पर ज़ियादा पड़ती है अंगरेज़ों ने यह भी परीक्षा करली है कि जो कुछ खासियतें आसमान की बिजली में होती हैं वहही खासियतें उनकी बनाई हुई बिजली में होती हैं यानी एक है घास परजो ओस पड़ती है अगर कोई सुबह ही सुबह उस ओस को देखे जबकि हलकी किरन सूरज की उस पर पड़ती है उसमें सात रंग चमकते हुये दिखाई देते हैं इसी तरह सूरज की किरन बादल पर पड़ने से धनुष दिखाई पड़ता है इनसान जो कुछ इस्तेमाल (काम में लाता है) करता है और जो कुछ ज़मीन पर पड़ा होता है वह धीरे २ मिट्टी में मिलजाता है वर्षा का पानी कुल बह जाता है और बहुत कुछ मिट्टी भी बहा ले जाता है जिसमें सब क़िस्म की चीज़ें मिली हुई होती हैं

यह दरिया का पानी समुन्दर में जाता है इसवास्ते मिट्टी भी ब
ड़त कुछ समुन्दर में चलीजाती है इसके अतिरिक्त दरिया का
पानी ऊंचे किनारों की मिट्टी को उखाड़ कर अपने में मिलाता रहिता
है वह मिट्टी भी उसके साथ समुन्दर में चली जाती है और समुन्द
र का पानी भी हमेशा किनारे की ज़मीन से टक्कर खाता रहिता है
और किनारे की मिट्टी को उखाड़ कर अपने में मिलाता रहिता है
इसी तरह दुनियां की हर तरह की वस्तुयें समुन्दर में चलीजाती
हैं समुन्दर में उसकी लहिरों की वजहसे कहीं पर बड़त गहिराव
रहिता है और कहीं बड़त बड़ा टीला रहिजाता है उस टीले तक
अगर कोई लहिर नहीं आती है तो पृथ्वी से आई ऊई मिट्टी उस
में मिलती रहिती है और होते २ यह टीला इतना बड़ा हो जाता है
कि पानी के ऊपर तक आजाता है जिसको टापू कहिने लगजाते हैं
यह टापू यदि ज़ियादा बड़ा हो जाता है तो जज़ीरा कहिलाने लग
ता है चुनांचे टापू और जज़ीरे समुन्दर में निकलते रहिते हैं और ज
ज़ीरे में अगर पानी की टक्कर लगने लगती है तो फिर पानी ही में
मिलजाता है नहीं तो बढ़ते २ बड़त बड़ा मुल्क या दीप हो जाता है
फिर भी रेत का मजमुआ हो जाता है और यह मजमुआ यदि बड़त
ही बड़ा होजाता है तो पहाड़ कहिलाने लगता है समुन्दर में भी
इसी तरह पहाड़ बन जाते हैं जो टापू अब समुन्दर में पैदा होते हैं
उनमें अकसर पहाड़ भी होते हैं चूंकि यह जज़ीरा खुश्की से आये
ऊए मिट्टी से बनते हैं जिसमें सब क़िस्म की चीज़ें मिली ऊई होती
हैं इस वास्ते अब जो जज़ीरे निकलते हैं उनमें यह खासियत है
कि अगर उनको बड़त सा इकट्ठा बारीक पीस कर मिला दिया जावे
और पानी में घोल दिया जाय तो बाद सुखाने के किसी क़दर हर
एक चीज़ का अलग २ मजमुआ हो जावे गा इसी तरह समुन्दर

में क़ानें होजाते हैं मैने पहिले जिक्र किया था कि समुन्दर हमेशा खु
श्की से टक्कर खाता रहिता है और किनारे को तोड़ता रहिता है यानी
खुश्की की जगह समुन्दर होता रहिता है इसीतरह नये जज़ीरे जो
बनते हैं वह समुन्दर की जगह खुश्की होते हैं ऐसे अमल के जारी
रहिने से बहुत काल में समुन्दर की टक्कर की वजह से होते होते
कुल खुश्की पर समुन्दर होजावेगा और जज़ीरा बढ़ते २ बहुत बड़ी
खुश्की होजावे गी इन जज़ीरों में चूंकि कुल वह बातें पाई जाती हैं
जो इसवक्त खुश्की पर मिलती हैं इस वास्ते यह सिद्ध होता है
कि इस समय जो मुल्क और दीप हैं वह इसी तरह पर बने हैं
जैसे कि अब जज़ीरे बनते हैं और ऐसी उलटन पुलटन हमेशा
जारी रहिती है । रात और दिन का होना ऋतों का बदलना हर
कोई जानता है और जज़ीरा बात है कि सूरज या ज़मीन की गर्दि
श से पैदा होते हैं बाजे सूरज को फिरता हुआ ब्यान करते हैं बा
जे ज़मीन को चूंकि इस लेख में इस बिरुद्धता से कुछ हर्ज न
हीं है इस वास्ते इसकी हम बहिस नहीं करते हैं इस वक्त
हवा का चलना सूरज की गर्मी की वजह से होता है चूंकि सूरज
की गर्मी दुनियां के हर हिस्से (हर मात) में कम या बढ़ पड़ा
करती है इसवास्ते हवा भी बदलती रहिती है गर्मी से हवा फैलती
है और फैलने की वजह से हलकी होजाती है जिस जगह की ह
वा हलकी होकर ऊपर चली जाती है वहां पर दूसरे स्थान की ह
वा अपनी खासियत के मवाफ़िक दौड़ आती है इस हवा के आने
से रास्ते में बहुत सी चीजें हिल जाती हैं ऐसे ही आंधी और तेज़ ह
वा भी चला करती है बाज़े कहिते हैं बे मरज़ी पत्ता नहीं हिलता
हवा का चलना तो सूरज का काम है ईश्वर को क्यों बीच में घुसे
ड़ लेते हो पस सिद्ध है कि ईश्वर न हवा चलाता है न मेह बरसा

ता है न बिजली चमकाता है न कौंदा लपकाता है न बादल गरजाता है न आदमी पैदा करता है न जानवर बनाता न और कोई वस्तु बनाता है और न बिगाड़ता है बल्कि यह सब कारखाने अनादि से हैं एक की हालत बदली दूसरे से ग्रहण की ऐसे हैं ईश्वर की करतूत कुछभी नहीं है ॥

६ अध्याय

दुनियाँ की हालत में बिरुद्धता का कारण ॥

यह बात प्रथम ही प्रगट हो चुकी है कि हवा का चलना बर्षा का होना सर्दी गर्मी आदि का होना सूरज की वजह से होना है इसी तरह पर ज्योतिष को अच्छी प्रकार जानने वाले यह जान सके हैं कि प्रत्येक तारागण अपना असर दुनियां की चीज़ों पर डालता है किन्तु चाल प्रति तारे की एक दूसरे से बिरुद्ध है यानी प्रथक है यदि किसी तालाब में एक ढेला फेंका जावे तो कुल तालाब का पानी गोल २ हल्कों ( ) में हिलने लगता है लेकिन यदि कई ढेले एक के बाद एक डाला जावे तो प्रति ढेला अपना दाइरा ( ) उत्पन्न करेगा और वह सब हल्के ( ) एक दूसरे से टक्कर खाकर बिलकुल बे तरतीब होजावेंगे और तमाम पानी कहीं किसी तरह कहीं किसी तरह हिलने लगेगा इसीतरह सूर्य्य की गर्मी एक ही जगह नहीं पड़ती है बल्कि दुनियाँ के प्रत्येक प्रांत में पड़ती है इसवास्ते हवा की चाल भी बिलकुल बे तरतीब रहती है कभी किसी प्रकार कभी किसी प्रकार इसके अतिरिक्त कुल तारागण भी अपना २ असर हवा पर डालते हैं और उनकी चालें भी मुखतलिफ (किसी की चाल कुछ किसी की कुछ) होती हैं इस वजह से भी हवा की चाल

हर समय मुख़्तलिफ़ (विरुद्ध) होनी चाहिये और हवा बादलों को हरकत (हिलना) देती है इसवास्ते इनमें भी इख़्तलाफ (विरुद्धता) होता है ॥

कल्पना करो (फ़र्ज़ करो) कि एक स्थान पर चंद्रमा और तारा गणों के स्वभाव से एक प्रकार की ठंढी २ मंद २ पवन चल रही है या काली २ मतवाली लटों की सदृश घटायें छाई ऊई हों फुइयों फुइयों २ वर्षा होरही हो कदाचित किसी दूसरे तारागण की चाल इसी प्रकार आगई कि वह उस स्थान से इस बादल (पयोधर) और वायु आदि सब को हटादेवे और जब यह दूसरा सितारा हट जावे तो वहही हालत फिर होजावे गी यानी वर्षा और हवा फिर प्रारंभ होजावे गी ॥

ग़रज़ कि दुनियाँ के प्रत्येक प्रांत में मुख़्तलिफ (विरुद्ध) हालत (दशा) होना चाहिये चुनान्चे ऐसा ही द्रष्टव्य है - किसी स्थान पर आंधी है कहीं बिलकुल नहीं किसी जगह वर्षा होरही है कहीं ज़रा भी नहीं किसी समय कुछ किसी समय कुछ होता है और ऐसा ही देखने में भी आता है चंद्रमा सूर्य्य पृथ्वी और अन्य २ तारागण आदि की चालें यद्यापि मुख़्तलिफ (विरुद्ध) हैं परंतु वे क़ायदा नहीं हैं वल्कि हर एक किसी न किसी क़ायदे में घूमते हैं क्योंकि यदि इनकी गर्दिश (चक्कर) यानी घूमना कायदे में न होती तो पञ्चाग (पत्रे) पहिलेही से कदापि नहीं बन सक्ते फलाने समय पर सूर्य्य फलाने स्थान पर निकले गा फलाने पर अस्त होगा - फलाने समय पर फलाना ग्रह निकले गा अस्त होगा आदि ऐसे पञ्चाग सहस्त्रों वर्ष प्रथम ही लोग बना सक्ते हैं इसवास्ते चाल जब इन सितारों की क़ायदे में है तो हवा और बादल आदि की हालत यद्यपि मुख़्तलिफ (विरुद्ध) और बेतरतीब है परंतु एक खास क़ायदे का फल है सिवाय हवा और बादल के सितारे दुनियाँ की

और अन्य वस्तुओं पर भी अपना असर डालते हैं इसवास्ते उनकी हालत भी मुखतालिफ (विरुद्ध) रहिती है - इससे सिद्ध हुआ तमाम दुनियां की वस्तुओं में विरुद्धता है - इसका मतलब आगे चलकर निकलैगा -

७ अध्याय

सूर्य चंद्रमा पृथ्वी और कुल तारागण अनादि हैं

यह बात सिद्ध होचुकी है कि दुनियां की हर वस्तु में एक खास गुण मौजूद है इसके विरुद्ध कोई काम कदापि नहीं होसक्ता - पस यह नहीं कहा जा सक्ता है कि दुनियां में किसी समय स्त्री पुरुष मौजूद न हों क्योंकि यदि किसी समय स्त्री पुरुष मौजूद नहोतो भविष्यत काल में आदमी पैदा नहीं हो सक्ता है इसलिये यह बात अवश्य मेव मानले नी पड़ेगी कि स्त्री औ पुरुष सदा काल से हैं

और जब स्त्री पुरुष अनादि हैं तो उनके रहिने का स्थान भी हमेशा से होना चाहिये तो यह भी अवश्य मानना पड़ेगी कि स्थान (पृथ्वी) भी अनादी ही है इसी तरह पुरुष बगैर: हवा - पानी - खुराक (खान पान) आदि के जी नहीं सक्ता है इसलिये यह बात भी अवश्य मानले ने पड़ेगी कि हवा - पानी खाने की वस्तुयें भी अनादि है -

पुरुष जो सांस भीतर से निकालता है वह खराब होती है और दोबारा यह हवा सांस लेने के लायक नहीं रहिती है प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध है कि पुरुष की सांस की निकली हुई हवा खराब होती है इस लिये इसके साफ होने का द्वारा भी कोई होना चाहिये और यदि कोई द्वारा न होतो सब हवा खराब होजावे गी कितने ही काल में खराब क्यों न हो खराब अवश्य होजावेगी और आदमी फिर वह ही हवा

(खराब) अपने काम में लावेगा तो जीता नहीं रह सक्ता यानी सब मर जावेंगे इसवास्ते यह भी अवश्य मानना पड़ेगा कि सदा काल से ऐसा द्वार भी मौजूद है जिससे हवा साफ (वायुशुद्ध) होती है - सांइस से यह बात सिद्ध है कि पुरुष के सांस की निकली हुई खराब हवा वृक्ष (पेंड) अपने में मिला लेते हैं वृक्षों को यही खुराक है और साफ हवा वृक्ष बाहर उगल (निकाल) देते हैं जिसमें पुरुष सांस लेते हैं यानी वृक्ष हवा के साफ होने का एक द्वार है - इसलिये सिद्ध है कि पेंड अनादि से हैं -

इसके अतिरिक्त वृक्ष बीज से उत्पन्न होते हैं और बीज भी वृक्ष से उत्पन्न है इससे यह सिद्ध है कि वृक्ष अनादि से हैं और खाने पीने के काम में भी वृक्ष आते हैं और तरकारियां भी खाने के काममें आती है इसलिये सारी तरकारियां आलू· भिन्डी· कद्दू लौका· मूली आदि यह सर्व वस्तुऐं अनादि हैं

इससे यह सिद्ध है कि सूरज·चांद· सितारे· हवा· पानी· वृक्ष· पृथ्वी आदि यह सर्व वस्तुएं अनादि हैं

प्रथम अध्याय में भी सिद्ध होचुका है कि परमाणु अनादि हैं और अब भी सिद्ध है कि सर्व वस्तुऐं जोकि दुनियां पर मौजूद हैं अनादि हैं अब कहिये साहब ! यह ईश्वर की करामात है कि क्या है काहे के लिये ईश्वर को भानमती (तमाशा करने वाला) बनाते हो जबरदस्ती ईश्वर के गले रीछ बन्दर नचाने को बांधे देते हो औका यदा उसको कलंकित करते हो मुफ़्त का पाप सिर धरते हो पुरुष जो पानी पीता है वह कुछ पेशाब की राह कुछ पसीना बनकर बाहर निकल जाता है यानी खराब होजाता है यदि इस खराब पानी के साफ होने का द्वार न होता तो कुल पानी एक समय में खराब होजावेगा इसलिये पानी के साफ होने का भी द्वार अवश्य

होगा और होना चाहिये -
पानी को सूर्य की गर्मी भाप की शक्ल में ऊपर उड़ा लेजाती है और पानी में की मिली ऊई वस्तों को पृथ्वी ही पर छोड़ देती है और ऊपर जाकर इस भाप के बादल बनते हैं इसी लिये बादल (मेंह) का पानी साफ़ होता है इससे सिद्ध ऊआ कि पानी के साफ़ होने का द्वारा सूर्य्य है और इसके साफ़ करने का काम सूर्य ही करता है पस जब दुनियां हमेशा से है तो उसके लिये सूर्य्य भी हमेशा से है यह बात तो हर कोई मान लेगा कि सूर्य्य ज़मीन मेंसे एक चीज़ अवश्य घूमती है और वह किसी वस्तु पर टिकी (ठहिरी) हुई नहीं है बल्कि आकाश के बीच में लटकी ऊई हैं अब लोगों को यह भ्रम होगा कि बीच में कैसे हिलगे (लटके) ऊए हैं वह भ्रम भी आप का बऊत जल्दी रफ़ा ऊआ जाता है -
सांइसदां (पदार्थ विज्ञानी) इस बात को भले प्रकार जानते हैं कि सूर्य्य ज़मीन · सितारे आदि सब में आकर्षण शक्ति (खींचने के ताकत) मौजूद है पस हर एक एक दूसरे को अपनी शक्ति से खींचे ऊए है और गिरने नहीं देता - और हमेशा चक्कर लगारहिता है और सूर्य ज़मीन के ठहिरने के लिये दूसरे सितारों की भी आवश्यकता है इसलिये जबकि दुनियां अनादि है तो तमाम सूर्य · चांद · और सितारे भी उस के क़ायम रखने के लिये हमेशा से हैं यानी सब कुछ अनादि है -
आकर्षण शक्ति का हाल जिन्हों ने इतहास (हिन्द) पढ़ा होगा वह जान गये होंगे कि सोमनाथ के मंदिर पर जोकि गुजरात में है महमूद ग़ज़नवी ने सतरह चढ़ाइयां की थीं और उस मंदिर की मूर्ति जोकि चकमक पत्थर से बीच में लटकी ऊई थी किसी पर ठहिरी नहीं थी और न किसी में बंधी ऊई थी उसको देख महमूद बऊत आश्चर्य्य अन्वित ऊआ फिर उसको इसका भेद वहीं के पन्डों ने बतादिया कि चारों तरफ़ इस के चुम्बक पत्थर लगा ऊआ है उसी की कशिश से यह महा

देव नीचे नहीं गिरता है तब उसने पत्थर एक तरफ़ का उखाड़ा तब वह मूरत दूसरी तरफ़ जाकर चिपट गई और वह उसको लेगया और उसको तोड़ा तो उसमें बहुत कुछ जवाहरात आदि निकला आकर्षण शक्ति में ऐसी ताक़त होती है — इसका हाल अच्छी तरह जानना होतो हमारे समाचार पत्र के ग्राहक बनो जोकि दोसौ ग्राहक होजाने पर जारी किया जावे गा - एक २ कार्ड भेजकर अपना २ नाम ग्राहक मन्डली (ग्राहकों की लिस्ट) में लिखा दो जारी होने पर नमूना मुफ़्त भेजूंगा पसंदी पर ग्राहक समझे जायेंगे देरी न करो

दूसरापरिच्छेद

ईश्वर का कर्त्ता आदि होना ना मुमकिन है जब यह बात सिद्ध होगई कि दुनियां अनादि है और इसकी कार्यवाई (कारवाई) चीज़ों की ख़ासियत यानी गुणों से ख़ुद बख़ुद ही हो रही है तो यह ख्याल ऊआकि दुनियां का कोई पैदा करने वाला ईश्वर नहीं है किंतु और लोगों का ख्याल इसके विरुद्ध है। इस लिये अवश्य है कि उनके कहिने और ख्यालों और विचारों पर भी ग़ौर किया जावे — ईश्वर को मानने वाले कई प्रकार से बयान करते हैं कि ईश्वर ने दुनियां को इसतरह पर बनाया मुसल्मान और ईसाई यह कहिते हैं कि परमाणु अनादि से नहीं है वाल्कि किसी समय पर ईश्वर ने उस को पैदाकिया है परंतु उनपर निम्न लिखित यह एतराज़ (शंकायें) पैदा होते हैं —

(१) प्रथम अध्याय में यह सिद्ध हो चुका है कि परमाणु न मिटते हैं और न नये पैदा होते हैं एक बस्तु बिगड़ कर दूसरी बस्तु का बनना यह एक हालत का बदलना है नई बस्तु कुछ नहीं पैदा होती है —

लोगों ने ग़लती से समझ लिया है कि इसको खुदाने बना दिया है नहीं २ वह बस्तु तो पहिले भी दूसरी सूरत में मौजूद थी
(२) एक धोखा लोगों ने बड़ा भारी खाया है कि कहते हैं कि ईश्वर सर्व शक्तिमान् है पहिले ईश्वर की सर्व शक्ति मानी भीतो सिद्ध कर लो तब यह कहिना कि उसने अपनी शक्ति से दुनियां को बनाया और तब सर्व शक्ति मानी की सुबूती काम में लाना
(३) प्रथम तो सिद्ध हो चुका है कि दुनियां के बंदोबस्त में किसी ईश्वर की आवश्यकता नहीं है अगर मान लिया जावे कि दुनियाँ के काम को ईश्वर ही चलाता है तो यह कहिना चाहिये कि दुनियां के कामों की शक्ति उसमें है नकि यहकि सर्व शक्ति मान है
(४) सर्व शक्ति मान होना उसका ठीक भी नहीं क्योंकि यदि मान लेंकि वह सर्व शक्ति मान है तो क्या वह अपने बराबर शक्ति वाला ईश्वर या अपने सेभी बड़ा ईश्वर बना सक्ता है या अपने आप को मिटा सक्ता है इस का उत्तर यही होगा कि वह ना मुमकिन बात है फिर सर्व शक्तिमान कहां रहा यदि सर्व शक्तिमान के यह अर्थ हैं कि मुमकिन काम करे और नामुमकिन काम करे तो सर्व शक्तिमान की दलील में क्यों पेश किया जाता है यदि कोई कहि बैठे कि वह अपने से बड़ा ईश्वर भी बना सक्ता है तो इसका उत्तर यह है कि ईश्वर का गुण मानते हो कि एक ईश्वर है। तो अब कई ईश्वर हुए जाते हैं इसलिये सर्व शक्तिमान ईश्वर नहीं है
(५) लोग कहिते हैं कि बगैर बनाये हुए कोई चीज़ कहां से आई यानी परमाणू को भी ईश्वर ने बनाया है परमाणू अनादि नहीं हैं तो इसका यह उत्तर है कि बगैर बनाये ईश्वर को क्यों अन मानते हो बगैर बनाये हुए ईश्वर कहां से आगया। इससे सिद्ध हुआ कि परमाणू अनादि हैं।

(६) यदि मान लिया जावे कि ईश्वर में परमाणु पैदा करने की शक्ति है तो इसके पेश्तर (पहिल) किसने रोक रक्खा था यानी हमेशा से परमाणु क्यों नहीं पदा करता था और अबभी क्यों नहीं पैदा करता

(७) परमाणु पैदा करने के पहिले ईश्वर का रोकने वाला कोई न था तो अबतक उसने क्यों नहीं पैदा किया क्यों रुका रहा हमेशा से क्यों नहीं पैदा किया कोई भी उसका रोकने वाला नहीं था

(८) स्थान और समय भी अनादि हैं क्योंकि कहा जाता है कि एक वक्त वह था कि सिवा ईश्वर के सब जगह और कोई न था पस सिद्ध है कि वक्त और जगह अनादि है और यह कहिना ठीक नहीं कि सिवाइ ईश्वर के और कुछ नथा वक्त यानी समय और जगह यानी स्थान अनादि से उसके साथ हैं अगर कोई कहे कि इतनी बहुत जगह नहीं थी लेकिन यह तो अवश्य कहेंगे कि थोड़ी तो होगी जिसपर ईश्वर था ख्वाह वह आकाश की क्योंन हो लेकिन जगह थी अवश्य - और अनादि से -

ईश्वर दुनियाँ नहीं पैदा करसक्ता है

(९) सातवें अध्याय में सिद्ध होचुका है कि बिना स्त्री पुरुष के आदमी पैदा नहीं हो सक्ते - न कभी सुनने में आया - इसलिये आदमी अनादि से हैं

और यदि कोई इसके बिरुद्ध कहे कि बिना मा बाप के पैदा हो सक्ता है तो इस बात को वह ही सिद्ध कर के बतलाये क्योंकि असम्भव बात को कहिने वाला जो होता है तो सिद्ध करने के सुबूत का भार उसी के जिम्मे होना चाहिये — इस समय यदि कोई पुरुष यह आकर कहे कि फलानी जगह ईश्वर की शक्ति से बगैर: मां बाप के पुत्र पैदा हुआ है तो कोई भी इस बात को न मानेगा और तिसपर सब लोग मानते हैं कि ईश्वर सर्व शक्ति मान है जब भी कोई

विश्वास नहीं करेगा - किसी समय में भी बगैर मात पिता के आदमी का पैदा होना सिद्ध हो नहीं हो सक्ता वो दुनियाँ के अनादि होने के बिरुद्ध कौन दलील कर सक्ता है और जब अनादि है तो अकीतम (किसी की बनाई हुई नहीं) भी अवश्य है - कियों कि जब बनाई जावेगी तो उसकी आदि (शुरू) हो सक्ती है और जब अनादि है तो इसका कोई बनाने वाला नहीं हो सक्ता इस लिये इसका कर्ता कोई भी नहीं है -

(१०) जबकि आदमी अनादि है तो उसके रहिने का स्थान यानी पृथ्वी भी अनादि है और पृथ्वी पर की सब वस्तुऐं भी अनादि हैं यानी सब कुछ अनादि है -

(११) ईश्वर को दुनियाँ पैदा करने की ज़रूरत क्या हुई इसके पैदा करने से इसका कुछ नफ़ा नहीं हो सक्ता और बगैर नफे के या बगैर अपनी गरज़ (प्रयोजन) के कोई काम किया नहीं जाता है जब ईश्वर को इसके पैदा करने की कुछ आवश्यकता नहीं कोई प्रयोजन नहीं तो यही कहा जावे गा कि ईश्वर ने नहीं बनाया -

(१२) खुशामद पंसदी का दोष तो उसमें होही नहीं सक्ता है कि ऐसे आदमी पैदा करूं जो मेरी प्रशंसा और तारीफ़ और खुशामद करते रहैं - और मैं खुश होउं यदि यह ऐब लगा भी दिया जावे और यही ग़रज़ उसकी दुनियाँ पैदा करने की मानें तो साथ ही इसके यह मानना पडेगा कि दुनियाँ पैदा करने से पहिले वह खुश नहीं था - उस समय खुशामद कौन करता - इसके अतरिक्त दुनियां में उसके न मानने वाले भी हैं और बहुत से उसको बुराई भी देने लगते हैं जैसे अब मैं ही ऐब निकाल रहा हूं तो मुझ को क्यों पैदा किया ऐसे ही आदमी पैदा करता जो हमेशा उसकी प्रशंसा गाया करते -

(१३) बाज़े आदमियों में गाली खाने की आदत होती है और किसी

को छोड़ कर गाली सुनकर प्रसन्न होते हैं यदि यह बेहूदा (बुरी) आदत उसमें है कि उसने ऐसे आदमी बनाये कि उसकी बुराई करें तो ईश्वर दिल्लगी बाज़ हुआ लेकिन सब मतों की पुस्तकों में लिखा हुआ है कि परमेश्वर की बुराई न करो और उसकी बुराई करने में पाप है तो या तो सब मतों की पुस्तकें और सब मत झूठे हैं - या उसमें गाली खाने की आदत है - दोमें से एक बात अवश्य है - और वह तो सर्व ज्ञानी है वह तो जानता था यह आदमी हमारी बुराई करेंगे फिर उसने ऐसे आदमी क्यों बनाये जो उसकी बुराई करें - या तो वह सर्व ज्ञानी नहीं तब ऐसे आदमी बनाये या उसने बनाये नहीं दोमें से एक बात अवश्य है पस यह सिद्ध है कि उसने नहीं बनाये -

१४ - दुनियाँ में पाप बहुत होते हैं तो पाप भी उसी ने बनाये लेकिन सब मतों में पाप करने की मनाई है तो या तो वह मत झूठे हैं या ईश्वर ने आधी चीज़ बनाई आधी नहीं बनाई बुरी नहीं बनाई मगर वह आधी चीज़ नहीं बनाता है फिर यह क्यों लिखा है कि ईश्वर पाप के विरुद्ध है या सब मत झूठे या ईश्वर ने कुछ बनाया नहीं दोमें से एक बात अवश्य मानना पड़ेगी -

१५ - किसी कीर्तम वस्तु (बनी हुई वस्तु) के देखने से उसके कर्ता (बनाने वाला) की बुद्धी और ग़रज़ मालूम हो जाती है - पस जब पाप अधिकता से हों तो यह फल निकलता है कि बनाने वाले की यह ग़रज़ है कि पाप बहुत हुआ करें तो या तो वह (ईश्वर) पाप कराता है या उसने दुनियां नहीं बनाई -

१६ - अगर यह कहा जावे कि दुनियां के बनाते समय उसकी यह ग़रज़ नहीं थी कि पाप हों - दुनियां पैदा होने के बाद यानी पीछे पाप होने लगे - तो इससे यह फल निकलता है कि उस समय वह अज्ञानी था लेकिन सर्व मतों की धर्म पुस्तकों में लिखा हुआ है

कि वह सर्व ज्ञानी है (सब कुछ जानने वाला) तो यातो सब मत झू ठे हैं या वह अज्ञानी है दोमे से एक बात है -

१७ - यह बात सब जानते हैं कि जिस को काम अधिक करना पड़ ता है वह दुखी है और जिसको कम करना पड़ता है वह कम दु खी है - और यह बात सब जानते हैं कि एक घर के काम से दो घर का काम अधिक होता है और दो घर के से चार घर का और से आ ठ का और आठ से सब दुनियाँ का काम बहुत ही अधिक हुआ तो दुनियाँ के ऐसे बड़े झगड़े को उसने अपने जिम्मे करके अपने आनंद में उसने क्यों खलल डाला -

और सर्व मतों की पुस्तकों मेतो वह मना करता है कि दुनियाँ के झगड़े से अलग हो ओ और आप उसी में फँसा रहे और हमसे क हे कि इससे अलग हटो इस दुनियाँ को छोड़ो यह तो वही मिसाल हुई " ख़ुदरा फज़ीहत दीगरां नसीहत "

१८ - यदि तुम्हारा ही कहा मान लें कि दुनियां के पैदा करने से ईश्वर को नफ़ा हुआ है तो बड़े आश्चर्य की बात है कि उसने दुनियाँ को एक समय पर (यानी एक ख़ास वक़्त में) क्यों पैदा किया हमेशा से उससे क्यों फ़ायदा न उठाया तो मानना पड़ता है कि इससे पहिले वह अज्ञानी था या बनाने की शक्ति नहीं थी दोमें से एक बात अवश्य होगी -

१९ - किसी को अधिक दुख है किसी को कम कोई बद सूरत है कोई ख़ूब सूरत है - कोई माल दार है कोई ग़रीब है - कोई काना है कोई अंधा है - आदि सब को एक सा रंग रूप सुख दुख क्यों नहीं दिया कम वढ़ क्यों दिया क्या वह एक पर अ धिक प्यार है दूसरे पर नहीं ऐसा क्यों यह उसका अन्याय यानी बे इन्साफ़ी है यानी अन्यायी का दोष उसमें आता है -

२० - इस समय सैकड़ों मनुष्य और जानवर पशु पक्षी भोजन के लिये मारे जाते हैं - और बे कसूर सताये जाते हैं - और उन पर मुफ़ का जुल्म होता है और सरासर अन्याय होता है उनपर तो वह हत्यारा भी है ज़ालिम भी है अन्यायी भी है और बे कसूरों को सता भी है और जुल्म करने ही के लिये दुनियां को पैदा करता है फिर मज़हबी किताबों में क्यों मना करता है कि अन्याय मत करो बे कसूरों को न सताओ ऐसा मत करो वैसा मत करो - अब कौन सच्चा है ईश्वर या ईश्वर की बनाई हुई पुस्तकें किसका यक़ीन करें इन बातों से साफ़ मालूम होता है कि ईश्वर ने दुनियां नहीं बनाई - इन्साफ़ की ऐनक लगाकर देखना चाहिये पक्षपात और हट ग्राहिता को छोड़ कर देखो जैसा करना वैसा भरना आग को हाथ में लोगे तो जल जाये गा - पानी को लोगे तो नहीं जले गा तो क्या ईश्वर हाथ को जला देता है ? नहीं आग में ऐसा गुण है और उसका स्वभाव है जलाने का - आप से आप जल जाता है ईश्वर नहीं जलाने आता है -

२१. बाज़ आदमी ऐसा कहते हैं - कि प्रकृति और ईश्वर दोनों ही अनादि हैं - परंतु प्रकृति की खास हालत उत्पन्न करना ईश्वर का काम है - ऐसे अवसर पर सोचने की बात है कि कोई वस्तु किसी ही हालत में क्यों न हो कोई न कोई गुण अवश्य उसमें होगा कोई गुणी बग़ैर गुण के होता ही नहीं है - यानी जब प्रकृति अनादि से है तो उसके गुण भी अनादि से हैं यानी गुणों को भी किसी ने पैदा नहीं किया अलावह इसके दुनियां के पैदा होने के पहिले प्रकृति अवश्य किसी न किसी हालत में होगी - अब दुनियां जिस चीज़ का नाम है वह क्या है - प्रकृति की खास हालत को दुनियां कहते हैं - पस अब प्रकृति की एक खास हालत का नाम दुनिया है -

तो पहिले की हालत को भी दुनियां क्यों न कहें - यानी दुनियां को अनादि से क्यों न कहें -

(२२) बाज़े कहिते हैं कि परमेश्वर और प्रकृति दोनों अनादि हैं और परमेश्वर दुनियां को बनाता है और तोड़ता रहिता है ऐसा ही हमेशा करता रहिता है - और हमेशा करता रहेगा - परंतु ऐसे अवसर पर बड़ा आश्चर्य्य होता है कि अगर इस दुनियां से परमेश्वर को कुछ लाभ है - तो हमेशा तब उसको रक्खे और यदि हानि है तो मिटा कर क्यों उत्पन्न करता है या पहिली दफ़े हानि मालूम नहीं हुई थी तो बाद को मालूम होने पर तोड़ कर क्यों बनाता है - अनादि से यही सिल सिला रहिने की वजह से यह मालूम होता है कि पैदा करना और तोड़ना अपनी खुशी से नहीं करता है यदि अपनी खुशी से करता होता तो कभी नभी बनाता और कभी नभी तोड़ता - बल्कि यह मालूम होता है कि किसी क़ायदे के माफ़िक जिस क़ायदे को उसने नहीं बनाया है मजबूरन उसको ऐसा करना पड़ता है - क्योंकि हमेशा यानी अनादि का क़ायदा परमेश्वर का बनाया हुआ नहीं हो सक्ता -

(२३) हक़ीक़त में यह बात मालूम होती है कि दुनियां का कुल काम चीज़ों की खासियत (गुणों) से होता है और कुल चीज़ों के गुणों के संयोग (समूह) को कुदरत यानी शक्ति कहिते हैं यानी क़ायदे कुदरत से सब काम होते हैं - इस क़ायदे कुदरत ही का नाम बाज़े बुद्धि मानों ने ईश्वर रख दिया है - अब लोग उसको एक अलग ही चीज़ मानने लगे हैं -

दुनियां के काम में ईश्वर का कुछ दख़ल नहीं

(२४) यदि यह कहा जावे कि दुनियां का कुल काम ईश्वर करता है - तो चोरी - डाका - हराम - रन्डी बाज़ी आदि कुल पाप

के काम ईश्वर ही करता है - यद्यपि यह काम वह खुद नहीं करता - तथापि ऐसे काम करने की शक्ति वह ही देता है - और ऐसे काम करते ऊओं को बन्द नहीं करता -

(२५) लाखों स्त्रियां वेश्या के यहां उत्पन्न होती हैं और वहीं पर बारिश (पलती) होती हैं और व्यभचार कराने की शिक्षा उनको दी जाती है - और लाखों आदमी आदमियों को खाजाते हैं तो यह सब कुछ ईश्वर ही तो कराता है - कि फलानी स्त्रियां रन्डी के यहां जाकर हराम कराना सीखें फलानी कौमें आदमी तक को खा जावें यह सब कुछ ईश्वर ही की करामात है -

(२६) इसके अतिरिक्त दुनियां के काम में बिलकुल बे तरतीबी है जिसको कुछ संक्षेप से नीचे लिखते हैं अगर यह कार खाई ईश्वर करता होता तो यह बेतरतीवी दुनियां के कामों में हरगिज़ न होती -

(अ) वर्षा जब होती है तो ऐसे स्थान पर होती है जहां पानी की बिलकुल ज़रूरत नहीं होती है - जैसे तालाब - नदी - समुन्दर - वगैर. में जहां कि पानी की बिलकुल ज़रूरत नहीं -

(ब) घास सड़क - दीवारों - छतों - आदि में पैदा होती है जहां घास सिवाय पैरों के नीचे मे रूदीं जाने के और किसी काम की नहीं

(ज) ऐसे पहाड़ों पर जहां आदमी का गुजर नहीं और न कभी कोई आदमी वहां पहुंचता है - वहां ऐसे २ उम्दा रंग बिरंगे. नीले - पीले - फूल पैदा होते हैं जो सिवाय सूखकर मिट्टी में मिलने के और कुछ हाथ नहीं आता - और न कुछ फायदा पहुचता है -

(द) बहुत से खुदरौ (जो आप से आप उगे) वृक्ष और घास और बूटियां अगर पुरुष के मुफीद यानी लाभ दायक जंगल और बाग़ में पैदा भी होते हैं तो बहुत ही कम भाग उनका आदमी के काम

में आता है और अधिक भाग खराब जाता है यदि इसका पैदा करने वाला कोई तमीज़ दार होता तो जंगलों में उसी क़दर पैदा करता जितना काम में आता - और उसी समय पैदा करता जिस समय उसकी आवश्यकता होवे -

(स) कोठों पर घास पैदा करने की कोई वजह मालूम नहीं होती अगर कोई वजह भी है तो जिन छतों पर चूने का पलास्टर होता है उनपर क्यों नहीं उगाता

(ल) जो पुरुष बाल मुड़वाते हैं फिर उनके बाल उगाने की क्या वजह है - अगर पहिले कोई वजह भी होतो जबकि उसने मुड़वा डाले तो क्यों पैदा करता - जबकि हम जान लें कि अमुक पुरुष हमारा भोजन नहीं खायगा तो हम उसके सामने भोजन परोसें तो हम बिलकुल बेवकूफ हैं -

(म) अगर दुनियाँ का वन्दोवस्त वही करता है तो चोर क्यों बनाये और उसके रोकने को पहिरा दार क्यों बनाये - अगर चोरी कराना उसे पसंद होता तो अकेले चोर ही पैदा करता - या चोरी नपसंद है तो पहिरे ही पर पैदा करता - हाकिम क्यों क़ायम किये और फिर भी इन्तजाम नहीं होता - अगर चोरी को बुरा समझता है तो चोर क्यों पैदा किये - अगर चोरी अच्छी है तो पुलिस और हाकिम की कोई ज़रूरत नहीं - इनबातों से उसकी यह हालत मालूम होती है कि चोर से कहे चोरी कर और साहु से कहे जाग

(२७) क्या दुनियाँ की कुल कार रवाई ईश्वर ही करता है तो पाखाना - पेशाब आदि सब वह ही उठाता है और धरता है जिस के कहिने में भी लज्जा आती है

(२८) इसी तरह दुनियाँ का कुल काम वह ही करता है तो मैं जो उसका खंडन कर रहाहूं तो वह भी परमेश्वर ही करता है यानी

अपना न होना वह आप ही सिद्ध करता है - यानी लोगों को धोखा देना चाहता है

११ अध्याय

यदि ईश्वर को दुनियां का इन्तिज़ाम करने वाला मानें तो आदमियों के कर्म कुछ नहीं हो सकें -

(१) वाज़े आदमी ऐसा कहिते हैं दुनियां का कुल काम ईश्वर करता है - मगर आदमी अपने कर्म करने में स्वाधीन है और उसका फल भोगने में ईश्वर आधीन है - यानी फल ईश्वर देता है मगर जब इसपर ग़ौर किया जाता है तो यह नामालूम होता है कि अगर ईश्वर को दुनियां का इन्तिज़ाम करने वाला माने तो आदमियों के कर्म कुछ भी हैं (वहतो ईश्वर ही कराता है) उसी के कर्म हैं)

(२) देखिये अगर खुदा दुनियां काम करता है तो कहीं का पानी कहीं ले जाता है किसी चीज़ को तोड़ना किसी को फोड़ना - कहीं गढ़ा बनाता कहीं टीला बनाता - ऐसे ही कुल काम आदमी भी करता है तो यह कहिना चाहिये कि आदमी भी एक छोटा ईश्वर है

(३) आदमी भी सर्व ज्ञानी तो है ही नहीं जो ईश्वर के इरादों का जानलें

कल्पना (फर्ज़) किया कि कोई घास खुदाने जंगल में किसी काम के लिये पैदा की है और आदमी उसको जाकर खोद लाया और अपने घोड़े को खिलाई - या ईश्वर ने जंगल में मिट्टी का टीला किसी काम के वास्ते बनाया और आदमी ने उसको खोद कर अपने यहां लाकर काम में लाया और घर बनाया -

तो खुदा का सरा करा कराया अकार्थ हुआ इससे यह सिद्ध होता है कि अगर मनुष्य के कर्म ईश्वर के कर्म नहीं हैं - तो आदमी खुदा का हर काम में मुकाबला करता है - और ईश्वर के किये हुए को बिलकुल खराब करता है*

(४) मां के पेट में जो बच्चा आता है उसकी सूरत - दिल - दिमाग - अकलमन्द - बेवकूफ - ईश्वर बनाता है - पस जब ईश्वर ने उसको इन्द्रियां और शक्ति दी तो उस शक्ति से वह जो कुछ कर्म करेगा तो वह कर्म आदमी के हुए या ईश्वर के -

(५) आदमी जो कुछ स्वाधीनता से खाता है तो उसके पेट में जाकर रस - रक्त - मास - हड्डी - मज्जा - वीर्य्य आदि कौन बनाता है अगर भोजन और पेट ही में यह गुण है कि वह आप ही ऐसा बना लेता है तो बात ही खतम हुई - इसी को तो हम सिद्ध करते हैं लेकिन ईश्वर को मानने वाले अवश्य यह कहेंगे कि पेट में घुस कर ईश्वर बना जाता है - पस जब वह शरीर के अन्दर काम की इसकदर चीजें पैदा करदे कि आदमी स्त्री को देख वे काबू हो जावे और व्यभचार करे तो यह कर्म आदमी ने किया या काम की उन चीज़ों ने करवाया जिनको ईश्वर ने इकट्ठा कर रक्खे हैं - इसी तरह पर बुरे कर्म आदमी के किये हुए आदमी को स्वाधीनता से हुए या ईश्वर ने कराये - अवश्य ईश्वर ने कराये -

१२ अध्याय

कर्मों का फल ईश्वर नहीं देसक्ता यदि किसी प्रकार से यह मान भी लिया जबकि आदमी के कर्म ईश्वर के कर्म से प्रथक हैं -

नों आदमी के कर्मों का फल ईश्वर नहीं देसक्ता -
(३४) सजा इस ग़रज़ से दी जाती है कि फिर ऐसा काम यह न करे - और जो काम ना पसंद होगा उसी की सज़ा भी दी जाती है मगर खुदा नौ पसंद काम होनेही क्यों देता है - बादशाह भी अपने कानून के विरुद्ध काम नहीं होने देता है लेकिन बादशाह सर्व शक्तिमान नहीं है इससे लोग बिरुद्ध काम करते हैं तो क्या खुदा भी सर्व शक्तिमान नहीं है - और इतनी ताक़त भी नहीं रखता कि बिरुद्ध काम करने वालों को रोक सके हजारों लोग बार २ बुरे काम करते हैं तो मालूम होता है कि खुदा कुछ इन्तिज़ाम नहीं कर सक्ता -
(३५) सजा जबही कुछ असर किया करती है जबकि सज़ा पाने वाले को बता दिया जावे कि तुझ को फलाने जुर्म की सज़ा यह दी जाती है ताकि वह भय खावे कि अगर फिर ऐसा काम करेगा तो यही सज़ा फिर होगी - परंतु यहां आदमी प्रति दिन सैकड़ों मुसीबत और कष्ट उठाते हैं और कोई नहीं जानता कि यह कष्ट फलाने कर्म की वजह से ईश्वर ने दिया -
(३६) कर्मों का फल क्या है ? किसी का शरीर बलवान किसी का निर्बल - कोई खूबसूरत कोई बदसूरत - किसी का मग़ज़ तेज़ किसी का गुद्दल - किसी का खून साफ़ किसी का गन्दा किसी को औलाद देना किसी को न देना - किसी को दौलत अधिक देना किसी को कम देना यानी कर्मों के मूजिब हमारे शरीर को बना दिया - यह एक ऐसी बात है जैसे हम मकान बनाने का सूत बूत नहीं जानते और राजगीरी से बिलकुल वाकिफ़ कार नहीं - अब हम किसी राज को बुलावें और उसको मकान बनाने का कुल मसाला ईंट गारा मिट्टी आदि देकर कहैं कि

इसका मकान बना दो और वह मकान बनादेवे राजतो हमसे
तनख्वाह लेगा और हमारा नौकर ठहरा लेकिन खुदा को बना
ने से क्या फायदा- यानी हमारी नौकरी करने से ईश्वर को क्या
लाभ है ईश्वर हर समय सब पुरुषों की ताबेदारी में लगा रहि
ता है कि जैसा वे कर्म उपार्जन करें उसी के मुताबिक उसका
फल देदें- राज तो स्वाधीन है कि जब चाहे तब हमारी नौकरी
करे जब चाहे छोड़ दे लेकिन ईश्वर हमारे काम को नहीं
छोड़ सक्ता क्योंकि कर्म तो हमारे इख्तियारी है और उनका
फल ईश्वर को अवश्य देना पड़ेगा- यानी ईश्वर हमारे
आधीन है- और वे कौड़ी पैसे का गुलाम है- कैसा बुरा दू
षण उसको लगता है इसलिये ईश्वर दुनियां का बनाने वा
ला नहीं है-

(३७) खुदा को कर्मों का फल देने वाला मानने में दया आदि
सब मिटती है क्योंकि जब हम किसी दीन पुरुष को देखें और
उसपर हम दया कर के उसकी आवश्यकता को मिटावें तो गो
या ईश्वर की कार्य्यवाई को बुरा मान कर उसके बिरुद्ध कर
ना है और कभी उसकी ज़रूरत जाती भी रहिती है यानी हमा
री कोशिश से वह अच्छा होगया तो गोया ईश्वर से भी ब
ढ़कर काम हमने किया और हम ईश्वर से भी बढ़ गये

(३८) कर्मों का फल देने वाला ईश्वर को मानने से वैद्यक
यानी हकीमी भी रद्द होती है क्योंकि जब कोई पुरुष बी
मार होता है तो यह कहा जाता है कि ईश्वर ने इसको ए-
साही फलदिया है इसकी दवा करना व्यर्थ है- लेकिन
सैकड़ों पुरुष हम रोज़ देखते हैं दवा करने से भले चंगे हो
जाते हैं तो गोया खुदा हमको बुरा फल देकर बीमार बनाता

है और हम उसको अच्छा करलेते हैं तो खुदा के काम में हमने दख़ल दिया और उसके बिरुद्ध किया - अगर कोई कहे कि दवाई से कुछ नहीं होता जो कुछ करता है सो ईश्वर ही करता है - तो उन से कहो कि डाक्टर और हकीम और वैद्य सब बेफ़ायदा हैं और तुमने अपनी उम्र में कभी किसी बीमारी का इलाज कराया और कोई दवा अपने काम में लाकर फ़ायदा उठाया कि नहीं जो पुरुष प्रत्यक्ष हकीमों और दवाइयों को छोड़ ईश्वर को झूठ मूठ में मानते हैं वे सीधी राह को छोड़ कांटों और गढ़ों में घुसते हैं -

(३९) अगर ऐसे अवसर पर यह कहा जावे कि जो कुछ हम किसी को दिया करते हैं सो ईश्वर ही हमसे दुखित मनुष्यों को हमारे हाथ से दिलाता है - तो हमारे दान का फल न रहा - दान आदि कोई वस्तु ही न रही इसी तरह खुदा किसी को कुछ माल दे हम उसको छीन सक्ते हैं अगर यह कहा जावे कि उसके कर्म ऐसे थे - कि उसका माल जाता रहे - तो जबकि कर्मों का फल ईश्वर देता है गोया ईश्वर ने माल छिनवाया यानी चोरी डाका लूट खसूट आदि कोई चीज़ नहीं क्योंकि यह काम तो ईश्वर करता है इसी तरह ईश्वर किसी क्वारी लड़की को पवित्र रखना चाहे बदमाश आदमी उस क्वारी से ज़बरदस्ती व्यभचार कर लेते हैं - यदि यह कहा जावे कि उस स्त्री के कर्म ऐसे थे जिससे उससे व्यभचार किया गया - या ईश्वर की मर्ज़ी ही ऐसी थी कि उस स्त्री के साथ ऐसी कार्य्यवाई होनी व्यभिचार आदि भी कोई पाप न हुए क्योंकि सारी कार्य्यवाई तो ईश्वर की है - गोया ईश्वर का फल दाता मानने से पाप पुन्य सब मिटते हैं - इससे सिद्ध है कि ईश्वर कर्मों का फल देनेवाला

नहीं है -

(३५) उदाहरण - देखिये एक आदमी जवान है बहुत सुन्दर है उसके पास मकान है - धन है - संपति - संतति आदि सबही कुछ है रात को चोर आये तमाम धन लूट लेगये - उसको और उसकी स्त्री बच्चों आदि सब को मार गये अगर यह कहा जावे कि उसकी किस्मत में ऐसा ही था यानी उनके कर्म्मों का फल यही था - तो चूंकि फल ईश्वर देता है यह कुल काम चोर से ईश्वर ने कराया इस लिये हत्या करना - चोरी करना डांकाडालना आदि आदि बुरे काम नहीं और यदि चोर ने उसके कर्मों के विरुद्ध और ईश्वर की मर्ज़ी के विरुद्ध ऐसा काम किया तो ईश्वर कर्मों का फल देने वाला कब हुआ और उसमें फल देने की शक्ति भी नहीं हुई - इसके अतिरिक्त यदि ईश्वर चाहे कि उस पुरुष की हालत जैसी थी वैसी ही कर दे तोभी नामुमकिन है क्योंकि जो लोग यह मानते हैं कि आदमी मर कर फिर पैदा नहीं होते तो ईसाइयों और मुसलमानों का ख़ुदा उसको जैसा का तैसा बनाही नहीं सक्ता - ख़ैर हिन्दुओं का ईश्वर जो आवागमन मानते हैं यह कर भी सक्ता है - कि किसी स्त्री पुरुष को खोज कर के मैथुन करा कर गर्भ रखावे - उसमें उस पुरुष को बालक की शक्ल में उत्पन्न करे इसी तरह उसके जुवान होने पर उसके लिये एक स्त्री जुवान तलाश करे - या उसके लिये स्त्री बनाकर उसकी शादी (विवाह) रचावे - किसी को गरीब करके उसको धनवान बनावे - दश बीस साल उसका पालन पोषण कर के उसकी वैसीही पुरानी हालत बनादे और जैसा का तैसा करदे - मगर वह पहली पुरानी हालत कहां हो सक्ती है - न वह समय रहा न वह लोग रहे न वह हवा रही

न वह आदमी रहे जिनसे उसका प्रेम था या बैर था उसको जान पहिचान थी - इसके अतिरिक्त यह मान भी लिया जावे कि पुरानी हालत हो सक्ती है तो नौ मास माता के उदर में रहकर उलटा लटकना खून पीना - बाल्यवस्था में नंगे फिरना और यह समय नादानी और अज्ञान की हालत में काटना - उसके कौन से कर्मों का फल है यह तो ईश्वर को मजबूरन चोर को ज्यादती करने के कारण उसको पुरानी हालत बनाने में बहुत ही झमेला और दिक्कत उठाना पड़ती है - ऐसी ही और इसी तरह पर सहस्रों कार रवाइयाँ ईश्वर को मजबूरन करना पड़ती हैं फिर ईश्वर में कर्मों का फल देने की शक्ति कैसे मानी जावे अथवा ईश्वर कर्मों का फल नहीं दे सक्ता है -

(४०) दंड इसलिये दिया जाता है कि लोग जुर्म न करें नकि जुर्म सिखाने को दंड मिलता है - मसलन कोई मेजिस्ट्रेट किसी मुजरिम को व्यभिचार - व डाका व चोरी आदि की शिक्षा देवे या और किसी प्रकार का बुरा काम उसको सिखावे तो क्या वह मेजिस्ट्रेट पागल खाना भेजने लायक नहीं होगा ? अवश्य होगा जबकि यह माना जावे कि पुरुष की यह हालत है वह ईश्वर ने उसके कर्मानुसार की - तो जो लड़की कि किवेश्या के यहाँ उत्पन्न की गई और व्यभिचार कराने की शिक्षा उसको दी जाती है तो क्या ईश्वर ने उसको यह सज़ा दी कि वह हराम करा कर अपने को और दूसरों को और भी पाप में फसावे - इसी तरह जो लोग आदमी को मार कर खाजाते हैं तो उनको यह सज़ा मिली कि आदमियों को मार २ कर खाया करें जोकि बड़ा भारी पाप है - इन बातों से भली प्रकार सिद्धि है कि ईश्वर का यह काम नहीं है - नहीं तो परमेश्वर की भी बद्नामी

होना चाहिये जो मजिस्ट्रेट के लिये नियत की गई थी - यानी पागल खाने में भेजना चाहिये -

१३ अध्याय

यह दुनियाँ स्वप्न नहीं है -

बाज़े मता बलम्बी यह मानते हैं कि सिवाय ईश्वर के और कुछ नहीं है यह दुनियाँ कोई वस्तु नहीं है बल्कि एक स्वप्न कैसा हिसाब है झूठी दिखाई देती है कै कुछ भी नहीं जैसे स्वप्न में बड़े २ हाल देखने में आते हैं तैसेही यह दिखाई देती है (४१) जबकि सिवाय परमेश्वर के और कुछ नहीं है तो यह दुनियाँ भूल में किसको दिखाई देती है ईश्वर को जानने में ग़लती आगई है या सिवाय ईश्वर के और कोई वस्तु भी है जिसको यह दुनियाँ ग़लती से दीख पड़ती है - यदि यह ग़लती परमेश्वर की है - तो यह ग़लती क्यों उत्पन्न हुई और ग़लती उत्पन्न होने का कारण जुदाही ईश्वर से हुआ - यानी यह सिद्ध हुआ कि सिवाय परमेश्वर के और कुछ वस्तुभी है - यदि यह कहो कि ग़लती (भूल) सिवाय परमेश्वर के किसी अन्य की है तो प्रत्यक्ष ही सिवाय ईश्वर के और वस्तु भी सिद्ध होगई (४२) किसी वस्तु का ग़लत दिखाई देना ऐसे पुरुषों को जिन के ज्ञान में फ़र्क है - मुमकिन है - परंतु यह सारी चीज़ें प्रत्यक्ष दिखाई दे रही हैं तो कौन कहि सक्ता है कि यह स्वप्न है - यदि स्वप्न होता तो कोई बात एक समय में किसी को कुछ दिखाई देती और किसी को कुछ - जैसे दस आदमी बाजार में मकान

तो सब को दूकाने ही क्यों दिखाई देती हैं - ऐसाही स्वप्न सब को नहीं दिखाई दिया करता है - इससे सिद्ध है कि दुनियां स्वप्नबत नहीं है -

(४३) ग़लती उसी बस्तु में मालूम होती है जबकि वह बस्तु पहिले ठीक देख चुके हों स्वप्न में ऐसा होता है कि वह २ चीज़ें दिखाई देती हैं जिनको देखकर बड़ा कुछ आश्चर्य्य होता है - लेकिन ग़ौर करने की बात है कि स्वप्न में वही चीज़ें दिखाई देती हैं जो जाग्रत हालत में देखी हुई होती हैं - ख़्वाह वह कभी की भी देखी हुई क्यों न हो - देखी हुई अवश्य होती हैं - इससे सिद्ध है कि दुनियां स्वप्नबत नहीं है -

(४४) जो जन्म का अंधा होगा उसको काले पीले हरे आदि रंग की बस्तु स्वप्न में कभी दिखाई नहीं देंगे - जिस रीति से कानों से सुनकर या हाथ से टटोल कर या और किसी तरह पर जिसको वह जागते की हालत में देखता है वैसाही स्वप्न में भी उसको मालूम होता है -

(४५) इन बातों से सिद्ध है कि दुनियां कोई चीज़ नहीं तो वह दिखाई भी नहीं देसक्ती इसके अलावह इसके बहुत अच्छे २ सुबूत और दलीलें हमारे पास इसकी और मौजूद हैं - और अमरीका देश के शहिर चिकागो में एक दफे इस बिषय में जैनियों से बहुत कुछ बहिस हुई थी उस बहिस के सब प्रश्नोत्तर हमारे पास मौजूद हैं जो क्रम २ अपने मासिक पत्र में दूंगा इस मासिक पत्र के दोसौ ग्राहक हो जाने पर जारी किया जायगा ग्राहक मंडली में शीघ्र २ नाम और साफ़ २ पता लिखाओ ताकि २०० ग्राहक हो जाने पर शीघ्र ही जारी कर दिया जावे - एक अंक नमूने का सब के पास मुफ़्त भेजा जायगा

पहली भर ग्राहक समझे जायंगे - नाम शीघ्र २ लिखाओ -

आवागमन के विषय में वादविवाद

ईसाई - हम ब्रह्मन से पूछते हैं ? भाई तू बता कि तू बिरहमन क्यों बना और तेरे कौन से कर्मों का फल तुझ को मिला तू अपने पिछले जन्म की खबर दे सक्ता है वह कुछ जवाब नहीं दे सक्ता अगर आवागमन होता तो पिछली याद होती इसलिये आवागमन नहीं है -

उत्तर - यह प्रश्न आप का याद दाश्त के ऊपर है और याद रखना स्मरण शक्ति का काम है - यदि स्मरण शक्ति दुरुस्त बनी रहै तो पिछले जन्म की याद अच्छी तरह बनी रह सक्ती है - यह याद तो दूसरे जन्म की है की है पहिले इसी जन्म की याद - गर्भ की बचपन में - बचपन की जवानी में जवानी की बुढापे में याद नहीं रहती है तो दूसरे जन्म की याद रखना तो मुश्किल काम है - और योग साधन करने पर केवल ज्ञान उत्पन्न होने के पीछे सब कुछ याद हो जाती हैं - हमारी तुम्हारी बात तो दूसरी है तुम्हारे खुदा को भी तो याद नहीं थी कि आदमी को मैं पैदा तो करता हूं लेकिन यह तो गुनहगार (पापी) होजावेगा यानी उसके गुनहगार होने पर बहुत कुछ पछताया - और खुदा ने कहा कि मुझको नहीं मालूम था कि यह गुनहगार होजावेगा नहीं मैं कभी नहीं इसको पैदा करता - और दूसरे खुदा वन्द ईसू मसीह को भी तो यूहदा इसकरी को चेला करते समय नहीं याद थी कि यह मुझ को पकड़ा देगा तब मुझको फांसी (सलीब) होगी - अगर याद होती कभी भी उसको चेला नहीं करता - बिदित होकि यूहदा इसकरी तो एक पुरुष का

नाम है जिसको यूसू मसीह ने चेला किया था और इसी चेले ने यूहू
दियों से मिलकर और तीस रु० रिश्वत में लेकर यूसू मसीह को इस
तर्कीब से पकड़ाया कि यूहूदियों से यह कहा कि मैं तुमको एक प
हिचान अपने उस्ताद की बतलाता हूं नहीं तुम उसको पहिचान
नहीं पाओगे उन्होंने कहा बताओ - तब बोला कि जिसको मैं चूमूं
वहही मेरा उस्ताद ईसूमसीह है तब ऐसाही हुआ और मसीह
जब पकड़ गया तो उसपर लोगों ने थूका और मुंहपर थपेड़े मा
और कांटों का ताज उसपर रक्खा और पिटवाया और सलीब में
उसको जड़दिया उसके माथे और हाथ पैरों में कीलें ठोक दीं और
जब वह मर गया - तो तुम्हारे खुदा तक को भी तो नहीं याद था कि
हमको यह पकड़ा कर हमारी कुगति करावे गा तो हमको किसतरह
याद रह सक्ती है - और वाज़े २ याद भी रखते हैं जिनका हाल नीचे
लिखता हूं संवत् १९३३ विक्रमी में ग्राम कन्धा में मोहन लाल ठा
कुर बन्दूक से मारागया और उसी साल मौज़ा ग़रीब का पुरा में जो ग-
न्धा से ६ कोस की दूरी पर बस्ता है काशी राम के घर एक लड़का
पैदा हुआ जब वह तीन बर्ष का हुआ एक दिन बन्दूक की आवा
ज़ सुनकर रोने लगा और बहुत डरा जब उस बालक से पूछा तो
उसने उत्तर दिया कि मैं कन्धा ग्राम का रहिने वाला मोहन लाल
ठाकुर हूं मुझको हर बलबा ने बन्दूक से मार डाला था - जब
यह बात हाकिम तक पहुंची तब उसको इज़्हार लिये गये उसी
तीन बर्ष के बालक ने हर बलबा को पहिचान लिया और जब
मास फरवरी सन् १८८१ ई० में मुकद्दमा गवालियर आया तो
वहां भी उस बालक ने वहही इज़्हार दिये और मोहन लाल ठा
कुर के भाई को देखकर कहा कि यह मेरा भाई है और कहा कि मैं
सब कुछ पहिचानता हूं (एक समाचार पत्र) द्वितीय याद

और न वर्ग यूरपी रूसका एक शहिर है जोकि यूरल परबत के निकट बसता है अनुमान से आज तक उन्नीस वर्ष हुई होंगी कि इबराहीम चार कू एक धन वान यूहदी उस शहिर का वासिंदा ज्वर से बहुत कुछ पीड़ित था ता० २२ सितम्बर सन् १८७४ की आधी रात को उसे एक महा भयानक विचार उत्पन्न हुआ उस आदमी को घोर कष्ट हुआ - हकीम भी आये उन्हों ने पागल पन बताया किसी ने भूत बताया आदि गन्डे तावीज़ और जंतर बहुत सारे हुए कुछ न हुआ कुछ समय के बाद देखते क्या हैं कि वह बीमार जोकि मौत के निकट हो रहा था अब अच्छी तरह से सास लेने लगा और उसने अपनी आंखें खोल दीं और आश्चर्य की निगाह से चारों ओर देखने लगा फिर वह आदमी जल्दी से सो गया - इसपर डाक्टर ने कहा कि इस समय उसका सो रहिना इस के लिये बहुत अच्छा है - प्रात काल तक वह इट नार खूब सोया उसके बच्चे और उसकी प्रय स्त्री उसके जगने की बाट देख रहे थे जगने पर उसकी प्राण प्यारी ने खुशी के कारण उसको गले लगा ना चाहा लेकिन उस पुरुष ने इशारों से उसे हटादिया - और एक ऐसी बोली में वहां के आदमियों से कुछ मांगा जिसको को ई भी कुछ न समझ सका जानना चाहिये कि इबराहीम चार लू श्याम वर्ण - लम्बा डील - लम्बी दाढ़ी स्याह आंखें लम्बी नाक रखता था और अपनी बीमारी के पहिले वह इबरानी बो लीके सिवाय कुछ थोड़ी सी रूसी बोली भी जानता था - जोकि काम पड़े हुए यूहदी बोलते हैं - अब वह आदमी ऐसी बोली बोलने लगा - जिसको वहां कोई भीन समझता था - डाक्टर जो कि उसकी चिकित्सा को आया था उसने तथा उसकी बोली न समझ्‌ी जब कभी उसके बालक और उसकी प्राण प्यारी उसके पास

आते तो वह बुरी तरह से उनको ढकेल देता था - डाक्टर ने यह राय दी कि ज्वर के अधिक होने के कारण यह पागल होगया है कुछ दिनों के बाद उसकी स्त्री ने अपने माता पिता को बुलवाया लेकिन उनके आने पर इब्राहीम ने उनको नहीं पहिचाना और न उनकी बोली समझ सका - और वह इसबात पर बहुत क्रोधित हो ता था कि मेरी बोली क्यों नहीं कोई समझता - एक सप्ताह के बा द वह बिछौने से उठा - और उसकी स्त्री ने उसको पहिनने को वह कपड़े दिये जोकि वह बीमारी से पहिले पहिना करता था रूसियों की आदत को देख कर वह बहुत हंसा वह बाहर दौ ड़ना चाहता था लेकिन लोग जल्दी से दरवाजा बन्द कर देते थे ताकि उसको सर्दी न लगजावे वह अपने कमरे में चलता लेकिन पग बहुत धीरे २ रखता और कुछ सोच २ कर देर २ के बाद पग उठाता था एक दर्पण के पास जाकर उसने अपनी शक्ल उसमें देखी और वहां ठहर गया और बड़ा हैरान हुआ - अपनी बड़ी नाक और लम्बी डाढ़ी को छूता था और एकाएक हंस पड़ता था और अचानक एक गहिरे सोच में पड़ जाता था लोग इस बात से बहुत कुछ आश्चर्य करते थे - उसकी स्त्री और माता पिता बहुत ही तअज्जुब करते थे और कहिते थे कि अब यह इब्राहीम चारकू नहीं है बल्कि एक गैर आद मी होगया है लेकिन इब्राहीम के माथे पर दो काली लकीरें थी जिस डाक्टर ने दो मास तक उसकी चिकित्सा की वह इन लकीरों को देख कर आश्चर्य किया करता था - इब्राहीम चार कू खिड़की से झाक कर आसपास के लोगों को देख कर बड़ा ही आश्चर्य करता था एक दिन उसने बाहर भाग जाने की बहुत कोशिश की लेकिन न भागने पाया अब तो बहुत नामी अ

डाक्टर उसके लिये इकट्ठे हुए उन्हों ने कहाकि यह लिखकर हमको कुछ बताइगा उसको काग़ज़ और क़लम दवात दी उस ने लेटन जवान में बहुत साफ़ अक्षरों में लिखकर डाक्टरों ने देखा डाक्टर ने पढ़ा लेकिन समझ न पाया कि क्या लिखा और सब आदमियों ने बहुत कुछ आश्चर्य्य किया कि इसने लेटन ज़बान कहाँ से सीख ली और इसको लेटन हरुफ़ कहां से आगये यह तो लेटन पढ़ाही नहीं था और जब कुछ समय इसी तरह पर व्यतीत हुआ तो शहिर सेंटपीटरसबर्ग - के मेडीकल यूनीवेंस्टी में इबराहीम चारकू को लाये ज्यों हीं वहाँ के प्रोफ़ेसर आरलू साहब ने इबराहीम चारकू की बोली को सुना फौरन जान लिया कि यह अंगरेज़ी भाषा बोलता है अब तो इबराहीम बहुत प्रसन्न हुआ कि इसने तो मेरी बोली समझ ली अबतो बड़ी देर तक प्रोफेसर साहब और इबराहीम में बातें हुईं जब प्रोफेसर आरलू साहब ने पूछा कि तुम कौनहो तब उसने कहा कि मैं उत्तरी अमेरिका ब्रटिश कोलमबिया के शहिर न्यूविस्ट मिनिस्टर का रहिने वाला हूं मेरी एक स्त्री है दो बालक हैं लेकिन खुदा जाने अमरीका से रूसमें मुझको कौन लाया मैं नहीं जानता कि किसतरह मेरा आना यहाँ हुआ - और मेरा नाम इबराहीम चारकू नहीं बल्कि इबराहीम दरहम है - और मैं यही चाहता हूं कि अमेरिका को अपने घर जाऊं - अब प्रोफ़ेसर साहब ने कहाकि तुम लोग धोखा देते हो यह बड़ा अकलमन्द इंगलिश मेन अमेरिका का रहिने वाला है तुम लोग इसको चुरालाये हो इस बात की तहक़ीक़ात होना चाहिये पुलिस के द्वारा पास पड़ोस वालों से और वहाँ के डाक्टर से खूब तहकीक़ात हुई सब ने कहाकि

हम इसको बालक पने से जानते हैं कि यह इबराहीम चारकू ही है - तब डाक्टरों ने कहा कि इसकी आत्मा बदल गई है मगर कुछ दिनों के बाद सुबह को जो देखें तो चार पाई खाली इबराहीम चार कू नहीं - बहुत कुछ उसका खोज लगाया जार रूस (रूस का राजा) को भी खबर हुई लेकिन फिर वह नहीं मिला लोगों ने यह समझा कि यह पागल धुन में दरिया में डूबमरा रोपीट कर बैठ रहे -

सन् १८७५ ई० के बसंत ऋतु में सेन्ट पीटरस बर्ग (रूस का शहिर) के प्रोफ़ेसर आरलू साहब एक अखबार पढ़रहे थे उस अखबार में क्या देखते हैं - कि न्यूविस्ट मिनिस्टर में एक आश्चर्य्य अन्वित बात हुई है जिस खबर ने तमाम शहिर में हलचल मचादी है ता० २२ सितम्बर सन् १८७४ ई० के दिन उस शहिर का एक व्योपारी ज्वर से अति बीमार था और उसके जीने की उम्मेद नहीं थी तिसपर वह बचगया और भला चंगा हो गया लेकिन आश्चर्य्य की यह बात है कि बीमार जोकि एक ज़हीन अंगरेज़ था आपनी मादरी बोली भुला दी और ऐसी बोली बोलता था जिसको कोई भी न समझता था - आखिर को वहां के एक पुरुष ने कहाकि यह यूदियों की एक गवारी बोली है वह बीमार बीमारी से पहिले एक मज़बूत पुरुष था अब बहुत पतला और कुबड़ा होगया है - और कहिता है कि यह स्त्री और बालक मेरे नहीं हैं लेकिन इस बात की ज़िद करता है कि मेरी स्त्री और बालक किसी दूसरी जगह हैं उस पुरुष को पागल समझते हैं - फिर कुछ दिनों बाद एक मुसाफिर आया जिसका चिहरा ठीक इबरानियों कैसा था वही मुसाफिर कहिता है कि इस स्त्री का मैं खाविन्द हूं और उस स्त्री से वह उस बोली में बोलता है जिस

में उसका पति उससे बोला करता था लेकिन उस मर्द के माता-
पिता जोकि उसी शहिर में रहिते हैं इनकार करते हैं कि वह
हमारा लड़का नहीं लेकिन वह बार २ यही कहिता है कि मैं
इस स्त्री का पति हूं और इन्हीं मा बाप का पुत्र हूं - वह बेचारी
स्त्री एक बड़े गम्भीर सोच में पड़ी है और कहिती है कि यह
किसतरह से कहिता है कि यह मेरी स्त्री है - जब वह पूंछती है
तो वह छुपी बातें जोकि सिवाय स्त्री पुरुष के कोई नहीं जान
ता कहिता है तब तो वह कहिती कि मेरा पति है लेकिन जब सू
रत देखती तो कहिती कि मेरा पति नहीं है और यहूदी चेहरे का
आदमी मेरापति कैसे होसक्ता है तब प्रोफेसर आरलू को उस
पिछली बात की याद आई और कहाकि इनकी आत्मायें बद
ल गई हैं - और बड़ा हैरान हुआ और इस बात को देखने के
लिये न्यूबेस्ट मिनिस्टर शहिर में गया तो वहां काला इबरा
हीम वहां पाया जिस को उसने छे मास पूर्व सेन्टपीट रस बर्ग
में देखा था - उसनें उस व्यौपारी से रूसी बोली में पूछा कि तू
कहां से आया है उसने उत्तर दिया कि मैं ओवन बर्ग से आया हूं
और जबकि उसने उसकी औरत का नाम पूछा उसने उस यहूदी
औरत का नाम लिया जिसने उसे अपना खाविंद कहा था -
जोकि उस समय सेन्टपीटरस बर्ग में थी जब उसने उससे पूं
छा कि तेरा नाम क्या है - उसने उत्तर दिया कि यह लोग मेरा
नाम इबराहीम दरहम कहिते हैं लेकिन असली मेरानाम
इबराहीम चारकू है - प्रोफ़ेसर आरलू इस अजीब ख्याल
से हैरान होगया उसने सोचा कि शरीर तो नहीं बदला है क्योंकि
एक तो छोटा और मज़बूत है और दूसरा पतला लम्बा और काले
रंग का है और फिर न्यूबिस्ट मिनिस्टर ओवन बर्ग से दो हज़ार

मील की दूरी पर है उसने कहा कि ज़रूर आवागमन हुआ है - और आत्मायें बदल गई हैं - यह याद रखना चाहिये कि २२ सितम्बर सन १८७४ को आधी रात के समय दोनों जिन्दगी और मौत के दर्मियान थे एक आदमी की आत्मा अवश्य दूसरे के शरीर में उड़कर दाखिल होगई - और इसी तरह एक पूरा आवागमन हुआ था और यह दोनों शहिर एक दूसरे के ठीक मुकाबिल हैं अगर एक मेख ज़मीन में ठोकी जाय तो वह ठीक वेस्ट मिनिस्टर में निकले गी - और दोनों शहिरों के दर्मियान ठीक ही १२ बजे का वक्त है - और जबकि ओवन बर्ग में आधी रात के १२ बजते हैं तो न्यूबिस्ट मिनिस्टर में दो पहिर दिन के १२ बजते हैं और जब यहां आधी रात होती है तो वहां दोपहिर होता है -

इसी तरह के आस पास के ग्रामों में याद रखने वाले बहुत से बालक पैदा हुआ करते हैं इसकी बाबत आप बहुत कुछ जानते होंगे -

ईसाई - जानवरों में रूह (आत्मा) नहीं है सिर्फ जान है अगर रूह होती तो इन्सान (आदमी) हैवान (जानवर) में कुछ फ़र्क न होता -

उत्तर - यह तो खूब आपने सुनाई यह बचन आप का उनमत्तों कैसा है जानवरों में रूह (आत्मा) नहीं है तो ऐसे २ आश्चर्य जनित काम बिना रूह के करते हैं शायद आप को इन की (जानवरों) चालाकियों से खबर नहीं लोमड़ी की चालाकियां बिल्ली की मक्कारियां - बगुले का ध्यान - तो सारे जहान में प्रसिद्ध है - शायद आपने सरकस कम्पनी का तमाशा नहीं देखा और न रीछ बन्दर नचाने वालों का तमाशा देखा - और न आ

पने बिलायती चूहों (मूसे) का तमाशा देखा है - चूहों की चालाकी आप को सुनाता हूं - तमाशा करने वाले ने चूहे से कहा कि अपना पानी भरलो - चौका बरतन करलो - घर झाड़ बुहार डालो - झट २ सब काम करने लगी फिर उसने कहाकि सास का पानी भरलो - झट चूतड़ फेर दिये और नहीं भरा - ऐसेही बहुत से जानवर हैं जो बडे चालाक होते हैं जिनकी चालाकी का कुछ थोड़ा सा हाल नीचे लिखता हूं -

बन्दरकी चालाकी ॥

१- अमरीका देश के शहर न्यूयार्क में बन्दरों के पढ़ाने के भी चार स्कूल हैं उनमें दोसौ बन्दर शिक्षा पाते हैं जब स्कूल में बन्दर दाखिल होता है पहिले उसका नाम रक्खा जाता है फिर उसको बन्दूक चलाना वगैरः अनेक काम सिखाये जाते हैं

अज़ जैन पत्रिका नम्बर १६ लाहौर छटी साल
२८ फरबरी सन १६०२ सफा २ कालिम २
सतर १ से ६ तक

२- बन्दर की गवाही - मझगाव पुलिस कोर्ट में माजिस्ट्रेट बड़ी दुविधा में पडे दो आदमी एक बन्दर पर मेरा २ कहि झगडे हैं दोनों तरफ के गवाह पक्के हैं - मजिस्ट्रेट गड़बड़ी में पडे आगे बिचारा बन्दर तो बुद्धिमान जानवर है डारविन के मुताबिक़ बन्दर ज़ाद है - सो फर्य्यादी से कहा कि तुम बन्दर का कुछ बुद्धि का खेल दिखाओ वह न दिखा सका किन्तु आसामी ने अनेक खेल दिखा कर तथा बन्दरी सलाम में साहब को खुशकर समझा दिया कि बन्दर मेरा है तब साहब ने बन्दर आसामी को दिलाया फर्य्यादी एक पुलिस मेन है -

अज़ जैन मित्र मुम्बई साल ३ पुस सन् १९०८

अंक ४ कालम २ सफ़ा ३ सतर १४ से २८ तक -

३- एक साहब अपने सफ़र के हालत में लिखते हैं कि घूम ते २ एक दिन हमारा जाना जंगल में हुआ अकेली जान कोई दूसरा साथी न था इत्तिफ़ाक़न् बन्दरों का एक झुंड आया- और एक जगह पंचायत लगाकर बैठे हम उनका तमाशा देखने के वास्ते उनसे ज़रा दूर ठहिर गये - जो जंगली फल फूल वह लाये थे उन सब को कूट कर उन्होंने लड्डू बनाये और सब बन्दरों को चार चार बांटे इसके बाद उनमें से एक बड़े बन्दर की आज्ञा से एक बन्दर चार लड्डू हमारे पास लाया हमने लेलिये जब खाये तो ऐसे लज़ीज़ और मज़ेदार और स्वाद मालूम हुए कि शहिरों की उम्दा मिठाई भी ऐसी स्वाद नहीं होती-

४- इसी तरह एक जगह बन्दरों के मारने के लिये भुने चनों में विष लगाकर डाले गये मगर जो बन्दर आता था उसे संघ कर खड़ा हो जाता था खाता न था सब के बाद एक बड़ा बन्दर आया और उसने भी सूंघा और सूंघ कर सब को वापिस लेगया सब जंगल से घास तोड़ लाये और आते ही घास को चनों पर मलकर खागये विषने कुछ असर नहीं किया- तहक़ीक़ात करने पर मालूम हुआ वह घास विषको दूर करने वाली थी -

५- बन्दर और जंगली और पहाड़ी कौवे अदालतें क़ायम करके अपने मुजरिमों को सज़ा दिया करते हैं बकलक और सारस और फ़िले मिंगोस (सुर्ख चिड़िया) भी अदालतें करती हैं- श्राट लेन्ड के टापुओं के कौवे एक स्थान और समय अदालत के लिये नियत करते हैं औसी स्थान पर अदालत के दिन

आते हैं और मुकद्दमे फ़ैसल करते हैं बाज़ी दफ़े एकही मुक़द्दमे की छान बीन में एक २ सप्ताह बीत जाता है जब अदालत बरखास्त होती है तो मुजरिम को वहीं मार डालते हैं लक़ लक़ - जिसतरह अक्सर स्त्रियां अपने आशिक़ से कहिती हैं कि मेरे पति का प्राण घात करो इसी प्रकार मादा लक़ २ भी अपने जवान चाहने वाले को पति के मारने पर आमादा करती है - बिना रूह के ऐसी चाला कियां हरगिज़ नहीं होसक्ती हैं

१ - कुत्तों के करतब - फ़रांस राज्य के पेरिस शहिर में कुत्तों की पुलिस बनाई जा रही है -

अज जैन पत्रिका नं० १६ साल ६
२९ फ़रवरी सन् १९०२ सफ़ा ३
कालम १ सतर ३ से ४ तक

२ - मंदरास शहिर में एक कुत्ते ने अपने मालिक के चार साल के बालक को जो तालाब में गिर पड़ा था डूबने से बचालिया -

अज़ जिया लाल प्रकाश उर्दू साल १६ नंबर ११
मास जनवरी सन् १९०२ सफ़ा ११ कालम १
सतर १७ से २० तक

३ - एक अंगरेज़ सैर को निकला कुत्ता साथ था जब वापिस आया तो कुत्ते को न पाया कपड़े उतारे तो जेब से कुछ कागज़ कमये वह अति आवश्यक थे उनकी तलाश की वह न मिले दूसरे या तीसरे फिर उसी राह से निकला देखा कि कुत्ता मरा पड़ा है जब उसकी लाश उठाई तो कागज़ उसके नीचे पाये गये गोया मालिक के कागज़ों के लिये कुत्ते ने अपनी प्रिय जान देदी -

४ - अखबार रहिबर हिन्द लाहौर के सम्पादक सैयद

नादिर अली शाह अपने अख़बार में लिखते हैं कि हमारे मुह
ल्ले में एक बूचा नाम का कुत्ता था उसमें बड़े गुण थे वह तमा
म मुहल्ले की रखवाली करता था - मुहल्ले के जानवरों को बा
हर नहीं जाने देता था और न बाहर के अन्दर आने देता था
वह बड़ा रुआब दार जनरल था उसकी एक आवाज़ पर तमाम
कुत्ते इकट्ठे हो जाते थे और हर लड़ाई में चाहे कितनी ही तंगी
न क्योंन हो बग़ैर किसी पुरुष की सहायता के जीत आता था
उसने दिन में एक दफ़े धोखा खाया - एक पुरुष ग़ैर हाज़ि
र था उसका बैल एक चोर खोल कर लेगया और बूचा उस
चोर के पीछे होलिया और ज़िला स्याल कोट में उसका घर
देखकर चला आया - फिर बैल के मालिक को लेगया और
बैल के पास पहुंचा दिया - उसका बैल मिलगया और बू
चा हर लाश के साथ मरघट जाया करता था - बूचे की
एक आदत यह थी कि मैले कपड़े पहिने हुओं पर बह
त हमला करता था और पुलिस के कानिश्टबलों को ब
हुत तंग करता था और बड़ी सख़्ती से उनपर हमला करता
था - इसकी वजह यह मालूम होती है कि बूचे ने इनको
चोरी करते हुए देखा होगा -

अज़ रहबर हिन्द उर्दू १४ अप्रैल
सन् १८६२ ई०

कुत्ते मशाल लेकर चलते हैं दरिया में से गेंद उठा लाते हैं -
शिकार खेलते हैं - कवायद करते हैं - चोरी होने से बचा
ते हैं और मालिक की जान की हिफ़ाज़त करते हैं मालिक
को पहिचानते हैं - और उनके बाल बच्चों की रखवाली
करते हैं - रास्ता पहिचानते हैं गमी शादी राज़ी कुराज़ी

गुस्सा आदि सब इशारों को जानता है - मालिक से प्यार करते हैं शोक २ ऐसे २ गुण और चालाकियां होते हुओं को बाज़े २ जैसे कि आप कहिते हैं कि यह बगैर आत्मा के हैं शोक २ तो मैं जानता हूं - बाज़े २ आदमियों में भी आत्मा नहीं होती है - तबतो आदमी को बाज़े २ खा जाते हैं और यही वजह है कि सैकड़ों जानबर बगैर रूह के समझ कर कतल किये जाते हैं -

५ - अद्भुत सर्प - एक महाशय ने उक्त अद्भुत सर्प देखा यह कहिते हैं जब कोई आदमी उसे मारने जाता है तो सर्प टुकडे होकर भाग जाते हैं - भय दूर होने पर वह सब टुकडे अलग अलग सांप बनगये और सब जीते थे और वैसी ही शक्ति थी यह अद्भुत सर्प अजायब घर में रक्खा गया है -

अज़ जैन पत्रिका ६ साल नं० ६३ - १० अप्रैल
सन् १९०२ सफ़ा ४ कालम १ सतर ९ से १८ तक
लाहौर स· बा ज्ञान चंद्र

ऐसे ही जिस जानबर पर दृष्ट दौराओ - उसमें बड़ी चालाकियां दिखाई देती हैं - और मर्द से भी ज़ियादा वुद्धि रखते हैं बहुत से ज्यानबरों को चालाकी का हाल मैं अपने मासिक पत्र में करूंगा जो अब हाल ही में जारी होने वाला है दोसौ ग्राहक रजिस्टर में नाम लिखा दें उनको नमूना भेजा जायगा स्वीकार और पसंद करने पर ग्राहक समझे जायंगे - और दोसौ से कम ग्राहक होंगे तब तक जारी नहीं किया जायगा इसलिये शीघ्र ही अपना २ नाम ग्राहकों को लिस्ट में लिखाओ - इस मासिक पत्र में कुल मत मतान्तरों की पुस्तकों की कलई खोली जावेगी जैसे ईसाई मुसल्मान - आरिया - बुद्ध - वैष्णव और धर्म समाजियों आदि की खूब कैफियत दिखाई जायगी शीघ्र

ग्राहक मंडली में नाम लिखाओ - मूल्य नमूने के अंक में देखना
इस पते पर पत्र भेजो - लालता प्रसाद एल· पी· जे· स्थान
कायमगंज ज़िला फ़र्रुखाबाद पश्चिमोत्तर देश

विज्ञापन

खांसी की गोली - इन गोलियों की कहां तक प्रशंसा करूं प्रशंसा करने वालों का एतबार जाता रहा है आप तीन गोलियां मगा कर खाइये आप की खांसी जाती रहे तो दाम वर्ना एक कौडी नहीं मैं दाम पहिले नहीं मागता और छे गोलियों मेंतो वर्सों की खांसी कफ की सूखी ठर्रा नज़ले की आदि हर प्रकार की खांसी जाती रहती है और जो भाई मुफ़ बाटने के लिये चाहे तो मैं उनसे आधे दाम लिये जायंगे मूल्य भी लम्बा चौडा नहीं है - फी गोली -)। फी सैकडा ५) डाक महसूल अलग लगेगा -

मुझमें चाहने वालों को डाक खर्च के लिये एक आने का टिकट भेजना चाहिये नहीं तो बैरंग का भार तुमको उठाना पड़ेगा -

दाद की दवा - इस मर्ज़ के बीमार बहुत हैं आधी शीशी में दाद जड़से जाती है - इस दाद की सैकड़ों दवाइयां हैं - मगर ऐसी दवा कोई नहीं जो पसंद आवे किसी दवामें दुर्गन्ध आती है किसी में चिकनाई होती है जिससे कपडे खराब होते हैं दुर्गन्ध के सबब कोई पास नहीं खड़ा होता - और कोई ऐसी दवाइयां होती हैं जो शरीर को बहुत कुछ कष्ट पहुंचाती हैं - खाल को छील डालती हैं बड़ा दर्द होता है घाव हो जाता है अलावह इसके तरह २ के कष्ट उठाना पड़ते हैं और यह हमारी दाद की शीशी ऐसी है कि दर्द करने वाली है - नीबक

मी है - न दुर्गन्धी है - डेढ़ सप्ताह के अन्दर चाहें कैसी ही पुरानी दाद हो बिलकुल जड़ से जाती रहेगी और फिर कभी न होगी इस दवा को अवश्य अजमाओ - मगाओ ज़िन्दगी का लुत्फ़ उठाओ - मूल्य एक शीशी ३) रु० मुफ़ लेने वाले को ।) कटिक डाक महिसूल के लिये भेजना चाहिये नहीं तो बैरंग में ॥) का भार उठाना पड़ेगा - बैरंग वापिस किसी भाई को न करना चाहिये नहीं तो यह बोझ हमपर पड़ेगा - दाद जाने पर ५) रु० ईमान के लेंगे

लोहे का तांबा बनाना

यह दवा बहुत उत्तम है चाहे किस लोहे की वस्तु पर ज़रा खटाई रगड़ो और फिर यह दवा मलदो तांबा मालूम होने लगेगा मूल्य फ़ी तोला ३)

तांबे की चांदी करना

यह तर्कीब बहुत आसान है इस दवा का सफ़ूफ हमारे पास है (सफ़ूफ पिसी हुई दवा का नाम है) तांबे के बर्तन पर छल्ले आदि पर ज़रा खटाई पानी में घिसकर रगड़ दो और फिर यह सफ़ूफ़ दवा का रगड़ो चुटकी से रगड़ा जाता है एक दममें सब का सब तांबे से चांदी बन जाता है - और कोई पहिचान नहीं सकता - इस दवा को अवश्य मगाओ - मूल्य फ़ी तोला ॥)

नक़द ५) रु० का ईनाम -

यह ईनाम उन्हीं भाइयों को मिलेगा जो एक क़ायदा हमसे खरीदेंगे - इस क़ायदे में तारीख से दिन और दिन से तारीख मालूम करने की बहुत सुगम तर्कीब है और चाहे किस सन इसवी

(भूत भविष्य वर्तमान) तीनों कालों के सनो की तारीख एक दममें जबानी ही हिसाब जोड़ लो स्लेट पेंसल की भी जरूरत नहीं - यानी किसी ने यह मालूम करना चाहा कि १० जून सन् १९०२ ई० को कौनसा दिन होगा या १० जून सं- १९०१ में कौन दिन था या १० जून सन् १९०३ को कौन दिन होगा कुछ यही तारीखें और महीने और सन् नहीं चाहें कि-स सन के चाहे किस महीने की चाहे कोई तारीख एक दमकी दम में हिसाब जोड़ लो - और मालूम करलो कि इसतारीख को यह दिन होगा - या इसदिन की यह तारीख होगी - इस कायदे का नाम अमूल्य कायदा है और मूल्य ।) है - सो ।) कायदे का मूल्य और ⌐) चन्दे का और ⌐) जिससे मनी आर्डर पांच रु० का किया जावे गा कुल ।⌐) हमारे पास भेजदें - उनको कायदा तो छे आने के पहुंचते २ भेजा जायगा और रु० पर जिसके नाम की चिट्ठी निकले गी उसको भेजे जायंगे दोसौ चिट्ठी हमारे पास आजावे गी तब पांच रु० पर चिट्ठी डाली जावे गी - इससे शीघ्र २ चिट्ठी और ।⌐) का मनी आर्डर या टिकट भेजो

चेतना

अक्सर सुनने में आया है - और हमारा जाती अनुभव (तजरुबा) है कि डाक में जो टिकट भेजे जाते हैं सो मारे जाते हैं - इसलिये प्रथम तो लोगों को यह उचित है कि मनी आर्डर द्वारा दाम भेजे और मनी आर्डर न भेजा चाहें तो टिकट डाक खानेसे लाकर और एक लिफाफा लाकर चार या पांच दिन उसको अपने यहां रख छोड़ें तब चौथे या पांचवें दिन टिकट रख कर और लिफाफा अच्छी तरह से बन्द कर के भेजदें - और एक जवाबी कार्ड हमारे पास डालदो जिस के द्वारा आप को सूचित

करदें कि वसूल होगये - परंतु खर्च आप का टिकट भेजने में भी वह ही पड़ेगा और मनी आर्डर में भी वही पड़ेगा क्योंकि ⌐॥ जवाबी कार्ड ⌐॥ का लिफाफा ⌐ कुल लगा और ⌐ ही आना मनी आर्डर करने पर लगेगा पहिले ५) रु॰ पर दो आने लगते थे अब ५) रु॰ तक ⌐ आना ही लगा करेगा मनी आर्डर करना बहुत अच्छा है सब तरह के पत्र व्यवहार नीचे लिखे पते पर करो - पता - लालता प्रसाद एल॰ पी॰ जे॰

स्थान कायम गंज ज़िला फ़र्रुखाबाद

पश्चिमोत्तर देश

मासिक पत्र

यह पत्र बहुत उत्तम होगा - इसमें हर मत की उधेड़ें और कलई खूब अच्छी तरह से दिखलाई जावे गी - और हर प्रकार की खबरें भी होंगी - व्योपार की बावत भी इसमें अच्छी २ तर्कीबें बतलाई जावें गी - और रु॰ पैदा करने की सबीलें और तदबीरें लिखी जावें गी और दूर २ देशान्तरों की सैर करने के लिये वहां के हालात लिखे जावें गे और दुनियां के प्रसिद्ध मनुष्यों के जीवन चरित्र लिखे जाया करें गे - कुछ दवाइयां भी छपा करेंगी - हिफ़्ज़ सेहत (आरोग्य रहने) के विषय में अच्छी २ हिदायतें होंगी - कुछ नसीहतें भी हर पर्चे में छपा करें गी - आवा गमन है ईश्वर कर्ता नहीं - मांस भक्षण ठीक नहीं - पानी छान कर पीना - रात्रि भोजन त्याग - आदि हर विषय पर अच्छी २ दलीलें और सुबूत छपा करेंगे जैन धर्म सम्बन्धी और प्राचीन शास्त्रों का निचोड़ अकसर इसमें होगा - अलावह इसके चांदी सोने की पहिचान और तपाने आदि की तर्कीबें और चांदी के प

कार की होती है - सोना कितनी किस्म का होता है - आदि ऐसे ऐसे बहुत तर्कीबें इसमें छपा करेंगी - मगर यह पत्र उस समय जारी होगा जब इसके २०० ग्राहक होजावेंगे - और मूल्य पेशगी पहिला अंक पाते ही भेज देंगे उन की सेवा में भेजा जायगा नहीं तो दूसरा अंक नहीं भेजा जायगा - मूल्य वगैरः का हाल पहिले अंक में देख लेना पहिला अंक नमूने का मुफ्त भेजा जायगा पसंदी पर ग्राहक समझे जावेंगे - इसलिये शीघ्र शीघ्र दोसौ ग्राहक अपना २ नाम लिखाओ - देरी न करो - लालता प्रसाद जैन कायमगंज (फ़र्रुखाबाद)

जादू

हर क़िस्म के जादू के खेल - जोकि बाज़ीगर किया करते हैं और लोगों को आश्चर्य में डालते हैं और माया के अजीब २ खेल हमारे पास तैयार मौजूद हैं जिस किसी को चाहिये नीचे लिखे मूल्य पर मंगाओ -

१ बिना दामों का गुलाम

यह जादू एक धागे में पिरोया गया है - उसको हुक्म दो तो चलने लगे और हुक्म दो ठहिर जावे - इसको देख कर बहुत हैरानी होती है मूल्य ॥) और कोई खेल बनाने की तर्कीब पूछेगा तो ३) तर्कीब बताने का पेशगी लेलेंगे तब बतायेंगे

२ जादू के तीन लड्डू

यह दुहरी मज़बूत सुतली में तीनों लड्डू पिरोये गये हैं - एक सिरा सुतली का एक शख्स को पकड़ा दो दूसरा सिरा दूसरे को - फिर इनको खूब उसी सुतली से जकड़ दो और जकड़ने के बाद दोनों सिरे सुतलियों के दोनों आदमियों को पकड़ा दो - और अब जादू की छड़ी मारदो तो तीनों

लड्डुओं के छेद कटें गे और न सुतली की गाँठियां खुलेगी न सुतली टूटे गी छड़ी मारते २ लड्डू नीचे गिर पड़ें गे -

मूल्य १।।) रु०

तर्कीब बतलाने का १) रु० खेल अपने घर बना लेने की तर्कीब का ४) रु०

३ जादू की लकड़ी

इस लकड़ी में तीन सूराख हैं सब को दिखा कर एक शख्श से कहो कि इसके बीच के सूराख में सींक डालो वह डालेगा तो ऊपर के में पड़ जावे गी और नीचे के में डालेगा तो बीच के सूराख में सींक लोगों को मालूम होती है अजीब हैरानी का खेल यह भी है - मूल्य ।।)

खेल बनाने की तर्कीब पूंछोगे तो पहिले एक रुपया भेजो तो पूंछो

४ जादू का लोटा

यह कभी पानी से भरता ही नहीं और भर जावे तो सब पानी फैला दो और खाली दिखला दो तब भी भरा ही रहेगा - एक फूंक जादू की मारने पर आप से आप भर जावे गा - मूल्य ३) तर्कीब का एक चेहरा शाही -

५ जादू की किताब

इसमें रंग बिरंगे अक्षर निकलते हैं कभी दिखाओ तो सब की सब किताब कोरी ही होगी कुछ नहीं लिखा होगा फिर दिखाओ तो सब किताब में हिन्दी लिखी हुई होगी और फिर दिखाओ तो सब एक एक वर्क में उर्दू लिख जावे गी हिन्दी गायब हो जावे गी फिर हिन्दी उर्दू गायब होकर अंग्रेजी आप से आप लिख जावे गी - और फिर दिखाओ तो कोरी की कोरी ही - मूल्य फी किताब ३) तर्कीब के भी ३) ही रु०

६ डक्क का मुतना

एक बर्तन में पानी भरा है और उसकी तली में सूराख है - उसको डक्क दो पानी उस नीचे के सूराख से गिरने लगेगा - और डक्क दो फ़ौरन बन्द हो जावेगा और उस सूराख से को न उंगली भी नहीं लगाई जाती है - इसको देखकर लोग बहुत हंसते हैं - मूल्य ॥) तर्कीब खेल बनाने की पूछो तो १)

७ जादू के चने

भुने चनों में पानी का छींटा देते ही किल्ले निकल आवें - यह बड़ आश्चर्य का खेल है मूल्य ।) फ़ी चना पांच चनों का १)

तर्कीब चने बनाने की १)

८ बांस की पोंगिया

दो पोंगिया हैं उनमें धागा पिरोया हुआ है इसका धागा खींचो तो इसका खिचता है और उसका खींचो तो इसका खिंचता है हैरत उत्पन्न करने वाला खेल है मूल्य १) बनाने की तर्कीब ५) रु०

जादू की पीक ९

कान की राह पानी पिलाओ और इस पीक से चूनड़ी की राह पानी निकालो बड़ी हंसी का खेल है - मूल्य ॥) तर्कीब १) में

जादू के ताश का खेल १

चारें पञ्जों के इक्के ही रह जावें और इक्कों के खाली वर्क़ हो जावें और फिर पञ्जों के पञ्जे ही रहे - इनमें कोई पट वगैर: नहीं होता और न अधिक पत्ते होते हैं चार ही पत्तों में काम होता है मूल्य ॥) तर्कीब बनाने की पूछो तो १)

सब खेल लें तो ५) में और तर्कीब के ५) एक खेल की तरह बनी रहे गी -

४ मेमों के चारों बादशाह होजावें मूल्य ॥) तर्कीब ५) रु०

(३) पत्ता निकालो फिर … ही जावे सवाली पत्ते में उसकी भूल पर पता नहीं होता है और न हो पत्ते होते हैं

मूल्य ।) तर्कीब ।)

(४) दो मेज़ को बादशाहों के खाली बर्ग होजावे और फिर नहीं के वहां मूल्य ।) तर्कीब ८)

५ उड़ते पत्ते

दो आदमियों के रूमाल के नीचे दो पत्ते सब को दिखाकर रखदो - और उनसे कहिदो कि इनको खूब मजबूती से दबाये रहिना इसका पत्ता इसमें आजावेगा और उसका इसमें

मूल्य ।) तर्कीब ८)

(६) एक बंडल मेंसे चाहे जहां से पत्ता खींचो उसको एक दम में बता देना - सिर्फ इसकी तर्कीब बताई जाती है ।)

इनके अलावह ताश के और जादू के बड़त से खेल हैं जो बाज़ीगर अकसर किया करते हैं वह सब मेरे पास हैं - गुंजायश न होने के कारण नहीं लिखे गये - ताश के यह छे खेल इकट्ठे लेने वाले को सब छेओ ८) में देंगे अगर तर्कीब पूछेंगे तो २) में मगर एक लेंगे या एक की तर्कीब पूछेंगे तो वही दाम लगेंगे सब तरह का पत्र ओहार खेल वगैर: का इसपते सेकरो - ललिता प्रसाद एल·पी·जे· स्थान

कायमगंज ज़िला फर्रुखाबाद

पश्चिमोत्तरदेश

समाप्तः

गुज़ारिश है

यह पुस्तक बहुत ही नायाब है - और अपने समय में बहुमोल है -
इसकी इशायत (जारी होने के लिये) में सब जैनी भाइयों को तन ?
मन ? धन ? से कोशिश करना चाहिये - १ ईश्वर
इस पुस्तक में भले प्रकार जता दिया है कि इस संसार को ने नहीं
बनाया - बल्कि अनादि है - २
और माया गवनको भी अच्छी तरह दरशाया है - ३
मूल्य भी कुछ नहीं ७) ही रक्खा है इस पुस्तक की एक २ दलील ७)
की है - इस पवित्र पुस्तक से किसी जैनी भाई का भी घर खाली न
रहना चाहिये - ४
शीघ्र मंगाओ नहीं तो द्वितीय बार छपनेकी बाट
देखना पड़ेगी - थोड़ी साथ पुस्तकें निकल रही हैं
पीछे करके अफ़सोस मलना पड़ेगा - ५

प्रार्थी

ज्वाला प्रसाद तनुज परमेश्वरी लाल
बुन्देले - ज़मींदार वाला - जैन -
कायमगंज

ज़िला फ़र्रुख़ाबाद